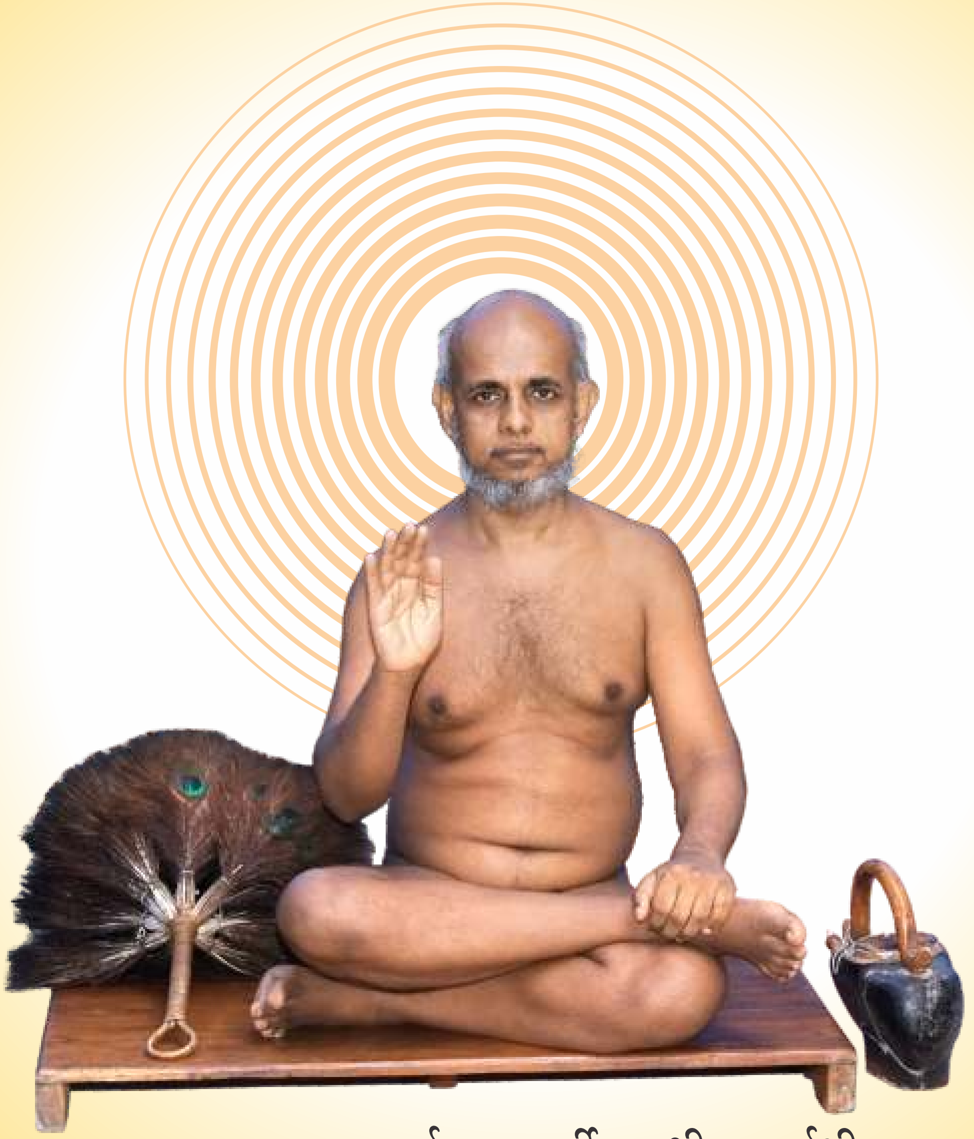

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

दिगम्बरत्व का वैभव

प्रकाशक
दिगम्बर जैन महासमिति

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

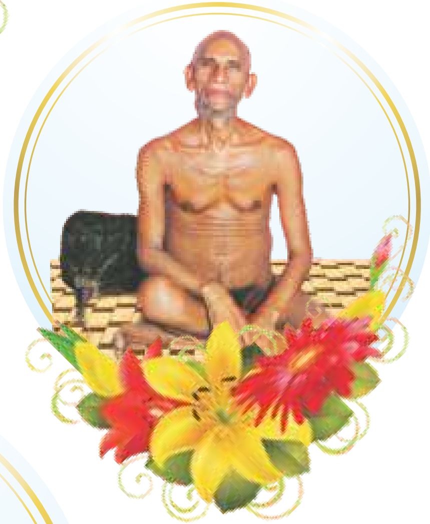

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

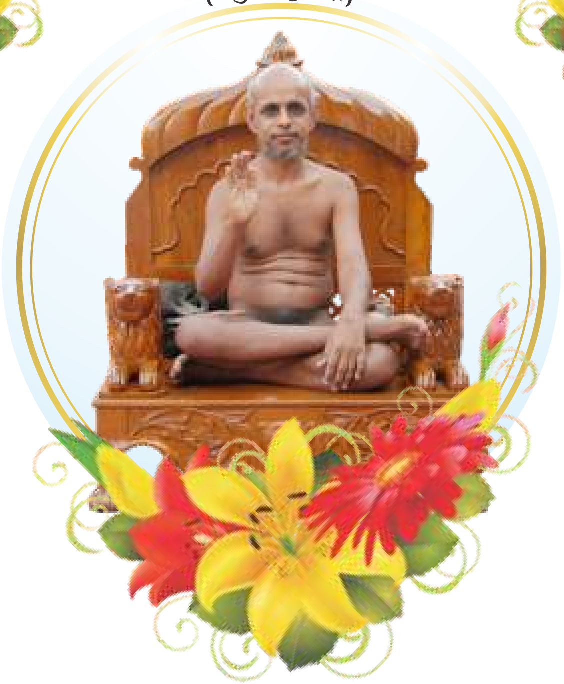

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

दिगम्बरत्व का वैभव

प्रकाशक
दिगम्बर जैन महासमिति

प्रकाशक :
श्री सुकुमार चन्द जैन
प्रधान मन्त्री,
दिगम्बर जैन महासमिति
C/O श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर पंचायती धर्मशाला
तीर्थंकर महावीर मार्ग,
मेरठ शहर ।

प्रथम संस्करण १००० प्रतियाँ	मूल्य : पच्चीस रुपये	वर्ष · १६८५

मुद्रक ·
प्रेसीडेन्ट प्रैस
६०, चैंपल स्ट्रीट
मेरठ कैन्ट
फोन : ७६७०८

अनुक्रमणिका

१.	आन्ध्र प्रदेश	... १
२.	असम	... ६
३.	बिहार	... ८
४.	गुजरात	... २४
५.	हरियाणा	... २८
६.	हिमाचल प्रदेश	... ३६
७	केरल	.. ३७
८	मध्य प्रदेश	... ३९
९.	महाराष्ट्र	...१२५
१०.	मणिपुर	...१३६
११.	मेघालय	...१३६
१२.	नागालैण्ड	...१३६
१३.	उडीसा	...१३७
१४	पंजाब	...१४०
१५	राजस्थान	...१४१
१६.	उत्तर प्रदेश	...१७०
१७.	पश्चिमी बंगाल	...२२०
१८.	दिल्ली	...२२४
१९.	तामिलनाडू	.. २३४
२०	मूडबिद्री	...२४४
२१.	श्रवणबेल गोला	...२४७

प्रस्तावना

वर्तमान युग के चौबीस तीर्थंकरो मे से अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर का २५०० वा निर्वाण महोत्सव मनाने के लिए देश-विदेश का समग्र जैन-समाज अत्यन्त भक्ति, श्रद्धा और अधिकाधिक तैयारियो के साथ प्रस्तुत हो रहा था। धार्मिक मान्यता के अनुसार सभी तीर्थंकर समान रूप से पूज्य हैं, किन्तु हम आज जिस काल मे हैं, वह भगवान महावीर के धर्मप्रवर्तन का काल है, अतः उनके प्रति हमारी विशिष्ठ विनयाजलि स्वाभाविक ही थी।

जिन्हे जैन-इतिहास और पुराणो का ज्ञान नही है, ऐसे अनेक जन भगवान महावीर को ही जैन धर्म का आदि प्रवर्तक मानते हैं, किन्तु वास्तविकता यह है कि भगवान महावीर वर्तमान परम्परा के अन्तिम तीर्थंकर है, आदि तीर्थंकर तो भगवान ऋषभदेव है, जिनके पुत्र भरत चक्रवर्ती के कारण यह देश 'भारत देश' के नाम से विख्यात हुआ। जैनेतर पुराणों मे भी उनका उल्लेख आदरपूर्वक किया गया है। विष्णु पुराण मे भगवान ऋषभदेव को आठवा अवतार माना गया है। इसी सन्दर्भ मे श्रीमद् भागवत का यह उद्धरण दृष्टव्य है—

नित्यानुभूतनिजलाभ निवृत्त तृष्णः श्रेयस्यतद्रचनया चिरसुप्तबुद्धे ।
लोकस्य यः करुणयाभयमात्मलोक माख्यान्नमो भगवते ऋषभाय तस्मै ॥

—श्रीमद् भागवत ५/६/१९

(निरन्तर विषय-भोगो की अभिलाषा करने के कारण अपने वास्तविक श्रेय से चिरकाल तक बेसुध हुए लोगो को जिन्होने करुणावश निर्भय आत्मलोक का उपदेश दिया और जो स्वय निरन्तर अनुभव होने वाले आत्मस्वरूप की प्राप्ति से सब प्रकार की तृष्णाओ से मुक्त थे, उन भगवान ऋषभदेव को नमस्कार है।)

भारतीय सस्कृति के इतिहास की जानकारी के लिये जैन, बौद्ध और हिन्दू शास्त्रो-पुराणो-ऐतिहासिक सन्दर्भों का तुलनात्मक अध्ययन अनिवार्य है। इसे एक सुखद सयोग ही कहना होगा कि जैन मान्यता की वर्तमान पीढी के आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव और हिन्दू पुराणो के सर्वाधिक पूज्य भगवान शकर के वर्णन क्रम मे अद्भुत साम्य है। भगवान शकर कैलाशवासी है, उनकी लम्बी जटाये है, वे शीर्ष पर गगा धारण किये हुये हैं, नन्दी उनका वाहन है और त्रिशूल उनका प्रतीक चिह्न है। दूसरी ओर भगवान ऋषभदेव का निर्वाण स्थान कैलाश है, उनकी प्राचीन मूर्तिया प्राय जटाजूट युक्त है, उनका चिन्ह बैल है और उन्होने सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूपी त्रयो को ही मोक्षमार्ग माना है। यहा यह कह देना अप्रासगिक नही होगा कि जैन मान्यता के अनुसार भगवान ऋषभदेव भी वस्तुत आदि तीर्थंकर नही है। वे मात्र वर्तमान पीढी के चौबीस तीर्थंकरों में से प्रथम तीर्थंकर हैं। चौबीस-चौबीस तीर्थंकरो की ऐसी ही तीन शृखलाये है, जो भूत-भविष्य और वर्तमान चौबीसी कही

आती हैं। आज हम जिस शृंखला को भविष्यत कालीन चौबीसी कहते है, उसका प्रारम्भ होते ही वह वर्तमान चौबीसी कहलाने लगेगी और तब आज की चौबीसी भूतकालीन चौबीसी हो जायेगी।

भगवान महावीर का जन्म कुण्ड ग्राम वैशाली (बिहार-प्रान्त) मे चैत्र शुक्ल १३, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र, सोमवार २७ मार्च (५९८ ई० पू०) को हुआ था। वे महाराज सिद्धार्थ और महारानी त्रिशला प्रियकारिणी के पुत्र थे। वर्द्धमान, अतिवीर और सन्मति इनके नामान्तर हैं, इन्हें निग्गण्ठनातपुत्त भी कहा गया है। इनका कुमारकाल २९ वर्ष ७ माह १२ दिन, तपकाल, १२ वर्ष ५ माह १५ दिन, देशनाकाल—२९ वर्ष ५ माह २० दिन रहा और अन्तिम २ दिनों के योगनिरोध के पश्चात् कार्तिक कृष्ण, अमावस्या, मंगलवार १५ अक्टूबर (५२७ ई० पू०) को स्वातिनक्षत्र मे इनका निर्वाण हो गया था। इसी उपलक्ष मे जनसामान्य एव देवताओ ने विविध भव्य आयोजनो के साथ उनका निर्वाण महोत्सव मनाया था। तभी से वह परम्परा के रूप मे प्रचलित हो गया और आज तक दीपावली अथवा दीपमालिका महोत्सव के रूप मे धूमधाम के साथ प्रतिवर्ष मनाया जाता है। भारतीय परम्परा मे "घी के दिये जलाना" सर्वाधिक मागलिक कार्य के रूप मे प्रतिष्ठित कार्य-क्रम माना जाने लगा है।

वर्ष १९७४ ई० मे भगवान महावीर के निर्वाण के २५०० वर्ष सम्पन्न हो रहे थे। यही २५०० वा निर्वाण महोत्सव अत्यधिक उत्साह और तैयारियो के साथ सम्पूर्ण भारत देश मे आयोजित किया जाना था।

इसी सन्दर्भ मे ११–१२ अप्रैल १९७० को अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज के प्रतिनिधियों की एक बैठक देहली मे हुई थी जिसमे भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव को व्यापक रूप से मनाने का निर्णय लिया गया था और अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव सोसायटी का गठन हुआ था। सोसायटी के विधान और नियमो का दिल्ली राज्य पंजीकरण अधिनियम के अनुसार रजिस्ट्रेशन कराया गया था और एतदर्थ दान की राशि पर दातारो के लिए आयकर मे छूट का अधिकार-पत्र प्राप्त किया गया था। देश मे दिगम्बर जैन समाज की जनसंख्या और संगठन की स्थिति का ध्यान रखते हुए विभिन्न ४४ क्षेत्रीय समितिया गठित की गयी थी।

इसके पूर्व पिछले दो-ढाई वर्षों से एतदर्थ आयोजित की जाने वाली योजनाओ के लिए विचार-विमर्श हो रहा था और निर्धारित योजनाओ के लिये धन एकत्रित करने तथा केन्द्रीय और क्षेत्रीय समितियो के कार्य-विभाजन के विषय मे चर्चा हो रही थी। अन्तत. केन्द्रीय समिति ने सर्वसम्मति से कार्य के दायित्व का नीचे लिखे अनुसार विभाजन किया था .—

वर्ग—१ वे योजनाये जिनके लिये दिगम्बर केन्द्रीय समिति उत्तरदायी होगी।

वर्ग—२ वे योजनायें जो विभिन्न सस्थाये स्वय कर रही हैं और जिनके लिये केन्द्रीय समिति का प्रोत्साहन उन्हे प्राप्त है और जिनके लिये केन्द्रीय समिति ने मान्यता दे दी है।

वर्ग—३ वे योजनायें जिनकी जिम्मेदारी क्षेत्रीय समितियो ने ली है।

वर्ग—४ वे योजनाये और कार्यक्रम जो भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय समिति के माध्यम से स्वीकार किये गये हैं।

धन संग्रह—के लिये समिति ने निश्चय किया था कि प्रत्येक जैन स्त्री-पुरुष, बालक-बालिका प्रतिदिन

महोत्सव की योजनाओ के निमित्त कम-से-कम एक पैसा नियमित रूप से दान दे। धन संग्रह के इस कार्य में विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न प्रकार की सहायता प्राप्त हुई थी और केन्द्रीय समिति ने क्षेत्रीय समितियों को उनके द्वारा एकत्रित धनराशि को उनके द्वारा आयोजित कार्यक्रमो के लिये व्यय करने हेतु अधिकृत कर दिया था।

केन्द्रीय समिति की योजनाओ के लिये आवश्यक धनराशि के सम्बन्ध में यह निर्णय लिया गया था कि वह क्षेत्रीय समितियों से उनकी आर्थिक सुविधा के आधार पर दान रूप मे प्राप्त किया जायेगा, जो महानुभाव ५०००/- रुपया अथवा इससे अधिक राशि केन्द्रीय समिति को देंगे, उनकी इच्छानुसार, उनका नाम उचित स्थान पर स्मारक शिला पट्ट पर अंकित करा दिया जावेगा।

यह निश्चय भी किया गया था कि केन्द्रीय समिति निर्वाण महोत्सव की स्मृति मे कलात्मक पदक वितरित करेगी तथा धर्मचक्र प्रवर्तन योजना के माध्यम से धर्म प्रचार और द्रव्य सचय करेगी। धर्मचक्र प्रवर्तन की निर्धारित योजना के आधार पर पूरे देश मे विभिन्न पाच धर्मचक्र प्रवर्तित किये गये थे—

(१) प्रथम धर्मचक्र का प्रवर्तन देहली से हुआ था। तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागाधी ने इस प्रवर्तन का शुभारम्भ रामलीला मैदान मे आयोजित समारोह मे किया था। १०८ आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज और मुनि श्री विद्यानन्द जी महाराज के आशीर्वाद से पुनीत यह धर्मचक्र देहली से हरियाणा-पजाब-हिमाचल प्रदेश-राजस्थान होता हुआ उत्तर प्रदेश मे आया था और इसी प्रान्त के प्रसिद्ध हस्तिनापुर क्षेत्र मे इसकी यात्रा सम्पन्न हुई थी।

(२) दूसरे धर्मचक्र का प्रवर्तन भगवान महावीर के निर्वाण क्षेत्र पावापुर (बिहार) से प्रारम्भ हुआ था और इसके माध्यम से बिहार प्रान्त के अतिरिक्त बगाल और उडीसा प्रान्त मे भी पर्याप्त धर्म प्रभावना हुई थी।

(३) तीसरे धर्मचक्र का प्रवर्तन इन्दौर से प्रारम्भ हुआ था और इसके माध्यम से मध्यप्रदेश के गावों-गावों मे तथा निकटवर्ती अन्य स्थानो मे धर्म प्रभावना हुई थी।

(४) चौथे धर्मचक्र का प्रवर्तन दक्षिण भारत के विख्यात तीर्थस्थल श्रवणबेल्गोला से हुआ था। इस धर्मचक्र के माध्यम से कर्नाटक प्रान्त के अतिरिक्त महाराष्ट्र, आध्र प्रदेश और केरल राज्यो मे भी जन जागृति और प्रचार का महान कार्य सम्पादित हुआ था।

(५) पाचवें धर्मचक्र का नेतृत्व किया था स्व० पं० बाबूभाई चुन्नीलालजी मेहता ने। इस धर्मचक्र की यात्रा बहुत विस्तृत और सफल रही थी। पडित बाबूभाई मेहता का अपना व्यक्तित्व था। लगभग ८०० अनुशासनबद्ध सम्पन्न लोगो का सघ अपने आप मे एक आदर्श था। इस धर्मचक्र का प्रवर्तन सम्पूर्ण गुजरात प्रान्त मे हुआ और इसके अतिरिक्त देश के विविध तीर्थ क्षेत्रो पर भी इसका प्रवर्तन सफलतापूर्वक हुआ था। स्व० मेहताजी ने इस संघ यात्रा के अवसर पर अनेक अभावग्रस्त तीर्थ क्षेत्रों की आवश्यकताओ की यथासम्भव पूर्ति की थी।

योजनाएं—केन्द्रीय समिति द्वारा किये गये विभाजन के आधार पर **वर्ग—१** ने कुल ३४ लाख रुपये की योजनायें निर्धारित की थी, जिनमे—(१) राष्ट्रीय समिति की योजनाओ तथा चारो समाजो की सम्मिलित योजनाओं के लिए अनुदान (२) भगवान महावीर के जन्म-स्थान बैशाली मे जन्म स्मारक के निर्माण (३) पावापुरी मे भगवान महावीर के निर्वाण स्मारक के निर्माण (४) विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर की प्रथम देशना का स्मारक, भगवान महावीर के बिहार-स्थलों का मानचित्र और रानी चेलना तथा उनके प्रभाव द्वारा

राजा श्रेणिक की धर्मदीक्षा के स्मारक का निर्माण (५) दिगम्बर केन्द्रीय समिति के कार्यालय खर्च और विभिन्न योजनाओं की तैयारी के लिए धनराशि तथा (६) कंकाली (मथुरा), देवगढ़, खजुराहो और उज्जैन के पुरातत्व संग्रहालयों के निर्माण-विकास कार्य के लिये व्यवस्था भी सम्मिलित थी।

आर्थिक सहायता हेतु आश्वासन—इस हेतु बम्बई, कलकत्ता, आसाम, मेरठ, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश, बिहार और देहली की जैन समाज से कुल १७·७५ लाख रुपयो की दानराशि के आश्वासन मिले थे। वीर शासन जयन्ती महोत्सव कलकत्ता के अवसर पर एकत्रित धनराशि में से ०·५० लाख रुपये बचे थे। शेष राशि १५·७५ लाख रुपये एकत्रित करने की योजना विचाराधीन थी।

वर्ग—२ के अन्तर्गत जैन साहित्य प्रकाशन, धर्मचक्र प्रवर्तन, कलात्मक पदक वितरण, बालक-बालिकाओं की धार्मिक दशा के लिए पाठ्य-पुस्तको का प्रकाशन और पाठशालाओ की स्थापना, भगवान महावीर के सिद्धान्तो, शास्त्र प्रवचनो, स्तोत्रो, भजनो आदि की टेप रिकार्डिंग, जिनेन्द्र कला भारती भीलवाड़ा द्वारा सामूहिक स्तुति, भजन-गान प्रशिक्षण, जैन भजन स्तुतियो के ग्रामोफोन रिकार्ड, जैन कला और स्थापत्य की सामग्री के चित्रो के सग्रह, जैन स्थापत्य कला आदि की चित्र प्रदर्शनी, जैन साहित्य प्रदर्शनी, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव स्मारक कलैण्डर, डायरिया और अन्य उपहार सामग्री का वितरण, संग्रहालयो का निर्माण और विकास तथा सराक जाति के इतिहास और स्थिति के सर्वेक्षण आदि की योजना निर्धारित की गयी थी।

वर्ग—३ के अन्तर्गत देश की विभिन्न क्षेत्रीय समितियो ने सामान्यतः :—तीर्थंकर महावीर के स्मारकों के निर्माण, जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न कार्य और सम्बन्धित साहित्य का प्रकाशन, अप्रकाशित मौलिक रचनाओ का सरक्षण और प्रकाशन, विद्यालयों, पाठशालाओ, पुस्तकालयो, स्वाध्याय भवनो तथा वाचनालयो की स्थापना और सचालन, जैन तीर्थों, प्राचीन-नवीन जिन मन्दिरो की सुरक्षा और व्यवस्था, ऐतिहासिक और पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानो आदि की व्यवस्था और सरक्षण, सामाजिक तथा सार्वजनिक सभा, सम्मेलन, वाद-विवाद, विचार गोष्ठी, निबन्ध, प्रवचन आदि का आयोजन, आकाशवाणी तथा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जैन सिद्धान्तो का प्रचार, निधि एकत्रित करने के लिये गोलको की स्थापना, अतिथि गृहों तथा चिकित्सालयो की स्थापना, जैन आबादी वाले एवं अन्य विशिष्ट स्थानों पर जैन मन्दिरों के निर्माण, संग्रहालयों का निर्माण, छात्र-छात्राओ के लिए छात्रवृत्ति योजना तथा छात्रावासो की स्थापना, स्मारिका एवं विवरण पत्रिका का प्रकाशन, भगवान महावीर के कीर्ति स्तम्भ एव उपदेशों के शिलापट्ट स्थापित कराना, पक्षी-चिकित्सालयों की स्थापना तथा जैन जन-गणना कराने आदि की योजनायें बनायी थी।

वर्ग—४ के अन्तर्गत भारत सरकार ने भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव को सार्वजनिक रूप से राष्ट्रीय स्तर पर मनाने के लिए राष्ट्रीय समिति का गठन किया था। तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि इसके सरक्षक थे, तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागाधी इसकी अध्यक्ष थी और केन्द्रीय शिक्षामन्त्री महोदय इसके कार्याध्यक्ष घोषित किये गये थे। इनके अतिरिक्त ८ विशिष्ट अतिथि, ६७ सदस्य तथा सचालक समिति के २० सदस्य मनोनीत किये गये थे। राष्ट्रीय समिति के सभी पदाधिकारी और सदस्य देश के चुने हुये विशिष्ट व्यक्ति थे। राष्ट्रीय समिति द्वारा निम्नांकित कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये थे —

(१) दक्षिण देहली मे भगवान महावीर वनस्थली नामक राष्ट्रीय उद्यान का निर्माण किया जाय, जिसके लिए भारत सरकार २५ एकड़ भूमि की व्यवस्था करेगी। और कृषि मन्त्रालय के माध्यम से इस योजना को कार्यान्वित किया जायेगा। इस कार्य के लिए एक ८ सदस्यीय उपसमिति का संगठन भी किया गया था।

(२) प्रत्येक राज्य मे एक-एक भगवान महावीर बाल केन्द्र स्थापित हो। देश मे ऐसे २० केन्द्र स्थापित हों जो जिलों के नेहरू युवा केन्द्रो से सम्बद्ध हो, प्रत्येक केन्द्र पर लगभग ५० हजार रुपया व्यय किया जाय।

(३) प्रत्येक राज्य मे कम-से-कम एक ग्रामीण पुस्तकालय की स्थापना भगवान महावीर के नाम पर हो, जो राज्य के सम्बद्ध नेहरू व युवा केन्द्र से सम्बद्ध हो, इस कार्य के लिये ६ लाख रुपयो का प्रावधान हो।

(४) भगवान महावीर के जन्मतीर्थ वैशाली मे स्मारक का निर्माण—इस कार्य के लिए २ ५० लाख रुपये निर्धारित किये गये।

(५) जैन विद्या तथा शोध हेतु स्वायत शासित नेशनल काउसिल की स्थापना—इसके लिए भारत सरकार १० लाख रुपये का अनावर्तक अनुदान देगी।

(६) प्रकाशन कार्यक्रम—इस कार्य के लिए भारत सरकार जैन समाज को ४ लाख रुपये का अनुदान देगी, जो स्वयं भी यदि अधिक नही, तो कम से कम इतनी राशि नियोजित करेगी।

(७) भगवान महावीर का जीवन और उनके सिद्धान्त—इस ग्रन्थ का नियोजन श्री जगदीश चन्द माथुर, हिन्दी परामर्शदाता, भारत सरकार के निर्देशन मे होगा तथा इसका प्रकाशन अग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओ मे नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा होगा। इस कार्य के लिये ६ सदस्यीय सम्पादक मण्डल का गठन किया गया था।

(८) महोत्सव सम्बन्धी अन्य कार्यक्रमो के आयोजन के लिए— २ लाख रुपये निर्धारित किये गये थे। इस प्रकार सम्पूर्ण योजनाओ के लिये ५० लाख रुपयो की राशि निर्धारित की गयी थी। उपरोक्त आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव सोसायटी का विधान और नियमावली तैयार करायी गयी थी और उसका रजिस्टर्ड मुख्य कार्यालय देहली मे निर्धारित किया गया था।

आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव सोसायटी के पदाधिकारीगण

अध्यक्ष	—श्रीमान साहू शान्तिप्रसाद जी जैन, नई दिल्ली।
कार्याध्यक्ष	—श्रीमान सरसेठ भागचन्द जी सोनी, अजमेर।
,,	—श्रीमान राजेन्द्र कुमार जी जैन, नई दिल्ली।
,,	—श्रीमान राय साहब चादमल जी पाडया, गोहाटी।
उपसभापति	—श्रीमान सेठ राजकुमारसिह जी, इन्दौर।
,,	—श्रीमान राय बहादुर हरकचन्द जी पाडया, राची।
,,	—श्रीमान श्यामलाल जी पाडवीय, मुरार।

,, —श्रीमान सेठ लालचन्द हीराचन्द जी बम्बई।

,, —श्रीमान सेठ नथमल जी सरावगी, कलकत्ता।

,, —श्रीमान सेठ शीतल प्रसाद जी जैन, मेरठ।

,, —श्रीमान परसादीलाल जी पाटनी, देहली।

प्रधानमन्त्री —श्रीमान सुकुमार चन्द जी जैन, मेरठ।

मन्त्री —श्रीमान कैलाशचन्द जी जैन, देहली।

,, —श्रीमान भगतराम जी जैन, देहली।

,, —श्रीमान रमेशचन्द जी जैन, देहली।

कोषाध्यक्ष —श्रीमान प्रेमचन्द जी जैन, देहली।

प्रबन्ध समिति—आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव सोसायटी के पूर्वांचल क्षेत्र के अन्तर्गत—मनीपुर, आसाम, मेघालय, नागालैण्ड, बगाल और बिहार प्रदेश के सदस्यो, उत्तराचल क्षेत्र के अन्तर्गत—देहली, पंजाब एवं जम्मू काश्मीर, हिमाचल, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य-प्रदेश के सदस्यो, महाराष्ट्राचल क्षेत्र के अन्तर्गत—बम्बई, और महाराष्ट्र प्रदेश के सदस्यों, दक्षिणाचल क्षेत्र के अ तर्गत—मैसूर, केरल तथा आध्रप्रदेश के प्रबन्ध समिति के सदस्यो को भी मनोनीत किया गया था।

कार्यालय समिति एवं अन्य समितियों के पदाधिकारियो तथा सदस्यों की घोषणा भी विधिवत की गयी थी।

निर्वाण महोत्सव का सम्पूर्ण कार्यक्रम एलाचार्य १०८ श्री विद्यानन्द जी महाराज की छत्रछाया मे सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ था। स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी महाराज श्रवणबेलगोला, स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी महाराज, मूडबिद्री, स्वस्ति श्री भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति जी महाराज होम्मच, एव स्वस्ति श्री भट्टारक लक्ष्मीसेन जी महाराज कोल्हापुर की जागरुक दृष्टि और उनके द्वारा समय-समय पर दिये जाते रहे परामर्श सफलता के लिये वरदान सिद्ध हुए। स्वर्गीय साहू शान्तिप्रसाद जी इन कार्यक्रमों के प्राण थे, उनकी प्रेरणा, परामर्श और तात्कालिक निर्णायक लेने की क्षमता के कारण कही कोई बाधा नही आयी। श्रीमान साहू श्रेयास प्रसाद जी का प्रशस्त मार्ग दर्शन और सक्रिय सहयोग सदैव प्राप्त होता रहा। प्रधानमन्त्री होने के नाते मैं स्वर्गीय साहूजी के आदेशो के अनुसार प्रत्येक कार्य का सचालन और निरीक्षण करता अवश्य था किन्तु इसकी सफलता का श्रेय वस्तुतः स्वर्गीय साहूजी को ही है। इस सन्दर्भ मे मन्त्री के रूप मे दिनरात अनवरत कार्य करने वाले अपने सहयोगी समाजसेवी भाई भगतरामजी जैन का नाम भी भुलाया नही जा सकता। श्रीमान लाला प्रेमचन्द जी जैन (जैना वाच क०) देहली, श्रीमान लाला गुलशनराय जी जैन मुजफ्फरनगर, श्रीमान जयचन्द डी० लोहाड़े हैदराबाद, श्रीमान जम्बुकुमार जी बज कोटा, श्रीमान राजकुमार सिंह जी कासलीवाल इन्दौर, श्रीमान मिश्रीलाल जी गगवाल इन्दौर, श्रीमान हरकचन्द जी पाडया राची, श्रीमान चादमल जी पाडया तथा श्रीमान नेमीचन्द जी जैन देहली आदि महानुभावो का सक्रिय सहयोग और प्रयास ही कार्यक्रमो की सफलता का सम्बल रहा है।

निर्धारित योजनाओं के अनुसार कार्य—निर्धारित योजनाओ के अनुसार देश मे अधिकाधिक स्थानो पर भगवान महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष मे अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। तीर्थस्तम्भो तथा स्मारको का निर्माण हुआ, विद्यालयो, पाठशालाओं की स्थापना हुई, अनेक प्राचीन स्मारको,

मन्दिरों का जीर्णोद्धार हुआ, विविध प्रकाशन हुए, जैन भजनो गीतो-स्तोत्रो के रिकार्ड, टेप तैयार हुए और ऐसे ही अनेकानेक प्रचार सम्बन्धी कार्य सम्पन्न हुए। अनेको धार्मिक एव सामाजिक संस्थाओं ने तथा विशिष्ट जनों ने अपने निजी तौर पर भी धार्मिक-सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किये। महोत्सव की सम्पन्नता के पश्चात् अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं ने अपने कर्मचारियो को अतिरिक्त वेतन, बोनस अथवा उपहार भेंट किये। निजी तौर पर भी श्रद्धालु जनो ने सस्थाओ को दानराशि भेजी, मन्दिरो तथा अन्य धार्मिक सामाजिक संस्थाओं को विविध उपकरण और प्रचार सामग्री भेंट की। असहाय स्त्री-पुरुषो को सहायता प्रदान की, बीमारो को दवाइयों, दूध और फलों का वितरण किया। संक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि संस्थाओ और सम्मिलित प्रयासों के माध्यम से तथा व्यक्तिगत रूप से भी जितना अधिक धार्मिक प्रचार-प्रसार कार्य इस महोत्सव के उपलक्ष मे किया गया, इसके पूर्व उतना कार्य पहले कभी नहीं हुआ था।

निर्धारित योजनाओ (वर्ग—१) के अन्तर्गत "वैशाली की जिस पावन भूमि पर कभी खेती नही हुई है और जो परम्परा से भगवान महावीर की जन्मभूमि मानी जाती है, वहां पर जैन कला शैली मे भगवान महावीर का जन्म स्मारक निर्माण कराने" का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, यह महान कार्य अत्यधिक श्रमसाध्य था और इसके सम्पन्न होने मे समय भी अधिक लगना था। प्रारम्भ मे इस निर्माण के लिए ३ ६० लाख रुपये की राशि आंकी गयी थी। इसमे से आधी रकम जैन समाज को और शेष आधी राशि बिहार राज्य शासन को देनी थी। बाद मे वह व्यय बढकर ६ ०० लाख रुपया हो गया और अब तो वह राशि बढकर लगभग १५ ०० लाख रुपये हो गयी हैं। समाज की ओर से इसके लिए १ ५० लाख रुपये दिये जा चुके हैं योजना क्रमश अधिकाधिक लम्बी और व्यय साध्य होती जा रही है और इस सम्बन्ध मे सभी आवश्यक प्रयास किये जा रहे हैं।

साहित्य प्रकाशन की निर्धारित योजना अत्यधिक सफल रही है। अनेक सस्थाओ ने अधिकाधिक साहित्य का प्रकाशन और प्रसार किया-कराया। इस सन्दर्भ मे भारतीय ज्ञानपीठ की सेवाए सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही। इसी प्रयास के अन्तर्गत भारतीय ज्ञानपीठ के सयोजन, सम्पादन एव निर्देशन के अन्तर्गत श्रीमान प० बलभद्र जी जैन द्वारा लिखित तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी बम्बई द्वारा प्रकाशित 'भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ' (अब तक चार भागो मे प्रकाशित) की चर्चा करना अप्रासगिक नही होगा। इस प्रकाशन से एक बहुत बडी आवश्यकता की पूर्ति हो गयी है। इसके एक-दो भाग अभी प्रकाशित होने शेष हैं।

१०५ क्षुल्लक श्री जिनेन्द्र वर्णी की साधना के प्रतीक 'जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष' का प्रकाशन भी अपने आप मे महान उपलब्धि है। भारतीय ज्ञानपीठ के इस प्रकाशन का दूसरा सस्करण भी अब तैयार हो रहा है।

महोत्सव सोसायटी द्वारा देश के समस्त जिन मन्दिरो, क्षेत्रो और संस्थाओ की डायरेक्टरी प्रकाशित करने का निश्चय भी किया गया था। विभिन्न स्थानो से विवरण प्राप्त होने और उन्हे व्यवस्थित करने मे समय अधिक लग गया और इस बीच और भी अनेक व्यवधान उपस्थित हो गये। अन्तत उक्त डायरेक्टरी के रूप मे यह प्रकाशन आपके हाथो मे पहुंच रहा है। अनेक स्थानो के विवरण अन्त तक प्राप्त नही हो सके अत: उनका समावेश इसमे नहीं हो सका। इसके प्रकाशन मे हुए विलम्ब के लिए हम सादर क्षमायाची हैं।

आयोजित कार्यक्रमों के समापन समारोह में 'दिगम्बर जैन महासमिति, का गठन—

देश की समग्र जैन समाज ने भगवान महावीर का २५०० वा निर्वाण महोत्सव जिस सम्मिलित सहयोग और उत्साह के साथ मनाया था, उसकी कोई सीमा नही रही थी। इसमे शासन और अन्य समाजसेवी

संस्थाओं का सहयोग भी प्राप्त हुआ था, किन्तु जैन-समाज का प्रत्येक वर्ग आपसी मतभेदों को भूलकर अनायास ही एकजुट होकर सक्रिय हो गया था। महोत्सव की इस विशिष्ट उपलब्धि से समाज का विचारशील वर्ग बहुत प्रभावित हुआ था। इसी दृष्टि से स्व० साहू शांतिप्रसाद जी एवं अन्य मूर्धन्य समाजसेवी जनों के मत में यह विचार आया था कि इस उपलब्धि का लाभ उठाकर समाज को जैनत्व के नाते एकसूत्र में संगठित करने के लिए अखिल भारतवर्षीय स्तर पर दिगम्बर जैन समाज का एक स्थायी संगठन स्थापित कर लिया जाय, जो 'संसद' के रूप में दिगम्बर जैन समाज के सम्पूर्ण वर्गों का प्रतिनिधित्व करें।

उपरोक्त विचारों का सभी ओर स्वागत और समर्थन हुआ। आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव सोसायटी के पास अनेक स्थानों से यह मांग भी आयी थी कि २५०० वें निर्वाण महोत्सव के कार्य के समापन के बाद इस संगठन को स्थायी रूप दिया जाना चाहिये।

समारोह समापन के अवसर पर ११–१२ अक्टूबर ७६ को जयपुर में आयोजित सम्मेलन में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि उपरोक्त आधार पर 'दिगम्बर जैन महासमिति' का गठन किया जाय। इस प्रस्ताव को कानूनी रूप देकर क्रियान्वित करने के लिए वरिष्ठ पत्रकार श्रीमान अक्षयकुमार जी जैन की अध्यक्षता में श्रीरामचन्द जी कासलीवाल जयपुर, श्री देवेन्द्रकुमार जी कासलीवाल इन्दौर एव श्रीनेमीचन्द जी जैन देहली की एक उपसमिति गठित की गयी तथा इसे अधिकार दिया गया कि इसे अन्तिम रूप देकर इसका पंजीकरण करा दिया जाय।

इसके पूर्व देहली मे २४–२५ अगस्त ७६ को आयोजित समारोह मे इस सम्बन्ध में विचार करने के लिए महोत्सव सोसायटी की सभी समितियो के प्रतिनिधियों तथा दिगम्बर जैन समाज की अखिल भारतीय स्तर की संस्थाओ के प्रतिनिधियो को आमन्त्रित किया गया था। इसमे लगभग २५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया था और इसकी कई बैठकें हुई थीं। सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी प्रतिनिधियो ने समाज के संगठन को आवश्यक मानते हुये दिगम्बर जैन महासमिति के गठन का समर्थन किया था और उसके बाद दिगम्बर जैन महासमिति के विधान के प्रारूप पर आये सुझावो पर आवश्यक सशोधन कर नया प्रारूप तैयार करने का निर्णय लिया गया था। उसके पश्चात् विधान तैयार करने के लिये कई बैठकें हुई, जिनमे आये सुझावों के अनुसार सशोधन कर नया प्रारूप तैयार किया गया था।

सर्वसम्मति से स्वीकृत विधान के अनुसार राष्ट्रीय नव-निर्माण मे सहयोग, सामाजिक उत्थान एवं जन-कल्याण की भावना से अनुप्रेरित होकर 'दिगम्बर जैन महासमिति' की स्थापना की गयी। सोसायटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट २१ सन् १८६० के अन्तर्गत इसके मैमोरेंडम आफ एसोसिएशन का रजिस्ट्रेशन कराया गया। जिसमे महासमिति की प्रबन्ध समिति के निम्नांकित सदस्य घोषित किये गये :—

अध्यक्ष	—श्रीमान साहू शांतिप्रसाद जी जैन, देहली।
सदस्य	—श्रीमान सुकुमार चन्द जी जैन, मेरठ।
,,	—श्रीमान अक्षयकुमार जी जैन, देहली।
,,	—श्रीमान देवकुमारसिंह जी कासलीवाल इन्दौर।
,,	—श्रीमान रामचन्द्र जी कासलीवाल, जयपुर।
,,	—श्रीमान भगतराम जी जैन, देहली !
,-	—श्रीमान पारसदास जी जैन, देहली।

इसके साथ ही आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव सोसायटी की प्रादेशिक, संभागीय एव इकाई समितियो को निर्देश दिया गया कि वे अब अपना नाम बदलकर 'दिगम्बर जैन महासमिति' की शाखाओं के रूप मे काम करना प्रारम्भ कर दे।

यह निर्णय भी लिया गया कि '२५०० वा निर्वाण महोत्सव बुलेटिन' भविष्य मे 'दिगम्बर जैन महासमिति बुलेटिन' के नाम से प्रकाशित हुआ करे। इसी आधार पर 'दिगम्बर जैन महासमिति बुलेटिन' का प्रथम अंक जून १९७७ को प्रकाशित हुआ था। तब से आज तक दिगम्बर जैन महासमिति अपने निर्धारित लक्ष्यो पर उत्तरोत्तर अग्रसर होती जा रही है और 'दिगम्बर जैन महासमिति बुलेटिन' भी निरन्तर प्रकाशित हो रहा है।

इसी बीच दिगम्बर जैन समाज पर अनभ्र वज्रपात हो गया। समाज के सम्बल, सामाजिक गतिविधियो के प्रेरणा स्रोत, कर्मठ कार्यकर्ता और सर्वमान्य नेता श्री साहू शातिप्रसाद जी का २७ अक्टूबर ७७ को स्वर्गवास हो गया। साहू जी की धर्मपत्नी श्रीमती सौ० रमारानी जैन इसके पहले ही दिवगत हो चुकी थीं। श्रीमती रमा जैन ने भी निर्वाण महोत्सव के कार्यों मे महत्वपूर्ण योगदान दिया था। भारतीय ज्ञानपीठ के माध्यम से कराये गये प्रकाशनों का अधिकाश श्रेय उन्हे ही है। साहूजी के निधन के समाचार से सम्पूर्ण समाज स्तब्ध रह गया और समग्र सामाजिक गतिविधियो का मार्ग अवरुद्ध हो गया था।

अन्तत. समाज प्रमुखो ने सम्मलित रूप से स्व० साहू शातिप्रसाद जी के अग्रज श्रीमान् साहू श्रेयास प्रसाद जी से सम्मिलित रूप से अनुरोध किया कि वे कृपाकर समाज की सामाजिक सस्थाओ का नेतृत्व सम्हालें और स्व० साहूजी के निधन से अवरुद्ध हुए कार्यों को गति प्रदान करे। श्रीमान साहू श्रेयास प्रसाद जी अपने अनुज के निधन के कारण मानसिक दृष्टि से अपने-आप मे टूट चुके थे, किन्तु समाज के आग्रह पर उन्हे विवश होकर सामाजिक कार्यों का नेतृत्व स्वीकार करना पडा।

'दिगम्बर जैन महासमिति बुलेटिन' के अक दिसम्बर १९७७ में प्रकाशित अपने वक्तव्य मे उन्होने कहा था कि—गत १८ दिसम्बर ७७ को देहली मे आयोजित बैठक मे यह व्यक्त किया गया है कि स्व० शांतिप्रसाद जी के प्रति सबसे बडी श्रद्धाजलि यह होगी कि हम सब उनके द्वारा सस्थापित 'दिगम्बर जैन महासमिति' के संगठन को अधिकाधिक प्रभावशाली बनावे तथा उनके संकल्प को मूर्तिमान करें। साहूजी ने महासमिति का उत्तरदायित्व स्वीकार करते हुये एतदर्थ समाज से सम्पूर्ण सहयोग की कामना भी की थी। तब से आज तक आदरणीय साहू जी दिगम्बर जैन महासमिति के माध्यम से जैन समाज को मार्गदर्शन देते आ रहे हैं। उनके मार्ग निर्देशन मे समाज ने आशातीत सफलता प्राप्त की है। अन्य अनेकानेक सस्थाओ के अतिरिक्त श्रीमान साहूजी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी बम्बई के अध्यक्ष भी है।

—सुकुमार चन्द जैन

आध्यात्मिक सन्त

एलाचार्य श्री १०८ विद्यानन्द जी मुनि

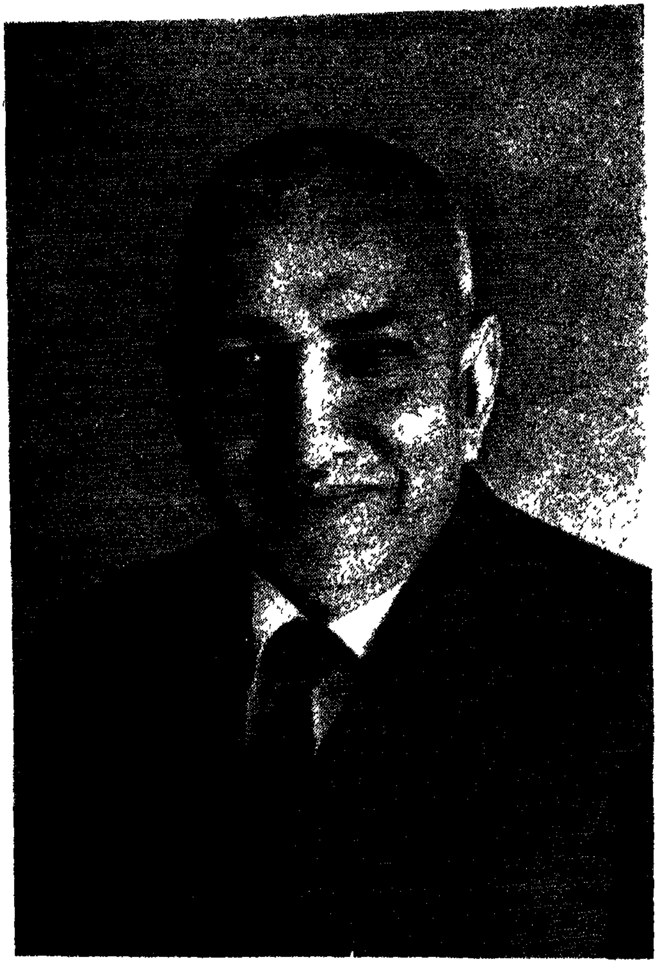

दिगम्बर जैन समाज के प्राण
स्व० साहू शान्ति प्रसाद जैन

साहू श्रेयांस प्रसाद जैन
अध्यक्ष दि० जैन महासमिति

श्री सुकुमार चन्द जैन
प्रधान मन्त्री दिगम्बर जैन महा समिति

आन्ध्र प्रदेश

आन्ध्र प्रदेश मे मौर्यकाल से पहले जैन-धर्म फैला हुआ था और बौद्ध-जातकों के अशोकीय अनुवाद पहुंचने से पूर्व वहाँ जैन-धर्म का सांस्कृतिक और मानवीय प्रभाव अपना कार्य कर रहा था। यह बात सुनिश्चित है कि अशोक ने कलिंग-विजय के पश्चात् बौद्ध-धर्म धारण कर लिया था। उसने युद्ध और आक्रमण के बदले मे अहिंसा और शान्ति की नीति को अपना लिया था। इस परिवर्तन के कारण तत्कालीन धार्मिक स्थिति मे परिवर्तन हुए हैं। भद्रबाहु श्रुत केवली की सघ सहित दक्षिण-यात्रा भी एक प्राचीन सत्य है।

राजा खारवेल के शिलालेख से स्पष्ट है कि मगध का राजा नन्द कलिग को जीत कर अग्रजिन की मूर्ति ले गया था। उससे स्पष्ट है कि नन्द राजा जैन था और वह मौर्यों का पूर्वज था।

पी० बी० देसाई ने लोकल कैफियतो के आधार पर आन्ध्र प्रदेश मे जैन-धर्म प्रसार के अनेक मुद्दे दिये है, उनमे से तीन मुद्दे यहाँ दिये जाते है।

(१) इतिहास के आरम्भिक-काल मे विजयापट्टम (विशाखापट्टनम) का प्रदेश जैन धर्म से प्रभावित था।

(२) गोदावरी जिले का जल्लूस स्थान एक उन्नतिशील जैन नगर था।

(३) गण्टूर जिले के एक गाँव की कैफियत से जान पडता है कि जैन राजाओ ने वहाँ बहुत समय तक राज्य किया है। उनके बाद मुक्कन्ती त्रिलोचन का शासन हुआ जो बौद्ध, जैन और आचार्यों का प्रबल शत्रु था। उसे अपने सम्प्रदाय का बडा मोह था। उसने जैन, बौद्ध और आचार्यों को विनष्ट किया। धरणीकोट और वरगल उसकी राजधानियाँ थी। उसने शक स० २२० (सन् २९८) तक राज्य किया है। मुक्कन्ती सस्कृत शब्द त्रिलोचन का तेलगु रूप है। इसके राज्यकाल मे रैंटूर गाँव के पडौस के कोडरा के पाई कामदा गाँव का जैन मन्दिर विवाद मे हार जाने के कारण विनष्ट किया गया।

इसमे कोई सन्देह नही है कि आन्ध्र प्राचीन समय मे जैन-धर्म का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

आन्ध्र के कुडप्पह और बीदर जिले मे अभी भी बहुत से पुरातन अवशेष मौजूद है। बीदर जिले के पास कुछ प्रतिमायें भग्न अवस्था मे विद्यमान हैं। सन् १९०३ मे भारत सरकार के पुरातत्व-विभाग की ओर से खुदाई हुई थी, उसमे महत्वपूर्ण सामग्री बहुत बडे परिमाण मे प्राप्त हुई थी। इसमे स्तम्भो पर उत्कीर्ण तीर्थंकरो और शासन-देवताओ की मूर्तियाँ तथा नशियाँ आदि थी। इनमे से कुछ के ऊपर आठवी व नवी शताब्दी के लेख है। यहाँ से प्राप्त दो वस्तुये ऐसी है जिनसे इस स्थान की अधिक प्राचीनता प्रमाणित होती है। यहाँ से खुदाई में ईंटो का बना एक कमरा निकला है जिसमे पार्श्वनाथ तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित है। ये ईंटें काफी बडे आकार की है और कृष्णा जिले के बौद्धस्तूप के खण्डहर से प्राप्त ईंटो से मिलती-जुलती है। आन्ध्र प्रदेश के कुछ सिक्के भी खुदाई मे प्राप्त हुए है। इससे जान पडता है कि यह स्थान लगभग तीसरी शताब्दी से जैन धर्म का केन्द्र रहा है।

कुडप्पा जिले के डोम्मर, नन्दमाल और जम्मल मुडगु के विवरणो से जान पडता है कि इस प्रदेश मे बसने वाले जैन गुरु थे। उन्होने जगल साफ किया और नये-नये निवास स्थानो की नीव रखी। प्रारम्भ मे ये गाँव के रूप मे थे तब उन्हे पल्ली कहा जाता था। समय पाकर वे बडे कस्बो के रूप मे परिवर्तित हो गये तब उन्हे बस्ती कहा जाने लगा। आन्ध्र प्रदेश मे जैन-धर्म ने कई प्रमुख भागों मे बड़ी उन्नति की। ईसा की प्रथम शताब्दियो मे बौद्ध-धर्म के प्रबल विरोध के कारण और ब्राह्मणो की बढती हुई शक्ति के कारण उसे पीछे हटना पडा और जैन धर्मानुयायियो को क्रूर उपद्रवो का पात्र भी बनना पडा। उनका पतन हुआ। आन्ध्र प्रदेश के

इतिहास के उत्तर-काल मे जैन लोगो का धार्मिक-उत्पीडन भारी परिमाण मे किया गया, तेलगु साहित्य से भी इसकी पुष्टि होती है।

तेलगु प्रदेश मे कोमटी एक प्रमुख व्यापारी जाति रही है जो अपने को धनद का उत्तराधिकारी मानते है। कहा जाता है कि धनद ने उन्हे जैन-धर्म का उपदेश दिया था। इस जाति के पूर्वज कर्नाटक से आकर बस गये थे, वे जैन थे और गोम्मटेश्वर की पूजा करते थे। अत उनका नाम गोमटी या कोमटी प्रचलित हो गया। उत्तर-काल में पश्चिम गोदावरी जिले का पेनुगोण्ड स्थान इस जाति का प्रमुख केन्द्र बन गया। इससे भी आन्ध्र मे जैन-धर्म के प्रभाव की पुष्टि होती है। आन्ध्र मे जैन-धर्म कलिग के माध्यम से पहुचा, यह शिलालेख से स्पष्ट है। सातवाहन राजाओ ने आन्ध्र के कुछ भागो पर ईसवी पूर्व तीसरी शताब्दी से ईसा की तीसरी शताब्दी तक राज्य किया है। यह बौद्ध-धर्म के समर्थक थे।

जिला अनन्तपुर—

इस जिले के ताडपत्रीय शिलालेख से स्पष्ट है कि इस स्थान पर जैन-मन्दिर और जैन गुरुओ की एक प्रभावशाली परम्परा थी। उन्होने इस प्रदेश के सामन्तो से संरक्षण प्राप्त किया था। शिलालेख का समय सन् ११९८ ई० है। उसमे उदयादित्य सामन्त के द्वारा मूल-सघ कुन्दकुन्दान्वय, देशीगण पुस्तकगच्छ और इगलेश्वर के विद्वान मेघचन्द्र को भूमि दान करने का उल्लेख है। मेघचन्द्र बाहुबली के प्रशिष्य और भानुकीर्ति के शिष्य थे। चन्द्रनाथ पार्श्वनाथ बसदि के पुरोहित थे।

गण्टूर जिला—

गण्टूर जिले के एक गाँव मन्तरावूर की कैफियत मे ज्ञात होता है कि जैन राजाओ ने उस प्रदेश पर बहुत समय तक शासन किया है। उसके बाद मुक्कदन्तीन्दा का शासन हुआ जिसने जैन-धर्म का विनाश किया। गण्टूर जिले तेनाली गाँव की किवदन्ती के अनुसार इस प्रदेश पर जैन-राजाओ द्वारा शासन करने के उल्लेख प्राप्त होते है परन्तु जैन-मन्दिरो का उल्लेख नही मिला। वे प्राचीन समय मे रहे है, पर उन्हे नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया।

हैदराबाद दक्षिण—

यह दक्षिण प्रान्त के नवाब निजाम साहब की रियासत की राजधानी का प्रसिद्ध शहर है। यह मूसा नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यह बडा रेलवे-स्टेशन है। इसका प्राचीन नाम भगानगर था। इसे कुतुबशाही खानदान के बादशाह मुहम्मद कुल्ली ने सन् १५८९ मे बसाया था। सन् १९०८ मे मूसानदी की भयकर बाढ मे शहर को बहुत क्षति हुई। शहर मे चार बडी-बडी मीनारे है जो देखने योग्य है, इन मीनारो के पास ही दिगम्बर जैन मन्दिर और धर्मशाला है। यहाँ खण्डेलवाल और अग्रवाल आदि जातियो के जैन लोग निवास करते है। शहर से डेढ मील की दूरी पर 'हुस्सेन सागर' तालाब है। मक्का मस्जिद, मीर आलम का तालाब, किला, गोलकुण्डा, राजमहल, रेजीडेन्सी आदि स्थान दर्शनीय है। हदराबाद मे जैन लोगो की अच्छी आबादी है। यहाँ पहले पानीपत निवासी अग्रवालो के जहाज चलते थे। वर्तमान मे यहाँ सम्पन्न लोग रहते है।

कुडुप्पा जिला—

आन्ध्र के कुडुप्पा जिले मे जैन-धर्म के पुरातन अवशेष पाये जाते है। इस जिले के दानवुल पाडु सन् १९०५ की खुदाई मे जैन-धर्म की अनेक महत्वपूर्ण प्राचीन सामग्री उपलब्ध हुई है। स्तम्भो मे उत्कीर्ण तीर्थंकर मूर्तियाँ, नशियाँ एव एक कमरा निकला जिसमे पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित है। अनेक लेख और आन्ध्र प्रदेश के कुछ सिक्के भी मिले है। गाँव का नाम 'दानवुलपाडु' है जिसका अर्थ असुरो का निवास स्थान किया गया है जो तिरस्कार का सूचक है। जैन-धर्म के पतन के बाद विरोधियो ने जैन-धर्म से सम्बन्ध के स्थानो के लिये तिरस्कृत शब्दो का प्रयोग किया। पास के एक गाँव का नाम देदगुडी है जिसका अर्थ देवताओ का स्थान होता है।

दानवुलपाडु स्तम्भो पर मूर्तियो के नीचे आसन और पत्थरो पर लगभग १ दर्जन शिलालेख उत्कीर्णित है जो आठवी शताब्दी और उसके बाद के है। दसवी शताब्दी के एक लेख मे राष्ट्रकूट नरेश नित्य वर्ष का उल्लेख है जिसे इन्द्र तृतीय अथवा कोट्टिग के नाम से पहचाना जा सकता है। एक अभिलेख मे सेनापति श्री विजय के समाधिमरण का उल्लेख है जो बडा योद्धा, विद्वान और जैन धर्म का कट्टर अनुयायी था।

कोण्डकुण्डे—

वर्तमान में कोण्डकुण्डल नामक गाँव गुण्टकल रेलवे स्टेशन से लगभग चार मील दूर है। यह अनन्तपुर जिले के गोटी तालुका में स्थित है। यहाँ के जैन अवशेष गाँव से उत्तर में दो फर्लांग की दूरी पर रसासिद्धुल गुट्ट नामक छोटी पहाडी पर मिलते है। 'रसासिद्धुल' का अर्थ है—रसायन बनाने वालो की पहाडी। इस पहाड़ी के ऊपर एक मन्दिर है, मन्दिर मे दो खडगासन-मूर्तियाँ विराजमान है। उनके सिर पर तीन छत्र और दोनो ओर दो शासन-देवता है जिनका समय स्थूल रूप से १३वी शताब्दी है। लोग तीर्थंकरो की मूर्तियो को रससिद्धो की मूर्तियाँ मानते है। जब कभी वर्षा नही होती या देर मे होती है तो लोग उनसे प्रार्थना करते है, उन्हे भेट चढाते है और वर्षा हो जाती है।

इसी पहाडी पर एक प्राचीन शिलालेख सातवी शताब्दी का है और दूसरा निसदि लेख दसवी शताब्दी का है जिसमे नागदेव की समाधि का उल्लेख है। एक १६वी शताब्दी के लेख मे वादि विद्यानन्द का उल्लेख है। एक शिलालेख गाँव मे आदि चेत्र केशव मन्दिर के सामने लगे पाषाण पर अंकित है उसमे इसे पद्मनन्दि भट्टारक की जन्मभूमि बताया है। साथ ही इसमे चरणो और कुककुन्दान्वय का भी उल्लेख है। इस पर पी० बी० देसाई का अनुमान है कि कोनकुण्डल कुन्दकुन्द आचार्य की भूमि है। उन्होने यह भी लिखा है कि इस स्थान मे फैली हुई जनश्रुति के अनुसार भी इस स्थान का सम्बन्ध कुककुन्दाचार्य के साथ सिद्ध होता है किन्तु अब वहाँ जैन-धर्म का कोई अनुयायी नही है।

कोटशिवपुर ता० मदाक्षिरा

इस गाँव के द्वार मण्डप के स्तम्भ पर एक लेख है जिसमे लिखा है कि राजा हरनाल की रानी अल्पद्री ने जैन दानशाला का जीर्णोद्धार कराया। यह कुन्दकुन्दाचार्य के एन्वय के काणूरगण के मुनियो की श्राविक शिष्या थी। वही दूसरा स्तम्भ लेख है। यहाँ काणूरवण के आचार्य पुष्पनन्दी के समय की निर्मित जैन वसदि (मन्दिर) है।

पटशिवपुरम ता० मदाक्षिरा—

इस गाँव के दक्षिण द्वार के एक स्तम्भ पर पश्चिमीय चालुक्य त्रिभुवन मल्ल वीर सोमेश्वर देव के (शक ११०७—सन् ११८५) का लेख है। जब यहाँ जैन-मन्दिर बनाया गया तब नियमसार की टीका के कर्त्ता पद्मप्रभ मलधारी और उनके गुरु वीर नन्दी सिद्धान्त चक्रवर्ती मौजूद थे। इस लेख की महत्ता इसलिये है कि उसमे पद्मप्रभ मलधारी देव की मृत्यु का उल्लेख है। शक ११०७ वि० फाल्गुन शु० ४ भरणी सोमवार को अर्थात् २४ फरवरी ११८५ ई० को उनकी मृत्यु हुई है जैसा कि श्लोक से स्पष्ट है—

"सक वर्ष सप्त खेंबु क्षिति ११०७ परमिति
विश्वावसु प्रान्त फाल्गुन्य,
कनच्चुधा चतुर्थी तिथियुत भरणी सोमवाराद्धं
राजा।
चिक नाडयेकात्य दोल्लु निर्मल मति मल्लम नाम
पद्मप्रभ पुस्तक,
गच्छं मूल संघं यतिपति नुत देसीगण मुक्तनादे॥'
(देखो साऊथ इण्डियन ऑफ जैनिज्म)

पश्चिमी चालुक्य राजा त्रिभुवन मल्ल जिनेश्वर के समय का शक स० ११०७ सन् ११८५ मे त्रिभुवन मल्ल भीमदेव होजिराज नगर पर शासन कर रहे थे।

पेनुकोण्डा—

जिनकाँची मे दो जैन मदिर हैं इनमे पहला मदिर जो छोटा है उत्तर पल्लव शैली मे बना हुआ है और भगवान चन्द्रप्रभ को समर्पित है। कहा जाता है कि इसे पल्लव नरेश नरसिंह वर्मन (द्वितीय) ने बनवाया था। प्रतिमा तल से १२ फुट की ऊँचाई पर दूसरी मंजिल मे स्थापित है, एक मूर्ति भगवान कुन्दुनाथ की पेराम्बूर से श्री बाबू जैन द्वारा प्रदान की गयी थी। दूसरा मन्दिर जो पहले मन्दिर से बडा है और पहले मन्दिर से लगा हुआ है वह भगवान वर्धमान (महावीर) को समर्पित है और स्थानीय बोल-चाल मे इसको तिरुपसन्ति कुवरम या अलवार मन्दिर कहते है। कहा जाता है कि इसे महेन्द्र वर्धन ने पूरा किया था। यह मन्दिर पूर्व चोल-शैली मे है तथा उसका मण्डप विजयनगर शैली मे है। मण्डप की छत और बरामदे मे तीर्थंकरो के जीवन चित्र अंकित है। वे चित्र

सित्तकासल शैली मे हैं। मन्दिर के मेरु निर्माण मल्लिषेण वामनाचार्य के शिष्य परवादीमल्ल पुष्पसेन ने कराया था। इन दोनों के चरणचिन्ह मन्दिर के बाहर कुयें के कक्ष के नीचे स्थापित है। सगीत मण्डप सेनापति इरुगप्प ने निर्माण कराया था। शिलालेखो से ज्ञात होता है पल्लव नरेश सिंह वर्मन ने एक गाँव और अन्य सम्पदा वर्धमान मन्दिर की पूजा के लिये वज्रनन्दी को भेट की थी। राजा आदित्य द्वितीय के त्रिलोकनाथ मन्दिर के सामने वाले बरामदे मे लगे शिलालेख के अनुसार विजयनगर नरेश कृष्णराय ने एक गाँव भेट किया था। राजा राज तृतीय ने वर्धमान मन्दिर मे प्रतिमा शुद्धि कराई थी। वर्धमान की प्रतिमा काञ्जीपुरम के श्री भुजगराव द्वारा सन् १७२२ मे लायी गयी थी और उसी समय से मन्दिर मे बराबर पूजन होता है

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं का नाम
(अ) अनन्तपुर	अमरपुरम ता० मदाक्षिरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अऊली ता० मदाक्षिरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोण्डकुण्डे	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोट शिवपुर ता० मदाक्षिरा	श्री दि० जैन बसदि	
	पेनूकोण्डा	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	रत्नागिरि	श्री दि० जैन मन्दिर	
(आ) गोदावरी	नेडूलूरु ता० आत्रेयपुरम	श्री दि० जैन मन्दिर (जल्लरु)	
		श्री दि० जैन मन्दिर (द्राक्षाराम)	
	पाचपुरम	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	पेढामुर्रु	श्री दि० जैन मन्दिर	
(इ) हैदराबाद	हैदराबाद	श्री भगवान महावीर खडेलवाल दि० जैन मन्दिर चादर घाट	श्री दि० जैन धर्मशाला केशरबाग आगापुरा
		श्री चन्द्रप्रभु खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर जैन फुलवारी केशर बाग आगापुरा	श्री दि० जैन धर्मशाला १४-६-३५८ केसर बाग
			श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	जैन भवन-महाराज गज
		श्री दि० जैन चैत्यालय	जैन भवन (धर्मशाला) रामकोट
		श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय जैन भवन महाराज गज	दि० जैन मन्दिर बेगम बाजार घास मण्डी
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पुस्तकालय, बेगम बाजार घास मण्डी
		श्री दि० जैन चैत्यालय	पूनमचन्द जैन धर्मशाला
		चन्द्रप्रभु खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर	काचिगुडा स्टेशन के सामने

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं का नाम
		श्री पार्श्वनाथ खडेलवाल दि० जैन मन्दिर बेगम बाजार १४-६-३२६ चूड़ी बाजार	
		श्री पार्श्वनाथ खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर, साहूकारी का खान पच भाई–अलावा मार्ग	
	हिंगोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
(ई) खम्माग	डोरनाकल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गरल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खम्माग	श्री दि० जैन मन्दिर	
(उ) महबूब नगर	जादचरला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महबूब नगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ऊ) विशाखापत्तनम	माचपुरम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मामिडिवाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पोट्टगी	श्री दि० जैन मन्दिर	

—:○:—

राज्य में जैन-धर्म के ऐतिहासिक प्रचार सम्बन्धी प्रमाण ईसा की १२वी शताब्दी से मिलते है। तत्पश्चात जैन धर्म का प्रभाव वहाँ क्षीण हो गया जान पड़ता है। वर्तमान मे राजस्थान तथा अन्य राज्यो के जैन धर्मावलम्बी यहाँ व्यापार एव नौकरी की वजह से बस गये है। अधिकतर जैन लोग वहाँ व्यापार ही करते हैं। कुछ लोगो के पास कोयले की खदाने भी है। यहाँ लगभग १५ हजार जैन निवास करते है। पहले डिब्रूगढ मे ही एक पचायती मन्दिर था किन्तु अब कई स्थानो पर जैन-मन्दिरो का निर्माण हुआ है। औषधालय-विद्यालय आदि जैन धार्मिक सस्थाये भी खुली है।

गोहाटी—

यह असम राज्य का प्रसिद्ध नगर है। यहा फैन्सी बाजार स्थित जैन मन्दिर मे २० मूर्तियाँ हैं और ४ चैत्यालय है जो क्रमश. रतन प्लेस, केदार रोड, पाण्डु और माली गाँव मे है जिनमे कुल २५ मूर्तियाँ विराजमान है। श्री चादमल जी पाण्डया सुजानगढ की धर्म पत्नी श्रीमती भवरी देवी जी पाण्डया द्वारा सस्थापित व सचालित एक दिगम्बर जैन विद्यालय फैन्सी बाजार मे है। महावीर कीर्ति सरस्वती प्रकाशन माला भी है।

असम

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ का नाम
(अ) दरग	खारु पेटिया घाट	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन स्कूल
	तेजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(आ) गोहाटी	आठ गाँव	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	फैन्सी बाजार	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन विद्यालय
	केदार रोड	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	माली गाँव	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	पाण्डु	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	रतन प्लेस पान बाजार	श्री दि० जैन मन्दिर	
(इ) ग्वाल पाड़ा	धुबड़ी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन औषधालय
(ई) कचार	सिलचर	श्री दि० जैन चैत्यालय	
(उ) काम रूप	नलबाड़ी	श्री दि० जैन मन्दिर	ऋषभदेव दि० जैन पाठशाला
	रगीया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टीहू	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरपेटा रोड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विजय नगर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन विद्यालय श्री दि० जैन औषधालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं का नाम
(ऊ) लखीमपुर	डकवा खाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डिब्रूगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लखीमपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तिनसुखिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ए) नौ गाँव	हैबर गाँव	श्री दि० जैन चैत्यालय	
(ऐ) शिव सागर	गोलाघाट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जोरहाट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शिवसागर	श्री दि० जैन मन्दिर	

—:○:—

अंग—

अंग मगध देश के पूर्व में था। आजकल के भागलपुर जिले और मुंगेर के समीप का प्रदेश पूर्वकाल मे अग जनपद कहलाता था। इसकी राजधानी चम्पा थी। प्राचीन भारत मे चम्पा एक सुन्दर, समृद्ध एव जनधन से सम्पन्न नगर था। भगवान महावीर और बुद्धकाल से पूर्व अंग एक शक्तिशाली जनपद था। चम्पा नगरी चम्पा नाम की नदी के पूर्व मे बसी हुई थी, जो अब भी भागलपुर मे चम्पानाला के नाम से प्रसिद्ध है।

कनिंघम ने भागलपुर मे २४ मील दूर पत्थर घाटा पहाडी के पास चम्पा नगर की स्थिति मानी है। यह गंगा तट पर अवस्थित है। प्राचीन काल मे यह बहुत समृद्ध नगर था और व्यापार का केन्द्र भी। महाभारत के अनुसार अग मे भागलपुर और मुंगेर सम्मिलित प्रतीत होते है उत्तर मे यह कोसी नदी तक फैला हुआ था। एक समय अग जनपद मे मगध भी सम्मिलित था और यह सम्भवत· समुद्र तक फैला हुआ था।

महाभारत से यह भी जान पडता है कि यहाँ के राजा अग के नाम के आधार पर इसका नामकरण अग किया गया था। रामायण के अनुसार यही पर क्रुद्ध शिव से भयभीत होने के कारण मदन भाग कर आया था। यहीं वह अपने शरीर को छोडकर अनग हुआ था। अत मदन के अग त्याग करने से यह प्रदेश अग कहलाया। सुमंगला विलासिनी मे बताया गया है कि इस प्रदेश मे अंग (अगा) नामक लोग रहते थे। इस कारण यह अग जनपद नाम से विख्यात हुआ। अग लोगो ने अपने शरीर की सुन्दरता के साथ यह नाम पाया था बाद मे धीरे-धीरे यह नाम रुढ हो गया।

बुद्ध पूर्वकाल मे राजसत्ता के लिए अग और मगध मे सघर्ष चलता था। श्रेणिक बिम्बसार अग और मगध दोनो का स्वामी माना जाता था। पालित्रिपिटक मे अग और मगध को एक साथ 'अग मगधा' द्वन्द समास मे प्रकट किया है।

श्रेणिक की मृत्यु के बाद कुणिक (अजातशत्रु) ने चम्पा को अपनी राजधानी बनाया था क्योकि पितृशोक के कारण राजगृह मे रहना उसे रुचिकर प्रतीत नहीं हुआ अतएव उसने चम्पा को राजधानी बनाया। भगवान महावीर ने चम्पा मे विहार किया था जब उनका समवशरण चम्पा मे पहुचा तब राजा अजातशत्रु ने उनका भक्तिपूर्वक वन्दन किया और धर्मोपदेश सुना। आचार्य जिनसेन ने आदिपुराण मे (१६, ५२, २६, ४७) अग देश उल्लेख किया है।

बिहार

चम्पा की रानी गग्गरा ने 'गग्गरा पोखरणी' नाम का एक तालाब खुदवाया था। जैनियो के १२ वे तीर्थंकर वासुपूज्य के गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान और निर्वाण ये पच कल्याणक हुए थे। वासुपूज्य स्वामी का मन्दारगिरि निर्वाण स्थल होने के कारण यह सिद्ध क्षेत्र के नाम से जैन-साहित्य मे उल्लिखित है। उस समय चम्पा नगर बहुत विस्तृत था। उसका विस्तार ४-८ कोस का बताया गया है। चम्पा के मनोहर उद्यान मे वासुपूज्य ने दीक्षा ली थी। यह उद्यान मदारगिरि का है। आचार्य गुणभद्र के अनुसार वासुपूज्य का निर्वाण मनोहर उद्यान मे भाद्रपद शुक्ला १४ के अपराह्न मे ६४ मुनियो के साथ हुआ था जैसाकि उत्तर-पुराण के निम्न पद्यो से स्पष्ट है—

> 'अग्र मन्दर शैलस्व सानुस्थान विभूषणे,
> वने मनोहरो द्याने पल्यङ्कासनमाश्रित.।
> मासे भाद्रपदे ज्योतले चतुर्दश्या पराह्न के,
> विशाखाया ययौ मुक्ति चतुर्नयनि संयत:॥'
>
> (उत्तर पुराण ५२/५२)

वर्तमान मे अनुश्रुति और मान्यता है कि चम्पा नाले मे वस्सुपूज्य भगवान के गर्भ और जनकल्याणक मनाये गये। मदारगिरि मे दीक्षा और केवल ज्ञान तथा चम्पापुर भगवान का निर्वाण हुआ बताया जाता है। इस सब

विवेचन से अंग देश और चम्पा नगरी का परिचय मिल जाता है।

मंदारगिरि पर पापहारिणी सरोवर पहाड़ की तलहटी मे है जिसे राजा आदित्यसेन की रानी कोनादेवी ने बनवाया था। आदित्यसेन सातवी शताब्दी में मगध का शासक था। पहाड़ी पर शिखरबद्ध एक दि० जैन बडा मन्दिर है। पो० आ० कोसी जिला भागलपुर मे वासुपूज्य के प्राचीन चरण स्थापित है। इसी बडे मन्दिर के निकट शिखरबद्ध एक छोटा मन्दिर है। इसमे तीन प्राचीन चरण युगल बने हुये हैं।

गया—

भारतीय साहित्य मे 'गया' का उल्लेख अनेक स्थानो पर हुआ है। वैदिक और बौद्ध वाङ्मय मे गया का उल्लेख प्रचुर मात्रा मे मिलता है परन्तु जैन-साहित्य मे कही भी 'गया' का उल्लेख उपलब्ध नही होता। हो सकता है कि बिहार प्रान्त रचित जैन साहित्य विनष्ट हो गया हो। गोरथगिरि और प्रवरगिरि की पर्वतमालाये आज कल बारबर पहाडियो के नाम से प्रसिद्ध है। गोरथगिरि का उल्लेख कलिंग सम्राट खारवेल के हाथी गुफा शिलालेख मे हुआ है। इससे उसकी प्राचीनता मे कोई सन्देह नही है। बारबर की पहाडियो मे उपलब्ध जैनावशेष और ब्रह्मयोनि पर्वत पर प्राप्त जैन चिह्नो से उसकी महत्ता का स्पष्ट बोध होता है। यह पूरा प्रदेश उत्तुंग पर्वत-मालाओ, सघन जगलो, गहरी घाटियो, नदियो और सरोवरो की भूमि होने के कारण प्राचीन ऋषि पुगव श्रमणो की एकान्त साधना का आकर्षण केन्द्र रहा है। हो सकता है कि परवर्ती काल मे गया प्रदेश विमक्त हो अतः गया के सम्बन्ध मे अन्वेषण होना चाहिये जिससे ऐतिहासिक तथ्यो द्वारा गया का प्रमाणिक इतिवृत्त प्रकाश मे आ सके।

वर्तमान गया नगर जैन समाज का प्रमुख केन्द्र है। इसके विकास एव उत्थान मे गया जैन समाज का सक्रिय सहयोग रहा है। नगर के मध्य मे जैन गर्ल्स हाई स्कूल, जैन गर्ल्स मिडिल स्कूल, जैन पाठशाला, जैन औषधालय, जैन स्वाध्याय मन्दिर, जैन ग्रन्थालय, वाचनालय, जैन छात्रवृत्ति फण्ड, जैन धर्मशाला और महावीर ब्लड बैंक जैसी उपयोगी सस्थायें स्थानीय जैन समाज की अभिरुचि का प्रमाण है।

गया जिले मे स्थित टिकारी, बंधुगंज, वारसलीगंज, चेरु आदि स्थानो के जैन मन्दिरों का उल्लेख यथास्थान किया गया है। गया के जैन समाज ने एक विशाल सभा-भनव का भी निर्माण किया है।

गिरीडीह—

बिहार प्रान्त मे गिरीडीह एक प्रमुख नगर है। यहाँ जैन-संस्कृति का अच्छा प्रभाव है। यद्यपि जैनियो की सख्या कम है केवल ८६ घर हैं जिनकी कुल जनसख्या ५६८ के लगभग है। यह मधुबन से १६ मील पूर्वोत्तर मे है। यहाँ दो दि० जैन मन्दिर हैं उनमे पचायती दि० जैन मन्दिर ५०० वर्ष से अधिक प्राचीन बताया जाता है जिसमे मूलनायक प्रतिमा आदिनाथ की है जो ३½ फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा है। मन्दिर नयनाभिराम है। दूसरा पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर है जो अत्यन्त सुन्दर है। उसमे दूसरे तीर्थंकर अजितनाथ और महावीर स्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यहाँ जैन-समाज मे शिक्षा का प्रचार करने के लिये दि० जैन बालिका विद्यालय और महिला शिक्षा मन्दिर है। दि० जैन विद्यालय आदि प्रमुख शिक्षण सस्थाये है। एक दि० जैन वाचनालय भी है। इलाज के लिये सेठ सागरमल जी पाण्ड्या द्वारा स्थापित जैन होम्योपैथिक दातव्य चिकित्सालय है। यात्रियो के ठहरने के लिये दुमजिली नई धर्मशाला है जिसमे १५ सुन्दर कमरे हैं अन्य प्रबन्ध भी अच्छा है।

इस जिले मे सम्मेद शिखर जैसा महान तीर्थ क्षेत्र है जिसका सक्षिप्त परिचय अलग लिखा गया है। इसके अतिरिक्त सरिया, गोमिया, साडन, पेटर बाजार, निमिया-घाट और पालगज आदि स्थानो के जैन मन्दिरादि का उल्लेख भी यथास्थान किया गया है।

ईसरी बाजार—

पूर्वीय रेलवे की ग्रेण्ड कार्ड लाइन पर विख्यात पारसनाथ स्टेशन है। गोमो जकशन एव हजारी बाग रोड के बीच में पारसनाथ रेलवे स्टेशन के नाम से विद्यमान ग्राम का नाम ही ईसरी बाजार है। श्री सम्मेद शिखर जी यहाँ से १६ मील दूर हैं। शिखर जी जाने के लिये यात्रियों को यहा ठहरना होता है।

ईसरी ग्राम मे स्टेशन से कुछ ही दूर सडक पर ही

एक बड़ी सुन्दर दि० जैन धर्मशाला है। यात्रियो की सुविधा के लिये धूप, पानी, रोशनी, बर्तन, टेलीफोन आदि सभी सुविधाओं की पूर्ण व्यवस्था है। धर्मशाला में एक जैन मन्दिर भी है इसे दि० जैन तेरापंथी कोठी कहते हैं। मन्दिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर की ३ फुट ऊँची पद्मासन है। कोठी की ओर से मधुबन आने-जाने के लिये एक गाडी का प्रबन्ध है। इसके अतिरिक्त यहा पर श्री दि० जैन उदासीन आश्रम, बीसपथी कोठी, महिलाश्रम आदि है। उदासीन आश्रम की स्थापना पूज्य क्षुल्लक श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी द्वारा हुई थी। पूज्य वर्णी जी ने अन्तिम समाधि तक यहाँ ही साधना की थी। आश्रम के अन्तर्गत एक सुन्दर भव्य मन्दिर, वर्णी स्मारक (स्तूप) सरस्वती भवन आदि विभाग है। महिलाश्रम मे भी एक विशाल एव सुन्दर दि० जैन मन्दिर है। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की पद्मासन लगभग ४½ फुट उन्नत दर्शनीय है। यहाँ महिलायें धर्म साधना करती है।

बीसपथी कोठी मे एक नया शिखरबन्द मन्दिर है। काले सगमरमर की ४ फुट ऊँची भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है। कोठी मे दुमजिली धर्मशाला है जिसमे सभी प्रकार की सुविधायें हैं। एक गाडी का भी प्रबन्ध है जो सम्मेद शिखर यात्रियो को ले जाती है और लाती है। यहाँ दि० जैन शिक्षण सस्थाओ मे श्री अजित प्रसाद मेमोरियल स्कूल, श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मिडिल स्कूल, पार्श्वनाथ दि० जैन बहुद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है। श्री गणेशवर्णी दि० जैन धर्मार्थ औषधालय है जिसमे नि शुल्क औषधियाँ वितरित की जाती है। सराक जैन छात्रो के लिये सराक जैन छात्रावास भी है। पारसवाणी मासिका का प्रकाशन भी होता है।

कोलुआ पहाड़—

गया से ३८ मील दूर कोलुआ पहाड है। यह पहाड हजारी बाग जिले की बतरा तहसील मे है। यहाँ पहुँचने के लिये ग्राण्ड ट्रक रोड पर डोभी पाचतरा से सडक है। बतरा के लिये हजारी बाग से ग्राण्ड ट्रक रोड पर स्थित चौपारन से सडकें हैं। गया से शेरघाटी हडरगज और लबारिया होकर भी मार्ग है किन्तु गया से हण्टरगज घघरी होकर सीधा मार्ग है। गया से डोभी ३२ कि० मी० और हण्टरगज से घघरी ८ किमी० है। पहाड की चढाई दो मील है। पहाड पर आदिनाथ भगवान की २½ फुट ऊँची सुन्दर मनोरम प्रतिमा है। भद्दिलपुर मे भगवान शीतलनाथ की जन्मभूमि है। वहाँ इनके दो कल्याणक हुए है। यह आजकल का भोदल ग्राम है। जिसे भट्टलपुर कहा जाता है।

मन्दारगिरि क्षेत्र—

बिहार प्रदेश के भागलपुर जिले मे भागलपुर से ४८ कि०मी० दूर मदारगिरि अवस्थित है। वहाँ रेल से, बस द्वारा भी जाया जा सकता है। बोमी के बस-स्टैण्ड से दि० जैन धर्मशाला २ फर्लांग दूर है। क्षेत्रीय कार्यालय से मन्दारगिरि पर्वत ३ कि०मी० दूर है।

मन्दारगिरि मे चम्पापुर का मनोहर उद्यान है जहाँ भगवान वासुपूज्य के दो कल्याणक हुये है—दीक्षा और केवलज्ञान। अतएव प्रागैतिहासिक काल से यह पर्वत तीर्थ माना जाता है। यह सेठ तिलकचन्द कस्तूरचन्द बारामती वालो का बनवाया हुआ कृष्ण और श्वेत पाषाण का एक दि० जैन मन्दिर है।

आगे चलने पर एक सरोवर मिलता है जिसे पापहारिणी कहा गया है। सम्भव है यह नाम भगवान वासुपूज्य के कारण मिला हो। मकर सक्रान्ति के दिन यहाँ वैष्णवो का मेला लगता है। यह सरोवर पहाड की तलहटी मे है। जिसे आदित्यसेन की रानी कोना देवी ने बनवाया था। आदित्यसेन सातवी शताब्दी मे मगध का शासक बन गया था। इससे स्पष्ट है कि उस समय भी अंग मगध के अधिकार मे था।

मिथिलापुरी—

विदेह मे स्थित मिथिलापुरी उन्नीसवे तीर्थंकर मल्लिनाथ और इक्कीसवें तीर्थंकर नमिनाथ की जन्मभूमि है। इन दोनो तीर्थंकरो के यहाँ गर्भ जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान से ४–४ कल्याणक हुये हैं। इनमे तीर्थंकर मल्लिनाथ ने विवाह नही किया था। वे बाल ब्रह्मचारी थे, उनकी गणना पचबालयतियो मे की गई है। नमिनाथ तीर्थंकर ने विवाह भी किया, भोग भी भोगे और

प्रव्रजित होकर तपश्चरण कर मुक्ति के पात्र बने। इस दृष्टि से मिथिला नगरी समादरणीय है। खेद है कि आज समाज इस क्षेत्र को सर्वथा भूल चुका है। इसलिये इसके उद्धार की ओर कोई योजना सम्भावित नहीं हुई। मिथिला में इस समय कोई स्मारक चिह्न नहीं रहा और न ही जैनियों का इस ओर ध्यान रहा है।

पाटलिपुत्र—

मगध की उत्तरकालीन राजधानी पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) थी। राजोद्यान के उगे हुए बहुसंख्यक पुष्पो के कारण इसके प्राचीन नाम कुसुमपुर पुष्पपुर और पुष्पभद्र थे। यूनानी इतिहासकार इसे पलिबोधा और चीनी यात्री पा-लिन-टू कहते थे। चीनी यात्री युवाव-च्वाङ्ग ने इस नगर की उत्पत्ति का रोचक पौराणिक कथन दिया है। कहा जाता है कि मगधराज अजातशत्रु (कूणिक) की मृत्यु हो जाने पर उदायि (४६७ ई०) को चम्पा मे रहना अच्छा नही लगा जब वह अजातशत्रु के शयनागार आदि स्थानो को देखता था तब रोने लग जाता था। मन्त्रियो ने उसे स्थान-परिवर्तन की सलाह दी। अतएव अपने दो मन्त्रियो को किसी योग्य स्थान को खोजने के लिये भेजा। उन्होने यहाँ एक पाटलिवृक्ष को देखकर पाटलिपुत्र नगर बसाया। बौद्धो के महाविश के अनुसार अजातशत्रु के मन्त्री सुबीध और वर्षकार ने वैशाली निवासी बज्जियो के आक्रमण से बचने के लिये इस नगर को बसाया था। इससे स्पष्ट है कि मगध नरेश अजातशत्रु ने इसका प्रथम सूत्रपात किया और उदायी ने इस नगर का निर्माण किया। मगध से वैशाली जाते समय बुद्ध ने अजातशत्रु के अमात्यो को नगरयापन करते हुए देखा था।

पाटलिपुत्र मूलत: मगध मे स्थित पाटलिग्राम नाम का एक गाँव था जो गगा के दूसरी ओर कोटिग्राम के सम्मुख था। यह मागधी गाँव राजगृह से वैशाली और अन्य स्थानो को आने-जाने वाले महापथ पर स्थित एक पडाव था। पाटलिग्राम के दुर्गीकरण से जिसे बुद्ध के जीवन-काल मे सुनीध और वर्षकार नामक मगध के यात्रियो ने प्रारम्भ किया था, पाटलिपुत्र महानगर की नीव पडी थी।

पाटलिपुत्र का निर्माण मगध देश की गगा, सोन और गडक नामक महानदियों के संगम के समीप हुआ था किन्तु सोन नदी अब वहाँ से कुछ पीछे हट गयी है। यह नगर व्यापार का बडा केन्द्र था। यहाँ से सुवर्णभूमि (बर्मा) तक व्यापार होता था। प्रस्तुत नगर ६०० फुट चौड़ी और ३० हाथ गहरी एक विशाल परिखा (खाई) से सुरक्षित था। मैगस्थनीज के अनुसार यह नौ मील लम्बा और १½ मील चौडा था। अतस्थ परिखा से २४ फुट की दूरी पर एक प्राकार था जिसमे ५७० बुर्ज और ६४ द्वार थे। इस नगर के चार द्वार थे जिनसे अशोक की दैनिक-आय चार लाख कहापण थी। सभा मे उसे नित्य एक लाख कहापण मिला करते थे।

फाह्यान ५वी शताब्दी मे पाटलिपुत्र आया था, वह उसकी गरिमा और महत्ता से प्रभावित हुआ था। वह लिखता है कि नगर के मध्य मे स्थित राज-प्रासाद और महाकक्ष भद्र थे। नगर मे महायान-धर्म का राधासामी नाम का एक ब्राह्मण आचार्य था। अशोक द्वारा निर्मित स्तूप के पार्श्व मे एक हीयमान विहार था। वहाँ के निवासी धनी, समृद्ध और धर्मात्मा थे।

चीनी यात्री युवामच्वाङ्ग सातवी सदी मे यहाँ आया था। उसने गगा के दक्षिण मे लगभग १० ली से अधिक परिधि वाला एक प्राचीन नगर देखा था जिसकी नीवें तब भी दृष्टिगोचर होती थी। यद्यपि नगर बहुत पहले ही वीरान हो चुका था जो प्राचीन पाटलिपुत्र नगर था। पाटलिपुत्र मे उत्तरकालीन शिशुनागो, नन्दो, मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त और अशोक की राजधानी थी किन्तु गुप्त सम्राट समुन्द्रगुप्त की विजयो के पश्चात् गुप्त-सम्राटो का वहाँ आवास नही रहा। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासनकाल मे एक जनसकुल नगर था। छठी शताब्दी मे हूणो के आक्रमण के समय भी वह नष्ट नही हुआ था। सातवी सदी मे हर्षवर्धन ने इसे पुन: स्थापित करने की चेष्टा नही की। पाटलिपुत्र जैन-धर्म और जैन-सस्कृति का केन्द्र रहा है। सस्कृत और प्राकृत साहित्य मे इसकी स्थापना और समृद्धि आदि का सुन्दर वर्णन दिया हुआ है। राज-गृह के बाद पटना को मगध की राजधानी बनने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है। १३वी शताब्दी के विद्वान यतिमदन कीर्ति ने शासन चतुस्त्रिंशिका मे पाटलिपुत्र मे गर्भगृह से पुष्पदन्त की मूर्ति निकली थी ऐसा १२व पद्य मे उल्लिखित किया है।

(१) पाटलिपुत्र की गणना सिद्ध क्षेत्रों मे की गयी है क्योंकि गुलनार पटना के कमल दह से मुनिराज सुदर्शन का निर्वाण हुआ है। वहाँ एक टीकटी मे उनके चरण स्थापित हैं। सामने दि० जैन मन्दिर और धर्मशाला हैं।

(२) जैन आगमो के उद्धार के लिये श्रमणो का प्रथम सम्मेलन हुआ था जिसे प्रथम वाचना का रूप दिया गया है।

(३) तत्वार्थाधिगम के भाष्यकार उमा स्वातिवाचक ने भाष्य की रचना पाटलिपुत्र मे समाप्त की थी।

(४) चाणक्य ने नन्द राजा का विनाश कर मौर्यवशी चन्द्रगुप्त को राजगद्दी पर बैठाया था। चाणक्य स्वय प्रधानमन्त्री बना था।

(५) महावीरि और सुतस्ति आदि श्रमणो ने विहार करते हुए यहाँ पदार्पण किया, ऐसा कहा जाता है।

(६) शकटाल मन्त्री के पुत्र स्थूलभद्र ने साधु दीक्षा लेने के बाद कोषा गणिका के यहाँ चातुर्मास किया था और अपने उपदेशो द्वारा उसे श्राविका बनाया था।

(७) नन्दिवर्धन कलिग को विजित कर वहाँ की ऋषभदेव की मूर्ति विजयचिह्न स्वरूप पाटलिपुत्र लाया था। वह प्रतिमा लगभग ३०० वर्ष तक पाटलिपुत्र मे रही। बाद मे कलिग सम्राट खारवेल उस मूर्ति को पटना से लाया था और बडे भारी महोत्सव के साथ उसे कलिग की राजधानी मे विराजमान की थी।

(८) स० १६८३ मे सागवाडा के भट्टारक सकलचन्द्र के शिष्य भट्टारक रत्नचन्द्र ने खडेलवशी हेमराज पाटली की प्रेरणा से सुभौमचन्द्री चरित्र की रचना पाटलिपुत्र मे गगा के तट पर सुदर्शन के जिनालय मे बैठकर की थी। उस समय के बादशाह सलीम (जहाँगीर) का शासन था जैसा कि उसके निम्न वाक्यो से प्रकट है—

> पत्तने पाटलिपुत्रे मगधान्तः प्रवर्तनी।
> स्वर्धुनी पार्श्वे सुदर्शनालय माश्रिते ॥२॥
> सलेमसाहिस द्राज्ये सर्व ममेच्छाधिपाधिपे।
> रक्षत्यभधराचक निर्जिता खिल विद्विषि।
> सुभौमचक्री चरित्र।

(९) भारत सरकार के पुरातत्व-विभाग द्वारा पाटलिपुत्र का अनुसधान किया गया। परिणामस्वरूप उत्खनन मे जो ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध हुई, लोहानीपुर से उपलब्ध जैन-मूर्तियो के गुप्तकालीन अवशेष जो चमकदार पालिश मे सयुक्त थे। अनेक सिक्के भी वहाँ प्राप्त हुये थे। इन सब उल्लेखो से पाटलिपुत्र की महत्ता का सहज मान हो जाता है।

पावापुरी—

'पावाए णिव्वुदो महावीरो' भगवान महावीर ने पावा से निर्वाण प्राप्त किया था। भगवान महावीर का निर्वाण कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के दिन प्रत्यूष काल मे स्वाति नक्षत्र मे हुआ था। आचार्य पूज्यपाद ने भगवान महावीर के निर्वाण के सम्बन्ध मे सस्कृति निर्वाण भक्ति मे उपयोगी सूचनायें अकित की है—

> पदमवन दीर्घि का कुल विविध द्रुम खण्ड मण्डिले रम्ये।
> पावा नगरोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः ॥१६
> कार्तिक कृष्णास्यान्ते स्वातावृक्षे निहत्य कर्म रजः।
> अवशेषं सम्प्रापद् व्यज रामरमक्षय सौख्यम् ॥१७
> परिनिर्वृत जिनेन्द्र ज्ञात्वा विबुधा ह्यथाशु चागम्य।
> देव तरु रक्त चन्दन काला गुरु सुरभिगो शीर्षैः ॥१८
> अग्नीन्द्राज्जित देह मुकुटानील सुरभि धूपवर माल्यैः।
> अभ्यर्च्य गणधरानपि गता दिव ख च वन भवने ॥१९

मुनिवर महावीर कमलवन से भरे हुए नाना वृक्षो से सुशोभित पावा नगर के मध्य उद्यान मे कार्योत्सर्ग ध्यान मे आरूढ हो गये। उन्होने कार्तिक-कृष्ण-पक्ष के अन्त मे स्वाति नक्षत्र मे अवशिष्ट सम्पूर्ण अघाति कर्म कलक का नाश कर अक्षय, अजर, अमर सौख्य प्राप्त किया। देवताओ ने जैसे ही भगवान का निर्वाण जाना वे तत्काल वहा पर आये और उन्होने पारिजात, रक्त चन्दन, कालागुरु तथा अन्य सुगन्धित पदार्थ धूप और माला एकत्रित किये। तब अग्नि कुमार देवो के इन्द्र ने मुकुट से अग्नि प्रज्ज्वलित करके जिनेन्द्र देह का सस्कार किया। देवो ने जलधरो की पूजा कर अपने-अपने स्थानो की ओर प्रस्थान किया। उस समय सुर-असुर द्वारा जलाई हुई देदीप्यमान दीपको की पक्ति से पावापुरी का आकाश जगमगा उठा था। उसी समय से ससार के प्राणी भक्ति से भरत-क्षेत्र मे प्रतिवर्ष समादरपूर्वक 'दीपमालिका द्वारा भगवान की पूजा करते है।' उसी समय मे दीपमालिका का उत्सव मनाया जाने लगा।

कहा जाता है कि पावा का वर्तमान मन्दिर (जल-मन्दिर) जहाँ चरण विराजमान हैं, वही बनाया गया था। पद्म सरोवर के मध्य मे टीले पर श्वेत सगमरमर का सुन्दर मन्दिर बना हुआ है। मन्दिर तक पहुचने के लिये लाल पाषाण-पुल बना हुआ है। इसी में भगवान महावीर के चरण-चिह्न विराजमान हैं।

राजगिर—

राजगिर एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ बीसवें तीर्थंकर मुनि मुव्रतनाथ के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान ये चार कल्याणक हुए हैं। यह पाटलिपुत्र (पटना) से ६० मील दूर स्थित है, इसे गिरिवज्र कहते हैं। रामायण काल मे भी इसे गिरिवज्र कहा जाता था। महाभारत काल मे यह जरासघ की राजधानी थी और गिरिराज के नाम से ख्यात था। यह पाँच पर्वतो के मध्य मे बसा हुआ था। इसे शिशुनाग वश के राजा शिशुनाग वश की राजधानी बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इसे पचशैलपुर और कुशान्तपुर भी कहा जाता था। भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध ने यहाँ अनेक चातुर्मास किये थे। यहाँ जैन, बौद्ध और हिन्दू-मन्दिर बहुत सख्या मे बने हुए हैं। अत इन सबका तीर्थस्थान माना जाता है। यह जैन श्रमणो की न केवल तपोभूमि ही रही अपितु सिद्धभूमि भी है। भगवान महावीर के प्रथम गणधर गौतम इन्द्रभूति, सुधर्मस्वामी, जम्बूस्वामी (अन्तिम केवली) और अनेक मुनि पुँजो की निर्वाण भूमि रही है।

राजगिर के पच पहाडो पर जैन-मन्दिर बहुत है। विपुलगिरि या विपुलाचल पर अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर का समवसरण सबसे पहले आया था। उनका पहला धर्मोपदेश कृष्णा-एकम के दिन प्रात काल अभिजित नक्षत्र मे हुआ था, इससे इस पर्वत की महत्ता स्पष्ट है। ऋषिगिरि पर अनेक साधुओ ने कर्मक्षय करने के लिये कठोर तप किया था।

वैशाली—

वैशाली एक प्राचीन ऐतिहासिक नगरी थी जिसे बाल्मीकि रामायण के अनुसार अलम्बुषा के पुत्र राजा विशाल ने बसाया था। अथवा दीवारो को तीन बार हटाकर विशाल करने के कारण इसका नाम वैशाली रखा गया। श्रीमद्भागवत् मे विशाल द्वारा वैशाली के बसाये जाने का उल्लेख है। आचार्य हेमचन्द्र ने धनधान्य से भरपूर विशाल नगरी को वैशाली माना है। वैशाली के अन्तर्गत परकोटे थे जैसा कि निम्न वाक्य से स्पष्ट है—

'वैशाली नगरं गावुत गावुतन्तरे तीहि पकारेहि परिपिरक्तं, तीसु ठानेसु गोपुर ट्टाल कोटक युक्ते।'

वैशाली नगर मे दो-दो मील पर (गावुत-गव्यूति) एक-एक परकोटा बना हुआ था और उसमे तीन स्थानो पर अट्टालिकाओ सहित प्रवेश द्वार बने हुए थे। सारे वज्जीसघ की राजधानी वैशाली थी। आजकल वह स्थान बसाढ नाम से प्रसिद्ध है। इसके आस-पास मीलों तक विस्तृत अवशेष पाये जाते हैं जो उसकी विशालता के सूचक है। बसाढ के आस-पास ही कुण्डपुर वाणिज्य ग्राम, कोलुआ, कूमन छपरा गादी आदि स्थान थे। वैशाली के उत्खनन से जो सीले, मुहरे प्राप्त हुई है उन पर वैशाली नाम अकित है।

मुजफ्फर जिले मे स्थित बसाढ ही वैशाली है। वैशाली कब बसाई गयी इसका कोई स्पष्ट उल्लेख देखने मे नही आता किन्तु वैशाली गणतन्त्र की स्थापना ईसा की छठी शताब्दी पूर्व हुई थी। वैशाली की उस मुहर मे कुण्डपुर का भी उल्लेख है।

वैशाली का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। विनयपिटक के अनुसार वैशाली मे ७७७७ प्रासाद, ७७७७ कूटागार, ७७७७ आरामगाह और ७७७७ पुष्करणियाँ थी। उस समय वैशाली जनधन से पूर्ण अत्यन्त समृद्धशाली नगरी थी। तिब्बत से प्राप्त कुछ ग्रन्थो के अनुसार वैशाली मे ७००० सोने के कलश वाले महल, १४००० चाँदी के कलश वाले महल और २१००० ताँबे के कलश वाले महल थे। इनमे उत्तम, मध्यम और जघन्य श्रेणी के लोग रहते थे।

नगर के मध्य मे एक पुष्करिणी थी जिसका जल अत्यन्त स्वच्छ था। उसमे लिच्छवियो के अतिरिक्त अन्य को स्नान करना वर्जित था। उसमे पशु-पक्षी भी प्रवेश नही पा सकते थे। उसमे ऊपर लोहे की जाली लगी हुई थी और चारो ओर पक्की प्राचीर बनी हुई थी। चारो दिशाओं मे द्वार और सीढियाँ बनी हुई थी। सारे वज्जी-

गण संघ की राजधानी वैशाली थी। लिच्छवी रूपवान, ओज और तेज से सम्पन्न थे। वे व्रात्य-क्षत्रिय थे। वे ब्राह्मण-धर्म के अनुयायी नही थे। वे अर्हन्तों और चैत्यो की पूजा करते थे। वे अनुशासनप्रिय थे। उनमे धर्म-वत्सलता थी और वे कलाप्रिय थे। पाँच रगो के वस्त्रा-भूषणो से अपने शरीर को अलकृत करते थे। उनकी सुन्दरता, अनुशासनप्रियता, धीरता और एकता, समुदारता आदि गुणो को देखकर महात्मा बुद्ध ने उन्हे त्रिदेशो-देवो की उपमा दी थी, उनकी परिषद को देव-परिषद बतलाया था। बुद्ध का वैशाली के प्रति विशेष अनुराग था, वहाँ उनका कई बार आना हुआ। वैशाली की गणिका द्वारा बुद्ध स्तूप का निर्माण करना और नगर के बाहर उनके चैत्यो का होना, लिच्छावियो की वेशभूषा और उदारता उनके गहरे आकर्षण का कारण थी।

भगवान महावीर का वैशाली से घनिष्ठ सम्बन्ध था। उनकी माता वैशाली गणतन्त्र के अध्यक्ष चेटक की पुत्री थी। उनका गोत्र विशिष्ट था। चेटक महावीर के नाना थे। महावीर का जन्म वैशाली के कुण्ड ग्राम मे हुआ था। लिच्छवी लोग पार्श्वनाथ के उपासक थे। वैशाली मे उनके अनेक चैत्य बने हुए थे। वैशाली की जनता महावीर का गुणगान करती थी। उनके अनेक चातुर्मास वैशाली में हुए थे। उनका समवसरण भी कई बार वहाँ पहुंचा था। उनके दिव्य उपदेश से जनता उनकी ओर केवल आकृष्ट ही नही थी वरन् उनके बतलाए हुए मार्ग का अनुसरण भी करती थी। बुद्ध की अपेक्षा महावीर का वैशाली मे बडा समादर होता था। वह नगर महावीर के चरण-रज से पवित्र था।

वैशाली की समृद्धि और महत्ता को देखकर 'अजात-शत्रु' के मुख मे पानी आ जाता था, उसके हृदय मे वैशाली की समृद्धि के प्रति ईर्ष्या थी। वह उस पर अधिकार कर अपनी समृद्धि को बढाना चाहता था। अत. उसने और उसके मन्त्री वर्षकार ने वज्जियो और लिच्छवियो मे कूटनीति से भेद डालकर उनकी एकता को भग करा जैसे-तैसे उस पर अपना अधिकार कर लिया और उसकी समृद्धि को धूल मे मिला दिया। यद्यपि उसके बाद भी वैशाली का अस्तित्व रहा परन्तु उसकी वैसी समृद्धि न हो सकी। आज भी उसके खडहर अपनी अवनति पर आँसू बहाते है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थायें
(अ) भागलपुर	अङ्ग	श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	भागलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर (कोतवाली के पास)	श्री दि० जैन धर्मशाला
	बोसी	श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर	श्री मदारगिरि जी सिद्ध क्षेत्र दि० जैन कार्यालय पो० आ० बोसी
	चम्पापुर क्षेत्र नाथनगर	श्री सिद्ध क्षेत्र पादु का मन्दिर नाथनगर श्री सिद्ध क्षेत्र वीसपथी मन्दिर नाथनगर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	मन्दारगिरि	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला पापछनी तालाब
			श्री दि० जैन मन्दिर शिखरघर
	सुजागज		दि० जैन सार्वजनिक पुस्तकालय
			श्री दि० जैन औषधालय जैन मन्दिर लेन
			श्री जैन नवयुवक सघ

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थायें
			श्री धीरज लाल जैन धार्मिक ट्रस्ट
			श्री वासुपूज्य दि० बालिका (महिला) विद्यालय जैन मन्दिर लेन
			वाद-विवाद परिषद
(आ) धनवाद	धरकेन्द्र	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जमशेदपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झरिया	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	कतरासगढ	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	खरखरी	श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	
	महेशपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पथरगढिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोकारो	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	चेरकी	श्री दि० जैन मन्दिर	दानुलय जैन दातव्य औषधालय
(इ) गया	गया	श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर	दि० जैन महिला शिक्षालय
		श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर	गजानन्द जैन दातव्य आयु० औषधालय
			जैन कपड़ वैक
			जैन पाठशाला
			जैन स्वाध्याय मन्दिर
			श्री दि० जैन धर्मशालाये
			श्री दि० जैन पुस्तकालय वाचनालय
			श्री दि० जैन सरस्वती भवन
			श्री दि० जैन विद्यालय
			श्री लादूलाल जैन विद्यालय रफीगज (गया)
	औरगाबाद गाँव	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	रफीगज	श्री दि० जैन शि० मन्दिर	
	टिकारी	श्री दि० जैन शि० मन्दिर	
	वारसलीगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ई) गिरिडीह	गिरिडीह	श्री दि० जैन पचायती मन्दिर	दि० जैन बालिका विद्यालय
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	दि० जैन भवन नई दुमजिली

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थायें
			दि० जैन विद्यालय
			महिला शिक्षा मन्दिर
			श्री दातव्य होम्योपैथिक चिकित्सालय
	ईसरी बाजार	श्री दि० जैन मन्दिर स्टेशन रोड महिलाश्रम	दि० जैन सरस्वती भवन
			कालूराम लक्ष्मी नारायण भवन उदासीन आश्रम स्टेशन रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर बीसपंथी कोठी	प० अजित कुमार जैन मेमोरियल
		श्री दि० जैन शि० मन्दिर, स्टेशन रोड तेरापंथी कोठी	स्कूल स्टेशन रोड
			रामनिवास कृष्णा पारसनाथ
		श्री दि० जैन शि० मन्दिर स्टेशन रोड	दि० जैन मिडिल स्कूल
			महिलाश्रम स्टेशन रोड
			रा० ब० हरखचन्दजी पाण्ड्या उदासीन आश्रम स्टेशन रोड
			वीतराग विज्ञान पाठशाला बीसपंथी कोठी
			श्री दि० जैन रामनिवास कृष्णा, जैन महिलाश्रम स्टेशन रोड
			श्री दि० जैन शान्ति निकेतन उदासीन आश्रम स्टेशन रोड
			श्री दि० जैन तेरापंथी कोठी स्टेशन रोड
			श्री दि० जैन बीसपंथी कोठी स्टेशन रोड
			श्री गणेशवर्णी दि० जैन धर्मार्थ औषधालय, स्टेशन रोड
			श्री गंगवाल भवन उदासीन आश्रम स्टेशन रोड
			श्री जोखीराम बैजनाथ धर्म-ध्यानाश्रम, उदासीन आश्रम स्टेशन रोड
			श्री पारसनाथ दि० जैन हा० सै० स्कूल स्टेशन रोड
			श्री रामनिवास कृष्णा जैन कालेज स्टे० रोड
			श्री सूरजमल बसन्ती लाल भवन, उदासीनाश्रम

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं का नाम
	मधुबन	अजितनाथ जिनालय	दातव्य धर्मार्थ औषधालय तेरापथी कोठी
		चन्द्रप्रभु जिनालय	दातव्य धर्मार्थ औषधालय
		नेमिनाथ चैत्यालय	बीसपथी कोठी
		नेमिनाथ जिनालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		पार्श्वनाथ जिनालय	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पुष्पदन्त जिनालय	
		सहस्त्रकूट चैत्यालय	
		समवशरण मन्दिर	
		शान्तिनाथ जिनालय	
		शान्तिनाथ जिनालय तेरापथी कोठी	
		श्री सम्मेदशिखर बीसपथी कोठी	
		विशाल दि० जैन मन्दिर	
	निमियाघाट	दि० जैन चैत्यालय	बीसपंथी कोठशिखर जी धर्मशाला
	पालगज	श्री दि० जैन शि० मन्दिर	
	पेटखार	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
	साडग	दि० जैन (नया) मन्दिर	
	सरियानगर	दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन धर्मशाला
		दि० जैन मन्दिर	दि० जैन कन्या पाठशाला
(उ) हजारी बाग	चौपारन	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन महिलामंडल
	हजारी बाग	श्री दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन रात्रि पाठशाला वटन बाजार
		श्री दि० जैन शिखरबन्द मन्दिर	गणेशवर्ती दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० होम्योपैथिक दातव्य चिकित्सालय वटन बाजार
			श्री दि० जैन भवन
			श्री दि० जैन भवन बड़ा बाजार
			श्री दि० जैन भवन बड़ा बाजार
			श्री दि० जैन कन्या पाठशाला
			श्री दि० जैन मध्य विद्यालय वटन बाजार

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			श्री जैन महिलाश्रम
			श्री वीर वाचनालय वटन बाजार
	इचाक	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इटखोरी	चैत्यालय (सेठ शिवकरण लाल गणपतलाल बडजात्या गृह)	
	झूमरीतलैय्या	श्री दि० जैन नया मन्दिर टकी रोड जैन मौहल्ला	श्री देशराज जगन्नाथ दातव्य औषधालय राजगढिया रोड
		श्री दि० जैन पुराना मन्दिर मेनरोड जैन मन्दिर गली	श्री दि० जैन दुमजिली धर्मशाला राजगढिया रोड
			श्री दि० जैन कन्या पाठशाला
			श्री दि० जैन पुस्तकालय राजगढिया रोड
			श्री जगन्नाथ जैन कालिज
	कोडरमा		श्री दि० जैन विद्यालय
			जैन कालिज
	रामगढ	श्री दि० जैन मन्दिर (दर्शनीय) मेनरोड	जैन लाइब्रेरी
			जैन सेवा समिति
			जैन तीर्थक्षेत्र
			महिला मण्डल
			सगीत कला केन्द्र
			श्री दि० जैन कालिज
			श्री दि० जैन मित्र सदन
			दि० जैन बाल मन्दिर
			श्री जैन धर्मशाला
			श्री जैन कन्या पाठशाला
			श्री जैन औषधालय
(ऊ) मुजफ्फरपुर	गोपालगज हथुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ए) मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	भगवान महावीर उच्च विद्यालय पर्यटन सूचना केन्द्र के सामने
			श्री वैशाली कुण्डपुर दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी मुजफ्फरपुर
	समस्तीपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सिवनी	श्री दि० जैन मन्दिर दरौली	श्री श्यामलाल जैन उच्चतर विद्यालय दरौली
	वैशाली	श्री दि० जैन मन्दिर (गधकुटी) बावन पोखर कुण्डपुर	प्राकृत और जैन धर्मशोध संस्थान
		पद्मावती चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला बामन पोखर
			श्री दि० जैन धर्मशाला राजमार्ग कुण्डपुर
(ऐ) मुगेर	हेनरी बाजार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुगेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ओ) नालन्दा	कुण्डलपुर	श्री दि० जैन शि० मन्दिर	श्री कुण्डलपुर जी अतिशय क्षेत्र दि० जैन कार्यालय
	नालन्दा		श्री दि० जैन धर्मशाला नालन्दा बौद्ध विद्यालय
	पावापुरी सिद्ध क्षेत्र	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	पावागिरि	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन आग जल मन्दिर	श्री महावीर दि० जैन औषधालय
		श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	श्री पावापुरी जी सिद्ध क्षेत्र दि० जैन कार्यालय
		श्री दि० जैन शिखरबंद मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबंद मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	
	राजगीर	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन सभा औषधालय राजगृह
			श्री केदार प्रसाद सरावगी
		श्री दि० जैन मन्दिर	धर्मार्थ हो० औषधालय
		श्री दि० जैन मन्दिर रत्नगिरि	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर रत्नगिरि	
		श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर "	श्री महावीर दि० जैन औषधालय
		श्री दि० जैन मन्दिर श्रमणागिरि	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर श्रमणगिरि	
		श्री दि० जैन मन्दिर "	श्री महावीर कीर्ति जैन
		श्री दि० जैन मन्दिर उदयगिरि	सरस्वती भवन
		श्री दि० जैन मन्दिर वैभारगिरि	
		श्री दि० जैन मन्दिर विपुलाचल	श्री राजगृह जी सिद्ध क्षेत्र
		श्री दि० जैन मन्दिर विपुलाचल	दि० जैन कार्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर "	
	विहारशरीफ	श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर लटेरी मुहल्ला	श्री बिहार मदिर जी जैन कार्यालय
(औ) नवादा	गुणावा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री प्राचीन जल मन्दिर	श्री गुणावा जी सिद्धक्षेत्र दि० जैन कार्यालय
	हसुआ	श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	श्री जैन नवयुवक मडल
	नवादा	श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	वारसलीगज	श्री दि० जैन शिखरबद मन्दिर	
(अ) पलामू	डालटनगज	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन भवन
			जैन प्याऊ बस स्टैंड पथ परिवहन निगम
			जैन युवा सगठन
			प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ दि० जैन मन्दिर
			प्राइमरी स्कूल जैन विद्या मन्दिर जैन मन्दिर रोड
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन होम्यो० चिकित्सालय
(अ·) पटना	एकगरसराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बाढ	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुलजारबाग	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	इस्लामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जयपालचंद जैन पाटलिपुत्र कालोनी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	कचौरी गली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कालीबीबी	श्री दि० जैन मन्दिर कटरा मन्दिर	

ज़िले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं का नाम
	कमलदह	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री कमलदह जी सिद्ध क्षेत्र, दि० जैन कार्यालय
	मीठापुर		श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला श्री जैन अग्रवाल होस्टल
	मुरादपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तमोलीगली	श्री दि० जैन पचायती विशाल मन्दिर	
	बडरोसराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोरीसराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विहारशहर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला (गली मे)
		श्री दि० जैन मन्दिर (गली मे)	श्री दि० जैन धर्मशाला
(क) पूर्णिया	किश्नगज	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन युवा मडल एव शाखा अ० भा० जैन युवा फेडरेशन
	ठाकुरगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ख) पुरुलिया	अनाई जामवाद	श्री दि० जैन पारसनाथ मन्दिर	
(ग) राची	अगासिया	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	चौकाहातु	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन विद्यालय
	हुरडी		श्री दि० जैन विद्यालय
	खूटी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	नवाडीह		श्री दि० जैन पाठशाला
	राची	श्री दि० जैन दुर्गाजिला मन्दिर	जैन ज्योति व सगीत कला केन्द्र रतनलाल सूरजमल दि० प्रा० स्कूल श्री अजीत जैन हो० चिकित्सालय श्री चान्दमल बाल मन्दिर श्री छगामल जैन स्मृति भवन श्री दि० जैन भवन श्री दि० जैन कन्या पाठशाला श्री दि० जैन वीर वाचनालय श्री जोखीराम मूलराज दि० जैन धर्मशाला
	तमाड	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	तिडाई	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन विद्यालय
	उरडी		श्री दि० जैन पाठशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बुंडू	श्री दि० जैन मन्दिर	
(घ) संथाल परगना	देवघर (वैद्यनाथ स्टेशन)	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	कनकोई पो० मिहिजाम	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ङ) सास	छपरा	दि० जैन मन्दिर दौलतगंज	श्री दि० जैन सरखमी धर्मशाला खनुआ रोड समीप कटरा बाजार
		श्री दि० जैन पचायती चैत्यालय कूटरा बाजार	श्रमण संस्थान (धर्मशाला) नन्दन पथ
	दहिया काटोला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दरौली	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन श्यामलाल हा० स्कूल
	हथुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मीरगज	श्री दि० जैन चैत्यालय	
(च) शाहबाद	आरा	श्री दि० जैन चैत्यालय	देवकुमार जैन ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट
		श्री दि० जैन मन्दिर	हरप्रसाद जैन हाई स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर महादेवा रोड	जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थागार
			श्री दि० जैन बाल विश्राम
			श्री जैन कन्या पाठशाला
			श्री दि० जैन कन्या सगीत पाठशाला
			श्री दि० जैन रात्रि पाठशाला
			श्री दि० जैन युवक सघ
			श्री हरप्रसाद जैन कालिज
			श्री जैन कन्या पाठशाला हा० स्कूल
			श्री जैन कन्या पाठशाला हा० स्कूल पुस्तकालय
			श्री जैन कन्या पाठशाला मिडिल स्कूल पुस्तकालय
	डालमियानगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर (देहरी ओन सोन)	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मसाढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
(छ) सिंहभूमि	अगसिया पो० टीकर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	चायबाण पो० टीकर	नवीन दर्शनीय दि० जैन मन्दिर	ज्ञानचन्द कॉमर्स कालिज
			सूरजमल जैन शिक्षा सदन
	देवलटाड पो० टीकर	श्री प्राचीन दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	निवाडी पो० टीकर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन हाई स्कूल
(ज) वर्दवान	दोहमानी	श्री दि० जैन मन्दिर	

—:O:—

अहमदाबाद—

अहमदाबाद को अहमद शाह ने बसाया था। इससे पूर्व इस नगर का नाम असावल था। यहाँ भीलराजा आशा का किला था। सन् १८०३ मे अहमदाबाद पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। यहाँ श्वेताम्बरो की अपेक्षा दिगाम्बर मत को मानने वाले जैन लोगो की सख्या बहुत कम है। शहर मे ४ दिगम्बर जैन मन्दिर है।

गिरनार—

भगवान नेमिनाथ के अतिरिक्त प्रद्युम्न कुमार शम्बुकुमार और अनिरुद्ध कुमार आदि बहात्तर करोड सात सौ मुनियों ने ऊर्जयन्तगिरि से सिद्ध-पद प्राप्त किया। अतएव यह सिद्धक्षेत्र है और सभी के द्वारा वन्दनीय है, इससे पर्वत की महानता और पवित्रता स्पष्ट है। इस मनोहर गिरिराज की वन्दना करके चित्त को अनूठी शान्ति प्राप्त होती है। यहाँ भगवान नेमिनाथ के दीक्षाकल्याणक, केवलज्ञान कल्याणक और निर्वाणकल्याणक हुए है प्रद्युम्न कुमारादि बहात्तर करोड सात सौ मुनियो का मोक्षस्थल है।

इस पर्वत की तलहटी मे दो दि० जैन मन्दिर और दि० जैन धर्मशाला है। बडी लाल दि० जैन कोठी है। जैन धर्मशाला मे एक हजार के लगभग यात्री ठहर सकते है। एक मन्दिर मुनि सुव्रतनाथ जी का है और दूसरे मन्दिर मे सन् १५१० का एकपत्र और सन् १५४८ की साहूजीवराज पापडीवाल द्वारा प्रतिष्ठित प्राचीन प्रतिमा है, शेष मूर्तियाँ अर्वाचीन हैं। मूलनायक भगवान नेमिनाथ की कृष्ण-पाषण की सन् १९४७ की प्रतिष्ठित प्रतिमा विराजमान है। धर्मशाला के ऊपर ही गगनचुम्बी ऊर्जयन्त गिरि अपनी निराली शोभा दर्शाता हुआ स्थित है।

धर्मशाला से पर्वत की चढाई का द्वार १०० कदम की दूरी पर है। यहाँ अंग्रेजी और गुजराती भाषा मे दो शिलालेख लगे हुए हैं उनसे जान पडता है कि जूनागढ के भूतपूर्व दीवान बेचहरदास बिहारीलाल उनके भाई और डाक्टर त्रिभुवनदास मोतीचन्द शाह के उद्योग से 'जूनागढ लाटरी' खोली गयी और उसमे जो रुपया एकत्रित हुआ उसमें से डेढ़ लाख रुपयो की लागत से काले पत्थर की मजबूत सीढियाँ गिरनार पर्वत की चारो टोको पर लगवायी गयी। इस द्वार से ही पर्वत पर चढने की सीढिया शुरु होती है।

हिंगणघाट—

यहाँ पर दो जैन मन्दिर है। इनमे से एक मन्दिर भगवान आदिनाथ के नाम से जाना जाता है। यह मन्दिर हिंगणघाट की पुरानी बस्ती मे नदी के पात्र से फर्लांगभर दूरी पर स्थित है। यह मन्दिर लगभग १५० साल पुराना है। मन्दिर किसने बनवाया, इसका कोई पता नही। मन्दिर का क्षेत्रफल लगभग ९००० स्क्वेयर फिट है। इसमे छोटी-बडी मिलाकर लगभग ३० मूर्तियाँ है। दूसरा मन्दिर हिंगणघाट की नयी बस्ती मे स्थित ७० साल पुराना है। यह मन्दिर स्वर्गीय सेठ चाँद मलजी दोशी (जैन) ने बनवाया। इसमे एक बडा सभा मडप भी है जिसका नाम सरस्वती भवन है।

यहाँ दिगम्बर जैन लोगो के लगभग ५० घर है। इनमे ६५ पुरुष, ५५ स्त्रियाँ एव १०५ बालक-बालिकाऐ है।

गुजरात

साबरकाँठा—

यहाँ चन्द्र प्रभुजी का एक मन्दिर है। यह मन्दिर कब बना उसकी कोई निश्चित दिनाङ्क नही मिलती है पर ऐसा माना जाता है कि यह मन्दिर प्राचीन ऋषभदेव (राजस्थान) बावन जिनालय से भी प्राचीन है। यहाँ मूलनायक चन्द्रप्रभु जी की प्रतिमा १९२८ की है। इस मन्दिर मे गर्भगृह के साथ नौ कमरे है। उन कमरो मे सब मिलाकर १५३ प्रतिमाऐ है। यहाँ पर जैनियो के केवल ६ घर है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) अहमदाबाद	अहमदाबाद		दि० जैन पाठशाला मुमुक्ष मण्डल
			दि० जैन पाठशाला वर्द्धमान सोसाइटी (जैन मन्दिर के पीछे)
			वीतराग विज्ञान पाठशाला
	रखीयाल		दि० जैन पाठशाला
			दि० जैन पाठशाला न्यालचन्द उगरचन्द
	वासणा चौधरी		दि० जैन पाठशाला
			दि० जैन पाठशाला नानाजवुन्दरा
(आ) अमरेली	अमरेली	श्री शान्तिनाथ दि० जैन मदिर कापड बाजार	दि० जैन पाठशाला श्री प्राण भाई देसाई
(इ) भावनगर	भावनगर	श्री सीमधर स्वामी दि० जैन मन्दिर जूनी मालक वाडी	सन्तोष बेन पाठशाला C/o दि० जैन मन्दिर हुमडका डेला
		श्री दि० जैन मन्दिर हुमडका डेला	सेठ धन जी पानाचन्द दि० जैन धर्मशाला, रेलवे स्टेशन के पास
			सेठ त्रिभुवन दास दयाल जी विद्यार्थी फण्ड ट्रस्ट C/o दि० जैन मन्दिर, हुमडका डेला
	घोघा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोनगढ	भगवान सीमधर स्वामी का जिन मन्दिर	ब्रह्मचर्याश्रम
		भगवान सीमधर स्वामी का मान स्तम्भ मन्दिर	दि० जैन मुमुक्ष मण्डल पाठशाला
		भगवान सीमंधर स्वामी का समवसरण मन्दिर	दि० जैन स्वाध्याय मन्दिर पुस्तकालय, वाचनालय,
		भगवान श्री महावीर स्वामी का जिनबिम्ब	जैन अतिथि सेवा समिति दि० जैन धर्मशाला
		जैन स्वाध्याय मन्दिर	जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट जैन विद्यार्थी गृह
		श्री वर्द्धमान कुंदकुंद परमागम मन्दिर	श्राविका ब्रह्मचर्याश्रम
			शत्रुंजय जी सिद्ध क्षेत्र भावनगर
(ई) जामनगर	जामनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(च) जूनागढ़ गिरनार	जूनागढ़		श्री गिरनार जी सिद्ध क्षेत्र
(ऊ) महसाणा	तारंगाजी		दि० जैन धर्मशाला
			दि० जैन धर्मशाला
			श्री तारंगा जी सिद्ध क्षेत्र
	सुदासना	दि० जैन ज्ञान मन्दिर	
(ए) पंचमहाल	पंचमहाल		पावागढ सिद्ध क्षेत्र पचमहाल
	बडी आ	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ऐ) राजकोट	राजकोट		दि० जैन मुमुक्ष मण्डल पाठशाला
			पचनाथ प्लोट सदर बाजार
		वाकानेर	दि० जैन पाठशाला
		विछिया	दि० जैन पाठशाला
(ओ) साबरकाठा	बडोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडेसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मद्रेसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भालौडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भुनाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिथौडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चोटासन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फतेपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिम्मतनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ईडर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जादर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामबुडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कडिआदरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोटडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	माडवी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुडेटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पोशीना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	प्रांतिज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साबली	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सलाल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टाकाटुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तलोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टोरडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विजयनगर	श्री १००८ आदिनाथ भगवान मन्दिर	दि० जैन पाठशाला तथा कन्याशाला
	मोरीवाड	श्री दि० जैन मन्दिर	
(औ) सुरेन्द्रनगर	सुरेन्द्रनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	

— ○ —

फर्रुखनगर

यह कस्बा गुडगाँव जिले मे दिल्ली से ३३ मील की दूरी पर बसा है। वि० स० १७७१ ज्येष्ठ को १ को फौजदार खाँ बिलोचया ने फर्रुखशेर बादशाह के दिल्ली के शासन में लाला सीताराम जी जैन की सहायता से बसाया था। इस कारण लाला सीताराम की बादशाही-दरबार मे बडी प्रतिष्ठा थी। इस कार्य की सफलता से उन्हें चौधरी का पद मिला था। फौजदार खाँ का नाती ईशेरखाँ जवाहरसिंह भरतपुर के जाट राजा के साथ लडाई मे पकडा गया और १२ वर्ष बन्दीगृह मे रहा, फिर भरतपुर के राजा के कारिन्दा लाला खुशालराय खण्डेलवाल जैन शासन-कर्त्ता नियत हुए। उन्होने फर्रुखनगर के जैन मन्दिर को अत्यन्त उन्नत और मनोरम बनवा कर धर्म-प्रभाव स्थापित किया, उस समय फर्रुखनगर का नाम जवाहरगढ रखा गया।

वि० स० १९१४ सन् १८५७ ई० के गदर मे नवाब फौजदार खाँ का सत्वाधिकारी नवाब अहमद अली खाँ को ब्रिटिश गवर्नमेंट के विरुद्ध होने के कारण फाँसी लगाई गई। और फर्रुखनगर को गुडगाँव मे शामिल कर लिया गया। नगर को बसाने मे जैनियो का हाथ होने से यहाँ जैन लोग मुखिया रहे। अग्रेजी राज्य मे चौधरी का पद मोतीदास को—पाँचवी पीढी मे चौधरी माणकचन्द, छठवी पीढी मे चौधरी मूलचन्द को चौधरात का पद अग्रेजो ने सम्मानपूर्वक दिया था। इससे जैन समाज का वहाँ पूर्ववत सम्मान बना रहा।

वि० स० १९३७ मे जैन पचो ने सोत्साह रथ यात्रा निकाली थी। जैनेत्तर लोगो ने विघ्न करना चाहा था, परन्तु असफल रहे। नगर मे जियालाल जी अच्छे ज्योतिषी और वैद्य थे। उनकी उपाधि आयुर्वेद मार्तण्ड थी। वे चौधरी माणकचन्द जी के पौत्र और सुमेरचन्द के पुत्र थे।

यहाँ का शिखरबन्द मन्दिर दो चौक का है, मूलनायक प्रतिमा शीतलनाथ जी की है। स० १९५२ में जियालाल जी ने एक चैत्यालय बनवाया था और उसकी प्रतिष्ठा घूमधाम से की थी। सन् १८८४ मे 'जैन प्रकाश' नाम का पत्र निकाला था। उनका निर्मित पचाङ्ग बराबर प्रकाशित होता है जिसका सचालन इनके सुपुत्र शिखरचन्द जी करते है।

हरियाणा

रेवाड़ी—

रेवाडी जिला गुडगाँव मे तहसील का सदर स्थान है। महेन्द्रगढ जिले मे दिल्ली से ५२ मील दक्षिण-पश्चिम मे छोटी लाइन का मुख्य जकशन है। यह कस्बा बहुत पुराना है। सन् १००० ई० मे राजा रेवत ने इसे बसाया था। अपनी पुत्री रेवती के नाम से इसका नाम रेवारी या रेवाडी रखा। इसकी आबादी ६०,००० के लगभग है। बस्ती सघन बसी हुई है। कस्बे मे गेहू, जौ, चना, लोहा, नमक और चीनी आदि का व्यापार होता है। यहाँ कासे और पीतल के अच्छे बर्तन बनते है। यहाँ जैनियो के २०० से भी अधिक घर है। यहाँ लाला मक्खनलाल जैन अग्रवाल सम्पन्न व्यक्ति थे। वे आनरेरी मजिस्ट्रेट, बैंकर, म्यूनिसिपल चेयरमैन भी रहे है। वे सबरजिस्ट्रार और नम्बरदार भी थे। उनकी हवेली के पास ही जैन मन्दिर है। कस्बे मे तीन शिखरबन्द मन्दिर और एक चैत्यालय उक्त लालाजी की हवेली के समीप है। नगर के बाहर आधा मील की दूरी पर जिन मन्दिर नशियाँ जी है। इसमे एक धर्मशाला भी है। १२ बीघा जमीन मन्दिर के नाम लिखकर मन्दिर पचायत के नाम सुपुर्द कर दिया था। नगर के मन्दिर से मगशिर बदी ५ के दिन जैन-रथोत्सव भी निकलता है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) अम्बाला	अम्बाला छावनी	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन दवाखाना
			जैन गर्ल्स हाई स्कूल
			जैन होम्योपैथिक दवाखाना
			जैन मिडिल स्कूल
			श्री दि० जैन धर्मशाला
	अम्बाला शहर	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन (पोस्ट ग्रेजुएट) कालिज
			जैन सेवक सघ
			जैन युवक सेवा सघ
			काशीराम जैन गर्ल्स हाई स्कूल
			एस ए जैन कालिज
	जगाधरी	श्री दि० जैन मन्दिर चौक ब्राह्मणान	अखिल भारतवर्षीय दि० जैन युवा परिषद
		श्री दि० जैन मन्दिर, जैन नगर	भगवान महावीर दि० जैन गर्ल्स हा० स्कूल महावीर मार्ग
			भगवान महावीर दि० जैन शिक्षा समिति
	कालका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कसना बूडिया (त० जगाधरी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साढौरा	श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ जैन मन्दिर	
	यमुनानगर	श्री दि० जैन मन्दिर, कैनाल रेस्ट-हाउस रोड, यमुनानगर	
(आ) चण्डीगढ	चण्डीगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
(इ) फरीदाबाद	पलवल	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन महिला सिलाई केन्द्र
			जैन नवयुवक मण्डल
			श्री दि० जैन पुस्तकालय
(ई) गुडगांवा	बादशाहपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन नशिया जी	
	बल्लभगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फर्रुखनगर	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	फिरोजपुर झिरका	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुड़गांव	श्री दि० जैन नशियाजी बसई रोड	भगवान महावीर पार्क

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	दि० जैन बारादरी
	हेली मण्डी (पाटौदी)	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन औषधालय
	होडल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झाडसा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला छावनी रोड़
	पांडीखेड़ा	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	नगीना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नूह	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	पलवल	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन पुस्तकालय
		श्री दि० जैन नशिया जी	जैन महिला सिलाई केन्द्र
			जैन नवयुवक मण्डल
	रेवाडी	श्री दि० जैन बडा मन्दिर	अ० भा० दि० जैन परिषद
		श्री दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन महासमिति इकाई
		श्री दि० जैन कुई वाला मन्दिर	जैन बाल प्राइमरी पाठशाला
			जैन गर्ल्स हाई स्कूल (बडा मन्दिर)
		श्री दि० जैन नया मन्दिर	जैन गर्ल्स प्राइमरी पाठशाला
		श्री दि० जैन नशिया जी	जैन हाई स्कूल नशिया जी
			जैन मिलन
			जैन औषधालय
			जैन पुस्तकालय
			श्री दि० जैन धर्मशाला
	बंचारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(उ) हिसार	भिवानी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	हाँसी	श्री दि० जैन चैत्यालय मुहल्ला कानूनगो	दि० जैन धर्मशाला, किला बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय सदर बाजार	नमिसागर जैन धर्मार्थ औषधालय
		श्री दि० जैन बडा मन्दिर किला बाजार	श्री दि० जैन वाचनालय किला बाजार
	हिसार	श्री दि० जैन मन्दिर दिल्ली गेट, गांधी चौक	अ० भा० दि० जैन परिषद, युवा फेडरेशन
		श्री दि० जैन मन्दिर जहाजपुल कोठी	दि० जैन धर्मशाला, नागौरी गेट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन पंचायती बड़ा मन्दिर, नागौरी गेट	दि० जैन महासमिति इकाई
			जैन गर्ल्स हाई स्कूल
			जैन महिला समाज
			नमिसागर जैन धर्मार्थ औषधालय नागौरी गेट
			श्री नमिसागर जैन धर्मार्थ औ० (शाखा) श्री दि० जैन मन्दिर
	सिरसा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ऊ) जीन्द	जीन्द	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन फी आई धर्मार्थ हस्पताल
			जैन सिलाई-कढाई केन्द्र
			श्री महावीर जैन गर्ल्स हाई स्कूल
			श्री महावीर जैन पुस्तकालय, जैन गली
			श्री महावीर जैन सभा
(ए) करनाल	करनाल	श्री दि० जैन मन्दिर मिटठल मुहल्ला	भगवान महावीर जैन कीर्ति स्तम्भ
			जैन हाई स्कूल, रेलवे रोड
			जैन नवयुवक मण्डल
			जैन औषधालय
			जैन पुत्री पाठशाला, मिट्ठल मुहल्ला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
	पानीपत	दि० जैन छोटा मन्दिर जैन स्ट्रीट	दि० जैन धर्मार्थ औषधालय जैन स्ट्रीट
		प्राचीन दि० जैन बडा मन्दिर	दि० जैन शास्त्र भंडार-वाचनालय जैन स्ट्रीट
		श्री दि० जैन चैत्यालय अग्रवाल मण्डी	जैन हाई स्कूल, जी० टी० रोड
			जैन कन्या पाठशाला जैन स्ट्रीट
			श्री दि० जैन धर्मशाला जैन स्ट्रीट
	राजामण्डी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ऐ) महेन्द्र गढ	धारुहेड़ा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन नशियां जी	श्रीमती कपूरीदेवी जैन शिशुशाला
	महेन्द्रगढ	दि० जैन बडा मन्दिर	अ० भा० दि० जैन परिषद
		दि० जैन चैत्यालय, जैनपुरी	दि० जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		दि० जैन मन्दिर, नया भगवान महावीर मार्ग	दि० जैन महा समिति हरियाणा
		दि० जैन मन्दिर पचायती (कुई वाला) जैनपुरी	दि० जैन औषधालय
			दि० जैन पुस्तकालय
		दि० जैन नशियाजी (शान्तिनाथ मन्दिर)	दि० जैन उदासीनाश्रम
			जैन बॉयज प्राइमरी स्कूल
			जैन गर्ल्स हाई स्कूल
			जैन गर्ल्स प्राइमरी स्कूल
			जैन हाई स्कूल नशिया जी
			जैन मिलन
			जैन वीर सेवा दल
	नारनौल	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ओ) रोहतक	बहादुरगढ	श्री दि० जैन मन्दिर (मण्डी)	
		श्री दि० जैन मन्दिर (शहर)	
	भटगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गनौर मण्डी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	गोहाना	श्री दि० जैन मन्दिर (नवीन) बाजार वाला	जैन धर्मशाला (आ० दि० जैन मन्दिर)
		श्री दि० जैन मन्दिर, मुहल्ला सराय	लाला बिच्छा लाल जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर होली मुहल्ला	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन हा० स्कूल एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर
			श्री दि० जैन कन्या मा० विद्यालय
			श्री दि० जैन पाठशाला
			श्रीमती मैना देवी जैन धर्मशाला
			श्रीमती मनोहरी देवी जैन धमार्थ होम्योपैथिक औषधालय
	झज्जर	श्री दि० जैन मन्दिर देहली गेट	जैन नवयुवक मण्डल
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	रोहतक	चौडला मन्दिर समीप बस अड्डा	अ० भा० जैन युवा परिषद
		श्री दि० जैन मन्दिर, मौ० बाबरा	भगवान महावीर पार्क

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर मौ० पिथुवाड़ा	दि० जैन क्लब जती जी झज्जर रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर मौ० सराय	जैन धर्मार्थ औषधालय बड़ा बाजार
		श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय बगीची ला० नन्दलाल कपूरचन्द	जैन धर्मशाला मु० बावरा
		श्री वर्धमान चैत्यालय बा० हरद्वारी मल, अनाज मंडी	जैन कन्या उच्च विद्यालय
			जैन कीर्तन मण्डल
			जैन मित्र मिलन
			जैन पुस्तकालय, वाचनालय मु० बावरा
			जैन पुस्तकालय-वाचनालय मु० पिथुवाडा
			जैन उच्च विद्यालय, बड़ा बाजार
			जोताराम जैन गर्ल्स हाई स्कूल मु० बावरा
			ला० अनुपमसिंह ट्रस्ट, अनाज मण्डी
			ला० कपूरचन्द फतेहचन्द जैन ट्रस्ट धर्मशाला, रेलवे रोड
			मा० शिवराम सिंह जैन शिवराम पुष्पाजी मु० सराय
			प्यारेलाल रुलिया राम जैन धर्मार्थ औषधालय, मु० बावरा
			श्री जैन जति जी आम्नाय झज्जर रोड
			श्रीमती मिसरी बाई ट्रस्ट सिविल रोड
			श्री बिशन स्वरूप ट्रस्ट रेलवे रोड
			एस० एस० जैन लाइब्रेरी, मु० बावरा

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	समालखा मण्डी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(औ) सोनीपत	गोहाना	श्री दि० जैन मन्दिर होली मुहल्ला	अ० भा० दि० जैन युवा परिषद शाखा
		श्री दि० जैन मन्दिर मेन बाजार	श्री दि० जैन धर्मशाला चेतनदास मु० सराय
			श्री दि० जैन धर्मशाला गज मुहल्ला
		श्री दि० जैन मन्दिर (मण्डी वाला)	श्री दि० जैन हाई स्कूल एण्ड ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट
		श्री दि० जैन मन्दिर मु० सराय	
			श्री दि० जैन कन्या माध्यमिक विद्यालय
			श्री दि० जैन महासमिति इकाई
			श्री दि० जैन शिक्षा प्रचारिणी सभा
			श्री मोतीराम कुन्दनलाल दि० जैन धर्मशाला
			श्रीमती मनोहरी देवी जैन धर्मार्थ औषधालय
	सोनीपत	श्री दि० जैन बडा मन्दिर	चतरसेन जैन धर्मशाला देवीपाडा
		श्री दि० जैन चैत्यालय देवीपाड़ा	श्री दि० जैन धर्मशाला मु० फलसा
		श्री दि० जैन मन्दिर मु० चौधरी	चुन्नीलाल नन्दकिशोर जैन सर्राफ धर्मशाला, गोहाना रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर फलसा	श्री दि० जैन पुस्तकालय एव वाचनालय
			हस्तलिखित शास्त्र भण्डार (दि० जैन मन्दिर)
			जैन गर्ल्स स्कूल, गज बाजार

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			जैन नवयुवक मण्डल सभा, सोनीपत मंडी
			जैन सांस्कृतिक सभा
			जैन विद्या मन्दिर स्कूल
			नेमिसागर जैन कन्या पाठशाला
			पारस दास जैन धर्मशाला (बाजार)
			श्री जैन मित्र मण्डल

—:○:—

हिलाचल प्रदेश का सम्पूर्ण क्षेत्र हिमालय पर्वत मे स्थित है। सम्पूर्ण देश वनो से आच्छादित है। पहाड़ी ढालों पर चाय की खेती होती है। ग्रामीण उद्योगों में भेड पालना, लकडी पर नक्काशी करना उल्लेखनीय है। यातायात के साधनो की अभी इस राज्य मे कमी है।

हिमाचल-प्रदेश

नयी सडको का निर्माण हो रहा है। शिमला यहाँ की राजधानी है। मनाली, धर्मशाला, कुल्लू तथा कांगडा स्वास्थ्यवर्धक पर्वतीय नगर है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
सिरमोर	नाहन	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन धर्मशाला
	कालका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चण्डीगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	शिमला	श्री दि० जैन मन्दिर मिडिल बाजार	दि० जैन सभा शिमला न० १
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन सभा, लोअर बाजार, शिमला न० १
			श्री दि० जैन होम्योपैथिक धर्मार्थ औषधालय शिमला १
			श्री दि० जैन वाचनालय
			श्री दि० जैन सभा

—:O:—

केरल

'केरल' तमिलशब्द 'चेरल' का कन्नड रूप है। यह देश दक्षिण-भारत में स्थित है वैयाकरण पाणिनिये अष्टाध्यायी (४,१,१७५) में इसका उल्लेख किया गया है। इस देश को चेरलम् या चोलनाडु कहा जाता था। चेरडम का अर्थ पर्वतमाला है। केरल देश ही चेर है। (सा० इ० इ०) पृष्ठ (५१, ५६, ८६, ६०, ६२, ६४) वर्तमान मालावार, कोचीन और त्रावणकोर केरल देश में सम्मिलित थे। दक्षिण का मालावार प्रान्त केरल जनपद कहा गया है। इसी जनपद मे कोंकण के दक्षिण भाग मे गोकर्ण क्षेत्र से कन्याकुमारी तक का क्षेत्र अन्तर्मुक्त होना था। डा० सरकार के अनुसार मलयालम भाषी समस्त भूभाग केरल जनपद है। जिन सेवा चार्य के आदि पुराण में केरल की समृद्धि का वर्णन है। सेन सुत्रवत केरल का प्रथम उल्लेखनीय राज्य था। कुछ समय के लिये दक्षिण का आधिपत्य चेरो ने चोलो से छीन लिया था। केरल के कल्लीकोट जिले के कस्बो या ग्रामो मे जो जैन-मन्दिर पाये जाते है उनसे स्पष्ट है कि केरल मे जैन-धर्म का अच्छा प्रचार रहा है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) कल्लीकोटे	कलपट्टानार्थ	श्री अनन्त नाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर (नार्थ वैनाड)	अनन्त कृष्णपुरम जैन पाठशाला
			चन्द्रप्रभु चैरी टेबल, विजय महल
			एम० एस० सी० फैमिली जैन ट्रस्ट कल्याण मन्दिर
			श्री जैन सेवा सदन अनन्त कृष्णपुरम
			श्री जैन सेवा समाज अनन्त कृष्णपुरम
			श्री सुबकृष्ण मेमोरियल जैन हाई स्कूल, अनन्त कृष्णपुरम
	कोटसर	श्री शान्तिनाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर वेण्णोगूड	
	कुन्नमवेट		धर्मपाल जैन ट्रस्ट रत्नत्रय विलास
	वेन्नगुड (कोटत्तर)	श्री दि० जैन मन्दिर सुलतान पतेरी	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	वरदूर	श्री अनन्त स्वामी दि० जैन मन्दिर (साउथ वैनाड)	श्री आदिनाथ जैन ट्रस्ट, कडमने
(आ) कण्णूर	मानन्दवाडी	श्री आदिनाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर	
	पालगुण्ड	श्री पार्श्वनाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर, वैनाड नार्थ	
	पनमरम	श्री चन्द्रनाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर, वैनाड नार्थ, पुत्तगाडी	
(इ) पालघाट	पालघाट	श्री चन्द्रनाथ स्वामी दि० जैन मन्दिर, जैन मेडु	

— ○ —

मध्य-प्रदेश

अहार क्षेत्र—

दि० जैन अतिशय क्षेत्र अहार जी मध्य-प्रदेश के अन्तर्गत जिला टीकमगढ से पूर्व की ओर स्थित है। टीकमगढ बलदेव गढ रोड पर टीकमगढ से १६ कि० मी० पर अहार तिगोल की पुलिया है। यहाँ से मदन सागर सरोवर के बाँध को पार कर पर्वत मालाओ के मध्य ५ कि० मी० की दूरी पर क्षेत्र अवस्थित है। टीकमगढ से क्षेत्र तक पक्की सडक है। छतरपुर से सीधी सडक क्षेत्र तक है। यहाँ सवत् ११३३ और ११३६ की प्रतिष्ठित मूर्तियाँ उपलब्ध होती है। चन्देल-नरेश मदनवर्मन ने चेदि-विजय के पश्चात् मदनसागर बनवाया था। उसी के कारण इसका मदनेश सागर नाम पडा। मदनेश सागर पुर नाम का समर्थन शान्तिनाथ भगवान के मूर्ति लेख से भी ज्ञात होता है जिसमे 'येन श्री मदनेश सागर पुरे तज्जन्मनो निर्ममे' वाक्य से स्पष्ट है। एक दूसरे मूर्ति लेख मे 'तटे मदन सागर निर्मम' वाक्य आया है। इस क्षेत्र के अहार नामकरण के सम्बन्ध मे मासोपवासी मुनि के आहार की जो घटना कही जाती है, उसकी पुष्टि का कोई प्रामाणिक उल्लेख अभी तक देखने मे नही आया किन्तु इस आहार से अहार बन गया है, ऐसा कहा जाता है। विक्रम की १२ वी शताब्दी से १६वी शताब्दी के लेखो मे अनेक जातियो, विद्वानो, आचार्यो और भट्टारको आदि के नाम उल्लिखित मिलते है। उनसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि उक्त क्षेत्र उस काल मे समृद्धि से पूर्ण था। लेखो मे कई अप्रसिद्ध जातियो और गोत्रो का उल्लेख भी है।

बडवानी—

पहले बडवानी एक छोटी रियासत थी। सन् १८६७ ई० मे तत्कालीन नरेश जसवन्तसिह जी ने ५०० हाथ लम्बी चौडी जमीन हरसुखराम जी छात्रावास आदि के लिये प्रदान की थी। बाद मे जमीन का मूल्य बढ जाने पर इस जमीन के बदले दूसरी खराब जमीन देनी चाही किन्तु जैन-समाज के आन्दोलन के कारण राजा को अपना आदेश वापिस लेना पडा।

बजरंगगढ—

यह क्षेत्र बजरगगढ के नाम से प्रसिद्ध है। यह गुना से ७ किमी० दक्षिण दिशा की ओर है। क्षेत्र समतल भूमि पर अवस्थित है। चारो ओर की पर्वतमालाओ के कारण यहाँ का दृश्य नयनाभिराम है। यहाँ के विशाल दि० जैन मन्दिर मे शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरहनाथ की कायोत्सर्गात्मिक तीन प्रशान्त प्रतिमाये विराजमान हैं। प्रतिमाओ की भावाभिव्यजना और कला-सौष्ठव दर्शनीय है। उनके दर्शन-पूजन मे मन आनन्द विभोर हो जाता है। पाणाशाह जैन-धर्म का भक्त था। उसके मन मे तीर्थकरो की अगाध भक्ति थी। कहा जाता है कि अनेक स्थानो पर शान्तिनाथ और तीर्थ पुरलय की मूर्तियो का निर्माण पाणाशाह की ओर से सम्पन्न हुआ था। उनका प्रतिष्ठाकाल वि० स० १२३६ है। इससे स्पष्ट है कि बजरगगढ का मन्दिर विक्रम की १३ वी शताब्दी का है। पाणाशाह द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमा हल्के लाल पाषाण अथवा कत्थई वर्ण की है। यहाँ नेमिनाथ चौबीसी की एक शिला-फलक है। उसमे नेमिनाथ की मूर्ति का प्रतिष्ठा-काल स० १२५० सन् ११६३ दिया है।

बंधा (अतिशय क्षेत्र)—

दि० जैन अतिशय क्षेत्र बधा मध्य-प्रदेश के टीकमगढ जिले मे दक्षिण की सुरम्य पहाडियो के मध्य मे स्थित है। टीकमगढ से निवाडी होते हुए मार्ग बम्होरी बराना पडता है जो टीकमगढ से ५० किमी० दूर है।

क्षेत्र पर एक भोपरा है। इस भोपरे मे मूलनायक प्रतिमा अजितनाथ की है जो स० ११६६ की प्रतिष्ठित है। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को उसकी प्रतिष्ठा हुई, ऐसा उसके लेख से स्पष्ट है। मूर्ति प्रशान्त और प्रभावक है। इससे स्पष्ट है कि बन्धाजी का भोपरा १२वी शताब्दी के

उपान्य समय मे निर्मित हुआ है। पवा आदि भोपरे भी उसी समय में निर्मित हुए जान पडते है। इस मूर्ति के एक ओर भगवान ऋषभदेव और दूसरी ओर सभवनाथ की खड्गासन मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं जिनका प्रतिष्ठा काल स० ११०६ है। इस गर्भगृह के निकट एक शिखरबद्ध विशाल मन्दिर है। इस शिखरबद्ध मन्दिर के निकट एक और मन्दिर है। सभवत: पहले वह एक मठ था। शिखरबद्ध मन्दिर की ऊंचाई ६५ फुट है। इसका निर्माण १८वी शताब्दी मे हुआ।

भिण्ड—

भिण्ड ग्वालियर से उत्तर-पूर्व ४८ मील दूर है। ग्वालियर से इटावा जाने वाली पक्की सडक (४८ मील) पर भिण्ड अवस्थित है। सैण्ट्रल रेलवे (छोटी लाइन) ग्वालियर भिण्ड सेक्शन ५२ मील का टर्मिनल है।

भिण्ड का दुर्ग प्राकृतिक नही है। इसकी रक्षा के लिए दोहरी किलाबन्दी की गयी है। बाहरी दीवार कच्ची है। किला बुर्जों और चारो ओर परिखा से अलकृत है। किला भदौरिया राजाओ द्वारा निर्मित समुच्छादारित एव विस्तृत बताया जाता है। भदौरिया राजपूत चौहानो की एक शाखा है। उनका अन्तिम राजा अनिरुद्ध सिंह भदौरिया था। सं० १७६४ मे ग्वालियर के राजा सिंधिया ने अनिरुद्ध सिंह को पराजित कर दुर्ग पर अधिकार कर लिया था। किले का निर्माण भदौरिया राजाओ ने किया या अन्य ने यह निश्चित नही है परन्तु भदौरिया का यह भदावर प्रान्त कहलाता है।

प्रस्तुत भिण्ड जन-धन से परिपूर्ण एक नगर है। यहाँ प्राय: सभी जातियो के लोग निवास करते हैं। नगर मे और उसके आस-पास के ८० गाँवो मे जैन-समाज की अच्छी बस्ती पायी जाती है। यहाँ अनेक जैन मन्दिर है।

भोपाल—

भोपाल नगर कब बसा? इसकी निश्चित तिथि ज्ञात नही है। इसके नाम, भोजपाल, भुजपाल, भूपाल और भोपाल है। इस नगर को राजा भोज ने बसाया था इसी से इसका नाम भोजपाल प्रचलित हुआ। बाद मे बिगडकर भूपाल या भोपाल प्रचलित हो गया। उस समय यह नगर मालव राज्य मे सम्मिलित था। सभवत यह ईसा की ११वी शताब्दी मे बसा है। इसकी १३वी शताब्दी मे भोपाल कुदसिया बेगम का राज्य था। इसके राज्य-काल मे सन् १२२५ मे भोपाल के चौक बाजार मे आदिनाथ के विशाल मन्दिर का निर्माण हुआ था। मन्दिर का मुख्य द्वार इतना नीचा है कि दर्शक विनय सहित झुके बिना मन्दिर मे प्रवेश नही कर सकता। इस मन्दिर में जो कलापूर्ण सामग्री विद्यमान है वह समसगढ के प्राचीन मन्दिर से लायी गयी है। मन्दिर मे पाषाण द्वार, स्तम्भ, पद्मासन और खड्गासन मूर्तियाँ विद्यमान हैं। भोपाल के आस-पास का सारा प्रदेश अधिकांशत जैन पुरातत्त्व अवशेषो से भरा पडा है। भोपाल के पास रायसेन जिला भी मालवा मे था। स० १७८१ मे वहाँ हनुमानचरित की रचना ब्रह्मदेवदास ने की। इससे लगता है कि भोपाल और मालवा के अनेक स्थानो पर जैन मन्दिर बने हुए थे। वहाँ जैनियो का आवास अच्छा था। रायसेन मे तो मालवा के भ० ललित कीर्ति वहाँ निवास करते थे। वहाँ भट्टारक गद्दी थी।

आज भी भोपाल और रायसेन जिले मे जैन समाज की अच्छी आबादी है। कहा जाता है कि भोपाल का वृहत्त तालाब भी भोज का बनवाया हुआ है। इससे भोपाल की अधिक प्रसिद्धि हुई। भोपाल मे कई जैन मन्दिर, सभा भवन, स्वाध्याय भवन एव धर्मशाला आदि है। शान्तिनाथ मन्दिर और विशाल स्वाध्याय भवन मे, जिसकी प्रतिष्ठा १६६३ मे हुई है इस मन्दिर मे स० १०२८ से लेकर १३६६ तक की मूर्तियाँ विराजमान हैं। झरना के नेमिनाथ मन्दिर मे मूलनायक नेमिनाथ की प्रतिमा वि० स० १२६५ की प्रतिष्ठित हैं जो विदिशा से ६० मील दूर अयावन नामक गाँव से निकली थी। प्रतिमा मनोरम है।

छपारा—

मध्य-प्रदेश के सिवनी जिले का छपारा एक सुन्दर नगर है। यहाँ जैनियो की अच्छी बस्ती है। जैन लोगो मे धर्म के प्रति रुचि है। यहाँ एक शिखरबन्द मन्दिर मनोज्ञ एव सुन्दर है। उसके चार शिखर हैं जो सुवर्ण-कलशो से अलकृत हैं। गर्भगृह मे मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर की है जो मटमैले पाषाण की है। यहाँ महावीर ट्रस्ट कमेटी है जो मन्दिरादि सस्थाओ का सचालन करती है। मन्दिर मे ऊपर से नीचे ६ वेदियाँ हैं।

मन्दिर मे पाषाण की ३७ और धातु की २८ मूर्तियाँ हैं। चाँदी की एक मूर्ति है।

चन्देरी—

चन्देरी एक पुरातन ऐतिहासिक स्थान है। इसका पुराना नाम चम्पावती था। स० १८६३ के लेख मे इसका नाम चन्द्रावती दिया है। चन्देलो के समय इसका नाम चन्देली पडा, बाद मे चन्देरी हो गया। जान पडता है, जहाँ पुरानी चन्देरी बसी हुई थी, उसका नाम बूढी चन्देरी हो गया। भारतीय साहित्य में जो कि जनपद के नाम से प्रसिद्ध है, वर्तमान चन्देरी से १५ किमी० उत्तर-पश्चिम मे पुरानी चन्देरी के भग्नावशेष है। गजेटियर और गाइड मे ओल्ड चकेरी लिखा जाता है। ग्वालियर मुनरी महल मे पुरातत्व सग्रहालय है उसमे चन्देरी से प्राप्त एक शिलालेख मे प्रतिहारवशी १३ राजाओ के नाम अंकित है। इनमे सातवे राजा कीर्तिपाल ने प्राचीन नगर के दक्षिण मे एक दुर्ग बनवाया और अपनी राजधानी वही ले गया। राजा ने दुर्ग का नाम कीर्तिगढ रखा, दुर्ग के पीछे एक सरोवर और एक मन्दिर बनवाया। राजा के नाम पर मन्दिर का नाम कीर्तिनारायण प्रसिद्ध हुआ। किला और तालाब तो अभी है परन्तु मन्दिर नही है, वह धराशाई हो गया जान पडता है।

चन्देरी की चौबीसी बुन्देलखण्ड मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उसकी विशेषता यही है कि जिस तीर्थंकर का जो वर्ण बताया गया है शिल्पी ने उसी वर्ण के पाषाण मे निर्मित किया है। किले मे अनेक जैन-मूर्तियाँ देखने को मिलती है। इस प्रकार की शिल्प कला अन्यत्र देखने को नही मिलती। इस चौबीसी का निर्माण सवाई सिंघुई वश गोत्रीय खण्डेलवाल जातीय हिरदेशाह फतहसिह फौजदार के गुमास्ता सवाई सिह ने और उनकी धर्मपत्नी कमला ने कराया था। इसकी प्रतिष्ठा सोनागिर के भट्टारक चन्द्रभूषण ने स० १८९३ मे कराई थी। चौबीसी मन्दिर के पास ही धर्मशाला बनी हुई है जिसमे त्यागी के ठहरने की व्यवस्था है।

यद्यपि कीर्तिपाल या कीर्तिराज का समय निश्चित नहीं है फिर भी सन १०२१ मे महमूद गजनवी के सामने कीर्तिपाल ने आत्म-समर्पण किया था। यदि यह अनुमान सही है तो कीर्तिपाल का समय ११वी शताब्दी का पूर्वार्ध हो सकता है। चकेरी का उल्लेख अलबरुनी ने किया जो महमूद गजनवी के साथ आया था।

नई चकेरी से पुरारी चकेरी १३ किमी० दूर है। किसी समय यह सम्पन्न नगर रहा है और जैन धर्म का केन्द्र स्थल भी। जैन समाज ने इस क्षेत्र का पुनरुद्धार करने का प्रयत्न किया है।

चूलगिरि क्षेत्र—

बडवानी नगर के दक्षिण भाग मे चूलगिरि क्षेत्र है। उसके शिखर से इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण आदि मुनि मोक्ष गये है। अत यह सिद्ध होता है कि यह सिद्ध क्षेत्र होने के कारण वन्दनीय है। निर्वाण काण्ड की गाथा मे चूलगिरि को निर्वाण क्षेत्र बताया है—

> **"बडवाणी वरणापरे दक्खिण भायम्मि
> चूलगिरि सिहरे।
> इन्दजियं कुम्भकरणो णिव्वाण गयाण
> णोते सि॥"**

इससे यह भूमि मुनियो की तपोभूमि और निर्वाण भूमि रही है। इसकी तलहटी मे ३० दि० जैन मन्दिर हैं। मुनि चन्द्रसागर की छतरी है, तलहठी मे चार धर्मशालाये है। इनमे एक धर्मशाला का निर्माण सेठ रोडमल मेघराज सुखारी की ओर से हुआ है। इस पर्वत पर आदिनाथ भगवान की एक विशाल मूर्ति है जो ५२ हाथ ऊँची है किन्तु लोक मे वह बावन गजा के नाम से ख्यात है। प्राचीन समय मे यहाँ एक हाथ को ही कच्चा गज माना जाता था। मूर्ति बडी सुन्दर और मनोमुग्ध कर है। इस मूर्ति का निर्माण कब और किसने कराया, इसका कोई प्रामाणिक इतिवृत उपलब्ध नही होता। १३वी शताब्दी के विद्वान मदनकीर्ति ने इसका उल्लेख किया है। इससे यह मूर्ति १३वी शताब्दी से पूर्व रही है। स० १५१६ मे रत्नकीर्ति ने इस मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया और बडे मन्दिर के पास मे १० जिनालय भी बनवाये। उन्होने इन्द्रजीत की मूर्ति की प्रतिष्ठा की। चूलगिरि पर सब मिलाकर ३० जिन मन्दिर है। उनमे कुल १३४ बिम्ब विराजमान हैं। चूलगिरि मे बावन गज वाली मूर्ति देशी पाषाण की बनी हुई है। क्षेत्र पर सबसे पुरानी मूर्ति

स० १३११ की है। पार्श्वनाथ की दो मूर्तिया स० १२४२ की हैं। एक धातुमूर्ति १४८७ की बनी है। स० १३८० की भी मूर्तियाँ हैं।

धार—

धार नगर ऐतिहासिक नगर है। सन् ९१४ से ९४१ ई० से परमारवशी राजा वीरसिंह ने अपनी तलवार से शत्रु कुल का नाश कर बसाया था।[1] यह प्रतिहार राजा भोज की राजधानी थी। उस समय यह प्रसिद्ध नगर के रूप मे ख्यात था और विद्या का केन्द्र था। भोज स्वय संस्कृत भाषा का अच्छा विद्वान और कवि था। उसके बनाये हुए कई ग्रन्थ उपलब्ध है। वह विद्याव्यसनी था और विद्वानो का आदर-सत्कार करता था। राजा भोज के समय यहाँ दि० जैन मुनियो का विहार और धर्मोपदेश होता था। राजा मुंज भी विद्या प्रेमी था। लाल गड सघे के आचार्य महासेन जो सिद्धान्तो के पारगामी जयसेनाचार्य के प्रशिष्य और गुणाकर सेन के शिष्य थे, जो राजा मु ज द्वारा पूजित थे।[2] सिंधुल के महामात्य पर्व ने उनके चरणो की पूजा की थी।[3] इन्ही के अनुरोध से महासेनाचार्य ने धारा में प्रद्युम्न चरित की रचना की थी। नवनन्दि ने सुदर्शन चरित की रचना स० ११०० मे की। अमितजति द्वितीय ने सुभाषितरत्न सदोह की रचना वही की थी। आचार्य कल्प प० आशाधर जी ने धारा मे महावीर पडित से व्याकरण और धर्मशास्त्र का अध्ययन किया था। अनेको को काव्यादिशास्त्र पढाए और अनेक ग्रन्थो की रचना नल कच्छपुर मे जाकर की। इस प्रकार धार का जैन-समाज मे महत्वपूर्ण स्थान है।

द्रोणगिरि—

द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र है। यहाँ से गुरुदत्त मुनीश्वर ने निर्वाण प्राप्त किया। यह स्थान प्रकृति प्रदत्त सुखमा से परिपूर्ण है। पर्वत के दाँये और बाँये से काठिन और श्यावली नदियाँ सदा प्रवाहित रहती है। जान पडता है ये नदियाँ सिद्धक्षेत्र के चरणो को पखार रही है। यद्यपि पहाड विशेष ऊँचा नही है, पर्वत पर जाने के लिये २३२ सीढियाँ बनी हुई है मानो चारो और वृक्षों ने क्षेत्र पर सौन्दर्यराशि बिखेर दी है। पहाड़ पर २८ मन्दिर है और तलहटी मे १४। इनमे तिगोडा वालो का मन्दिर सबसे प्राचीन है जिसमे स० १५४९ की प्रतिष्ठित भगवान आदिनाथ की प्रतिमा विराजमान है। क्षेत्र का दृश्य बडा रमणीक है। मुमुक्षु जन ऐसे ही एकान्त और शान्त स्थान मे आत्महित सम्पन्न करते हैं।

गन्धावल (गन्धर्वपुरी)—

गन्धावल मध्य-प्रदेश के देवास जिले मे सोनकच्छ तहसील के मुख्यालय से लगभग ९ किमी० उत्तर की ओर सोमवती नदी जो काली सिन्ध मे गिरती है, के किनारे अवस्थित है। कहा जाता है कि यहाँ गर्दभिल्ल या गन्धर्वसेन राजा का राज्य था। इसी से इसका नाम गन्धावल या गन्धर्वपुरी हो गया है। यहाँ भूगर्भ से अनेक जैन-मूर्तियाँ निकली है। जान पडता है यहाँ पहले अनेक जैन मन्दिर बने हुए थे। १२ फुट ऊँची कई मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। ग्राम पचायत और शासन विभाग मे अनेक मूर्तियाँ एकत्रित की गयी है और कटीले तारो की बाढ लगाकर उनकी सुरक्षा की है। लोगो ने मकानो और मन्दिरो मे जैन मूर्तियो का उपयोग किया है। वर्तमान ग्राम मे एक दि० जैन मन्दिर जो प्राचीन है, जिसके जीर्णोद्धार से उसका पुरानापन मिट गया है, समाज की उपेक्षा खटकती है।

गोलाकोट (अतिशय क्षेत्र)—

खनियाधाना से दक्षिण की ओर ५ मील और गूडर मे १ मील पहाडी पर है। यहाँ एक ही मन्दिर मे तीन दालानो मे सहस्त्रो की सख्या मे मूर्तियाँ विराजमान हैं जिनमे १३५ जिनबिम्ब प्राचीन और पूजनीय है। ये प्रतिमाये सौम्य और मनोज्ञ हैं। शिलालेख भी हैं परन्तु अस्पष्ट होने से पढे नही जाते।

कहा जाता है कि पूर्वकाल मे गोलाकोट मे ७०० घर ददाभूरी परिवार के थे। अन्य लोगो की गणना अन्वेषणीय है। पाडाशाह को मन्दिर का निर्माता बताया जाता है

१—एपिग्राफिक का इडिका जिल्द १ भाग ५ पादपद्य । प्रद्युम्न चरित प्रशस्ति।
२—आसीत् श्री महासेनसूरि तूनधा श्री मु जराजार्चित । प्रद्युम्न चरित प्रशस्ति।
३—श्री सिन्धु राजस्य महत्तमेन श्री पर्पटेनार्चित

पर पाडाशाह् का इतिवृत्त अभी तक अन्धकार मे ही है। उसे थूबौन जी का निवास करने वाला कहा जाता है। पचराई और गोलाकोट दोनो अतिशय क्षेत्रो का प्रबन्ध चौरासी दि० जैन मन्दिर ट्रस्ट खनियाधाना जि० शिवपुरी के द्वारा होता है।

गुना—

गुना मध्य-प्रदेश का एक जिला है। यह अच्छा सम्पन्न नगर है। अन्य जातियो के साथ नगर मे परमार, खण्डेलवाल, जायसवाल और खरौआ आदि जैन जातियो क लोगो का निवास है। यहाँ तीन शिखरबन्द मन्दिर है जिनकी व्यवस्था एक रजिस्टर्ड पचायत अशोक नगर द्वारा होती है। नगर मे जैन पाठशाला, जैन सभा और औपधालय आदि है। अशोक नगर मे अनेक मन्दिर स्कूल आदि सस्थाये है। गुना जिले मे बजरग गढ और थूबौन आदि क्षेत्र है जिनमे पुरातन मन्दिर और प्रतिमाये है। इन सब बातो से गुना जिला अपनी महत्ता रखता है। यहाँ ११वी, १२वी और १३वी शताब्दी की प्रतिष्ठित प्राचीन मूर्तियाँ पाई जाती है।

खजुराहो—

भारतवर्ष के अन्य प्रान्तो के समान बुन्देलखण्ड का भी विशिष्ट स्थान है। बुन्देलखण्ड मे छतरपुर जिले के अन्तर्गत खजुराहो एक छोटा-सा ग्राम है। यह खूडर नदी के किनारे बसा हुआ है। यह क्षेत्र महोबा से ४२ मील, सतना से ७३ मील और हरपालपुर से ६० मील की दूरी पर है। चन्देलवशी राजाओ की राजधानी बनने का भी इसे सौभाग्य प्राप्त है। कलापूर्ण मन्दिरो के कारण यह पर्यटक-क्षेत्र बना हुआ है। यहाँ हिन्दू और जैन मन्दिरो की कला अनुपम और दर्शनीय है। चन्देलकाल मे खजुराहो मे ८४ विशालकाय मन्दिर बनवाये गये थे, अब केवल ३५ मन्दिर है। खजुराहो के मन्दिर तीन समूहो मे विभक्त है। इनमे से पूर्वी समूह मे ब्रह्म, वामन और जवारी ये तीन वैष्णव-मन्दिर है। शान्तिनाथ, आदिनाथ, पार्श्वनाथ एव घटाई ये चार मन्दिर विशेष दर्शनीय है। शेष मन्दिरो का कला वैशिष्ट्य नही पाया जाता। यद्यपि वे प्राचीन मन्दिरो के अवशेषो पर निर्मित हुए है। बस स्टैण्ड से पूर्व की ओर लगभग एक मील की दूरी पर जैन मन्दिर है। घटाई मन्दिर को छोडकर शेष सभी मन्दिर एक परकोटे से परिवेष्ठित है।

महीदपुर—

मध्य-प्रदेश के मालवा क्षेत्र मे प्रसिद्ध नगर उज्जैन से ३० मील दूर महीदपुर (पश्चिमी रेलवे स्टेशन) रोड से १२ मील दूर क्षिप्रा नदी के तट पर अवस्थित है। नगर मे एक प्राचीन दि० जैन मन्दिर, पाठशाला, स्वाध्याय-भवन और धर्मशाला आदि सस्थायें है। मन्दिर मे प्रतिष्ठित ३० प्रतिमाओ मे से कुछ प्रतिमायें अति प्राचीन है। यहाँ का नवयुवक-मण्डल समाज के कामो मे और धार्मिक कामो मे अभिरुचि उत्पन्न करता है।

मन्दसौर—

मन्दसौर एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है। प्राचीन काल मे इसे दशपुर या दशागपुर कहते थे। दशपुर नगर मे विक्रम की दूसरी शताब्दी मे आचार्य समन्तभद्र योगीन्द्र ने बाद की भेरी बजाई थी। जैसा कि 'दशपुरनगरे मेरी मया ताडिता' वाक्य से प्रकट है। दश मुहल्ला होने के कारण सम्भवत: इसका नाम दशागपुर या दशपुर हुआ है। यहाँ पुरातत्व सामग्री और पुराने शिलालेख भी मिले है। दशपुर जैन सस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वर्तमान मे यहाँ ५ दि० जैन मन्दिर और २ दि० जैन चैत्यालय है। जनकपुरा के दि० जैन मन्दिर मे पूजन और शास्त्रसभा होती है। इसी मन्दिर मे एक दि० जैन पाठशाला भी है जिसमे हस्तलिखित ग्रन्थो का अच्छा शास्त्र-भण्डार है।

मुक्तागिरि—

मुक्तागिरि को साढे तीन करोड मुनियो का निर्वाण स्थल बताया जाता है। यह मध्य-प्रदेश के बैतूल जिले मे अवस्थित है। अमरावती से परतवाडा ५२ किमी०, परतवाडा से खुखी ६ किमी० और खुखी से मुक्तागिरि ६ किमी० है। क्षेत्र मे इस समय ५२ मन्दिर है। उनमे अधिकांश मन्दिर अर्वाचीन है। नेमिनाथ जी की मूर्ति की प्रतिष्ठा १०वी शताब्दी की है। क्षेत्र १०वी शताब्दी से अधिक पुरातन नही है। कुछ विद्वानो का कहना है कि इस पर राजा श्रीपाल ने मन्दिर बनवाया था परन्तु इसका कोई प्रामाणिक लेख नही मिलता। इस क्षेत्र का

नाम मेरुगिरि है। कहा जाता है कि पर्वत पर एक भेड़ मरणासन्न थी, वहाँ कोई मुनि ध्यान कर रहे थे जब उन्हे ज्ञात हुआ कि भेड़ मृत्यु के निकट है तब उन्होने उसे धर्मोपदेश दिया और णमोकार-मन्त्र सुनाया जिससे वह मर कर देवलोक को गयी। वहाँ उसने पूर्व पर्याय और मृत्यु के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त की और पर्वत पर मोतियो की वर्षा की। उसी समय से इसका नाम मुक्तागिरि पड गया। क्षेत्र पर केशर वृद्धि घटनादि के सम्बन्ध मे किंवदन्तियाँ प्रचलित है।

राय० ब० डा० हीरालाल ने लिस्ट आफ हरिकृष्णन्स इन सी० पी० एण्ड बरार मे मुक्तागिरि के लोगो का उल्लेख करने हुए लिखा है कि वहाँ ८ मन्दिर है। जिनमे ८५ मूर्तियाँ है। उनमे से बहुतो पर सवत् दिये गये है जिनसे वे सन् १४८८ से लगाकर सन् १८६३ तक की सिद्ध होती है। खुखी गाँव के भट्टारक पद्म नन्दिनी की छतरी बनी हुई है जिसका समय वि० स० १७८६ है। अब यहाँ मन्दिरो की सख्या ५२ हो गयी है।

पचराई—

यह क्षेत्र चौरासी की सीमा के अन्दर है। चौरासी के पूर्व मे वेगवती बेतवा नदी बहती है, उत्तर मे मधुमती, दक्षिण मे उरबसी और दक्षिण दिशा मे विन्ध्य सुशोभित है। यहाँ पचराई और गोलकोट दो अतिशय क्षेत्र है। य दोनों क्षेत्र केवल बुन्देलखण्ड के ही गौरवस्वरूप नही है अपितु भारतवर्ष की महत्ता के भी द्योतक है। यहाँ के कलात्मक पुरातत्वावशेष, जैन मन्दिर, जैन तीर्थंकर प्रतिमाये और यक्ष-यक्षिणी महत्वपूर्ण है।

पचराई मे २८ दि० जैन मन्दिर पाडाशाह द्वारा बनवाये हुए बताये जाने है। स० ११२२, १२३२ और १३४५ की प्रतिष्ठित मूर्तियाँ है। तल भूमि एक परकोटे के घेरे मे सजोए हुए हैं। क्षेत्र पर एक बावडी है जो अपनी ऐतिहासिक कहानी को लिये हुए है। इन मन्दिरों का जीर्णोद्धार प्रसिद्ध उद्योगपति श्रावक शिरोमणि स्व० साहू शान्तिप्रसाद जी ने अपने ट्रस्ट से सहायता देकर करवाया है।

रेशंदीगिरि—

प्रस्तुत क्षेत्र का नाम रेशदीगिरि या नैनागिरि है जो वरदत्तादि पच ऋषिराजो की निर्वाण भूमि है। ऐसी प्राकृत भक्ति निम्न गाथा से स्पष्ट है—

"पापस्स समवसरणो साहिया वर दत्त मुणि वरा पंच।
रिस्सिदे गिरि सिहरे णिव्वाण गया णमो तेसि।"

यहाँ उत्खनन मे एक प्राचीन मन्दिर और १३ मूर्तियाँ निकली थी। यह पार्श्वनाथ का सबसे पुराना मन्दिर है। मन्दिर की दीवार के एक शिलालेख से मन्दिर का निर्माण काल स० ११०६ पाया जाता है।

पहाड साधारण ऊँचा है। पहाड के ऊपर ३६ शिवालय है और १५ मैदान मे सरोवर के निकट हैं। अत मन्दिरो की सख्या ५१ है। एक मानस्तम्भ है इनमे ३७ मन्दिर शिखरबद्ध हैं। एक मन्दिर पावापुरी के समान सरोवर के मध्य मे बना हुआ है, इसे जल-मन्दिर कहते हैं।

सागर—

मध्य-प्रदेश मे सागर का अपना विशिष्ट स्थान है। बुन्देलखण्ड का प्रमुख नगर है। यह विशाल सरोवर के किनारे छोटी-छोटी अनेक टेकडियो पर बसा है। स्वास्थ्य-प्रद वायु और प्राकृतिक सुषमा मे परिपूर्ण है। पूज्यवर गणेशप्रसाद जी वर्णी की साधना भूमि है। यहाँ अनेक जैन मन्दिर और शिक्षण सस्थाये हैं। यहाँ जैनियो की सख्या १५००० से कम नही है। सागर जिले मे दो अतिशय क्षेत्र हैं जो बहुत समय तक उपेक्षित रहे बाद मे सरकार के सहयोग से उनका उद्धार हो गया। पहला अतिशय क्षेत्र रहली के पास पटनागज मे है और दूसरा देवरी के पास बीना बारह में है।

सारगपुर—

सारगपुर जिला राजगढ मध्य-प्रदेश मे एक तीर्थ स्थान के रूप मे प्रसिद्ध है। यहाँ जैनियो के अनेक घर हैं। यहाँ तीन मदिर है। दो पुराने मदिर हैं और एक आधुनिक है। प० दौलतराम जी ने तीर्थवदना मे सारगपुर महावीर जी वाक्यो के साथ सारगपुर के महावीर-मन्दिर का उल्लेख नही हो जाता। इसके लिये अन्य प्रमाणो की आवश्यकता होती है। इसलिये इसकी प्रसिद्धि क्षेत्रो के साथ नही पाई जाती।

सतना—

सतना मध्य-प्रदेश का एक प्रतिभाशाली औद्योगिक

और व्यापारिक नगर है और रीवां सभाग का प्राचीन नगर है। यह रेलवे स्टेशन, हवाई-अड्डा और बस मार्ग का केन्द्र है। अतिशय क्षेत्र खजुराहो से सतना ७२ मील दूर है। नगर से केवल ३ मील दूर पतमान दाई नामक अति प्राचीन जैन मन्दिर का प्रमुख भाग अभी भी विद्यमान है। यद्यपि मन्दिर में अब कोई मूर्ति नही है किन्तु चौखट में उत्कीर्ण तीर्थंकर मूर्तियाँ मन्दिर की साक्षी है। इससे स्पष्ट है कि यह क्षेत्र जैनियो का निवास स्थान रहा है।

नगर से १० मील दूर राम आश्रम मे जैन-कक्ष की स्थापना कुछ वर्ष पूर्व हुई है। उसमे जैन-मूर्तियो का सग्रह नीरज जी जैन द्वारा किया गया है। इस समय नगर में जैन लोगो की सख्या लगभग एक हजार होगी।

शिवपुरी—

ग्वालियर से ६० मील दूर बम्बई-आगरा रोड पर शिवपुरी है। यह ग्वालियर राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। यह नगर वनो और पहाडो के मध्य मे बसा है। यहाँ के म्यूजियम मे नगर के किले से खण्डित मूर्तियाँ लाकर विराजमान की गयी है। पहले इस नगर का नाम सीपरी था। स्व० ग्वालियर नरेश माधवराज सिंधिया ने इसका नाम शिवपुरी किया है। शिवपुरी और उसके आस-पास के स्थान जैन सस्कृति के केन्द्र रहे है। कोलारस आदि स्थानो मे आज भी १२वी, १३वी शताब्दी की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित है।

१८वी शताब्दी के प्रारम्भ मे शिवपुरी बाण गगा के निकट मोहनदास खण्डेलवाल ने पार्श्वनाथ आदि चोबीस तीर्थंकरो और महादेव विश्वनाथ की मूर्तियो को स्थापित कर प्रतिष्ठा करवायी थी।

सोनागिर (सिद्ध क्षेत्र)—

यह क्षेत्र दतिया जिले मे स्थित है। दतिया से ६ मील दूर ग्वालियर से ४० मील दूर दिल्ली-बम्बई लाईन पर सोनागिर स्टेशन है। स्टेशन से ३ मील दूर पहाडी पर मन्दिरों की क्रमबद्ध शृखला दृष्टिगोचर होती है। निर्वाण काण्ड की 'णगाणगकुमारो' गाथा के अनुसार साढे पाँच करोड मुनियो के निर्वाण का स्थान माना जाता है।

पर्वत पर शिखरबद्ध नयनाभिराम ७७ जिन मन्दिर विद्यमान हैं। पहाडी से नीचे तलहटी मे १८ विशालकाय मन्दिर हैं। मन्दिर मे तीर्थंकरो की सुन्दर मनोहर एवं प्रशान्त मूर्तियाँ विराजमान है। चन्द्रप्रभु का मन्दिर सबसे प्रमुख माना जाता है। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार मथुरा के सेठ लक्ष्मीचन्द जी द्वारा करवाया गया था। मन्दिर के सामने कलात्मक समवसरण और सुन्दर नयनाभिराम मानस्तम्भ सुशोभित है। १५वी शताब्दी मे यहाँ कमलकीर्ति भट्टारक की गद्दी थी। उन्होने उस पर अपने शिष्य भ० शुभचन्द्र को प्रतिष्ठित किया था। जिसका उल्लेख महाकवि रइधू ने अपने हरिवश पुराण प्रशस्ति मे किया है।

क्षेत्र पर पुरातत्व सग्रहालय है जिसमे खडित मूर्तियो और शिलालेखो का सकलन किया गया है। एक सरस्वती भडार भी है जिसमे कुछ हस्तलिखित और मुद्रित ग्रन्थो का सग्रह है जो यात्रियो के स्वाध्याय के लिये उपयुक्त है।

मन्दिरो मे १३वी शताब्दी से लेकर १८वी शताब्दी तक की मूर्तियाँ विराजमान है। चन्द्रप्रभु के विशाल मन्दिर मे १२ फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। इसका जीर्णोद्धार मथुरा के श्री लक्ष्मीचन्द्र जी द्वारा हुआ है। उसके सामने ही एक कलात्मक समवसरण मन्दिर है जिसमे समवसरण की सुन्दर रचना निर्दिष्ट की गयी है। पास ही मे समुन्नत मानस्तम्भ है। बाहुबली की दिव्य प्रतिमा भी यहाँ सुशोभित है। जगह-जगह पर चरण-पादुकाये, छतरी, चबूतरे और समाधिस्थल निर्मित है जो क्षेत्र की समृद्धि एव सुन्दरता के द्योतक है। इनकी व्यवस्था कमेटी द्वारा सम्पन्न होती है।

थूवौन (अतिशय क्षेत्र)—

प्रस्तुत अतिशय क्षेत्र मध्य-प्रदेश के ग्वालियर सभाग मे गुना जिले के अन्तर्गत तहसील मुंगावली के पार्वत्य प्रदेश मे स्थित है। कहा जाता है कि पाडाशाह का बजरगगढ मे रागा चाँदी हो गया था उसी द्रव्य से उसने मन्दिर और मूर्तियो का निर्माण किया है। क्षेत्र का नाम थूवौन तपोवन का अपभ्रश जान पडता है। सम्भवत इस स्थान पर निर्ग्रन्थ श्रमण तपश्चरण करते हो, इस

कारण यह स्थान तपोवन कहलाता हो, बाद मे विकृत होकर थूबौन कहा जाने लगा हो। थूबौन मे लगभग २५ मन्दिर है। मन्दिरो मे मूर्तियाँ सुन्दर व मनोज्ञ है।

उज्जैन—

अवन्ति देश मे स्थित उज्जैन एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। भगवान महावीर के समय उज्जैन का राजा चण्डप्रद्योत या महासेन था। उसके बाद उसका पुत्र पालक राजा हुआ। मौर्य-सम्राट चन्द्रगुप्त के समय यह मौर्य साम्राज्य की उपराजधानी थी। अशोक के पुत्र और पौत्र ने यहाँ राज्य किया है। जैन धर्म का यह केन्द्र रहा है। वर्तमान उज्जैन के मन्दिरो मे मूर्तियाँ मुग्धकर है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
(अ) बालाघाट	बालाघाट	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन महावीर भवन समीप जयहिन्द टाकीज
		श्री दि० जैन मन्दिर	
			श्री दि० जैन पाठशाला
			श्री महावीर दि० जैन छात्रावास (स्टेशन के पास)
	वारासिवनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लालबर्रा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लालवटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लामटा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर पुस्तकालय एव वाचनालय
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन धर्मशाला
(आ) बैतूल	आठनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
	बैतूल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करजगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुक्तागिरि (पहाडी पर)	श्री दि० जैन चैत्यालय	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मुक्तागिरि (पहाड़ी पर)	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन गृह चैत्यालय	
	(तलहटी)	श्री आदिनाथ मन्दिर	श्री दि० जैन पुस्तकालय एवं वाचनालय
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री अजितनाथ मन्दिर	
		श्री बाहुबली मन्दिर	
		श्री भुयास मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन गुमटी	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री महावीर मन्दिर	
		श्री महावीर मन्दिर	
		श्री महावीर मन्दिर	
		श्री मेहागिरि मन्दिर	
		श्री नेमिनाथ मन्दिर	
		श्री पद्मप्रभ मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	(तलहटी)	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
		श्री पश्चिमाभिमुखी पार्श्वनाथ मन्दिर	
		श्री प्राचीन पद्मासन मूर्ति	
		श्री रत्नत्रय मन्दिर	
		श्री ऋषभदेव मन्दिर	
		श्री शीतलनाथ मन्दिर	
		श्री सुमतिनाथ दि० जैन मन्दिर	
		सुपार्श्व मन्दिर	
		श्री वासुपूज्य मन्दिर	
(इ) भिण्ड	अडोखर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अकलौनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अकोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अरकजोनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	असोरखार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अटेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बकथरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भन्नपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मरवास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भिण्ड	श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर किला गेट	दि० जैन कन्या पाठशाला परेड मन्दिर
		श्री दि० जैन बाहुबली स्वामी मन्दिर परेड	हैनमन होम्योपैथिक मैडिकल कालिज अन्तर्गत डा० ए० सी० जैन चैरिटेबल सोसाइटी
		श्री दि० जैन चन्द्रप्रभु गोरी किनारा	
		श्री दि० जैन चैत्यालय गोल श्रृंगारीय फ्रीगज	जैन हा० सै० स्कूल

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	भिण्ड	श्री दि० जैन चैत्यालय मन्दिर पचाशा लश्कर रोड	जैन माध्यमिक विद्यालय
		श्री दि० जैन फूलचन्द महावीर स्वामी मन्दिर, पचासा रोड	जैन प्राइमरी पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर अटेर रोड	नन्दलाल ट्रस्ट पुस्तकालय। वाचनालय, चैत्यालय मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर नशिया जी	ऋषभ जैन गर्ल्स महा विद्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर परेट	श्री बाहुबली दि० जैन धर्मार्थ हो० औषधालय परेट
		श्री दि० जैन मुनाबाई मन्दिर महावीर गज	श्री दि० जैन बाहुबली धर्मशाला बाहुबली मन्दिर
		श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर, बजरिया	श्री दि० जैन बाहुबली औषधालय अटेर रोड
		श्री दि० जैन पारसनाथ मन्दिर, हलवाई खाना	श्री दि० जैन भदावर प्रान्तिक पुस्तकालय, परेट-मन्दिर
		श्री दि० जैन पारसनाथ मन्दिर, महावीर चौक	श्री दि० जैन धर्मार्थ पाठशाला चैत्यालय मन्दिर
		श्री दि० जैन शान्तिनाथ मन्दिर, गर्ल्स स्कूल गली	श्री दि० जैन धर्मशाला, परेट-मन्दिर
		श्री दि० जैन विमलनाथ मन्दिर, हलवाई खाना	श्री दि० जैन सार्वजनिक पुस्तकालय एव वाचनालय, चैत्यालय मन्दिर
			श्री दि० जैन उदासीनाश्रम नशिया जी
			श्री जैन महाविद्यालय अन्तर्गत भदावर प्रान्तिक जैन सभा
			श्री जैन स्वाध्याय मण्डल चैत्यालय मन्दिर
			श्री मुमुक्षु स्वाध्याय मण्डल स्वाध्याय भवन, श्री जैन मन्दिर
			श्री विमलसागर दि० जैन औषधालय फीगज
			श्री विमलसागर दि० जैन पुस्तकालय फीगज बाजार

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	चमूरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जितौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोहड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दानियापुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फूफ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गदिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गहेली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गाता	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोहद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरमी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हर का वडेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जमसारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जरसैना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झाकरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ककरौक	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कनाथर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कन्हारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करवास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कठोगा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कतरौल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कवुजा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खडीत	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिदरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लहार	श्री दि० जैन मन्दिर	१ श्री दि० जैन शिक्षा मन्दिर २ श्री महावीर दि० जेन विद्यालय
	लावन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	माडेन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मानहड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मौ	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ विशाल मन्दिर	श्री अखिल भा० जैन नवयुवक ज्योति सेवा मघ

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मौ		श्री भ० महावीर स्वाध्याय भवन श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन ड्रामेटिक क्लब श्री दि० जैन माध्यमिक विद्यालय श्री दि० जैन नवयुवक सघ सेवा श्री दि० जैन प्रार्थमिक विद्यालय श्री जैन मुमुक्षु मण्डल श्री महावीर व्यायामशाला श्री महावीर वेद विज्ञान पाठशाला श्री महिला वीतराग विज्ञान पाठशाला श्री सन्मति पुस्तकालय व वाचनालय श्री सन्मति शिक्षा प्रसार समिति श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	मेहदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेहदौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेहगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेहरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निरसाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निबहान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नुनहड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पराडव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परानो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परछाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परसाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परतापपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पावई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीपरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुलावली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रिदोली	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	रोथरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सालिमपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सायना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेमरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिकरोदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुपावली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थडेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थनोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थूमरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ऊभरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उझावला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरोही	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वेहट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विरगगा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विरगना	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ई) भोपाल	भोजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	भोपाल	श्री दि० जैन मन्दिर	गुलाब बाई दि० जैन कन्या पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर बजरिया स्टे०	महावीर जैन साहित्य सदन
		श्री दि० जैन मन्दिर चौक बाजार	श्री दि० जैन धर्मशाला, चौक
		श्री दि० जैन मन्दिर एच० इ० एल०	श्री दि० जैन धमशाला टी० टी० नगर
		श्री दि० जैन मन्दिर जहांगीराबाद	श्री दि० जैन हा० सै० स्कूल चौक बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर झिरनो	श्री दि० जैन मगल भवन मगलवारा
		श्री दि० जैन मन्दिर मगलवारा	श्री दि० जैन उदासीनाश्रम झिरनो मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर, शाहजहाँबाद	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	भोपाल	श्री दि० जैन मन्दिर टी० टी० नगर	श्री महावीर दि० जैन ग्रन्थमाला तारणबन्धु बी-१५ टी० टी० आई कालोनी शिमला हिल श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला चौक श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला मगलवारा, श्री दि० जैन मन्दिर
	दोहद पो० दीप	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	कुराना	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	समसगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	सेमरखेडी	तारणतरण स्वामी नशियाँ	
	सिरोज	श्री दि० जैन मन्दिर	समन्तभद्र ट्रस्ट श्री दि० जैन जयसागर औषधालय श्री दि० जैन मिशन शाखा श्री दि० जैन नवयुवक मडल श्री दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन सच्चिदानन्द न्यास श्री महावीर दि० जैन पारमार्थिक औषधालय
	वैरसिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
(उ) छतरपुर	अकौना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अलीपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडा गांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडा मलहरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन हा० से० स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री जनता उ० मा० विद्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री गणेशवर्णी दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	बगमऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बहादुरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वकाराहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	बाख मु० पो० कुटौरा बाजना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बम्होरी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बमनौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बमनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बमीठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बाधा मु० पो० सिमरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बधी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरडाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरेठी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बेनीगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मगग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भगुआँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मरतौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मातपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भोपग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीरो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोरा मु० पो० मगुवाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बूदौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चदला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्द्रनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छतरपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन हस्तलिखित भण्डार
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री जैन नवयुवक पुस्तकालय
		श्री दि० जैन मन्दिर (चौधरी का)	श्री महावीर दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर (हटवारा)	
		श्री दि० जैन मन्दिर (जोधाबाई)	
		श्री दि० जैन मन्दिर (पचायती)	
		श्री दि० जैन मन्दिर (पन्ना वालो का)	
	छटी ल्महौरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दलीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दरगुवा मु० पो० सूडवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवरान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धनगुँवा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	धौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	दुलीपुर मु० पो० बमनौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुरुवारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घिनौकी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घूरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घुवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरखपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुढ़ा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुलगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुलाठ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हलावनी मु० पो० रामटोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरपालपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जखरौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कारापानी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कर्री	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कसेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कटारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खजुराहो (अतिशय क्षेत्र)	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ दि० जैन सग्रहालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ दि० जैन विश्रान्ति भवन
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वर्धमान पुस्तकालय एव वाचनालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	खजुराहो	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	किशनगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुंअरपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुपी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुर्रा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुसमाड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुटौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ललपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लौडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडदेवरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महोवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मझगुवांघाटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	माख	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मजुवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मउ सहनियाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मऊ सानियाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेरियाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मोहरा मु० पो० घौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुबई मु० पो० रामटोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नदगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नांदपोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नौगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निवाड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निवग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पहाड गांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाख	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पनगढी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पनोठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाटन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पथरगुना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजनगर मु० पो० छतरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामटोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	रानीताल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रेशंदीगिरि (पहाडी)	श्री दि० जैन जल मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला (सागर वालो की)
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला (सेठ शोभाराम मलैया सागर वालो की)
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला (सिंघई मूलचन्द गिरधारीलाल वालो की)

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन उदासीनाश्रम
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	रेशंदीगिरि (तलहटी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	रेशंदीगिरि (तलहटी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	सडवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सहई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सडवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सतपारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेंधपाग्राम (द्रोणागिरि)	श्री दि० जैन मन्दिर	द्रोणागिरि आयुर्वेदाश्रम
			द्रोणा प्रान्तीय मुहल्ला परिषद
			द्रोणा प्रान्तीय नवयुवक सेवा सघ
			गणेशवर्ती दि० जैन छात्रावास
			गणेषवर्ती दि० जैन धर्मशाला
			गणेशवर्ती दि० जैन पुस्तकालय
			श्री चिदानन्द उदासीनाश्रम
			श्री चिदानन्दव्रती विद्यालय
			श्री गणेशवर्ती धर्मार्थ औषधालय
			श्री गुरुदत्त दि० जैन सस्कृत विद्यालय
			श्री वृन्दावन सरस्वती भवन वाचनालय
	शाहगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिद्ध क्षेत्र-द्रोणागिरि	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिरि	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिमरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुनवाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सूरजपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तिगोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टिकरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अदमऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वघान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बमनौरा कलाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बनरवाहा मु० पो० हीरापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरदुवाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बेनीगंज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विजावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ऊ) छिन्दवाडा	अमर बाग	श्री दि० जैन तारण मन्दिर	
	चौरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छिन्दवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर छोटा बाजार	गोलापूर्व दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर गोलगंज	श्री दि० जैन पाटनी धर्मशाला गोलगज
		श्री दि० जैन मन्दिर गोलगज	श्री दि० जैन पाठशाला अमरवाडा
		श्री दि० जैन परवार पचायती मन्दिर	
			श्री दि० जैन पाठशाला गोलगज
			श्री खण्डेलवाल दि० जैन भवन गोलगंज
			श्री परवार पचायत भवन बुधवारी छिन्दबाग
	हरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जुन्नारे देव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खैरी लाडू	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कु डा	श्री दि० जैन तारण मन्दिर	
	लिंगा ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोहगांव त० सोसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोहखेड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	न्यूटन कालरी चिखली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परासिरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिंगोडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ए) दतिया	दतिया	श्री दि० जैन मन्दिर दतिया कलाँ	
		श्री दि० जैन मन्दिर, सिमरिया की गढी, टाऊन हाल के पास	
	डिरोली	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	फिटेना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गेरठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ग्यारह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महरोल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुडरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नया खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेंधरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेवडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोनागिरि स्वर्णगिरि (तलहटी)	आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		आदिनाथ मन्दिर	
		अजितनाथ मन्दिर	
		अजितनाथ मन्दिर	
		अजितनाथ मन्दिर	
		अरहन्तनाथ मन्दिर	
		चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		चन्द्रप्रभु मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सोनागिरि	चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		महावीर मन्दिर	
		महावीर मन्दिर	
		महावीर मन्दिर	
		महावीर मन्दिर	
		महावीर मन्दिर	
		महावीर मन्दिर	
		महावीर मन्दिर	
		मल्लिनाथ मन्दिर	
		मुनि सुव्रतनाथ मन्दिर	
		मुनि सुव्रतनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		नेमिनाथ मन्दिर	
		पदमप्रभु मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्रिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सोनागिरि		
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पार्श्वनाथ मन्दिर	
		पिसनहारी का मन्दिर	
		ऋषभदेव मन्दिर	
		सम्भवनाथ मन्दिर	
		सर्वतोभद्रि का मन्दिर	
		शान्तिनाथ मन्दिर	
		सुमतिनाथ मन्दिर	
		सुपार्श्वनाथ मन्दिर	
		विमलनाथ मन्दिर	
	वतुथा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बछुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरकुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वसई	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ऐ) दमोह	अभाना	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	अगारा ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बम्होरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बय्यागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भडला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भाट खमरिया	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	बहेरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिलाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चकरदाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्दौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चौपरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	छोटी कंदर्जा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
	दमोह	श्री दि० जैन चैत्यालय	दि० जैन नवयुवक मण्डल
		भायत्री कालौनी	जैन पुत्री शाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	जैन माध्यमिक कन्या पाठशाला
		मलैयामिल	जैन सेवा दल दमोह
		श्री दि० जैन चैत्यालय	जैन उच्चतर माध्यमिक
		नया बाजार	विद्यालय (शासकीय मान्यता
		श्री दि० जैन चैत्यालय	प्राप्त)
		पुराना बाजार	महिला ज्ञान मन्दिर
		श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री बड़े बाबा जैन ट्रस्ट
		स्टेशन की धर्मशाला	श्री भागचन्द्र इटोरिया
		श्री दि० जैन मन्दिर	सार्वजनिक न्यास
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला समीप
		श्री दि० जैन मन्दिर	नन्हे मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन औषधालय
			(जैन धर्मशाला मे)
			श्री दि० जैन पाठशाला
			श्री दि० जैन पाठशाला
			श्री दि० जैन विमान कमेटी
	देवरी खेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घूवस	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फिन्द्रिय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुदपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुटेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	ग्राम सरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गूगरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हटा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन पाठशाला
	जमुनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	जवेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन पाठशाला
	जेरट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झकोन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जुझेरा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	करनपुरा-जवेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करनपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कटोरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केवना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केथोरा पो-खडेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खजरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खडेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केवलारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खण्डेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खमरिया (शिवलाल)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	किशुन गज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुआरखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुण्डलपुर (श्री कुण्डल-गिरि जी सिद्ध क्षेत्र)	श्री दि० जैन चन्द्रप्रभ मन्दिर	जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन जिनालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन जिनालय	
		श्री दि० जैन जिनालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन औषधालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन उदासीनाश्रम
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
	कुण्डलपुर सिद्ध क्षेत्र	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुतपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	माडनखेरा	श्री दि० जैन चैत्यालय	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मगरौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मैशाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मैनवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडियादो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोहड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नेगरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निदुवहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पालर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परासई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पटेरा	श्री दि० जैन चैत्यालय	जैन सेवा दल
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	पथरिया	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	पटनाखुर्द	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुरा वेरागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजा भटना	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	रजपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रिछई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सगरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	समदई सरियो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ममनापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सनाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सागा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सारस गली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सर्रा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सामा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सतगुंवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेहरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेमरा (हजारी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिगरामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिमपुरी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	सिगपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुजनीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सूखा निसई क्षेत्र पो० पथरिया	तारण स्वामी विशाल चैत्यालय	चैत्यालय मे शास्त्र भण्डार श्री दि० जैन धर्मशाला
	तारादेही	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तेंदुखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तेजगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ठिगसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थनेटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तिपुवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टोरी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	उन्हारी खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वमनपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वादकपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वनगाव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वासाकलाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वामा नारखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वासी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वनवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वस्वाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वर्थपटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वाया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विजोरा खमरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जोतराई	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ओ) देवास	गन्धावन (गन्धर्वपुरी)	श्री दि० जैन मन्दिर	पदमासन मूर्ति वाली प्याऊ
	हाट पीपल्या	श्री दि० जैन मन्दिर	धन्नालाल मानेश्वरी कन्या पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर मागलिक भवन श्री सेठ टोडरमल शिवजीराम टोग्या पाठशाला
	खातेगाँव	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री आदिनाथ मागलिक भवन
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पारमार्थिक औषधालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	खातेगांव		श्री दि० जैन सुव्रतनाथ धार्मिक पाठशाला
	सोनकक्ष (सोन कच्छ)	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन ट्रस्ट
			श्री महावीर भवन द्वारा दि० जैन ट्रस्ट
			श्री महावीर दि० जैन पाठशाला
(औ) धार	अजन्दा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बगडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बाकानेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बखतगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिखलदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डेहरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डेहरी सराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धामनोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धार	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर (आहगांव)	श्री दि० जैन शास्त्र भण्डार (मन्दिर मे)
		श्री शान्तिनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ दि० जैन मा० विद्यालय
			श्री शान्तिनाथ दि० जैन मिडिल स्कूल (सरकार से मान्यता प्राप्त)
	धर्मपुरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गधवाजी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गरडावद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गौतमपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुजरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गूमरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोपवडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुंकसी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन पाठशाला
	माडवगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनावर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	मुलमान	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मोहनखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पनावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पनधाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोकी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिगाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सीथाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुन्डैल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुसारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तालनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टोकी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वदनावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वार्जरोन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वसिनो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वेगन्दा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(अ) दुर्ग	अर्जुनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भीलाई नगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छुईखादान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोंगरगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
	दुर्ग	श्री दि० जैन मन्दिर सदर बाजार	महावीर कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट गजूलाल बाबूलाल ट्रस्ट श्री बुधीसागर दि० जैन खण्डेलवाल धर्मार्थ औषधालय श्री जयकीर्ति दि० जैन पाठशाला स्व० मुरी बाई महिला जैन पाठशाला सदर बाजार
	खेरागढ़-राजदुर्ग	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	राजनाँदगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन स्वाध्याय मण्डल श्री महावीर दि० जैन पाठशाला
(अ) गुना	अचलगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अशोकनगर	श्री दि० जैन चैत्यालय	प्रियकारिणी जैन कन्या पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पचायत

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
	अशोकनगर		श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला सुभाष गज
			श्री ज्ञान सागर दि० जैन औषधालय रजि० (सुभाष गज)
			श्री कुजलाल दि० जैन पाठशाला
			श्री मूलचन्द पारमार्थिक फण्ड सुभाष गज
			श्री वीतराग दि० जैन पाठशाला
			श्री विमलसागर सरस्वती भण्डार द्वारा श्री दि० जैन मन्दिर सुभाष गज
			श्री वर्धमान दि० जैन धर्मशाला रेलवे स्टेशन रोड
			वर्धमान हा० सै० स्कूल
			वर्धमान मिडिल स्कूल
	बजरगगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बहादुरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री चन्द्रप्रभु जैन पाठशाला
	बरखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरमद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीनागज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्देरी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री पदम कीर्ति दि० जैन कन्या विद्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर प्राणपुरा	
	चरनावदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चौथाखेडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छिकरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोरवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डुंगासरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ईसागढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुना (ग्वालियर)	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन कन्या विद्यालय चौधरी मुहल्ला
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			महावीर शिक्षा केन्द्र
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन माध्यमिक विद्यालय
			श्री दि० जैन औषधालय
	हिन्नोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामनघार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कदवाया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	काजिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खुमयावदु	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुंमराज	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	मदऊ खेडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महदपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मल्हारगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मवाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुंगावली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर नया बाजार	
	नई सराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ओडर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पदवाया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परकाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिनासी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरई गाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	पियरसेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राघौगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	राघेगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरिपाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेहराई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाढोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	अकलक विद्यालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	शाहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री पुष्पदत्त दि० जैन पाठशाला
			श्री सन्मति दि० जैन पाठशाला
	सिन्नी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाह बमुरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टोडरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वामनवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थूवौन	श्री दि० जैन जिनालय	
		श्री दि० जैन जिनालय	
		श्री दि० जैन जिनालय	
		श्री दि० जैन जिनालय	
		श्री दि० जैन जिनालय	
		श्री दि० जैन जिनालय	
		श्री दि० जैन जिनालय	
		श्री दि० जैन जिनालय	
		श्री दि० जैन जिनालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
(क) ग्वालियर	अमरोलण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छमिक	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्देरी	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन कन्या पाठशाला
			श्री दि० जैन औषधालय
			श्री पद्मकीर्ति जैन कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	चराई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चाटींगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिनोर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चीनोर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डबरामण्डी	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	दातिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करातिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केसआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुलैथ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुंकम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लश्कर	बडा मन्दिर पुरानी सहेली डीडवाना ओली	अखिल विश्व मिशन अलीगज
		श्री दि० जैन चैत्यालय घास मण्डी	बडा मन्दिर जैन पाठशाला डीडवाना ओली
		श्री दि० जैन चैत्यालय मामा का बाजार	दि० जैन छात्रावास चम्पाबाग धर्मशाला नई सडक
		श्री दि० जैन चैत्यालय मु० कोटावाला	दि० जैन छात्रावास कटोराताल जयायगा रोड
		श्री दि० जैन चैत्यालय मु० कोटावाला	दि० जैन पाठशाला चितेरा ओली माधव गज
			दि० जैन खण्डेलवाल किशोर मण्डल दानाओली
		श्री दि० जैन चैत्यालय मु० सच्चाराम	दि० जैन महासमिति इकाई
		श्री दि० जैन चैत्यालय शिन्दे की छावनी	दि० जैन तीर्थ रक्षा समिति
		श्री दि० जैन चैत्यालय तेरापथी राजाजी वालो का कसेरा ओली	कस्तूरचन्द जी सोनी धार्मिक एव सामाजिक ट्रस्ट
		श्री दि० जैन बीसपथी नसियां जी	श्री दि० जैन बन्धु सभा नया बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन बन्धु सभा शिशु पाठशाला नया बाजार

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	लश्कर	श्री दि० जैन मन्दिर बगीची	श्री दि० जैन बरैया बाल स्वय सेवक समाज सघ, मामा का बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर छत्री बाजार	श्री दि० जैन बीसपथी चम्पाबाग धर्मशाला नई सडक
		श्री दि० जैन मन्दिर चितेरा ओली माधव गज	
		श्री दि० जैन मन्दिर चितेरा ओली माधव गज	श्री दि० जैन जैसवाल वीर सेवा दल शिन्दे की छावनी
		श्री दि० जैन मन्दिर दाना ओली	श्री दि० जैन महावीर सेवा दल गोकुलचन्द जी का मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर दौलत गज	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ धर्मशाला चितेरा ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर दौलत गज	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ ट्रस्ट मन्दिर जी दाना ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर फालका बाजार	
		श्री दि० जैन मन्दिर गुडागुडी का नाका	श्री दि० जैन तेरापथी धर्मशाला पुरानी सहेली नई सडक
		श्री दि० जैन मन्दिर जनक गज	श्री दि० जन तेरापथी नई सहेली धर्मशाला दाना ओली बाडा मनीराम
		श्री दि० जैन मन्दिर जयेन्द्र गज	श्री दि० जैन वासुपूज्य पचायती मन्दिर ट्रस्ट
		श्री दि० जैन मन्दिर नाला का बाजार	श्री दि० जैन वीर सेवा सघ दाना ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर लाला का बाजार	श्री दि० वासुपूज्य जैन धमशाला पसारी ओली
		श्री दि० जन मन्दिर लोहा मण्डी	श्री गणेशीलाल फूलचन्द जी ट्रस्ट
		श्री दि० जैन मन्दिर मामा का बाजार	श्री गोकुलचन्द जी धर्मशाला लोहा मण्डी
		श्री दि० जैन मन्दिर मामा का बाजार	श्री जैन भवन बैरया पचायती दाना ओली

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	लश्कर	श्री दि० जैन मन्दिर माऊ का बाजार	श्री जैन वीर वाचनालय चम्पाबाग दाना ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर मुनीम जी का	
		श्री दि० जैन मन्दिर नई सहेली दाना ओली	श्री जैसवाल जैन नवयुवक मण्डल दाना ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर नया बाजार	श्री जैसवाल पचायती धर्मशाला नक्कासा-१ दाना ओली
		श्री दि० जैन मन्दिर टेकरी सस नरायन	श्री जिनेन्द्र पुस्तकालय एव वाचनालय जैन भवन दाना ओली
		श्री दि० जैन नागौरा मन्दिर दाना ओली	श्री महावीर धर्मशाला नई सड़क
		श्री दि० जैन वासुपूज्य मन्दिर	श्री महावीर दि० जैन मा० विद्यालय
		श्री जैसवाल पचायती मन्दिर दाना ओली	श्री पार्श्वनाथ धर्मशाला पुरानी सहेली डीडवाना ओली
			श्री पार्श्वनाथ पुस्तकालय चितेरा ओली माधव गज
			श्री ऋषभनाथ धर्मशाला मामा का बाजार
			श्री वर्धमान दि० जैन नवयुवक सघ डीडवाना ओली
			श्री वर्धमान जैन औषधालय दाना ओली
			श्री वर्धमान पुस्तकालय एव वाचनालय डीडवाना ओली
			श्री वैरया दि० जैन नवयुवक सघ दाना ओली
			श्री वैरया पचायती धर्मशाला दाना ओली
			स्व० श्री कस्तूर चन्द जी सोनी धार्मिक एव सामाजिक ट्रस्ट
			स्व० श्री केशरीमल जी पहाड़िया ट्रस्ट दौलत गज

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मगरौनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मिनारवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मितरार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मितरवार	श्री दि० जैन मन्दिर	अग्रवाल जैन धर्मशाला जैन वीर मण्डल
	मोहना	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुरार	श्री दि० जैन चैत्यालय दीनानाथ जी की बगीची	श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला चिकमतर
		श्री दि० जैन चैत्यालय ठन्डी सड़क मुकर्जी नगर	श्री दि० जैन वीर विद्यार्थी सघ
			श्री महावीर दि० जैन मिडिल स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर गुलाबचन्द बगीची ठाठीपुर	श्री वीर पुस्तकालय (जैन मन्दिर मन्तर)
	नरवर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाठई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रमाडर वाजना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रैंहद	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि (पर्वत पर)	श्री दि० जैन मन्दिरो की सख्या ८२ है	श्री दि० जैन विद्यालय
			श्री सरस्वती भण्डार
			श्री विद्यालय छात्रावास
			दस अन्य सस्थाये हैं।
	(तलहटी मे)	श्री दि० जैन मन्दिरो की सख्या १८ है	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
	सोनागिरि जी (तलहटी मे)		श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन धर्मशाला जैन मूर्ति सग्रहालय महिलाश्रम पुरातत्व सग्रहालय
(ख) होशगावाद	हरदा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन औषधालय श्री दि० जैन पाठशाला श्री शान्तिनाथ दि० जैन धर्मशाला
	होशंगाबाद	श्री दि० जैन लाल मन्दिर	
	इटारसी	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन तारण तरण चैत्यालय श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पचायती मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	न्ययार खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुहागपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वानापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ग) इन्दौर	इन्दौर	श्री आदिनाथ जिनालय मोदी जी की नसिया भु० कडावीन	दा० शी० गुलाबबाई दि० जैन विधवा सहायता कोष
		श्री आदिनाथ जिनालय, शक्कर बाजार (मारवाडी गोठ का मन्दिर)	दा० शी० कचन बाई दि० जैन श्राविकाश्रम
		श्री आदिनाथ तेरापथी मन्दिर शक्कर बाजार	दा० शी० कचनबाई प्रसूतिकाव शिशु स्वास्थ्य रक्षा सस्था
		श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय, मल्हार गज	दि० जैन सगीत विद्यालय मारवाडी मन्दिर, शक्कर बाजार
		श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय (इन्द्रभवन) तुकागज	प्रगतिशील नवयुवक मण्डल मल्हार गज
		श्री दि० जैन चैत्यालय मालवामिल मार्ग	प्रिंस यशवतराव आयुर्वेदिक जैन औषधालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	इन्दौर	श्री दि० जैन चैत्यालय शिक्षक नगर बिजासन रोड	रा० ब० जे० एल० जैन ट्रस्ट
		श्री दि० जैन चैत्यालय (श्री कल्याण मातेश्वरी दि० जैन कन्या पाठशाला)	सगीत मण्डल सयोगिता गज सेठ जबरचन्द फूलचन्द जोधा पारमार्थिक ट्रस्ट
		श्री दि० जैन चैत्यालय (श्री त्रिलोकचन्द जी हा० सै० स्कूल	सेतवाल कीर्तन मण्डल दि० जैन पचायती मन्दिर
		श्री दि० जैन चैत्यालय सुदामानगर	श्री आदिनाथ दि० जैन पाठशाला नन्दानगर
		श्री दि० जैन जिनालय बाम्बे आगरा रोड पलासिया	श्री आदिनाथ दि० जैन पाठशाला शक्कर बाजार
		श्री दि० जैन जिनालय जवरी बाग नसिया	श्री अजीत पाठशाला स्नेह लतागज
		श्री दि० जैन जियालय (नरसिह पुरा समाज) माणक चौक, शक्कर बाजार	श्री अनन्तनाथ दि० जैन पारमार्थिक औषधालय सयोगिता गज
		श्री दि० जैन जिनालय सुभाष चौक शक्कर बाजार	श्री अनन्तनाथ जिनालय ट्रस्ट श्री बाहुबली दि० जैन व्यायाम-शाला मालगज
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दानवीर सेठ हुकमचन्द जी सस्कृत महाविद्यालय, जवरी बाग
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन असहाय विधवा सहायक फड व भोजनालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन बजाजखाना मुक्त फण्ड ट्रस्ट
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन बोर्डिंग हाउस जवरी बाग
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन बोर्डिंग व्यायाम-शाला नसिया जवरी बाग
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन परवार समाज सगठन
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	इन्दौर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पोरवाल धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	महावीर मार्ग
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन रात्रि पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन सहायता फंड,
		श्री दि० जैन मन्दिर	मल्हारगज
		बिजलपुर	श्री गेंदालाल जी जैन
		श्री दि० जैन मन्दिर	पाठशाला छावनी
		गोराकुन्ड	श्री गेंदालाल माधोलाल जी
		श्री दि० जैन मन्दिर	मेंठी ट्रस्ट
		क्लर्क कालोनी	श्री गेंदालाल सूरजमल ट्रस्ट
		श्री दि० जैन मन्दिर परदेशीपुरा	श्री गोला लारे मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री गुलाबबाई डोसी दि० जैन
		राजेन्द्रनगर	पारमार्थिक ट्रस्ट
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री ज्ञानचन्द्रिका पाठशाला
		संयोगितागज छावनी	तुकागज श्राविकाश्रम
		श्री दि० जैन मंदिर	श्री हुमड मण्डल
		संयोगितागज छावनी	
		श्री महावीर चैत्यालय	श्री जैन गृह निर्माण सहकारी
		(अनूपभवन) तुकागज	संस्था
		श्री महावीर चैत्यालय	नया० मल्हारगज
		(फतेहचन्द मूलचन्द गृह मे)	श्री जैन महिला मण्डल
		श्री महावीर चैत्यालय	श्री जैसवाल मण्डल
		(राजमल जी काला के मकान मे)	
		श्री महावीर चैत्यालय	श्री जैन स्काउट्स यूनियन
		(शकरलाल जी कासली बाल गृह)	श्री जैन सहकारी पेढी मर्यादित
		स्नेहलता गज	श्री कल्याणमल जैन पवित्र
		श्री महावीर चैत्यालय उदासीनाश्रम	औषधालय
		श्री महावीर चैत्यालय (वीरेन्द्र	श्री कल्याण मातेश्वरी दि० जैन
		गाँधी के गृह मे)	कन्या पाठशाला, नलिया बाखल
		देवी अहिल्या मार्ग, जेल रोड	श्री कचन बाई दि० जैन
		श्री महावीर जिनालय, छावडा	पाठशाला जवरी बाग
		जी की नसिया, गाँधीनगर	श्री कचनबाई श्राविकाश्रम
		श्री महावीर जिनालय, तिलकनगर	जवाहरमार्ग
		श्री नेमिनाथ चैत्यालय, तुकागज	श्री कस्तूर चन्द विद्या मन्दिर
		(श्री रतनलाल जी मोदीगृह)	श्री कस्तूर चन्द विद्या मन्दिर
		श्री नेमिनाथ जिनालय, मल्हारगज	सहायक फण्ड

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	इन्दौर		श्री कपूरीबाई तेरापथी मन्दिर
		श्री नेमिनाथ जिनालय,	पाठशाला, शक्कर बाजार
		नेमिनगर जैन कालोनी	श्री किशोरी लाल जैन
		श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय	पारमार्थिक औषधालय
		गणेश प्रसाद गृह, भागीरथपुरा	श्री कृष्णपुरा दि० जैन
		श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय	पाठशाला
		जीवधर जी गृह नन्दानगर	श्री लश्करी मन्दिर पाठशाला
		श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय	गोराकुण्ड
		मल्हारगंज	श्री महावीर दि० जैन
		श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय	पाठशाला
		मन्नालाल धर्मचन्द जी गृह	श्री महावीर दि० जैन
		पाटनीपुरा	पाठशाला तिलकनगर
		श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय	श्री महिला समाज मल्हारगंज
		नन्दानगर	श्री नानक चन्द भगनीराम जी
		श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय	पाठशाला, सर हुकमचन्द मार्ग
		(शोभाराम जी चुन्नीलाल	श्री मानकचन्द भगनीराम ट्रस्ट
		के मकान में) राजमोहल्ला	श्री नरसिंह पुरा जैन मंडल
		श्री पार्श्वनाथ जिनालय,	श्री नेमिनाथ पाठशाला,
		शक्करबाजार	मल्हारगंज
		श्री समवसरण मन्दिर,	श्री परसराम दुलीचन्द
		उदासीन महिलाश्रम	चेरीटेबल ट्रस्ट
		श्री शान्तिनाथ चैत्यालय,	श्री पद्मावती परवाल मंडल
		मल्हारगंज	श्री प्रगतिशील नवयुवक मंडल
		श्री शान्तिनाथ जिनालय,	श्री सौ० प्रेमकुमारी बाई दि० जैन
		हुकमचन्द मार्ग	ज्ञानवर्धिनी पाठशाला
		श्री शान्तिनाथ जिनालय,	श्री सहयोगी मण्डल
		कल्याणभवन तुकागंज	श्री सेठ धन्नामल रतन लाल
		श्री शान्तिनाथ जिनालय,	दि० जैन पारमार्थिक ट्रस्ट
		मल्हारगंज	श्री सेठ धूलचन्द छोटेलाल
		श्री शान्तिवीर चैत्यालय	जैन ट्रस्ट
		(मेहलाल कपूरचन्द जी	श्री सेठ फतेह चन्द मूलचन्द जी
		गृह में)	जैन ट्रस्ट
			श्री सेतवाल मंडल
			श्री शोभाराम गम्भीरमल ट्रस्ट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	इन्दौर		श्री त्रिलोक चन्द जी जैन हा० सै० स्कूल छत्रीबाग श्री उदासीनाश्रम ट्रस्ट श्री उदासीनाश्रम ट्रस्ट श्री वर्धमान दि० जैन पाठशाला, महावीर मार्ग श्री वर्धमान मण्डल श्री वीर निर्माण ग्रन्थ प्रकाशन समिति 55 सीतलामाता बाजार श्री विश्रान्ति भवन, जवरीबाग सर हुकमचन्द दि० जैन सस्कृत महाविद्यालय
(घ) जबलपुर	अकलतारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बचैया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडगाँव सलैया	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर तारणतरण दि० जैन चैत्यालय	श्री सिघई रघुनाथ राम नारायण दास दि० जैन पाठशाला
	बहोरीबन्द		श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र लोनी पो० पाटन
	बाकल	श्री दि० जैन मन्दिर	महावीर सार्वजनिक वाचनालय एव पुस्तकालय पार्श्वनाथ जैन पाठशाला श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन वीर सेवा मडल
	बकलेहट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिलहरी	श्री दि० जैन शिखरबन्द मन्दिर	
	बुढार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दर्शनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोगरगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढापुलर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोखलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोसलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हसगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	इन्द्राना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जबलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन महिला शिक्षा सदन
		हनुमानताल	जवाहरगज
		श्री दि० जैन मन्दिर जवाहरगज	डी० एन० दि० जैन छात्रालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	जैन बाल शिक्षा सदन
		पुरानी बजाजी	हनुमानताल
		श्री दि० जैन नया मन्दिर	जैन डिग्री कालिज
		हनुमानताल	जैन गुरुकुल विद्यालय
			जैन मेडिकल कालिज
			जैन पुत्री शाला जवाहरगज
			जैन उदासीनाश्रम मढियाजी
			काशीबाई दि० जैन औषधालय
			जवाहरगज
			महावीर वाचनालय, लार्डगज
			नेमिनाथ वाचनालय,
			पुरानी बजाजी
			पार्श्वनाथ दि० जैन रात्रिशाला
			नया मन्दिर, हनुमानताल
			वर्णी दि० जैन गुरुकुल शाला
			पिसनहारी की मढिया
			वर्णी जैन रात्रिशाला जवाहरगज
			वीतराग विज्ञान पाठशाला राझी
			वीतराग विज्ञान स्वाध्याय
			मन्दिरशाला द्वारा दि० जैन
			स्टोर्स, राझी बाजार
	जमगांवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कैमोरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कटगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कटनी	श्री चन्द्रप्रभ दि० जैन मन्दिर	अमर सेवा समिति
		श्री दि० जैन चैत्यालय	ज्ञानोदय संगीत मण्डल
		श्री दि० जैन कांच का	हो० व बायोकैमिक औषधालय
		पचायती मन्दिर	द्वारा जैन नवयुवक सभा
		श्री दि० जैन मन्दिर	जैन अतिथि गृह
			जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			जैन गुरुकुल
			जैन नवयुवक मण्डल
			जैन पाठशाला ट्रस्ट
			जैन रात्रिशाला
			जैन शिक्षा संस्था ट्रस्ट
			जैन विवाह भवन
			महिला रात्रिशाला
			शान्ति निकेतन जैन संस्कृत विद्यालय
			श्री जैन प्राथमिक शाला
			श्री जैन पू० माध्यमिक शाला
			श्री कन्हैया लाल गिरधारी लाल जैन धर्मार्थ औषधालय
			श्री परमानन्द कन्हैया लाल जैन आयुर्वेदिक महाविद्यालय
			श्री सि० हीरा लाल कन्हैया लाल जैन छात्रावास
	कुम्ही	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मझौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुडतरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नया खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निगरामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडरभटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पहाडी पिपरौंध	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	पानीगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाटन	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन शिखर बन्द मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखर बन्द मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
	पावला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरौधा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुनमार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रैंपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रीठी डॉग केना	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर जैन विद्यालय
	सहजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिलौडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिहोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन नवयुवक मण्डल सरस्वती शिशु मन्दिर, जैन मन्दिर
	सिहोरा-खितौला	श्री दि० जैन मन्दिर श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिहुगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिलेमनाबाद	श्री दि० जैन शिखरबन्द मन्दिर	
	तिवरी-पडरभटा	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन पाठशाला भवन श्री महावीर चिकित्सालय श्री महावीर ज्ञानोदय समिति द्वारा सचालित हा० सै० स्कूल
	ठोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उफारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बसेहडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ङ) झाबुआ	रानापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री आदिनाथ दि० जैन पाठशाला
(च) खडुआ पूर्वी निमाड	अजड (तह० बडवानी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अतर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडवानी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बमाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुरहानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ दि० जैन पाठशाला
	डासर स्टेशन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धामनोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खामनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खडुवा	श्री दि० जैन चैत्यालय मोघट रोड	जैन स्कूल

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दानशीला चन्दाबाई कन्या पाठशाला जैन स्कूल सर्राफा बाजार
			श्री दि० जैन लाइब्रेरी
			श्री दि० जैन औषधालय पडावा रोड
			श्री दि० जैन पाठशाला, रामगंज
			श्री दि० जैन रात्रिशाला
			श्री खण्डेलवाल दि० जैन धर्मशाला घासपुरा
			श्री महिला मुमुक्षु मण्डल
			श्री मुमुक्षु मण्डल
			श्री नन्दलाल सेठी छात्रावास मोधा रोड
			श्री पोखाड दि० जैन धर्मशाला रामगंज
			श्री सहजानन्द दि० जैन पाठशाला द्वारा जैन छात्रावास
			श्री सप्तऋषि मण्डल
			श्री वीर नवयुवक मण्डल
			श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	खरगोन	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोदसरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महेश्वर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडलेश्वर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेरुखेडा की चौखट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोणा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पालसी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाटली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रेवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साकी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
	सेहनाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिर्री	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वथाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीन्द्र	श्री दि० जैन मन्दिर	
(छ) खरगोन पश्चिमी निमाड	बडवानी	श्री दि० जैन विशाल शिखर बन्द मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री महावीर दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री हरसुखराय जैन दि० जैन छात्रावास
	चूलगिरि क्षेत्र (पहाडी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	(तलहटी)	श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री आदिनाथ मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभ दि० जैन मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभ मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभ मन्दिर	
		श्री चन्द्रप्रभ मन्दिर	
		श्री महावीर मन्दिर	
		श्री नेमिनाथ मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ मन्दिर	
		श्री शान्तिनाथ दि० जैन मन्दिर	
		श्री शान्तिनाथ मन्दिर	
		श्री वासुपूज्य मन्दिर	
	खरगोन प० निमाड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोनारा	श्री दि० जैन शान्तिनाथ चैत्यालय	
	मानधाता (ओकारेश्वर)	ओकारेश्वर मन्दिर	कल्याणमल त्रिलोकचन्द इन्दौर वालो की धर्मशाला
	मण्डलेश्वर	श्री दि० जैन बडा मन्दिर राजेन्द्र बाबू मार्ग	श्री पोरवाड दि० जैन धर्मशाला, राजेन्द्र बाबू मार्ग
		श्री दि० जैन सरस्वती मन्दिर महात्मा गाँधी मार्ग	
	ऊन	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	पावागिरि (ऊन)	ग्वालेश्वर मन्दिर (पहाड पर)	जैन मुनि त्यागी वसति भवन (पहाड पर)
		श्री दि० जैन चन्द्रप्रभ मन्दिर	निहालचन्द शारदा भवन
		श्री दि० जैन महावीर मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन शान्तिनाथ मन्दिर	श्री महावीर दि० जैन गुरुकुल
			श्री महावीर वाचनालय (पहाड पर)
			श्री महावीर व शान्तिनाथ द्वार नया विश्रान्ति भवन
			श्री सभवनाथ दि० जैन वाचनालय
			श्री शान्तिनाथ आयुर्वेदिक औषधालय
	सिद्धवरकूट	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
(ज) मन्दसौर	आक्या	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अठावा त० जावद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भानूपुरा	श्री दि० जैन बीसपंथी चन्द्रप्रभु जिनालय	महावीर जयन्ती व्यवस्था समिति
			श्री दि० जैन ज्ञान चन्द्रिका आयुर्वेद औषधालय
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर (दि० जैन समाज, मु० पो० सधारा)	श्री दि० जैन नमिया जीर्णोद्धार समिति ट्रस्ट, सदर बाजार
			श्री दि० जैन प्राथमिक विद्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर (मु० पो० लोटखेड़ो वाया भानुपुरा)	श्री दि० जैन प्राथमिक विद्यालय
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
			श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
		श्री दि० जैन तेरापंथी मन्दिर	सूर्यसागर दि० जैन पाठशाला
		श्री सरावगी मन्दिर	
	चीलाखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धनगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री आदिनाथ दि० जैन पाठशाला
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
	गरोठ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घडौद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जाट (जावद)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जातला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जावद	श्री दि० जैन मन्दिर	सामूहिक वाचनालय
	कंथूली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	काकरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	काकरिया तलाई	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
	कुचडौद	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मल्हारगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनाण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मन्दसौर	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	पाठशाला (जनकपुरा मन्दिर में)
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
	नगरी ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नया गाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नीमथूर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रमावढी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रतनगढ त० जावद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सन्धारा	श्री दि० जैन बडा मन्दिर	
		श्री दि० जैन छोटा मन्दिर	
	सीहोर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिगोली त० जावद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तारापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तावली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थडौद	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	वोरदिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
(झ) मुरेना	ऐसाह त० अम्बाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अम्बाहमडी	श्री दि० जैन पचायती मन्दिर	टेकचन्द दि० जैन पाठशाला
	अम्बाह (नया)	श्री दि० जैन मन्दिर	टेकचन्द दि० जैन धर्मशाला
	अम्बाह (पुराना)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अम्बेहडा ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोशपुर ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जखौना (जूल की गढ़ी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर योगापुरा	
	जरखौना उपग्राम [illegible]पुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कचनौधा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खडियाहार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुथियाना ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	माता का पुरा त० अम्बाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परसोटा त० गौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परीक्षत का पुरा त० अम्बाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पोरसा त० अम्बाह	श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर	लोकल जैन प्राइवेट पाठशाला
		श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर सदर बाजार	महावीर वाचनालय, सदर बाजार
			श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला गाँधीनगर (आदिनाथ मन्दिर के पास)
	रामपुर गोठ त० अम्बाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रुअर ग्राम त० अम्बाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	श्यामपुर कलॉं	श्री दि० जैन मन्दिर	
	श्योपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिंघारी का पुरा त० मुरेना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिहोनिया	श्री शान्तिनाथ दि० जैन मन्दिर	
	वानमोर सीमेन्ट त० मुरेना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरेह ग्राह त० अम्बाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरखाई ग्राम त० अम्बाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विचपुरी त० अम्बाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ब) नरसिंहपुर	वीनापार ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोभी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन स्वाध्याय भवन
	गोटे गाँव	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री दि० जैन पुस्तकालय एव वाचनालय
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
	कमोद	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	कदेली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	करेली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर स्वाध्याय भवन श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	नरसिंहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पुस्तकालय श्री दि० जैन पुस्तकालय व वाचनालय श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	सगौरिदा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर स्वाध्याय भवन
	साकल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोकना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तेंदूखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर स्वाध्याय भवन
	बरमानघाट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विलहारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ट) पन्ना	अजयगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अकयगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अनामगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवेन्द्रनगर		श्री दि० जैन धर्मशाला श्री जैन पाठशाला
	गुनौर		श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला
	ककरहटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महेवाहोना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पन्ना	श्री दि० जैन मन्दिर बडा बाजार श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर धाम मुहल्ला	श्री दि० जैन धर्मशाला बडा बाजार श्री दि० जैन धर्मशाला धाम मुहल्ला श्री जैन पाठशाला
	पवई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मलेहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिरागिरि	श्री दि० जैन मन्दिर (प्रथम गुफा मे) श्री दि० जैन मन्दिर (द्वितीय गुफा मे)	
(ठ) राजगढ	चाचा खेडी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	गुजनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सारंगपुर	श्री बाहुबली दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री महावीर स्वामी दि० जैन मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
	तलेन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ब्यावरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ड) रतलाम	जाबरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	रतलाम	श्री दि० जैन मन्दिर चाँदनी चौक	दि० जैन महावीर ट्रस्ट जिला शाखा
		श्री दि० जैन मन्दिर कसारा बाजार	दि० जैन युवा फेडरेशन
		श्री दि० जैन मन्दिर, मानक चौक	म० प्र० दि० जैन तीर्थ रक्षा समिति जिला शाखा
		श्री दि० जैन मन्दिर नसिया सागोदी	चन्द्रप्रभु दि० जैन धार्मिक पाठशाला स्टेशन रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर, स्टेशन रोड	श्री आदिनाथ दि० जैन मडल
			श्री दि० जैन धर्मशाला (वोहरा)
			श्री दि० जैन केसरबाई पाठशाला
			श्री दि० जैन महासमिति शाखा (रतलाम)
			श्री दि० जैन माणिक चन्द पाना चन्द बोर्डिंग हाउस चाँदनी चौक
			श्री दि० जैन प्राथमिक कन्या पाठशाला
			श्री महावीर दि० जैन मन्डल
			श्री महावीर साहित्य सगम
			श्री नवयुवक दि० जैन मण्डल
			श्री सम्भवनाथ दि० जैन पाठशाला (रात्रि धार्मिक पाठशाला)
	सेलाना	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
(ढ) रायगढ	झुलकरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जरायसागर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	काजावेज	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ण) रायपुर	आरग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बलौदाबाजार	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	भाटापारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धमतरी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	कुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	नेवरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	नवापाराराजिम	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	पाण्डूका	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	रायपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	चम्पादेवी जैन (रात्रि)
		श्री दि० जैन चैत्यालय	महाविद्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	मिमगा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(त) रायसैन	अब्दुल्लागाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमलाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमरखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बेगमगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दीवानगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गैरतगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गौहरगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरखपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कस्बा बम्होरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोरोरी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
	मगरथा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडी सलामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मरेठी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नई जडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नई गढिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नूरगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिथरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रजपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रायसैन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शोभापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिचरमडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिदरऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिलवानी	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	अकलक दि० जैन पाठशाला
		तारणतरण दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री महिला पाठशाला
			तारणतरण दि० जैन पाठशाला
			तारणतरण दि० जैन पाठशाला
	सुल्तानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुनवाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुवाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तामोह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टोकापार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उदयपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ऊरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बासादेही	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरखन्दर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वासई	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
(थ) रीवा	अमर पाटन	श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर पुराना बाजार	श्री दि० जैन भवन (धर्मशाला)
		श्री दि० जैन मन्दिर गाधी चौक	सिद्धान्त सागर दि० जैन कन्या पाठशाला
(द) सागर	अदावन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आगासौद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमरमऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वकभूवाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वन्डा	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	बाँदरी	श्री दि० जैन शिखर बन्द मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	बरा	श्री दि० जैन शिखर बन्द मन्दिर	
	बरेठी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बगोदिया कलाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीना (इटावा)	श्री दि० जैन मन्दिर बजरिया	साहित्य समिति वीर सेवा सघ
		श्री दि० जैन पचायती मन्दिर	श्री दि० जैन गर्ल्स मिडिल स्कूल इटावा बाजार
			श्री महावीर दि० जैन धर्मार्थ औषधालय इटावा बाजार
			श्री नाभिनन्दन दि० जैन छात्रावास इटावा बाजार
			श्री नाभिनन्दन दि० जैन धर्मशाला इटावा बाजार
			श्री नाभिनन्दन दि० जैन कन्या पाठशाला इटावा बाजार
			श्री नाभिनन्दन दि० जैन पाठशाला सस्कृत विद्यालय इटावा बाजार
			श्री वीर सेवा दल
			श्री वीर सेवा सघ
			श्री वीर सेवा सघ पुस्तकालय एव वाचनालय
			श्रीमती सिघैन रुक्मणी बाई छात्रवृत्ति ट्रस्ट, इटावा बाजार

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बीना वाहरा	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पुरानी धर्मशाला
	अतिशय क्षेत्र	श्री शान्तिनाथ दि० जैन मन्दिर	
	भडावन गेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भानगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भरछा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विलहरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चाँदामऊर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छपरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छापरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चारटोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चारवेरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चौका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चितौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दलपतपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धुवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुटवारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गभिरियाघर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	गढा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढाकोटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गौरझामर	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री सन्मति दि० जैन पाठशाला
	गूगरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोपालगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरदी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिनोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिरछेद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ईशरवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जैसीनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर दि० जैन पाठशाला
	जालधर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जरारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जरुवाखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जासोडा पो० वरायण	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	जेरा. जैसीनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कजिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कनऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करेम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केरवना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केशली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केवलारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खमकुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खमरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खारमऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खटोरा कलाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खवेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खेराइ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिमलामा	श्री दि० जैन मन्दिर	खिमलामा आचार्य शान्तिसागर दि० जैन पाठशाला
	खुरई	श्री दि० जैन चैत्यालय बड़कुल	हस्तलिखित शस्त्र भडार
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री एस० पी० दि० जैन गुरुकुल
		श्री दि० जैन मन्दिर जैन गुरुकुल	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला बड़कुल चैत्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर गुरहाजी	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला मैलया मन्दिर
		श्री दि० जैन नया मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला नया मन्दिर
		श्री दि० जैन श्रीमन्त सेठ मन्दिर	एम० पी० जैन हाईस्कूल
	किशनपुरा पो० बरायण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोलुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुरमी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोटना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लुहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडोना जागीर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महेया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महुआर बोडी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	मैंमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मालथौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मजामा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मजरावा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मानक चौक	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनेसिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोकलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहल्ली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ननऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरमावली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नीमोन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पचमनगर	श्री दि० जैन मन्दिर पहाडी नाले के पास श्री दि० जैन मन्दिर वेवस नदी के तट पर श्री दि० जैन मन्दिर वेवस नदी के तट पर	
	पापट पो० दलपतपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परासिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परसो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाटन पो० विनेका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पठारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पठारसोई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पथरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पटनागज	बडे मन्दिर सख्या ८	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
		छोटे मन्दिर सख्या १८	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर सख्या २६	
	पीपरे	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिडरुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिठौरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रहली	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
	राहतगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रजवास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रोठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सदावन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सागर	रज्जीलाल कमरया द्वारा निर्मित जिनालय लक्ष्मीपुरा	भगवान दास शोभालाल चेरीटेबल ट्रस्ट चमेली चौक
		श्री दि० जैन चैत्यालय (मलैया जी द्वारा तिलीग्राम मे)	चिरोजाबाई श्री दि० जैन पाठशाला बडा मन्दिर कटरा बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय (श्री बालचन्द्र मलैया-गृह मे)	श्री जैन धर्मार्थ औषधालय (समाज भूषण सेठ भगवान दास द्वार सचालित)
		श्री दि० जैन चैत्यालय (श्री भैयाराम नाथूराम जी गोदरे के मकान मे)	दि० जैन धर्मशाला चमेली चौक दि० जैन धर्मशाला (तारण तरण चैत्यालय)
		श्री दि० जैन चैत्यालय (श्री दुलीचन्द जीवन कुमार बहेरिया वालो के मकान मे)	दि० जैन धर्मशाला (तारण तरण समाज की हवेली) दि० जैन महिलाश्रम शाला बडा बाजार
		श्री बाहुबली जैन मन्दिर वर्णी भवन मोराजी लक्ष्मीपुरा	दि० जैन मिडिल स्कूल
		श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय वर्णी भवन, लक्ष्मीपुरा	गणेश दि० जैन महाविद्यालयान्तर्गत वाचनालय, वर्णीभवन
		श्री दि० जैन बडा मन्दिर गाँधी चौक	गणेश दि० जैन सस्कृत महाविद्यालय छात्रावास, वर्णीभवन

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
		श्री दि० जैन बीच का मन्दिर	गणेश दि० जैन सस्कृत महा-
		बरिया घाट	विद्यालय वर्णी भवन
		श्री दि० जैन छोटा मन्दिर	गोलापूर्व दि० जैन ट्रस्ट
		कटरा बाजार	जैन भ्रातृसघ कटरा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर बजरिया	जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
		मोतीनगर	मलैया एजूकेशन ट्रस्ट,
			मलैया ब्रादर्स
		श्री दि० जैन मन्दिर	पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
		चौधरनबाई मोहननगर	सर्राफा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर	पूर्णचन्द बजाज ट्रस्ट,
		गोपालगज	सर्राफा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री बाहुबली सेवा दल,
		घाकागज	बडा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला, गणेश,
		महिलाश्रम	सस्कृत महाविद्यालय, वर्णी भवन
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन शान्ति निकुज
		शनीचरी टोरी	उदासीनाश्रम कटरा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर	सिद्धार्थनन्दन दि० जैन पाठशाला
		उदासीनाश्रम	सिघई कुन्दनलाल जी द्वारा
		श्री दि० जैन मन्दिर	निर्मित धर्मशाला, कटरा बाजार
		(सिघई ढाकनलाल जी)	तारण-तरण दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन पठा का मन्दिर	सर्राफा बाजार
		बडा बाजार	तारण-तरण परिषद
		श्री दि० जैन तारण-तरण	वीतराग विज्ञान पाठशाला
		चैत्यालय इतवारी टोरी	चकरा घाट
		श्री गौरा बाई दि० जैन मन्दिर	वीतराग विज्ञान पाठशाला
		कटरा बाजार	चकरा घाट
		श्री कट्टनीबाई दि० जैन मन्दिर	वीतराग विज्ञान पाठशाला
		बरिया घाट	गोपाल गज
		श्री सिघई बुधु का दि० जैन	वीतराग विज्ञान पाठशाला
		मन्दिर, चकरा घाट	गोराबाई दि० जैन मन्दिर
		सिघई कुन्दनलाल जी द्वारा	कटरा बाजार
		निर्मित	वीतराग विज्ञान पाठशाला
		जिनालय, लक्ष्मीपुर	शनीचरी

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सहावन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सालपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सनाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सीहोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेमर लाहारिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेदूडावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेवन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेसइ (वरोदिया)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाखा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिलोडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिलोथा (खुरई)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिमोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थानगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थवोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टीला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तोडातर कवर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उलदन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ऊमरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वमाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वमनौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वामोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वामोर मन्डी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वननाडू मानोनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वराज ग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वारया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरोल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वारोल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वसारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वेसरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विदवास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विदवासन	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	विनेका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विसराहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुरकोनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ध) सतना	अमरपाटन	श्री दि० जैन मन्दिर गांधी चौक	जैन क्लब
			जैन नवयुवक मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर पुराना बाजार	श्री दि० जैन भवन (धर्मशाला)
			सिद्धान्त सागर दि० जैन पाठशाला
	नागोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सतना	श्री दि० जैन विशाल मन्दिर	जैन क्लब
			महावीर दि० जैन पाठशाला
			रात्रि धार्मिक पाठशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला (दयाचन्द जैन निर्मित)
			श्री दि० जैन धर्मशाला (पाठशाला, प्रयोग हेतु)
			श्री दि० जैन स्कूल
			श्री दि० जैन वाचनालय एव पुस्तकालय
	सिंहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(न) शाजापुर	आगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भौंडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धरोला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मक्सी	श्री दि० जैन छोटा मन्दिर	श्री दि० जैन छात्रावास (समीप गुरुकुल)
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन बड़ा मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन स्टेशन धर्मशाला
			श्री दि० जैन विश्रान्ति भवन
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन चैत्यालय
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन गुरुकुल
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन औषधालय
	मन्दोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नलखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सेमनाखडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शुजालपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुमनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(प) शहडोल	बुढार	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन भवन श्री दि० जैन नवयुवक मण्डल श्री दि० जैन पुत्री पाठशाला
	जेतहरी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री जैन सेवा दल श्री वर्धमान दि० जैन पाठशाला
	कोतमा	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन वीर नवयुवक मण्डल
	मनिन्द्रगढ (सरगुजा)	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	सरगुजा पो० चिरमिरी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला चिरमिरी (सरगुजा)
	शहडोल	श्री दि० जैन पचायती मन्दिर मन्दिर रोड श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री धनराज सरावनी धर्मार्थ औषधालय श्री दि० जैन धर्मशाला श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
	उमरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	व्योहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(फ) शिवपुरी	अदरोनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अकारिरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अम्हरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आमोल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बदरखारा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन उदासीनाश्रम कोलारस श्री ज्ञानसागर दि० जैन सस्कृत हिन्दी पाठशाला वीतराग विज्ञान पाठशाला कोलारस
	बालगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बमरा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बगेदिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बासगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीजरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीलाटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भटनावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भोती	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोलारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चकनारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चमरौआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चेलागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छितरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छितुरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चोरपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छोटी बादौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देदरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देरबो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दितायला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोलाकोट (अतिशय क्षेत्र)	श्री दि० जैन विशाल मन्दिर	
	गूडर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुआनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इन्दार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झिरी	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
	कबरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कटेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	खनियाधाना	श्री नेमिनाथ दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री दि० जैन पुस्तकालय
			श्री दि० जैन ट्रस्ट
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन शिखरबद्ध बडा मन्दिर	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
	खरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खतौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिराकिट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोलारस	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
	मगरौनी त० केरवा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन बडा मन्दिर	
	महरोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महुये	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मीरोढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेतमदपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोहगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरौआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरवर	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन नया मन्दिर	
		श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र उखाया	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
	नेगमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पचराई	श्री दि० जैन मन्दिर सख्या २८	
	(सभी मन्दिर तलहटी मे परकोटे मे निर्मित है)		
	परागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परौदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पटगॉव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	पिपरौदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिरौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पितायला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पोटरी	श्री दि० जैन मन्दिर	अमर साहित्य सदन
			श्री दि० जैन ज्ञान विद्या मन्दिर
	पुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रोमीजा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	समुता	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरहॉ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेमरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेसई (कोलारस)	श्री दि० जैन पचायती शिखरबद्ध मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
	शिवपुरी	श्री दि० जैन मन्दिर पुरानी शिवपुरी	श्री दि० जैन हिन्दी विद्यालय
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मानस्तम्भ	
		श्री दि० जैन पचायती मन्दिर (शिखरबद्ध)	
		श्री महावीर दि० जंन मन्दिर	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
	सिरमौद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुनारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तेरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वहगमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वयारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वेरखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ब) सिहोर	बहादुरनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बालागॉव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बमनोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोरखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छिपानेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छोटगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दलीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दिवडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हलवनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इच्छावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इस्लामनगर	श्री दि० जेन मन्दिर	
	इटावा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेहतवाडा (जावर)	श्री दि० जैन मन्दिर	चन्दन बाला महिला मण्डल
			जैन ज्योति
			जैन पत्र
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन समाज
			श्री दि० जैन वर्धमान पाठशाला
			श्री दि० जैन वर्धमान सेवा मण्डल
	मेसन्दा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
	नीमनागाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नियानीया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सीहोर बतेत	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
(भ) सिवनी	छपारा	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर (शिखरबद्ध)	बाहुवली दि० जैन नवयुवक मण्डल बाहुबली दि० जैन व्यायामशाला श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन धर्मार्थ औषधालय श्री दि० जैन धर्मशाला (सिघई मिट्ठनलाल नेमिचन्द द्वारा निर्मित) श्री पार्श्वनाथ दि० जैन विद्यालय श्री सरस्वती भवन (विशाल वाचनालय)
	धनौर	श्री दि० जैन विशाल प्रतिमा (भारत सरकार पुरातत्व विभाग के अधीन)	
	केवलारी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	लखनादौन	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मार्थ औषधालय श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन वाचनालय श्री जैन डिग्री कालिज श्री पूरनसाव जैन छात्रवृत्ति ट्रस्ट
	सिवनी	श्री दि० जैन बडा मन्दिर श्री दि० जैन छोटा मन्दिर श्री दि० जैन गृह चैत्यालय	प० सुमेरचन्द दिवाकर प्रकाशन, दिवाकर सदन सस्कृत विद्यापीठ शुक्रवारी श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन औषधालय श्री दि० जैन पुस्तकालय श्री दिवाकर कन्या पाठशाला द्वारा अभिनन्दन कुमार दिवाकर एडवोकेट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			श्री मुन्नीबाई महिलाश्रम कन्या पाठशाला द्वारा श्रीमन्त सेठ गोपाल साव पूरण साव
			श्री नवयुवक क्लब
			श्री पारस क्लब (दि० जैन धर्मशाला)
(म) टीकमगढ़	अहार क्षेत्र	श्री भूगर्भ जिनालय	श्री दि० जैन शान्तिनाथ संस्कृत विद्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ दि० जैन छात्रावास
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ दि० जैन महिलाश्रम
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ दि० जैन पारमार्थिक औषधालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ सरस्वती सदन (श्री दि० जैन मन्दिर)
			श्री शान्तिनाथ दि० जैन वाचनालय
			श्री शान्तिनाथ दि० जैन व्रती आश्रम
	अहार क्षेत्र (पच पहाडी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	अजनौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमरपुर पो० बड़गाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अर्न्तारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	एरौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अस्ताई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	असाटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अतौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बछौडा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बडा गॉव (घसान)	श्री दि० जैन मन्दिर	आनन्द साहित्य मन्दिर
			कुंदकुंद स्वाध्याय सदन
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री सन्मति संगीत मंडल
			श्री शान्ति सेवा मण्डल
			श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	बडमाउई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बैसाखास	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	वल्देवगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बम्होरी वराना	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन पाठशाला
	भजना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भेलसा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भेलसी पो० बल्देवगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिलगाए	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बूदौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुडेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्दावती	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्देरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्द्रपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चौयो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दरगॉव बडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दरगॉव छोटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दरमुवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवराहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवराज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धामनो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ढिल्ला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धुवसी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दिगौडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डिकौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डूँडा पो० डूँडा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	दुमदुमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुटेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घूघमी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हैदरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हटा पो० बल्देवगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	हतेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हीरापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इकबालपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जरुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जतारा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन पाठशाला
	ज्यौरामोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ककरवाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	ककावनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कजना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कन्नपुर	श्री दि० जेन मन्दिर	
	कपासी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कारी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	केशवगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खरौ	श्री दि० जेन मन्दिर	
	खारौ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खरगापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिस्टौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	किसनगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोपोगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुड़याला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुडीला पो० करमोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
	कुम्हेड़ी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुपी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लडवारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लार बजग्यिा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	लौहर गुवाँ (महादेव)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लिधौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मगरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मझगुवाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मकारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मालपीथा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मलगुवाँ पो०	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खरगापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ममेत	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मार्धे	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मस्तापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मवई	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	मीनेपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोगना पो० गोर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोहनगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नादील	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नारायणपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नवागढ़ मु० पो० बक्सवाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निवाड़ी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ओरछा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पपौरा (अतिशय क्षेत्र)	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन छात्रावास (विद्यालय के साथ)
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन महासमिति इकाई

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन प्रबन्धकारिणी समिति
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन वीर विद्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर नेत्र चिकित्सालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री मोतीलाल वर्णी सरस्वती सदन
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री ऋषभ दि० जैन उदासीनाश्रम
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जंन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन सन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जेन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		[२४ तीर्थंकरो की २४ मदिरियो को मन्दिर मान इनकी सख्या ७० लिखी गयी है जो वस्तुतः शोध का विषय है]	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	परा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	पठारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पृथ्वीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मगरवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मकेरा भटारन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	समर्रा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सापौन पो० अजनौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरकनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	सतगुंवा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन पाठशाला
	सिमरा जरोन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिमरा खुर्द	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	सुजानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुन्दरपुर पो० पठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टानगा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थौना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टेहरका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टेटरका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टीकमगढ़	श्री दि० जैन चैत्यालय	अकलंक वीर बाल मण्डल
		श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री बाहुबली सेवा संघ
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री बुन्देलखण्ड जैन नवयुवक संघ
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन छात्रावास
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन महासमिति इकाई
			श्री दि० जैन महावीर पोलियो विरोधक केन्द्र
			श्री दि० जैन महिला परिषद
			श्री दि० जैन महिलाश्रम
			श्री दि० जैन मैरिज ब्यूरो
			श्री दि० जैन नगर पंचायत
			श्री दि० जैन परिषद
			श्री दि० जैन संग्रहालय
			श्री दि० जैन सूर्यसागर पाठशाला
			श्री दि० जैन व्रती आश्रम

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
			श्री प्रौढ महिला दि० जैन पाठशाला
			श्री मरस्वती सदन
			श्री शान्तिनाथ दि० जैन सस्कृत विद्यालय
	टिम्मा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ऊमरी मु० पो० ककरवाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बंरवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वर्मा डाग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वर्मा ताल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बीरऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विरौरा खेत	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन पाठशाला
(५) उज्जैन	अमला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खाचरोड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खाराकुआँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खरमोद कलाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महिदपुर	श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री आदिनाथ दि० जैन पाठशाला
			श्री आदिनाथ नवयुवक मण्डल
			श्री दि० जैन महिला स्वाध्याय भवन
			श्री दि० जैन स्वाध्याय भवन
	नागदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नखरझाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पलवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मिरीला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तराना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उज्जैन	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर नमक मडी	आवासगृह पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर फ्रीगज
		श्री दि० जैन मन्दिर भरूँगढ	भागीरथ लक्ष्मीचन्द्र ट्रस्ट नयापुरा
		श्री दि० जैन मन्दिर जयसिंह पुरा	भवरी देवी गगवाल स्मृति फड
			रामलाल जवाहरलाल मराय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर कल्याणमल जी माधवगज	धन्नालाल हेमराज पारमार्थिक औषधालय फ्रीगज
		श्री दि० जैन मन्दिर क्षीर सागर कालोनी, फ्रीगज	फूलचन्द दि० जैन पारमार्थिक औषधालय फ्रीगज
		श्री दि० जैन मन्दिर लक्ष्मीनगर कालोनी	गणेशराम सूरजमल दि० जैन औषधालय फ्रीगज
		श्री दि० जैन मन्दिर लक्ष्मी नगर कालोनी	गणेशराम सूरजमल दि० जैन ट्रस्ट माधव नगर
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर फ्रीगज	हेमराज धन्नालाल दि० जैन छात्रावास माधवगज
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर नयापुरा	हेमराज धन्नालाल दि० जैन ट्रस्ट माधव नगर
		श्री विनोद भवन चैत्यालय	मणिकचन्द सेठ ट्रस्ट फण्ड विनोद भवन
			मोहन मेन्शन फ्रीगज
			मावतराम सेवाराम ट्रस्ट नयापुरा
			श्री तिलक पन्नालाल दि० जैन औषधालय नयापुरा
			श्री दि० जैन धर्मशाला लखेरवाड
			श्री दि० जैन धर्मशाला नमक मडी
			श्री दि० जैन धर्मशाला नयापुरा
			श्री दि० जैन महिला मडल नयापुरा
			श्री दि० जैन नवयुवक मण्डल नमक मडी
			श्री गुलाबबाई दि० जैन कन्या पाठशाला नयापुरा
			श्री ज्ञानसागर दि० जैन कन्या विद्यालय नमक मडी
			श्री ज्ञानसागर दि० जैन वाचनालय नमक मडी
			श्री जैन पुरातत्व सग्रहालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
			श्री जयमागर दि० जैन पाठशाला नमक मडी
			श्री केशरबाई दि० जैन पाठशाला फ्रीगज
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन नवयुवक मडल नयापुरा
			श्री रामलाल जवाहरलाल मार्वजनिक पारमार्थिक न्यास माधव नगर
			श्री समन्तभद्र पुस्तकालय
			श्री सूर्यसागर दि० जैन हा० सै० स्कूल
			श्री सूर्यमागर दि० जैन माध्यमिक विद्यालय
			तेजपाल पाण्डया ट्रस्ट फड माधवगज फ्रीगज
			विमल वाचनालय विनोद भवन
	वर्ड डीया	श्री दि० जैन मन्दिर	
(र) विदिशा	आनन्दपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अथर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अठारी खेजडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडोह (पठारी)	श्री दि० जैन मन्दिर [७वी ८वी शताब्दी के २४ शिखरबद्ध जैन मन्दिर है]	
	बमुरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरेठ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बर्रोग्राम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भगवन्तपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भोरामा (कुरवाई)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चन्दपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छिरारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डगेरजारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दीवना खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	धोबीखेड़ा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फूफेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गमाकर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गजबा सौदा	श्री दि० जैन मन्दिर बुंदेपुरा	आदर्श दि० जैन पाठशाला
			श्री दि० जैन आदर्श बाल मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर धूमरपुर	श्री दि० जैन अखिल विश्वमिशन शाखा
		श्री दि० जैन मन्दिर धूमरपुर	श्री दि० जैन महावीर मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर गांधी चौक	श्री दि० जैन मित्र मण्डल, स्टेशन मंडी
			श्री दि० जैन नवयुवक मण्डल
			श्री दि० जैन शास्त्र स्वाध्याय मण्डल
			श्री दि० जैन तारणतरण पाठशाला स्टेशन मंडी
			श्री दि० जैन तारणतरण ट्रस्ट बोर्ड आनन्द प्रकाशन मन्दिर
			श्री दि० जैन तारणतरण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
			श्री दि० जैन तारणतरण वीतराग विज्ञान पाठशाला धूमरपुरा
			श्री दि० जैन विवेक मण्डल
	गऊमोडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गरेठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घटेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुलाबगंज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुलाकार्ज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ग्यारसपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	हामदपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरनई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हैदरगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	हिमोसिया सेना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिनोदिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिरनई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इमजावदार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कसी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करैयाहार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खुजा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	किरखापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुकरावदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुल्हार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुरवाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लागादा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लगका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ललचिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लटेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोहागी (विदिशा)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडपाखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ममदगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मन्नावाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मानोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मूडरा (सिरोंज)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुगल सराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुखाम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुरारिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नागरौय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नेबदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ओलीजा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडरानी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परस परसोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पठारी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	पट्टान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीलादाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीपलखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीपलौम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपलधार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुतलीघाट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रसूलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रायन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रतैया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रनोई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	समहली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	समिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शमशाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शमशाबाद गढ	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री वीतराग महिला पाठशाला
			श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	शेरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिघोटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिमरार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिपानी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिरौज	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन महिलाश्रम
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन मिडिल स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पारमार्थिक आपधालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री जैन युवक मण्डल
	सिरनैया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिथिमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुजाखेडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	स्यारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ताजखजूरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	त्योंदा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
	उदयगिरि	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उदयपुर देहरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उदेपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आरसी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बगोदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विदिशा	श्री दि० जैन चैत्यालय किले मे	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन छात्रावास
		श्री दि० जैन चैत्यालय पेशवापथ	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर किले मे	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन हा० सँ० स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर किले मे	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन पारमार्थिक आयुर्वेदिक औषधालय माधवगज
		श्री दि० जैन मन्दिर माधवगज	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन पोस्ट ग्रेजुएट कालिज
		श्री दि० जैन मन्दिर सुभाष मार्ग	सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द जैन साहित्य उद्धारक फण्ड माधवगज
		श्री दि० जैन मन्दिर वीर हकीकत मार्ग	
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन चैत्यालय लाइन बाहर	श्री दि० जैन धर्मशाला बडा मन्दिर
		श्री तारणतरण दि० जैन चैत्यालय सुभाष मार्ग	श्री गणेशवर्णी पाठशाला
			श्री ज्ञान प्रकाशिनी पाठशाला
			श्री जैन नाट्य समिति
			श्री जैन पुरातत्व समिति
			श्री जैन वीर दल (किले मे)
			श्री कानजी स्वामी स्मृति प्रकाशन ट्रस्ट
			श्री कुन्दकुन्द दि० जैन स्वाध्याय मन्दिर
			श्री महावीर जैन बाल वाचनालय माधवगंज
			श्री महावीर सहायता कोष

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
			श्री मातेश्वरी शक्करबाई जैन छात्रवृत्ति फण्ड माधवगज
			श्री राजमल बडजाला जैन शिशु मन्दिर
			श्री सन्मति जैन सार्वजनिक वाचनालय माधवगज
			श्री सौभाग्यवती बाई जैन कन्या माध्यमिक पाठशाला
			श्री शीतलनाथ जैन मा० शाला
			श्री तारण-तरण जैन नवयुवक मण्डल
			श्री वीतराग विज्ञान महिला पाठशाला माधवगज
			श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला (किले मे)
(ल) विलासपुर	अकलतरा	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	जैन भवन (धर्मशाला)
			श्री महावीर दि० जैन पाठशाला
	चिरमिरी	श्री दि० जैन मन्दिर जी	
	जैला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनेन्द्रगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेन्डरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुंगेली	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर	
	पेन्डरारोध	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मरकडा विलासपुर	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर	(प्रेमचन्द रतनचन्द जी क्लाथ मर्चेन्ट पन्ड्रा रोड)
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट जूना बाजार)	

--- O ---

औरंगाबाद :—

यहाँ जैन-सम्प्रदायो की सख्या ५००० से अधिक है, जैन वातावरण भी धार्मिक है। यह ऐतिहासिक शहर सात छोटी-छोटी पहाड़ियो के बीच बसा हुआ है, जन-संख्या लगभग दो लाख है। अजन्ता, एलोरा तथा औरगाबाद की गुफाये विश्व प्रसिद्ध है जिनमे बौद्धो व अन्य मतावलम्बियो के अतिरिक्त जैन गुफाये जिनमे बडी-बडी प्रतिमाये भी है। शहर मे ६-७ जैन मन्दिर व स्थानक मौजूद है। यहाँ ओसवाल, खण्डेलवाल, साहूजी, तेरहापथी, बाइस सम्प्रदाय तथा अग्रवाल जैन है। एक मन्दिर के नीचे तो तेहरवाना है जिसमे ७५ के लगभग १½ तथा २ फुट ऊँची जैन प्रतिमाये है। मन्दिर मे ऊपर १०० के लगभग मूर्तियाँ है। इसके अतिरिक्त यहाँ कचनेर अतिशय क्षेत्र, पैठन मे एक बडा मन्दिर है। उसमे नीचे लगभग ४-५ फुट ऊँची मूर्ति बालू रेत की बनी भगवान मुनि सुव्रत की है जो मारीच के समय की बताते है। यह भी अतिशय क्षेत्र है।

सिरपुर मे अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति है तथा कुन्थलगिरि अतिशत क्षेत्र है जहाँ आचार्य मल्लि शान्ति-सागर जी महाराज का निर्वाण हुआ था। एलोरा मे एक जैन गुरुकुल है। जहा लगभग १५० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे है। यहाँ तेरहापथ समाज की ओर से एक जैन छात्रालय मराठवाडा यूनीवर्सिटी के पास है जहाँ लगभग १०० छात्रो का निवास है।

फलटन :—

फलटन ग्राम महाराष्ट्र राज्य मे सातारा जिले मे है। इस गाँव मे जैन परम्परा महावीर-निर्वाण से अब तक चली आ रही है। फलटन को दक्षिण की काशी नाम से पहचानते है क्योकि यहाँ शिखरबद्ध ६ मन्दिर है। चार मन्दिर मानस्तम्भयुक्त एव मनोज्ञ हैं। विशेष रूप से श्री चन्द्रप्रभु भगवान का मन्दिर बहुत विशाल है, उसको बाचन जिनालय कहते है। सब मन्दिरो का काम पत्थर का है।

महाराष्ट्र

श्री १००८ चन्द्रप्रभु मन्दिर मे श्री धवल, जयधवल, महाधवल ग्रन्थराज का ताम्रपत्र तथा तस्वीरे सुरक्षित रखी गयी है। ये ग्रन्थ श्री ६०८ आचार्य शान्तिसागर महाराज ने श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर मे रखे है। दूसरा मन्दिर आदिनाथ भगवान का है। यहाँ लकडी के ऊपर हुआ नक्काशी का काम मध्ययुगीन भारत का एक आदर्श नमुना है। यहाँ दिगम्बर, दूमड चतुर्थ पचम शेतवाल आदि मिलाकर ७५० मकान है।

यहाँ दो प्राचीन मन्दिर दसवी शताब्दी के है एक अभी भी है और दूसरा खण्डहर हो गया है, जो मन्दिर खण्डहर हो गया है वह पार्श्वनाथ भगवान का था। नेमिनाथ भगवान के मन्दिर मे नेमिनाथ का दशपूर्वभव का इतिहास मूर्तिरूप से बनाया गया है।

श्री १००८ चन्द्रप्रभु मन्दिर मे चाँदी का एक रथ है। श्री वृषभनाथ ग्रन्थ प्रकाशन सस्था प० पू० श्री ७०८ आचार्य नेमीसागर महाराज के आदेश से उपलब्ध की है जिसके द्वारा ५१० ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) अहमदनगर	बडा गाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बालमपाककी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बेलंबडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोवगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवीभोपरा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
	जबका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जवला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	काँबी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खर्डी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोकमठाण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोल्हार	श्री दि० जन मन्दिर	
	लोहुरुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लोणि	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मिगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	प्रवरा सगम	श्री दि० जेन मन्दिर	
	पुणसोवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सगमनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहजापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शेदगाँव	श्री दि० जेन मन्दिर	
	श्री गोदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टाकसीमान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	येकुरेख	श्री दि० जैन मन्दिर	
(आ) औरगाबाद	अडुल	श्री दि० जैन मन्दिर, पाहरी	
	आडगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अजड	श्री दि० जेन मन्दिर	
	एलोरा	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री पाश्वनाथ दि० मन्दिर जैन अतिशय क्षेत्र
	आमगाँव ज्ञानेश्वर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अधारी त० शिलल्लोड	श्री दि० जेन मन्दिर	
	औकराल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	औरगाबाद	दि० जन मन्दिर सर्राफा बाजार	
		दि० जैन पचायती बिगार मन्दिर चाक बाजार	
		खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर किराना बाजार	
		श्री चन्द्रप्रभु जी का मन्दिर सेठ वालों का	
		श्री नेमिनाथ मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
		श्री शान्तिनाथ मन्दिर	
	अवानेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आवेलहोक	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बैंजापुरा पो० शीडर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बालखेड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बनट्सेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बासड मु० देवपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बामडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चापलेड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिकटगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिचरखेड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दौलताबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दिपौ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुलवारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घाटनादाता त० शिललोड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घोडगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोलिगांव त० खुअतावर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोमापुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोरमनाथ पो० खामनाथ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हमनूर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जबखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जाखडी पो० कोडवारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झानड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जुना जालना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कबुलगांव पो० लासूर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कचनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री दि० जैन धर्मशाला
	कन्नड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कमावर खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खामगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खडाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मनर मोवगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मानेरी त० आम्बड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मगापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	मनुर मु० मालेगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मापढीवाडगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नादर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नामखेड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निम्नोड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाछेह्	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाचोड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पामोरी खुर्द पो० लासूर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पानेगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परमोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पैठण	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री १००८ मुनि सुव्रतनाथ दि० जैन अतिशय क्षेत्र
	पेडापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीपलग्राम पो० सावट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीपरखेड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजी उचेगाँव त० अबं	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रेह्राटगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सापरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साँवगी बाजार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सावगी पो० सोवलगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेन्दूरवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टाकली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	थापानेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उचेगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वडेरगाँव त० गगापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वडोद बाजार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वडोर गगडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वाकली त० वेजापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वाकूज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वलेगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वामुकगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विहामाडया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विरगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(इ) भंडारा	भंडारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोंदिया	श्री दि० जैन मन्दिर	सेठ छुन्नामल जैन धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय माता टोली
(ई) बम्बई	बम्बई	श्री आदिनाथ बाहुबली दि० जैन मन्दिर श्री आचार्य शान्तिसागर स्मारक श्री १००८	आदिनाथ बाहुबली दि० जैन मन्दिर ट्रस्ट, मडपेश्वर रोड बोरिवली (वेस्ट) बम्बई-६६
		श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर भूलेश्वर, बम्बई-४	बाहुबली दि० जैन मन्दिर ट्रस्ट बोरिवली, त्रिमूर्ति
		श्री दि० जैन चैत्यालय, हीराबाग	चन्द्रप्रभु दि० जैन वीतराग
		श्री दि० जैन चैत्यालय, जौहरी बाजार	विज्ञान पाठशाला, १६१ भूलेश्वर रोड
		श्री दि० जैन चैत्यालय जवेरी बाजार	(चन्द्रप्रभु दि० जैनमन्दिर)
		श्री दि० जैन चैत्यालय C/o सेठ माणिकचन्द पानीचन्द जौहरी चौपाटी	दि० जैन पाठशाला, दि० जैन मुमुक्ष मण्डल प्लाट न० २२७ आर० बी० मेहता रोड घाट कोपर बम्बई-२७
		श्री दि० जैन मन्दिर, भूलेश्वर	दि० जैन पाठशाला सुमन्तलाभ सेठ
		श्री दि० जैन मन्दिर, गुलालबाडी	सविता सदन, सुभाषलेन दप्तरी रोड, मालाड बम्बई-६४
		श्री दि० जैन मन्दिर कालबादेवी रोड	जैन सेवा समिति के० ऑप/ आर० आर० श्राविकाश्रम
		श्री दि० जैन मन्दिर मलाड	ताडदेव बम्बई-७
		श्री दि० जैन मन्दिर C/o सेठ पूरणलाल, घासीलाल चौपाटी	रतनबाई रुक्मणी बाई महिलाश्रम ताडदेव बम्बई-७
		श्री दि० जैन मन्दिर थाणा	सेठ हीराचन्द गुमान जी जैन बोर्डिंग स्कूल १४८ लेमिंग्टन
		श्री दि० जैन मन्दिर, वरली	रोड, ब्रिज के पास ताडदेव बम्बई-७
		श्री दि० जैन श्रीमधर मुमुक्ष मन्दिर १७३/१७५ मुबादेवी रोड बम्बई-२	शाहचन्दूलाल कस्तूरचन्द चेरिटेबल ट्रस्ट ५०० काटन
		श्री महावीर स्वामी का दि० जैन मन्दिर एन० सी० केलकर रोड, शिवाजी पार्क पो० आ० के सामने दादर बम्बई-२८	एक्सचेंज बिल्डिंग, ५ माला बम्बई-२
			श्री आचार्य शान्तिसागर स्मारक श्री १००८ आदिनाथ त्रिमूर्ति नेशनल पार्क

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बम्बई	श्री नेमिनाथ भगवान दि० जैन जिन मन्दिर प्लाट न० २२७/६०, आर० बी० मेहता रोड घाट कोपर, बम्बई-७७	श्री बालचन्द चेरीटेबल ट्रस्ट कनस्ट्रकशन हाउस, बालचन्द हीराचन्द मार्ग बेलार्ड पियर बम्बई-१
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर गुलालबाडी, बम्बई-२	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन औषधालय १६१ भूलेश्वर बम्बई-२
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर कालबादेवी रोड, बम्बई-२	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन पाठशाला
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर १५ रास्ता खार, बम्बई-५२	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर भूलेश्वर बम्बई-२
		श्री ऋषभदेव भगवान जिन मन्दिर, १०५ दफ्तरी रोड, देना बैंक के सामने मालाड (ईस्ट) बम्बई-६४	श्री दि० जैन मुमुक्ष मन्दिर पाठशाला १७३/१७५ मुंबादेवी रोड बम्बई-२
			श्री गोरेगांव पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर ट्रस्ट प्लाट न० ३०७ जवाहरनगर गोरेगाँव (वेस्ट) बम्बई-६२
			श्री एल० के० पन्नालाल जी दि० जैन औषधालय हीराबाग सी० पी० टैंक बम्बई-४
			श्री महावीर स्वामी का दि० जिन मन्दिर पाठशाला एन० सी० केलकर रोड शिवाजी पार्क दादर, बम्बई-२८
			श्री माणिकचन्द लाभचन्द दि० जैन पाठशाला
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर गुलालबाडी, बम्बई-२
			श्री नेमिनाथ भगवान दि० जिन मन्दिर पाठशाला, प्लाट न० २२७, ६० आर० बी० मेहतारोड, घाटकोपर, बम्बई-७७
			श्री ऋषभदेव भगवान जिन मन्दिर पाठशाला दफ्तरी रोड, मालाड (ईस्ट) बम्बई-६४

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बम्बई		श्री सेठ हीराचन्द गुमान जी धर्मशाला हीराबाग सी० पी० टैंक बम्बई-४
			श्री श्रेयास प्रसाद चेरीटेबल ट्रस्ट निर्मल-३ तीसरा मजला २४१ बेकवेरेकलेमेशन बम्बई
			श्री सुखानन्द आश्रम (धर्मशाला) चेरीटी ट्रस्ट सी० पी० टैंक भूलेश्वर, बम्बई-४
			वीतराग विज्ञान पाठशाला २७१/२१३ एन० सी० केलकर रोड, शिवाजी पार्क दादर, बम्बई-२८
			वीतराग विज्ञान पाठशाला श्री सीमन्धर स्वामी दि० जैन मन्दिर १७३/१७५ मुम्बा देवी रोड बम्बई
(उ) बुलडाना	चिरवली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डासाजा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देऊकघाट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देउलघाट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवधावा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवलगाँवराजा	श्री दि० जैन घालात्कार मन्दिर	
		श्री दि० जैन काष्टा सघ मन्दिर	
		श्री सेनगण दि० जैन मन्दिर	
	डोगगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोणगाँव (मेहकर)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जलगाँव जामोद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कलकापूर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खामगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेहकर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिंदखेडराजा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ऊ) जलगाँव	ब्राह्मण सवेग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भूसावल	श्री दि० जैन मन्दिर एहलाबाद	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जलगांव	धरगा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फैजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फतेहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गनेशपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हीरापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जामनेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नैरीकार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पालगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पारोले	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीपलगांव	श्री दि० जैन मन्दिर कोहला	
	पूर्वखानदेश	श्री दि० जैन मन्दिर सीरमावे देहात	
	रावेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साकली	श्री दि० जैन मन्दिर यावत	
	सावदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर सिरपुर धूलिया	
	तकेगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	याकी संगाम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	योपडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ए) पूना	बडगांव निवालकर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बारामती	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घडनदी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घिचवड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हडैयसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इदापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर, कलस	
	मैंदरगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मालेगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मदोर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पणदेर	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(ऐ) रत्नागिरि	देवरुख	श्री दि० १००८ पार्श्वनाथ जैन चैत्यालय	दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन पार्श्वनाथ छोटा मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला श्री जैन छात्रालय
		श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	खारेपाटण		समाज सेवा मडल अतिशय क्षेत्र सारेपाटण श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री जैन वसन्तीगृह
(ओ) सागली	सागली		दी एन० एस० लॉ कालिज दी सागली हाई स्कूल टेकनिकल एण्ड कामर्शियल स्कूल दी सागली कालिज आफ कामर्स कस्तूरबा बालचन्द आर्टस एण्ड साइन्स कालिज कस्तूरबा जूनियर कालिज प्रकैटिसाइजिग स्कूल कस्तूरबा ट्रेनिंग कालिज फोर वुमैन लाठे एजूकेशनल सोसाइटी महात्मा गांधी शिशु बिहार एन० एस० लॉ कालिज न्यू हाई स्कूल मल्टीयपेस सागली कालिज ऑफ कामर्स सागली हाई स्कूल श्री दि० जैन श्राविकाश्रम श्रीमती कस्तूरबा बालचन्द कालिज श्री रामचन्द्र धन जी दि० जैन बोर्डिग हाउस
(औ) सतारा	फलटन	श्री आदिनाथ दि० जैन मन्दिर श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर (बावन जिनालय)	जैन धर्मार्थ दवाखाना एव प्रसूति गृह

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	फलटन	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	नेमी मुद्रण प्रेस
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	शान्तिसागर दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री दि० जैन जिनवाणी
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	जीर्णोद्धारक सस्था
			श्री जैन पाठशाला
			श्री वृषभनाथ ग्रन्थ प्रकाशन सस्था
	कुण्डल		श्री दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कुण्डल (ओध)
(अ) उस्मानाबाद	आष्टा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिचपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दाहरीफाल	श्री दि० जैन मिन्दर	
	धाराशिव	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन क्षेत्र धाराशिव
	कधार	श्री दि० जैन मन्दिर	गुफायें
	कीनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुथलगिरि	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन सिद्ध क्षेत्र
	मुरुड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नकदुर्ग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मखडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोनारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तडवल स्टेशन	श्री दि० जैन मन्दिर तेर (नागथाना)	
	ऊदगीर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(अ) वर्धा	अण्टी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आण्टी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आर्वी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिंगणी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हिंगनघाट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नावनगांव देवली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुनगा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साहुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिंदी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ठाणेगांव	श्री दि० जैन मन्दिर नागपुर अमरावती मार्ग	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
	वर्धा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(क) वीड	दिंदुड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गलठा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गेवसई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घोडराई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	माजतगांव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मगरुल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीपला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उमापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ख) यवतमाल	दिग्रस	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ईसापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुसद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	यवतमाल	श्री दि० जैन मन्दिर	

—. O —

मरिणपुर

इम्फाल मणिपुर राज्य की राजधानी है। यहा एक दिगम्बर जैन मन्दिर तथा एक दिगम्बर जैन हाई स्कूल है। यहाँ जैनियो की जनसख्या ८०० के लगभग है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
(अ) इम्फाल	इम्फाल	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन हाई स्कूल

मेघालय

(भारतीय गणतन्त्र का नवोदित राज्य)

इस राज्य मे जैनियो की जनसख्या बहुत कम है। राज्य का क्षेत्रफल भी लघु है। जैन धर्म का प्रचार बहुत कम है। उसके प्रचार का प्रयत्न भी नही हुआ।

नागालैण्ड

नागालैण्ड राज्य के कोटिगा जिले के डीमापुर क्षेत्र मे एक दिगम्बर जैन मन्दिर है जिसमे पाँच सौ वर्ष से कम की जिन-मूर्तियाँ स्थापित है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
(अ) कोहिमा	डीमापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० भगवान महावीर दातव्य औषधालय
		श्री महावीर दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन हाई स्कूल
		श्री कीर्ति स्तम्भ	श्री दि० जैन महावीर पुस्तकालय
			श्री वीर विकास मण्डल
	कोहिमा	श्री दि० जैन मन्दिर	

— O —

भानुपुर—

यह एक छोटा सा गाँव है जो भुवनेश्वर जाने वाली सडक पर कटक से ८ किमी० की दूरी पर स्थित है।

यहाँ भूगर्भ से प्राप्त ५ धातु प्रतिमाये रखी हुई है। नकुल भट्ट खण्डायत नाम के जिस व्यक्ति का ये प्रतिमाये कुआँ खाई नदी खोदते हुए मिली थी, उन्होने प्रतिमाओ के सम्बन्ध मे इस तरह बतलाया है कि--मेरी आर्थिक स्थिति पहले अत्यन्त खराब थी। दाल-भात का खर्च मुश्किल मे चलता था। मैने आज से पाँच वर्ष पूर्व बाँध भरने के लिये मिट्टी का ठेका लिया था। एक दिन मै कुआखाई नदी मे मिट्टी खोद रहा था तभी मुझे खुदाई के समय मे मूर्तियाँ मिली। मिट्टी मे से निकलकर भगवान ने मुझे दर्शन दिये है। इससे मुझे बडी प्रसन्नता हुई। उस हर्ष मे मै अपनी गरीबी का दुःख भूल गया। भगवान की इन मूर्तियो को मैने पेड के नीचे विराजमान कर दिया। काम के समय के अतिरिक्त मेरा सारा समय भगवान की सेवा मे ही बीत जाता था। जब से भगवान मेरे घर पधारे तब से मुझे किसी बात की कमी न रही। उनकी कृपा से मैने जमीन-जायदाद भी खरीद ली, चावल का मिल भी खोल लिया है। मिल के पास एक छोटा सा मन्दिर बनवा दिया है और पाँचो मूर्तियो को काठ के सिहासन पर विराजमान कर दिया है। मन्दिर छोटा ही है जिसके ऊपर शिखर भी है। मूर्तियाँ रजतवर्णा की है। भूगर्भ मे रहने के कारण दानेदार हो गयी है। इसी तरह कई मूर्तियाँ भुवनेश्वर के सन्तल रूप मे सुरक्षित है। इनमे मध्य की मूर्ति एक चौबीसी है। मध्य मे गोलाकार मे १२ ऊपर ८ और चारो कोनो पर चार। इसके अतिरिक्त नीचे के भाग मे पार्श्वनाथ की और शीर्ष भाग पर महावीर की मूर्ति बनी है।

भुवनेश्वर—

यह उत्कल प्रदेश की वर्तमान राजधानी है। यह नगर मन्दिरो के लिये प्रसिद्ध है। इसे मन्दिरो की नगरी कहा जाये तो कोई अत्युक्ति नही होगी भुवनेश्वर का राजा रानी मन्दिर और लिङ्गेश्वर प्रसिद्ध है। उनकी कला और पशु-पक्षियो का सूक्ष्म अंकन दर्शनीय है। राजा रानी मन्दिर अपने सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध है। यहा कोई जिन-मन्दिर नही है।

नगर मे राज्य-सरकार का सुन्दर सग्रहालय है। इसमे कुछ पाषाण और धातु की जैन-मूर्तियाँ है। पाषाण की सभी प्रतिमाये आठवी से दशवी शताब्दी तक की है। मूर्तियो की कुल संख्या १३ है जो विविध स्थानो से संग्रहित की गयी है।

उड़ीसा

---

१ **अजितनाथ तीर्थंकर**—पद्मासन, अवगाहना ३ फुट ५ इन्च, मुख घिसनसा है, समय ९वी १०वी शताब्दी।

२. **महावीर तीर्थंकर**—तीन फुट पाँच इन्च।

३. **महावीर तीर्थंकर खडगासन**—४ फुट १० इन्च, मुख और दोनो चरमेन्द्र अस्पष्ट है। समय ८वी शताब्दी, चरम्पा से प्राप्त।

४ **ऋषभदेव कायोत्सर्ग**—५ फुट १० इन्च, ध्यान-मुद्रा मे अवस्थित, चरणो के दोनो ओर सौधर्म ईशान इन्द्र चमर ढोते हुये। उनके ऊपर चार-चार तीर्थंकर मूर्तियाँ है। समय ९वी १०वी शताब्दी, चरम्पा से प्राप्त।

५. **ऋषभदेव तीर्थंकर**—पद्मासन, सलेटी वर्ण, अवगाहना २ फुट ५ इन्च। समय ९वी शताब्दी। पोडा सिंगडी (केओकार) से प्राप्त।

६. **ऋषभदेव तीर्थंकर**—अवगाहना २ फुट ४ इन्च, श्यामवर्ण, समय आठवी शताब्दी पोडा सिगडी, केओकर से प्राप्त।

७ **पार्श्वनाथ तीर्थंकर**—५ फुट अवगाहना, पद्मासन भूरा वर्ग, सर्प की कुण्डली सप्ताकणावली, मुख खण्डित, समय—१०वी सदी (उदयगिरि से प्राप्त)।

८. **शान्तिनाथ तीर्थंकर**—पद्मासन ४ फुट, हरिण-

कोचन, श्यामवर्ण, समय ६वी १०वी सदी चम्पा (भद्रक) से प्राप्त।

गंजम—

गंजम जिला आन्ध्र प्रदेश के उत्तरीय सीमान्त पर **है अब उडीसा प्रान्त मे है।** इस जिले के शैलाक नामक **स्थान मे सगमेश्वर पहाडी की** एक गुफा मे चट्टान काटकर **जैन तीर्थंकरो की बनायी गयी मूर्तियाँ** मिली है। गुफा के बाहर महावीर तीर्थंकर की मूर्ति है।

प्रतापपुर—

भानुपुर से दो मील आगे सडक से लगभग एक फर्लांग दूर कच्चे मार्ग मे यह गाँव बसा हुआ है। यहा भी नदी मे जैन मूर्तिया निकली थी। गाव वालो ने उन्हे नदी के किनारे एक पीपल के वृक्ष के नीचे रख दिया है। उनमे से एक मूर्ति चोरी चली गयी है, शेष मूर्तियो को किसी समीपवर्ती मठ मे रख दिया गया है। इससे स्पष्ट जाना जाता है कि कटक जिले के आस-पास जैनियो की अच्छी आबादी रही होगी और उनके मन्दिर भी रहे है। उनके धराशायी हो जाने पर उनकी मूर्तियाँ नदी मे और आस पास के स्थानो मे भूमिसात हो गयी है। कटक जिले मे और कई स्थान ऐसे है जिनमे खण्डित-अखण्डित मूर्तियाँ उपलब्ध होती है।

उदयगिरि और खण्डगिरि—

भुवनेश्वर से ५ मील शिशुपाल गढ के उत्तर-पश्चिम मे उदयगिरि-खण्डगिरि नाम के दो छोटे-छोटे पहाड है। उनकी ऊँचाई क्रमशः ११० फुट और १२३ फुट है। इन पहाडियो पर दि० जैन श्रमणो के तपश्चरण करने के लिये अनेक गुफाये बनी हुई है जिनकी सख्या १०० के लगभग है। इनमे दो गुफाये बडी है जो भगवान महावीर के समय से ही अर्हन्तो के सत्सर्ग से पावन हो चुकी थी। इनमे सबसे महत्वपूर्ण हाथी गुफा है जिनमे चेदिवश के राजा खारवेल का महत्वपूर्ण लेख अकित है। उस काल मे यहाँ हजारो की सख्या मे श्रमण तपश्चरण करते थे। भगवान महावीर के समय कुमारी पर्वत पर चतुर्विध संघ अनेक बार आया था। हजारो साधु यहाँ रह कर आत्म साधना द्वारा आत्मसिद्धि प्राप्त करने का उपक्रम करते थे। महावीर स्वामी के गणधर सुधर्म स्वामी भी अपने ५०० शिष्यो के साथ-कुमारगिरि पर, धर्मपुर आदि नगरो मे विहार करते हुये पधारे थे। उदयगिरि का प्राचीन नाम कुमारगिरि था जिसके सम्बन्ध मे कुछ विचार किया जाता है। हाथी गुफा की उक्त प्रशस्ति मे भी कुमारगिरि का उल्लेख है। उस समय समूचा पर्वत कुमारगिरि कहलाता था। कुमारगिरि प्रसिद्ध तीर्थ *स्थान है, निर्वाण-भूमि है जो उदयगिरि के नाम से ख्यात* है। भगवान महावीर ने कुमारगिरि पर उपदेश दिया था। कलिग के राजा जितशत्रु ने इसी पर्वत पर जिन-दीक्षा ली थी और तपश्चरण द्वारा केवल ज्ञान प्राप्त किया और अघातिया कर्मों का नाश कर मुक्ति पद को प्राप्त किया था। सम्राट खारवेल ने भी अपना अन्तिम जीवन कवादि के अनुष्ठानपूर्वक यही बिताया था। खारवेल ने इसी पर्वत पर जैन-श्रमणो के लिये अनेक गुफाओ का निर्माण किया था और विशाल जिन मन्दिर बनवाया था। उसमे आदि जिन की उस सातिशय मूर्ति को जिसे कलिग विजय के समय नन्द राजा ले गया था, पौने तीन सौ वर्ष बाद खारवेल ने पाटलिपुत्र से आकर महोत्सव के साथ प्रतिष्ठित किया था। इन सब उल्लेखो से कुमार-गिरि की महत्ता का सहज ही आभास हो जाता है।

उदयगिरि पर अनेक महत्वपूर्ण गुफाये है जैसे रानी गुफा, मचूरी गुफा आदि। खण्डगिरि पर जितनी गुफाये उपलब्ध है उनमे कई गुफाये अत्यन्त महत्वपूर्ण है जैसे तत्व गुफा, अनन्त गुफा आदि। खण्डगिरि पर चार जिन मन्दिर है जिनका सक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

लाल मन्दिर छोटा है। उसमे मण्डप और गर्भगृह बने हुए है। गर्भगृह मे सगमरमर का वेदी पर पाँच खडगासन मूर्तियाँ विराजमान है। ऋषभदेव, शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ, ऋषभदेव।

एक बडा दि० जैन मन्दिर इसके पास है। द्वार मे प्रवेश करते ही बाह्य मण्डप मे मारबल की महावीर स्वामी की मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है। इस मन्दिर के गर्भगृह के सामने मुख्य वेदी पर मध्य मे मूलनायक ऋषभदेव की पद्मासन प्रतिमा प्रतिष्ठित है, इसकी अव-गाहना ३ फुट है। इसके अतिरिक्त वेदी पर १४ प्रतिमायें और विराजमान है सभी प्रतिमाये प्राचीन है। इस मन्दिर के बायी ओर एक छोटा मन्दिर है। वेदी मे कोई प्रतिमा

नहीं है। वेदी के आगे शिलाफलक पर २४ तीर्थंकरों के चरण-चिन्ह बने हुये हैं।

इसके आगे एक अन्य मन्दिर है। उसमे १३ फुट ऊँची कायोत्सर्गासन पार्श्वनाथ की श्यामवर्ण प्रतिमा विराजमान है जो वीर-निर्वाण सं० २४७६ मे प्रतिष्ठित हुई, विराजमान है। उसके दोनो ओर पार्श्वनाथ के यक्ष-यक्षी धरणेन्द्र और पद्मावती खडे हुये है। ये सभी प्राचीन मूर्तियाँ इसी पहाड के आस-पास उपलब्ध हुई थी जिनका अनुमानित समय ८वी ९वी शताब्दी है।

इस खण्डगिरि पर मन्दिरो के अतिरिक्त अनेक गुफायें है। इसमे ११ न० की गुफा ललोटन्दु केशरी की गुफा है जो गुफा न० १० से मिली हुई है। उसमे दो प्रकोष्ठ और एक बरामदा था जो अब गिर गया है। इस समय इसकी चौडाई १० फुट है और लम्बाई १२ फुट है। बाई ओर की दीवार पर ५ तीर्थंकर खडगासन मूर्तियाँ है और दायी और की दीवार पर दो मूर्तियाँ खडगासन आदिनाथ और पार्श्वनाथ की है दोनो पहाडो पर जो गुफायें हैं उनमे उदयगिरि की रानी गुफा सबसे अन्दर है।

उत्कल—

उत्कल प्रदेश की प्राचीन राजधानी है। इसके तीन ओर नदियाँ है—महावदी, कुआरबाई और काठजोडी। यह हावडा जकशन से पुरी जाने वाली रेलवे लाइन पर ४०९ किमी० दूर है। स्टेशन से ५ किमी० दूर चौधरी चौधरी बाजार मे जैन भवन है। इसके पृष्ठ भाग मे आठवे तीर्थंकर चन्द्रप्रभु का एक प्राचीन एव विशाल दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर है जो बडे मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। इसमे दो गर्भगृह हैं। दोनो मे एक-एक वेदी है। बाई ओर की वेदी मे ६ पाषाण प्रतिमाये है तथा मुख्य वेदी मे १६ पाषाण की और ९ धातु की प्रतिमाये है। इस मन्दिर की मुख्य वेदी पर स्थित चैत्य है इसी मन्दिर की उक्त वेदी पर ऋषभदेव की मनोज्ञ धातु प्रतिमा है। बाई ओर की वेदी मे विराजमान सभी प्रतिमाये प्राचीन है। कहा जाता है कि ये प्रतिमाये खण्डगिरि से लाई गयी थी। इनका अनुमानिक प्रतिष्ठा-काल १०वी शताब्दी है। सभी प्रतिमायें श्यामवर्ण की है एव एक ही समय की निर्मित जान पडती है।

इस मन्दिर मे ६ शिलाफलक है जिनमे सुन्दर मूर्तियाँ पार्श्वनाथ की खड्गासन है। चौथे फलक मे सवा दो फुट की अवगाहना वाली श्यामवर्ण पार्श्वनाथ की खड्गासन मूर्ति के साथ बाई ओर चार उपाध्याय मूर्तियाँ और दाई ओर तीन उपाध्याय मूर्तियाँ और एक कीचक है। भगवान पार्श्वनाथ के शिर पर सप्त फणावलियाँ अंकित है। मूर्ति भव्य और मनोहर हैं। फलक के शिरोभाग पर दोनो कोनो पर केवल हाथ दिखायी पडते है बायी ओर के हाथो मे दुन्दुभी है और दायी ओर के हाथो मे झाझ है।

भुवनेश्वर के म्यूजियम मे ८वी शती की ऋषभदेव की पाषाण मूर्ति है ५ फुट ऊँची ८वी शती की तीर्थंकर महावीर की मूर्ति है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
(अ) भानुपुर (कटक)	भानुपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(आ) कटक	कटक	तीर्थंकर चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर (बडा मन्दिर) चौधरी बाजार	जैन भवन (धर्मशाला) चौधरी बाजार
	कटक शहर	दि० जैन चैत्यालय	
		दि० जैन मन्दिर	
	खण्डगिरि	दि० जैन बडा मन्दिर	
		दि० जैन छोटा मन्दिर	
		दि० जैन छोटा मन्दिर	
		दि० जैन मन्दिर	

—. ० —

पंजाब

पंजाब भारत का एक महत्वपूर्ण सीमावर्ती राज्य है। पश्चिम में दूर तक इस राज्य की सीमा पाकिस्तान से मिली है। सतलज, व्यास और रावी नदियाँ इस राज्य से होकर बहती हैं। सतलज पर भाखरा बाँध बन जाने से विद्युत ही नहीं परन्तु बहुत सी नहरों का भी निर्माण हुआ है। विद्युत से नलकूपों के चलाने तथा नहरों से खेतों की सिंचाई में बड़ी सहायता मिली है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) फिरोजपुर	अबोहर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फिरोजपुर शहर	श्री दि० जैन मन्दिर	लाला नानकचन्द जैन धर्मशाला
	जीरा (न०)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मण्डी मुक्तसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(आ) फिरोजपुर छावनी	फिरोजपुर छावनी	श्री दि० जैन मन्दिर बाजार न० ५	भगवान महावीर जैन वाचनालय
			डालचन्द जैन हाई स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर बाजार न० ५	डालचन्द जैन माडल स्कूल
			हस्तलिखित शास्त्र भण्डार
		श्री दि० जैन मन्दिर नसिया जी	जैन गर्ल्स हाई स्कूल
			लार्ड महावीर जैन मॉडल स्कूल
			श्री डालचन्द एण्ड सन्स छात्रवृत्ति ट्रस्ट
			श्री दि० जैन औषधालय
			श्री प्रभुदयाल आत्माराम जैन ट्रस्ट
(इ) जालन्धर छावनी	जालन्धर छावनी	श्री दि० जैन मन्दिर मुहल्ला न० १४	डी० आर० जैन नेशनल हाई स्कूल

भीलवाड़ा—

भीलवाडा तहसील क्षेत्र मे तीन अतिशय क्षेत्र है —

(१) यह अतिशय क्षेत्र श्री बीजोलिया पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर १०×१० फुट के मकान मे चट्टान पर शिलालेख है शिलालेख से ऐसा ज्ञात होता है कि यहाँ पर ही श्री पार्श्वनाथ प्रभु को उपसर्ग प्राप्त हुआ था। प्रात स्मरणीय आचार्यवर श्री पद्मनन्दी व शिष्य शुभचन्द्राचार्य जी की समाधि मण्डप है जिसमे दो खम्भो पर शिलालेख है।

(२) यह अतिशय क्षेत्र श्री चऊलेश्वर पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। चार सौ फुट की ऊँचाई पर पहाड बना हुआ है।

(३) यह अतिशय क्षेत्र पारोली ग्राम मे श्री आदिश्वर महाराज का मन्दिर, इस नाम से प्रसिद्ध है। मूर्ति के प्रक्षालन को बहुत से अजैन आदमी लेकर अपना कष्ट दूर करते है। मूर्ति पद्मासन ४ फुट ऊँची मनोज्ञ है।

बिजोलिया—

बिजोलिया राजस्थान स्थित बूंदी के एक कोने पर बसा हुआ है जो उदयपुर से उत्तर पूर्व ११२ मील है, तथा कोटा से पश्चिम ३२ मील है। इसका प्राचीन नाम विन्ध्यावली था। इस नगर के शासक 'राव' या 'रावल' कहलाते थे। बिजोलिया के यह राव मालवा के परमार राजाओं के वशधर है जिनकी राजधानी कभी धार और कभी उज्जैन रही है। दिल्ली के सुलतान मुहम्मद तुगलक के समय मालवा का प्राय सभी प्रदेश-मुसलमानो के अधिकार मे चला गया था अतएव परमारो के कुछ वशधर अजमेर मे और कुछ दक्षिणादि प्रान्तो मे चले गये।

चाँदखेड़ी (अतिशय क्षेत्र)—

प्रकृति की शान्त एकान्त सुषमाओ के बीच अपने अतुल वीतराग वैभव को वायुमण्डल मे विकीर्ण करता हुआ यह क्षेत्र चैतन्य विलासी सन्तो एवं साधको का सदियो से आह्वान करता हुआ निर्विकल्प समाधि का निमन्त्रण देता रहा है। इस दृष्टि से चाँदखेडी राजस्थान का एक विरल क्षेत्र है। यह क्षेत्र बडा विशाल एवं मन्दिर की रचना रहस्यमयी तिलस्मी है जिसे देखकर बडे-बडे वास्तुकला-विशेषज्ञ एव इन्जीनियर आश्चर्य मे पड जाते है। अतः यह क्षेत्र भारतीय वास्तुकला का एक सजीव प्रमाण है।

राजस्थान

मन्दिर के भूगर्भ मे एक विशाल तल प्रकोष्ठ है जिसमे स० ५१२ की श्री आदिनाथ भगवान की लाल पाषाण की सवा छ फुट अवगाहना की पद्मासन प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यह प्रतिमा इस क्षेत्र से लगभग ६ मील दूर बारहपाटी पर्वतमाला के एक हिस्से मे दबी हुई प्राप्त हुई है। श्री किशनदास जी (ठग) बघेरवाल सागोद निवासी को एक दिन स्वप्न मे बारहपाटी से प्रतिमा को यहाँ लाकर विराजमान करने का संकेत मिला। तदनुरूप प्रतिमा को बैलगाडी मे रखकर साँगोद लायी जा रही थी कि मार्ग मे रूपली नदी पर कारणवश गाडी ठहराई गयी। कुछ समय बाद बैल जोतकर गाडी चलाने का उपक्रम किया गया तो गाडी एक इन्च भी न चली। अत नदी के ही एक भाग मे उक्त मन्दिर का निर्माण सेठ किशनदास जी बघेरवाल ने प्रारम्भ कर दिया। सेठ किशनदास इस समय कोटा स्टेट के दीवान थे।

इस मन्दिर के तल प्रकोष्ठ मे एक ओर अष्ट प्रति-हार्य युक्त महावीर स्वामी की प्रतिमा विराजमान है जो अत्यन्त मनोज्ञ एवं चित्ताकर्षक है।

जयपुर—

राजस्थान की राजधानी जयपुर 'जैनपुरी' के नाम से भी विख्यात है। जयपुर जहाँ प्रभुसत्ता सम्पन्न राजाओ के वैभव का केन्द्र रहा है वही आध्यात्मिक मनोसाधना का भी चिन्तन स्थल यह गुलाबी नगर रहा है। जयपुर का इतिहास जैन इतिहास को जोडे बिना सम्पूर्ण नही कहा

जा सकता। जैन-दीवानों ने रियासत के माध्यम से जो राजस्थान सेवा की है वह इतिहास के पृष्ठों में स्मरणीय रहेगी। जयपुर में अनेक मूर्धन्य मनीषी मर्मज्ञ सिद्धान्त-वेत्ता साहित्यकार हुए हैं जिनमें मुख्यत. महाकवि दौलतराम जी, प० प्रवर टोडरमल जी, प० जयचन्द जी छाबड़ा, ऋषभदास जी, निगोला पार्श्वदास जी, प० रायमल्ल जी, प० सदासुख जी कासलीवाल आदि विद्वद्रत्न विशेष रूप से स्मरणीय हैं। प्राचीन सिद्धान्तो के अतिरिक्त वर्तमान विद्वानो की शृ खला भी निश्चित ही उल्लेखनीय रही है।

जयपुर मे जहाँ गणनीय विद्वानो का कार्यक्षेत्र रहा है वहीं इस भूमि ने पूज्य मुनिराजो, क्षुल्लक-क्षुल्लिकाओ एव ब्रह्मचारियो को भी जन्म दिया है जिनमे से अनेक त्यागीवृन्द अपनी तपश्चर्या व ज्ञानाराधना के लिये सुविख्यात हुए है।

जैनपुरी के नाम से विख्यात जयपुर मे जितने जैन मन्दिर हैं उतने सम्भवतया देश मे अन्य किसी भी एक स्थान पर नहीं है। जैन मन्दिरो एव चैत्यालयो की सख्या १३७ है और आस-पास के आमेर, सागानेर आदि के मिलाने पर यह सख्या १८० हो जाती है। जयपुर शहर स्थित मन्दिरो मे अनेक भव्य दर्शनीय तथा प्राचीन जिन-बिम्ब विराजमान है जिनमे कालाडेरा मन्दिर मे भगवान महावीर स्वामी की अत्यन्त मनोज्ञ विशालकाय खड्गासन प्रतिमा जैन-सस्कृति एव कला की जीवन्त प्रतिकृति है। शहर से बाहर आगरा रोड पर खानिया स्थित राणा जी की नसिया है जो अपनी विशालता एव सुनहरी काम के लिये विख्यात है। यही पर सुप्रसिद्ध जैनाचार्य १०८ श्री वीर सागर जी महाराज का समाधिस्थल भी निर्माणित है—पास ही पहाडी पर आचार्य १०८ श्री देशभूषण महाराज की प्रेरणा से निर्माणित भव्य चूलगिरि क्षेत्र है जो यात्रार्थियों का दर्शनीय स्थल बना हुआ है। पहाड पर भगवान पार्श्वनाथ का मन्दिर २८ गुमटियो मे प्रतिमाये व चरण स्थापित है। मूलनायक ७ फुट उत्तु ग भगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। जयपुर से उत्तरपूर्व ७ मील दूर अत्यन्त रमणीय आमेर नामक स्थान है जो पुराना जयपुर के नाम से जाना जाता है, जहाँ ७ प्राचीन जैन मन्दिर है जिनमे श्री सावला जी (भगवान नेमिनाथ) का मन्दिर विशेष विख्यात है। इसमे ७९ प्रतिमाये व २९ अन्य विराजमान है। प्राचीन शास्त्र भण्डार इसकी अमूल्य निधि है। इसके अतिरिक्त ऊपर की नसियाँ पहाडी पर निर्मित है जिसका निर्माण-काल १२वीं सदी है।

समीपवर्ती सागानेर मे भी विशाल ७ शिखरबद्ध जिन मन्दिर अवस्थित है—इनमे सघी जी का मन्दिर अत्यन्त भव्य एव कलापूर्ण है। १२वी शताब्दी मे निर्मित इस मन्दिर जी मे स० ११५० मे प्रतिष्ठित मूर्ति मनोज्ञ एव दर्शनीय है।

यहाँ कुल ८ शिक्षण सस्थाये हैं जिनमे स० १९४१ मे सस्थापित दि० जैन सस्कृत कालिज अपना प्रमुख स्थान रखता है। श्री दि० जैन साहित्य शोध सस्थान के अतिरिक्त दो छात्रावास, चार पुस्तकालय, पाँच औषधालय तथा पाँच दि० जैन धर्मशालाये हैं। नव निर्मित टोडरमल-स्मारक भवन साहित्य प्रकाशन की दिशा मे भी गतिशील है। लगभग ३५ हजार दि० जैनो की सख्या वाले इस जैन बहुल नगर मे दो छात्रवृत्ति ट्रस्ट, महावीर क्लब, राजस्थान जैन साहित्य परिषद्, वीर-वाणी कार्यालय आदि विविध सस्थाये है। महिला जागृति की ओर भी यहा सस्थापित महिला-सघो का महत्वपूर्ण स्थान है। लौकिक अभ्युदय के अतिरिक्त आध्यात्मिक परिवेश मे भी यह स्थान स्वय मे मुख्य रूप से उल्लेखनीय है।

यहाँ के शास्त्र भण्डारो मे स्व० प० टोडरमल जी, सदासुख जी, प० जयचन्द जी छाबड़ा, जोधराज जी आदि मनीषी दिग्गजो की हस्तलिखित मूल पाण्डुलिपियाँ जैन सस्कृति की दुर्लभ धरोहरें सुरक्षित है। विभिन्न दि० जैन मन्दिरो मे स्थित १७ शास्त्र भण्डारो मे लगभग साढे सत्रह हजार दुर्लभ एव प्राचीन ग्रन्थ विद्यमान है।

अपने कलात्मक वैभव के लिये प्रख्यात इस नगर के विभिन्न दि० जैन शास्त्र-भण्डारो मे अनेक दुर्लभ चित्राकन युक्त ग्रन्थराज निश्चित ही अनुपमेय हैं। ३००० चित्रो सहित महापुराण, ३०० चित्रयुक्त आदि पुराण, स्वर्णाक्षरी प्रतियाँ, भव्य चित्र युक्त ऋषि मण्डल विधान आदि निश्चित ही उल्लेखनीय एव गणनीय है।

जयपुर नगर दिल्ली अहमदाबाद छोटी लाइन पर अवस्थित पश्चिम रेलवे का महत्वपूर्ण स्थान है। यह

राष्ट्रीय राजमार्ग ८ पर अवस्थित राजस्थान के केन्द्र-बिन्दु से कुछ उत्तर मे स्थित है। यहाँ के विभिन्न दि० जैन मन्दिरो मे ५०० से १००० वर्ष प्राचीन दि० जिन-बिम्बों की सख्या लगभग ५७ है।

फुलेरा—

अहमदाबाद-दिल्ली मुख्य रेल लाइन पर फुलेरा एक महत्वपूर्ण जकशन है। यहाँ विक्रम स० २००८ भव्य जिन मन्दिर का निर्माण हुआ। मन्दिर जी मे भव्य जिन बिम्ब विराजमान है। मन्दिर जी के निकट ही एक जैन भवन यात्रियो की सुविधार्थ बनाया गया है। फुलेरा से लगभग २ मील दूर शार्दूलपुरा ग्राम मे बहुत ही प्राचीन जिन मन्दिर है जिसमे भुवन मोहक जिन बिम्ब विराजमान है। फुलेरा से ही लगभग एक मील दूर कचरौदा ग्राम मे भी एक प्राचीन जिन मन्दिर है।

नरैना—

नरैना मे पिछले दिनो भू-उत्खनन से प्राचीन मनोज्ञ जिन प्रतिमाओ के प्राप्त होने के कारण इस स्थान की अधिक ख्याति हुई है। यहाँ के दो जिन मन्दिरो मे पाँच मूर्तियाँ एक हजार वर्ष से अधिक प्राचीन है। योगदेव कृत तत्वार्थ वृत्ति की दुर्लभ पाण्डुलिपि भी यहाँ सुलभ है। भगवान महावीर, पार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभु, बाहुबली सरस्वती, पद्मावती, चन्द्रेश्वरी की कलात्मक सातिशय मूर्तियाँ विराजमान है। पाषाण मे उत्कीर्ण शान्तिचक्र यन्त्र निश्चित ही अनूठा है। यात्रियो की सुविधार्थ जैन महावीर सदन के नाम से एक अतिथि-ग्रह तथा एक दि० जैन धर्मशाला है। विशाल जैन शास्त्र भण्डार मे अनेको उपयोगी ग्रन्थ है। लगभग २०० जैनो की आबादी वाले इस कस्बे की भौगोलिक स्थिति अति सुन्दर एव व्यवस्थित है। रेलवे स्टेशन मुख्य राजमार्ग होने से आवागमन सुलभ है।

पापड़ा—

जयपुर से उत्तर मे आगरा रोड पर स्थित है। यह प्राचीन ग्राम होने के साथ ही अनाज की एक अच्छी व व्यवस्थित मण्डी है। यहाँ पर जैनियो के ५० परिवार हैं और सख्या लगभग २५० है। यहाँ दो दि० जैन मन्दिर हैं जिनमे लगभग ३६ जिन बिम्ब विराजमान है। कुछ बिम्ब लगभग एक हजार वर्ष से अधिक प्राचीन है। स्टेशन पर तथा शहर मे जैन-धर्मशालाये है। जयपुर-दिल्ली रेल एव बस मार्ग पर अवस्थित होने से यहाँ आवागमन अति-सुलभ है।

श्री पद्मपुरा (अतिशय क्षेत्र)—

जयपुर मे २१ मील दूर दक्षिण की ओर जयपुर-टोंक मार्ग पर मुख्य सडक पर शिवदासपुरा से तीन मील उत्तर की ओर भव्य-मनोरम क्षेत्र श्री पद्मपुरा अवस्थित है। अब से लगभग ३२ वर्ष पूर्व स० २००१ वैसाख शुक्ला ५ के दिन छटे तीर्थंकर भगवान १००८ श्री पद्मप्रभु स्वामी की श्वेत पाषाण की दिव्य चमत्कारयुक्त जिन प्रतिमा भूगर्भ से उत्खनन मे प्राप्त हुई थी। भगवान पद्मप्रभु स्वामी का जिस स्थान पर उद्गम हुआ था वहाँ भव्य छतरी मे भगवान के चरण विद्यमान हैं और उसके समीप ही पुराना जैन मन्दिर अवस्थित है। नवनिर्मित भव्य विशाल जिन मन्दिर राजस्थान की अतुलनीय पुरा सम्पदा से अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। जयपुर रियासत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री सर मिर्जा इस्माइल के विशेष सहयोग से निर्मित इस भव्य जिन मन्दिर की डिजाइन स्थापत्य कला की दृष्टि अपना सानी नही रखती। शिखरबद्ध विशाल मन्दिर का जमीन से ८५ फुट उतुग शिखर चाँदनी रात मे अपनी दिव्य श्वेत आभा से भक्त मन को सहज ही आकर्षित करता है। जिन मन्दिर वे मूलनायक भगवान पद्मप्रभु स्वामी की मुख्य वेदी है।

जयपुर जिलान्तर्गत आस-पास के गाँवो मे भव्य एव प्राचीन जिन मन्दिर जी अवस्थित है जिनकी सख्या लगभग १५० है जो इस तथ्य के जीवन्त प्रमाण है कि यहाँ विश्व विश्रुत जैन-धर्म का प्रचार-प्रसार बहुत अधिक था। यद्यपि इन स्थानो पर जैन जनसख्या बहुत अधिक नही है तथापि जन-जन के धर्म जिन धर्म का निनाद चहुँ ओर है।

निम्नाकित कुछ ग्राम के मन्दिर अपने सास्कृतिक-वैभव के लिये विशेष रूप से उल्लेखनीय है यथा—

मोजमाबाद, किशनगढ सैवाल, जोबनेर, नरैना, फुलेरा, हूढ, फागी, चौरू, माधोराजपुरा, बगरुमहला,

दौसा, बसवा साभर आदि। उक्त स्थानो पर एकाधिक जिन मन्दिर जी के अतिरिक्त प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-राज भी सुरक्षित है। मौजमाबाद (मौजाद) लघु अतिशय क्षेत्र के नाम से विख्यात है। बहरे मे विराजमान प्राचीन मनोरम जिन बिम्ब यकायक ही भक्त मन को आकर्षित कर लेते है।

टोंक —

टोक जिले मे अधिकतर भूतपूर्व जयपुर स्टेट के गाँव व कस्बे एव सम्पूर्ण टोक राज्य एव कुछ बूंदी रियासत के गाँव सम्मिलित किये गये है। इस जिले मे दि० जैन आमनाय के लोगों की सख्या लगभग २०,००० है जिसमे अधिकतर दि० जैन खण्डेलवाल एव अग्रवाल है। जिले में कुछ सख्या पोरवाल व बघेर वालो की है।

टोक जिले के समस्त कस्बो व बड़े-बड़े गाँवो मे दि० जैन मन्दिर व धर्मशालाये है। कुछ मन्दिरो के गगनचुम्बी शिखर व बनावट इस बात का द्योतक है कि ये मन्दिर अति प्राचीन है। इन मन्दिरो मे जो प्रतिमाये है वे भी काफी प्राचीन, भव्य एव चमत्कारी है। इन मन्दिरो मे टोडारायसिंह टोंक एव मालपुरा कस्बो के एव साखना आवा ग्रामो के मन्दिर काफी प्राचीन है। कुछ मन्दिर तो हजार वर्ष से भी पुराने बताये जाते है। साखना एव आवा वेद दि० जैन मन्दिरो मे दर्शनीय व अतिशयकारी भगवान शान्तिनाथ स्वामी की मूर्तिया विराजमान है जिनके दर्शनार्थ दूर-दूर से जैन-यात्री आते है।

टोडारायसिंह जो कि भूतपूर्व जयपुर रियासत का एक प्रमुख कस्बा था, मे आदिनाथ स्वामी का व नेमीनाथ स्वामी का मन्दिर काफी प्राचीन व विशाल है। इन मन्दिरो की बनावट से प्रतीत होता है कि ये मन्दिर मुगल साम्राज्य के पहले के बनाये हुये है जो मन्दिरो मे विद्यमान १२वी सदी की प्रतिमाओ से स्पष्ट है। नेमीनाथ स्वामी के मन्दिर जिसको रेण का मन्दिर के नाम से पुकारा जाता है, मे एक अच्छा हस्तलिखित शास्त्र-भण्डार भी है। इन दोनो मन्दिरो की कुछ मूर्तियो के चित्र जयपुर के म्युजियम मे रखे हुए है। टोडारायसिंह मे दादाबाड़ी के पास मुनि सिंह नदी आदि की छतरियाँ तथा निसी ही तथा नग्न मूर्तियाँ पीछी कमण्डल लिये उदयासन से युक्त उत्कीर्ण की गई है जिन पर तीर्थकर प्रतिमायें उत्कीर्ण की गई है। जिन पर स० १४६१ के शिलालेख हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ पर जो पहाड पर छतरियाँ विद्यमान है उस पर स० १६८१, १६८७ व १७१६ के जैन शिलालेख है, टोडारायसिंह के जैन मन्दिरो मे चमत्कारिक, कलात्मक एव विशाल यन्त्र विद्यमान है। मालपुरा मे श्री आदिनाथ स्वामी एव पार्श्वनाथ स्वामी का प्राचीन, भव्य एव चमत्कारी प्रतिमाये है।

टोंक शहर मे माणक चौक स्थित पाँच मन्दिर विख्यात है। मन्दिर काफी पुराने व विशाल है जिनमे भव्य प्राचीन अतिशयकारी जैन मूर्तिया विराजमान है। टोक मे लगभग २० वर्ष पूर्व भूगर्भ से २६ मूर्तियाँ निकली थी, जो काफी प्राचीन है। ये मूर्तियाँ ११वी, १४वी व १६वी सदी की है। टोक शहर मे मन्दिरो मे कुछ हस्त-लिखित व प्राचीन जैन शास्त्र व रचनाये उपलब्ध है। इनमे से अभी एक ग्रन्थ 'पारस पदावली' का प्रकाशन भी डा० गगाराम गर्ग के सान्निध्य मे जैन समाज टोक द्वारा करवाया गया है।

इन दोनो कस्बो के अतिरिक्त मालपुरा, निवाई, उणियारा पीपलू, दूणी, राजमहल, देवली ग्राम व डिग्गी आदि के जैन मन्दिर भी प्राचीन एव विशाल है।

टोक, टोडारायसिंह, मालपुरा निवाई, उणियारा, आवा, लावा कस्बो एव गाँवो मे जैन पाठशालाये, धर्म-शालाये व पुस्तकालय आदि है पर इस सम्बन्ध मे टोक जिला काफी पिछड़ा हुआ है। भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण स० के उपलक्ष्य मे टोक शहर मे जैन छात्रो के लिये एक छात्रावास भी इसी वर्ष जुलाई से प्रारम्भ कर दिया गया है।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) बीकानेर	बीकानेर		श्री दि० जैन धर्मशाला, नशिया जी जेल रोड
(आ) भीलवाडा	अडवड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आलोजी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आमलदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमरगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आमखासी	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	अपरीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अरनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आरोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आटौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बच्छखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बागौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बागुदार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बलान्ड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बनेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बासडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भरनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भीलवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन पाठशाला द्वारा
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री हीरालाल अजमेरा,
		श्री दि० जैन मन्दिर	भूपालगज
		श्री दि० जैन मन्दिर	महावीर शिक्षण सस्था
			विमल सागर जैन पाठशाला
	बिजोलिया	श्री दि० जैन मन्दिर	बाल वीर सेवक समाज
		श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन भवन (धर्मशाला)
			जैन पुस्तकालय व वाचनालय
			जैन सेवा सघ
			वीतराग विज्ञान पाठशाला
	बिकरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोरडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोरियापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चावलेश्वर जी पार्श्वनाथ	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
भीलवाड़ा	छोटी बिजोलिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डाडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डावला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धामनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धुआला	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुराडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गाडोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गन्धेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गगापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुलाबपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हमीरगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जहाजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जसुजी का खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जोजवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कीठिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खजूरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोटडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोठाज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुचलवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लसाडिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लुहारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महुंआ	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन कन्याशाला
	मांडलगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेजा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पलासिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पन्डेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पारोली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	(अतिशय क्षेत्र)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राज्यास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रौंपा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रेड	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
भीलवाडा	शाहपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन औषधालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन नशियाजी	
	शिर्षया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ठिठोडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ठिठोडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ऊँचा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरदपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विशनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
(इ) जयपुर	आवटरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	आमेर	श्री दि० जैन मन्दिर (मुशी जी का)	
		श्री दि० जैन मन्दिर स्तम्भ की नसिया	
		श्री दि० जैन मन्दिर, ऊपरली नसिया	
	बडी डुगरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बगरु	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बघेरा		आदिनाथ दि० जैन पाठशाला, मालपुरा
	बाहर की आमेर	श्री दि० जैन मन्दिर बघीचन्द का	
		श्री दि० जैन मन्दिर बखशी जी का	
		श्री दि० जैन मन्दिर भट्टारक जी का	
		श्री दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर सावला जी का	
	बनियाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बसना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चाड	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
जयपुर	चाकसु		श्री पदमपुरा दि० जैन तीर्थक्षेत्र श्योदासपुरा, चाकसु
	चाँदमाकला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चाँदराना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छपयया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छारेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चीसला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिनोई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चोरुगांव		श्री दि० जैन चन्द्रसागर ओपधालय तहसील फागी
	छोटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दौसा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डिगुणिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोवलाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डिटवान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दूदू	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दुर्गापुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	फुलेरा	श्री दि० जैन आदिनाथ मन्दिर	आदिनाथ दि० जैन वीतराग विज्ञान पाठशाला जैन भवन C/o दि० जैन मन्दिर श्री आदिनाथ जैन विद्यालय श्री दि० जैन धर्मरक्षक मण्डल
	गगाती	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोहन्दी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोनापुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोविन्दनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरसूली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इटवा थोप जी का	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जैतपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जाकोढा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जटवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जयपुर	**चौकड़ी घाट दरवाजा**	श्री महावीर जी दि० जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र जयपुर

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चै० बजो का, बालमुकद जी बज वाली हवेली मे	दि० जैन बाल शिक्षा मन्दिर खजाची की नमियाँ ससार चन्द्र रोड
		श्री दि० जैन चै० बख्शी जी, बख्शी किस्तूर चन्द जी की हवेली	दि० जैन सस्कृत कालिज मनिहारो का रास्ता चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन चै० बाकीवाला निकट चवरी बरदार बाग	महावीर दि० जैन बालिका मा० विद्यालय चौरुका की गली, मनिहारो का रास्ता
		श्री दि० जैन चै० छाबडो का निकट मनीराम जी की कोठी (चांदूमल जी नायब के मकान मे)	महावीर दि० जैन हा० से० स्कूल, महावीर मार्ग, सी-स्कीम
		श्री दि० जैन चैत्यालय चादूलाल जी गगवाल चौक नागोरियान, गगवाल भवन	पद्मावती बालिका उच्च मा० विद्यालय धी वालो का रास्ता जौहरी बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय, दल जी चौधरी का, छाबडो का तथा कोडी वालों का, दाई की गली कोडी वालो का मकान	प० चैनसुखदास जैन छात्रावास मनिहारो का रास्ता त्रिपोलिया बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय दारोगा जी, दरोगा जी की पुरानी हवेली खुर्रे पर	राजस्थान जैन साहित्य परिषद् दि० जैन मन्दिर बडा दीवान जी मनिहारो का रास्ता
		श्री दि० जैन चैत्यालय देहली वालो का हल्दियो का रास्ता, पहले चौराहे मे कूट वाली हवेली मे	श्री जैन दर्शन विद्यालय चाकसू का चौक, हल्दियो का रास्ता, जौहरी बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय ढोलको का जोराष्टर कम्पनी के सामने	साहित्य शोध विभाग महावीर भवन, चौडा रास्ता
		श्री दि० जैन चैत्यालय गोदीको का सेठ चाँदणमल जी की हवेली के पास	श्री ज्ञान विद्यालय बोरडी का रास्ता चौ० मोदीखाना

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय ईसरलाल जी गोधा, गोधो का चौक, ऊँचा कुआ	श्री जैन दर्शन विद्यालय चाकसू का चौक, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय जौहरियो का बिजैलाल जी जौहरी की गली लाल कटले के पास	श्री पार्श्वनाथ विद्यालय चाकसू का चौक हल्दियो का रास्ता जौहरी बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय रसोवडे वाले बजो का, हल्दियो का रास्ता महमियो के दरवाजे मे	श्री शान्तिवीर दि० जैन गुरुकुल छात्रावास सघी जी की नसिया गगोपोल दरवाजे के बाहर
		श्री दि० जैन चैत्यालय रिखब जी गोधा, गोधो का चौक, ऊँचा कुआ	श्री शान्तिवीर दि० जैन गुरुकुल सघी जी की नसिया गगोपोल दरवाजे के बाहर
		श्री दि० जैन चै० सघी जी कठहारे के कुवे की गली	वीतराग विज्ञान पाठशाला दि० जैन मन्दिर २० दुकान आदर्शनगर
		श्री दि० जैन चैत्यालय (सेठियो का) बालमुकुन्द जी बज के सामने	वीतराग विज्ञान पाठशाला दि० जैन मन्दिर दीवान बघीचन्द, घी वालो का रास्ता
		श्री दि० जैन चैत्यालय (सोनियो का) दारोगाजी के मन्दिर के पीछे सुन्दरलाल सोनी के मकान मे	वीतराग विज्ञाल पाठशाला शिवाड बाकलीवाल का मन्दिर, किशनपोल बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय तूगावालो का कुन्दीगरो के भैरु का रास्ता, तूगे वालो की हवेली	वीतराग विज्ञान पाठशाला टोडरमल स्मारक भवन ए-4, बापूनगर
		श्री दि० जैन चै० वैदो का दाई की गली, वैदो का मकान	श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी छात्रवृत्ति फड, महावीर भवन चौडा रास्ता

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय (विन्दायक्यों का) कमला नेहरु स्कूल के पास	
		श्री दि० जैन चैत्यालय घासीलाल जी ठोलिया, दाई की गली, ठोलियो की हवेली	
		श्री दि० जैन मन्दिर बडा मन्दिर ठाकुर फतेहसिंह जी के सामने	श्री दि० जैन चैनसुखदास ट्रस्ट मनिहार का रास्ता
		श्री दि० जैन मन्दिर, बासका गोधो का चौक, ऊँचा कुँआ	श्री दि० जैन केसरवाल बख्शी सहायता कोष न्यू कालोनी
		श्री दि० जैन मन्दिर, भूरा जी बैंज्या के चौराहे की कूट पर	श्री दि० जैन सन्मति पुस्तकालय ट्रस्ट बडा मन्दिर, हल्दियो का रास्ता
		श्री दि० जैन मन्दिर, बूचरो का चाकसू का चौक	श्री दि० जैन सन्मति सहायता ट्रस्ट घी वालो का रास्ता
		श्री दि० जैन मन्दिर चाकसू (पचायती) चाकसू का चौक	श्री दि० जैन महावीर पुस्तकालय चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन मन्दिर चौधरियो का बख्शी जी का चौक	श्री दि० जैन वाचनालय, दि० जैन धर्मशाला बजी ठोलिया, घी वालो का रास्ता
		श्री दि० जैन मन्दिर, दारोगा जी निकट ऊँचा कुवा	श्री पारस वाचनालय गोधो का चौक, ऊँचा कुवा चौ० घाट दरवाजा
		श्री दि० जैन मन्दिर दीवान बधीचन्द जी साह, ठोलियो के मन्दिर के चौराहे पर	श्री सन्मति पुस्तकालय, अर्जुन लाल सेठी नगर
		श्री दि० जैन मन्दिर फागी, काँच की चूडी वालो का चौराहा	श्री सन्मति पुस्तकालय (शहर)
		श्री दि० जैन मन्दिर गोधो का नागोरियो के चौक मे	श्री दि० जैन बडा मन्दिर जी तेरापंथी, घी वालो का रास्ता, जौहरी बाजार

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन मन्दिर गुमानी राम जी पद्मावती कन्या पाठशाला के पास	श्री दि० जैन औषधालय लाल जी साड का रास्ता दीवान जी की धर्मशाला चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन मन्दिर, जीवूबाई जी शिवजीराम भवन के सामने	श्री सेवापथ जैन औषधालय चम्पापुरा की गली, रास्ता चुरुकाई चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन मन्दिर लाटी जी निकट दारोगा जी की हवेली	श्री शान्तिसागर दि० जैन औषधालय बजी ठोलियो की धर्मशाला चौ० घाट दरवाजा
		श्री दि० जैन मन्दिर ला० अमीचन्द जी (चौबीसम०) बैंज्या के चौराहे की कूंट पर	श्री दि० जैन धर्मशाला, बख्शी जी, बख्शी जी का चौक रामगज बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर मारु जी का चौक	श्री दि० जैन धर्मशाला बजी ठोलियान घी वालो का रास्ता चौ० घाट दरवाजा
		श्री दि० जैन मन्दिर मुशरफो का मनीराम जी की कोठी के सामने मुशरफो का चौक	
		श्री दि० जैन मन्दिर नया बैराठियो का पीपली महादेवजी का चौराहा	श्री दि० जैन धर्मशाला दीवान अमरचन्दजी, लाल जी साड का रास्ता, चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन मन्दिर नया चौधरियो का, बोहरा जी के कुवे के पास	श्री दि० जैन धर्मशाला खिदूकान चुरुको का रास्ता चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन मन्दिर निगोतियो का बोहरा जी के कुवे के पास	श्री दि० जैन धर्मशाला मल जी छोगालाल सेठी मिर्जा इस्माइल रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर पं० लूणकरण जी ठाकुर पचेवर का रास्ता, खुर्रे पर	टोडरमल स्मारक भवन गाँधी नगर मार्ग बापूनगर

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन मन्दिर ठोलियो का धर्मशाला सेठ बनजीलाल जी ठोलियो के सामने	जैन वीरमडल नमक की मडी किशनपोल बाजार जैन युवक सघ सगीत मडल दि० जैन मन्दिर, बेगस्थान चाँदपोल बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर वैदो का कोठी मनीराम जी के सामने	
		(चौकड़ी तोपखाना हजूरी सूरजपोल बाजार)	महावीर क्लब, महावीर पार्क रोड, चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन चैत्यालय श्रतुर्भुज जी सोगाणी चौकडी रामचन्द्र जी नला मे धाभाई जी का खुरा उतर कर	श्री दि० अखिल विश्व जैन मिशन, घी वालो का रास्ता
		श्री दि० जैन चैत्यालय खानमामा वाले दीवानो का, दीवान खानसामा वालो की हवेली	श्री दि० भारत जैन महा मडल, मीस-कीम
		श्री दि० जैन चैत्यालय मु० किरपाचन्द जी अचरोल वालो की हवेली का रास्ता सोनियो के मन्दिर से सीधा	श्री दि० जैन बाहुबली व्यायामशाला, हल्दियो का रास्ता
		श्री दि० जैन चैत्यालय तनसुखजी श्रीमाल, श्रीमालो की हवेली	श्री दि० जैन महिला परिषद मनिहारो का रास्ता
		श्री दि० जैन चैत्यालय तेरापथियो का भट्टो की गली, विधानसभा के सामने	श्री दि० जैन वीर मडल
		श्री दि० जैन मन्दिर अठारह महाराज पानो का दरीबा मुकीम जी के पास	श्री वीर सेवक मडल स्वय सेवक
		श्री दि० जैन मन्दिर बिजैराम जी पाडया पानो का दरीबा, मुकीम जी के पास	बाल सहेली शुक्रवार सगीत दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, गोपाल जी का रास्ता

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन मन्दिर ढूंडियो का (पाटनियो का) जीन माता के खुर्रे का रास्ता	महिला जागृति संघ दि० जैन संस्कृत कालिज, मनिहारो का रास्ता
		श्री दि० जैन मन्दिर सोनियो का खवास बाला, बख्श जी का रास्ता पानो का दरीबा	
		(चौकड़ी गंगापोल)	
		श्री दि० जैन चैत्यालय राव किरपाराम जी आमेर रोड पर	पूजा प्रचारक समिति संगीत एव पूजा
		(चौकड़ी विशेश्वर जी)	
		श्री दि० जैन चैत्यालय भागचन्द जी दीवान चौड़ा रास्ता, फतेपुरियो की गली, दरवाजा वाली हवेली	श्री दि० शारदा सहेली सघ घी वालो का रास्ता श्री महावीर संगीत मण्डल गोपाल जी का रास्ता
		श्री दि० जैन चैत्यालय पारमलाल जी गोधा पीतलियो का चौक, पहली हवेली मे	श्री वीर महिला सघ खिन्दूको की धर्मशाला, चौरुको का रास्ता, चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन चैत्यालय तोतूको का बारह गणगौर का रास्ता	श्री वीर संगीत मण्डल दि० जैन मन्दिर चौधरियान चौ० मोदीखाना
		श्री दि० जैन मन्दिर कालाडहरा श्री महावीर स्वामी, गोपाल जी का रास्ता	श्री दि० जैन महावीर समाचार समिति टोडरमल स्मारक
		श्री दि० जैन मन्दिर कलह कीर्ति जी चौड़ा रास्ता बाजार मे	श्री दि० जैन विवाह सूचना केन्द्र न्यू कालोनी
		(चौकड़ी मोदीखाना)	
		श्री दि० जैन चैत्यालय आधीको को अजबघर का रास्ता, जमनालाल जी साह के सामने	श्री दि० जैन उद्योग व्यवसाय समिति

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय बजो का नरसिंहदास जी की हवेली के सामने	
		श्री दि० जैन चैत्यालय बजो का राजूलाल जी की गली सघी जी के मकान के सामने	
		श्री दि० जैन चैत्यालय बट वालो का बट वालो का नीम वाला मकान	
		श्री दि० जैन चैत्यालय भाँवसो का (दरवाजा) दीवान अमरचन्द जी के मन्दिर के पीछे भावसो की गली मे	
		श्री दि० जैन चैत्यालय भाँवसो का (ब्र० लाडली वाला) दीवान अमरचन्द जी के मन्दिर के पीछे भावसो की गली मे	
		श्री दि० जैन चैत्यालय भूरामल जी साह खिदूको की गली, गोटे वालो के सामने	
		श्री दि० जैन चैत्यालय चोख जी खिदूका बधीचन्द जी गगवाल के सामने	
		श्री दि० जैन चैत्यालय दीवान अमरचन्द जी दीवान अमरचन्द जी की हवेली मे	
		श्री दि० जैन चैत्यालय दूनी वालो का छीक माता के मन्दिर के सामन	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय गोदीको का हरसुख जी कामलीवाल का रास्ता	
		श्री दि० जैन चैत्यालय (नया) गोदीको का हरसुख जी कामली वाले का रास्ता	
		श्री दि० जैन चैत्यालय गोटे वालो का खिदूको की गली, गोटे वालो का मकान	
		श्री दि० जैन चैत्यालय छाबरयो का सिरमोरियो के मन्दिर के सामने	
		श्री दि० जैन चैत्यालय खिदूको का महावीर पार्क, श्री ज्ञानचन्द्र जी खिदूको का मकान	
		श्री दि० जैन चैत्यालय लक्ष्मणलाल जी दीवान नाटानियो का रास्ता	
		श्री दि० जैन चैत्यालय लोग्या का दीवान जी की धर्मशाला के पीछे	
		श्री दि० जैन चैत्यालय मुशरफो का नाटानियो का रास्ता	
		श्री दि० जैन चैत्यालय नकटीको का सघी जी का रास्ता निकट डागरथल वालो की हवेली के पास	
		श्री दि० जैन चैत्यालय प० सदासुख जी हेडका मनिहारो का रास्ता	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय परमानन्द जी खिदूका, चूरुको का रास्ता, खारी कुई	
		श्री दि० जैन चैत्यालय साहो का साहो के मकान मे	
		श्री दि० जैन चैत्यालय सांगाको का अजबघर के पीछे की हवेली मे	
		श्री दि० जैन चैत्यालय संघी जी दीवान शिवाजी लाल का रास्ता चौराहे पर	
		श्री दि० जैन चैत्यालय टोडरको का दीवान जी की धर्मशाला के पीछे	
		श्री दि० जैन मन्दिर बडा दीवान जी मणिहारो का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर बाई जी का चूरुको का रास्ता, चौराहे की कूट	
		श्री दि० जैन मन्दिर बाकली वालो का दी० शिवजीलाल जी के आडे रास्ते मे बाकली वालो की गली	
		श्री दि० जैन मन्दिर भौंवसो का दीवान अमरचन्द जी के मन्दिर के पीछे भौंवसो की गली मे	
		श्री दि० जैन मन्दिर छाबडो का छीक माता के मन्दिर के पास	
		श्री दि० जैन मन्दिर चम्पाराम जी पाड्या आचार्यों के रास्ते का चौराहा	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन मन्दिर चौधरियो का बौली के कुए के पास	
		श्री दि० जैन मन्दिर दीवान अमरचन्द जी लाल जी माड का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर गढमल जी का दीवान शिवजी लाल जी का रास्ता कुए के सामने	
		श्री दि० जैन मन्दिर जती जी का मनिहारो का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर कालो का छाबडो के म० के आगे की गली मे	
		श्री दि० जैन मन्दिर खिदूको का चौराहे की कूट पर खूटको का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर खोजो का दीवान शिवजी लाल जी का रास्ता बाडदारो के पास	
		श्री दि० जैन मन्दिर लश्कर का बोरडी का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर मेघराज जी खिदूका की गली, रावको के मकान के पास	
		श्री दि० जैन मन्दिर पहाडियो का दीवान अमरचन्द जी की गली मे	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन मन्दिर पापलियो का लाल जी साड का रास्ता, कुवे के पास	
		श्री दि० जैन मन्दिर पाटोदी का मनिहारो का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर सागा कोका सागाको का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर सघी जी महावीर पार्क के पास	
		श्री दि० जैन मन्दिर सिरमोरियो का आचार्यों का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर, सिवाड वालो का दीवान शिवजी लाल जी के आडे रास्ते मे बाकली वालो की गली	
		(चौकड़ी तोपखाना देश)	
		श्री दि० जैन चैत्यालय बाजूलाल जी गोधा टिक्कडमल का रास्ता खुद की हवेली मे	
		श्री दि० जैन चैत्यालय बख्शी जी का आकडो का रास्ता	
		श्री दि० जैन चैत्यालय धमाने वालो का नमक की मडी, कालख वालो का चौक	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय डिग्गी वालो का टिक्की वालो का रास्ता, जमना लाल जी डिग्गी वालो का मकान	
		श्री दि० जैन चैत्यालय झडे वाला का किशनपोल बा०, आर्य समाज के पास	
		श्री दि० जैन मन्दिर बगीचीवाले बजो का टिक्की का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर बधीचन्द जी बज का टिक्की वालो का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर, आमली का अजमेरी दरवाजा, सुन्दर का बाग	
		श्री दि० जैन मन्दिर, डूगरसी पाडया टिक्की वालो का पहला चौराहा का आडा रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर जोबनेर झालानियो का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर प० शिवजी लाल जी पाडया आकडो का रास्ता किशनपोल बा०	
		श्री दि० जैन मन्दिर सौगणियों का आकडो का रास्ता, किशनपोल बा०	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	**(चौकड़ी पुरानी बस्ती)**	
		श्री दि० जैन मन्दिर बैनाडों का ठा० हरीसिंह जी लाडरवानी के सामने	
		श्री दि० जैन मन्दिर बेगस्यों का चाँदपोल बाजार, उणियारा वालो का रास्ता	
		श्री दि० जैन मन्दिर घिनोई वालो का शूरगढी छीपीवाडा मे	
		श्री दि० जैन मन्दिर कासलीवालो का ठा० हरीसिंह लाडरवानी के सामने	
		(चौकड़ी हवाली शहर)	
		श्री दि० जैन चैत्यालय बगवाडे वालो का गगवाल पार्क, मेडीकल कालिज के पीछे	
		श्री दि० जैन चैत्यालय बापूनगर गणेश मार्ग रामबाग चौराहे से आगे	
		श्री दि० जैन चैत्यालय बूचरो का बूचरा बिल्डिग, भगवानदास रोड	
		श्री दि० जैन चैत्यालय पार्श्वनाथ हिन्द होटल वालो का बगला, नले पर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जयपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय सेठियो का पचार वालो का बगला, फतहटीबा	
		श्री दि० जैन चैत्यालय ठोलियो का ठोलिया बिल्डिग, मिर्जा इस्माइल रोड	
		श्री दि० जैन चैत्यालय टोडरमल स्मारक भवन, गाँधी नगर रोड	
		श्री दि० जैन मन्दिर मोहनवाडी गलता दरवाजा बाहर	
		श्री दि० जैन मन्दिर मुलतान वालो का आदर्श नगर मे, १२ दुकानो के पास	
		श्री दि० जैन नशियाँ बागरु वालो की स्टेशन पर अटल जी के सामने	
		श्री दि० जैन नशियाँ भट्टारक जी रामबाग होटल से पहले, रामसिह रोड	
		श्री दि० जैन नसिया दीवान जी सवाई मानसिह अस्पताल के सामने	
		श्री दि० जैन नशिया खजाची चाँदपोल दरवाजा बाहर	
		श्री दि० जैन नशिया तेरापथियो की स्टेशन पर, पो० आ० के पास	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	जेरामपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जोबनेर	श्री दि० जैन चैत्यालय	जैन औषधालय
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री शान्तिवीर जैन गुरुकुल
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री शान्तिवीर जैन गुरुकुल प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय
			वीतराग विज्ञान पाठशाला C/o शान्तिवीर जैन गुरुकुल
	कचरोदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कालाडेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करणसर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खडेली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खैरवाल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खैरावीसल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खानियाँ जी		श्री दि० जैन चूलगिरि जी अतिशय तीर्थ क्षेत्र खानिया जी
	खिजूरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लढाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लाखडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लालसोट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लासना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लसरीप	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लवासा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लेतावाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लुण्डियावाट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	माधोराजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	माधोसिंहपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मण्डा भीमसिंह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	माडारेज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडावरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मरबा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोजमाबाद	श्री दि० जैन बडा मन्दिर	श्री दि० जैन बडी धर्मशाला
		श्री दि० जैन छोटा मन्दिर	श्री दि० जैन छोटी धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	मोजमाबाद	श्री दि० जैन नशिया	श्री दि० जैन यशस्वी औषधालय
	मोपजी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुबाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुन्डीला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुरलीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुवाणा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नमिला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नरायना	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पुस्तकालय (जैन महावीर भवन)
			श्री महावीर भवन (धर्मशाला)
	नीमडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नीमोस्या	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पदमपुरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडासौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाथोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पापड्दा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	परगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पारली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	प्रतापपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राधाकिशनपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजावास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामजीपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रातलया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रेनवाल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सचथल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सलउदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साखून	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सागलावास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साभरलेक	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन भवन (विहारी)
			श्री महावीर दि० जैन विद्यालय
	सागानेर	श्री दि० जैन मन्दिर बघीचन्द जी का	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	सागानेर	श्री दि० जैन मन्दिर बाहर की नसिया	
		श्री दि० जैन मन्दिर दुर्गापुरा	
		श्री दि० जैन मन्दिर गोदीको का	
		श्री दि० जैन मन्दिर गोधो का	
		श्री दि० जैन मन्दिर जगतपुरा	
		श्री दि० जैन मन्दिर लोहडियो का	
		श्री दि० जैन मन्दिर सघी जी का	
		श्री दि० जैन मन्दिर श्योपुर	
		श्री दि० जैन मन्दिर ठोलियो का	
		श्री दि० जैन नसिया बिजैलाल जी पाण्डया	
		श्री दि० जैन नसिया सिंधीराम गोधा की	
	सागा का वास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सांगमेर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	स्वाखन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साख	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेथल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शार्दूलपुरा (फुलेरा)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शतत्या	श्री दि० जैन मन्दिर	
	श्री पदमपुरा		श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्योदासपुरा पदमपुरा
	श्री रामपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
जयपुर	श्यालावास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिनोदिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिरोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तेवटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तिमोनिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उग्गवास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उरसेदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वगढी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वेनाड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वीची	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वोलोना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	यकवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ई) पाली	आनन्दपुरकाल	श्री दि० जैन मन्दिर	महावीर दि० जैन विद्यालय
	मेहता रोड	श्री दि० जैन मन्दिर	
(उ) सवाईमाधोपुर	आलमपुर	श्री दि० जैन नसिया राय जी चमत्कार जी मुदायमी	श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र चमत्कार जी आलमपुर (सवाईमाधोपुर)
	चौथकावर कडा		दि० जैन वीर बाल सघ (शाला)
	पावटा		वीतराग विज्ञान पाठशाला प० जगमोहन लाल जैन
	रणत भँवर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सवाई माधोपुर	श्री दि० जैन मन्दिर अग्रवाल	दि० जैन वीर बालसघ (शाला) जेल रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर भुसा वडियान	
		श्री दि० जैन मन्दिर दीवान जी	
		श्री दि० जैन मन्दिर पचायती	
		श्री दि० जैन मन्दिर सावला जी	
		श्री दि० जैन मन्दिर तेरापथी	
	सेरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शिवाड		आध्यात्मिक दि० जैन विद्यालय शिवाड भवन
	श्री महावीर जी	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन आदर्श महिला विद्यालय दि० जैन मुमुक्षु महिलाश्रम विद्यालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
सवाईमाधोपुर	श्री महावीर जी		शान्तिवीर जैन गुरुकुल
			श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र
			श्री महावीर जी सवाई माधोपुर
(ऊ) टोंक	अरुया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अलीगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	अखिल विश्व जैन मिशन केन्द्र
			राजमल गोधा सयोजक
			अ० वि० जैन मिशन केन्द्र
			श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला
			श्री दि जैन पुस्तकालय
			श्री वीर बाल सघ
			श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला
	आँवा	श्री दि० जैन मन्दिर	शान्तिनाथ दि० जैन पाठशाला
	बालागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बालन्दा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बनेठा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री वीर बाल सघ
			श्री वीर जैन पुस्तकालय
	देठानी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जगडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झरना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जूनियम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कडीला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ककोड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करावाम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कयालो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खरेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लाबा	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन पार्श्वनाथ पाठशाला
	लिसाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडपा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मदाण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडावर	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
टोंक	मालपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुराई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नगरफोर्ट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निमोला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निवाई	श्री दि० जैन चैत्यालय	आचार्य कुन्थुसागर दि० जैन कन्या पाठशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	चन्द्रप्रभु दि० जैन विद्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	जैन नवयुवक मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री छगन लाल जी जैन धर्मशाला, बस स्टैंड के पास
		श्री दि० जैन नसिया	श्री महावीर जैन औषधालय
	पाडली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पचेवर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर दि० जैन पुस्तकालय
			श्री महावीर दि० जैन औषधालय
			श्री महावीर दि० जैन विद्यालय
			श्री वीर बालक मण्डल
	पारलली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पराना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीपल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पीपलू	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
	रामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सराणा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सतवाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सीतापुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिरस	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिरोज	श्री दि० जैन मन्दिर	नेमीसागर दि० जैन पाठशाला मूरारिया
	सूतडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोयल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुरोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुवारिझ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टोडारार्यसिह	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
टोंक	टोडारायसिंह	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	टोंकनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	आचार्य शिवसागर शाला
		श्री दि० जैन नसिया प्राचीन	आदर्श दि० जैन पाठशाला मानक चौक
		श्री दि० जैन नसिया प्राचीन	जैन वीर पाठशाला अमीरगंज मु० तख्ता
	उनियारा	श्री दि० जैन मन्दिर	महावीर दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	वडोदिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बूरगी	श्री दि० जैन मन्दिर	

—:○—

उत्तर प्रदेश

आगरा—

आगरा एक ऐतिहासिक नगर है जिसका आगलपुर-आगरा और अर्गलपुर नाम से जैन-साहित्य मे उल्लेख मिलता है। आगरा कब और किसने बसाया यह अभी तक सुनिश्चित नहीं हो सका परन्तु इसमे कोई शक नही कि आगरा पुराना नगर है। जनरल कनिंघम के अनुसार मुस्लिम काल से पूर्व आगरा के प्राचीन अवशेष बहुत कम उपलब्ध हैं। आगरा जिले के जलद्वार के बाहर किले और यमुना नदी के बीच मे काले पाषाण के कुछ स्तम्भ खुदाई मे प्राप्त हुए थे और एक कृष्ण-पाषाण की कलात्मक विशाल मूर्ति, जो जैनियो के २०वे तीर्थङ्कर मुनिसुव्रतनाथ की थी जिस पर कुटिला लिपि मे १०६३ अंकित है। स्तम्भ भी किसी पुराने जैन मन्दिर के ज्ञात होते है।

आगरा का सर्वप्रथम उल्लेख सिकन्दर बिन लोदी की राजधानी के रूप मे मिलता है। उसने सिकन्दरा मे सन् १४९५ मे अपना महल बनवाया था जो बारादरी के नाम से प्रसिद्ध है, इसी से उसका नाम सिकन्दराबाद पडा और १५९५ मे उसकी यही पर मृत्यु हुई थी। उसके बाद उसके पुत्र इब्राहिम लोदी ने वहाँ राज्य किया, उसे बाबर ने हरा कर मई सन् १५२६ मे आगरा और दिल्ली पर अधिकार कर लिया। बाबर के पश्चात् उसके पुत्र हुमायूं ने राज्य किया। २६ जनवरी १५५६ मे हुमायूं की मृत्यु हो गयी और सन् १५५७ मे अकबर ने फतहपुर सीकरी मे महल बनवाये।

किला बनने पर वह सन् १५६८ मे फतहपुर सीकरी छोडकर आगरा मे रहने लगा और वही से अपना शासन कार्य सचालन करता रहा। इससे स्पष्ट है कि सन् १४८५ से पूर्व आगरा मौजूद था। सन् १०६३ के मूर्तिलेख से उसकी अवस्थिति ११वी शताब्दी तक पहुँच जाती है। हो सकता है कि वह उससे भी पूर्व बसा हो किन्तु यह निश्चित है कि आगरा मुस्लिम शासको के जमाने मे अधिक प्रसिद्ध हुआ। विक्रम की १६वी, १७वी शताब्दी मे तो आगरा मे अनेक जैन-मन्दिरो का निर्माण हुआ और जैन-कवियों द्वारा अनेक ग्रन्थो का निर्माण किया गया। मोतीकटरा के मन्दिर मे १२वी, १३वी शताब्दी की मूर्तियाँ विराजमान हैं। मुगल शासन काल मे आगरा उन्नति की चरम सीमा पर था। उन दिनों आगरा अरबी, फारसी, उर्दू, पुर्तगाली, गुजराती, बगाली, मराठी आदि भाषाओ के बोलने वाले देशी-विदेशी व्यापारियो से भरपूर रहता था। प्राकृत भाषा मे 'अग्गलपुर' और सस्कृत मे 'अर्गलपुर' कहा जाता था। अग्रपुर या उग्रसेनपुर का भी नामोल्लेख मिलता है। आगरा मे १७वी शताब्दी मे अनेक जैन विद्वान कवि हुए है। उस समय आगरा मे अनेक जैन राजकीय उच्च पदो पर स्थित थे। सैनिक कोषाध्यक्ष और उमरावो के मत्री एव सलाहकार थे। राज्य कार्य और व्यापार के नाते अनेक जैन श्रावक आगरा मे आते रहते थे। आगरा मे अनेक जैन मन्दिर थे जिनमे समय पर पूजा, पाठ, शास्त्र-प्रवचन तथा तत्व-चर्चा का कार्य सम्पन्न होता था। गोष्ठी मे अध्यात्म-गोष्ठी का मुख्य विषय होता था। प्रवचनो और सत्सगति से आगन्तुक जैनो मे धार्मिक वात्सल्य श्रद्धा में दृढता और स्थितिकरण भी होता था। प० दौलतराम जी कासलीवाल के हृदय मे जैन धर्म के प्रति आस्था और वात्सल्य यहीं उत्पन्न हुआ था। उसका उल्लेख सितरदि और कपिस्थल आदि मे अध्यात्म शैली का प्रचार था।

कविवर बनारसीदास, भूधरदास, द्यानतराय, भगवती दास ओसवाल, हेमराज पाण्डे, हीरानन्द, राजमल पाण्डे, जगजीवन, कुँवरपाल, पीताम्बर दास, जगतराय, बिहारी दास, बुलाकीदास पाण्डे, रूपचन्द्र। भगवती दास अग्रवाल आदि कवियो ने आगरा मे साहित्यिक रचना कर सरस्वती के भडार को सवर्धित किया था। मुसलमान शासको के समय भी जैन-कवियो का रचना क्रम चलता रहा।

भगवती दास अग्रवाल ने, जो बुढिया जिला अम्बाला

के निवासी थे और दिल्ली की गद्दी के भट्टारक महेन्द्रसेन के शिष्य थे, सं० १६५१ (सन् १५६४) मे रामपुर के श्रावको के साथ आगरा के जिन मन्दिरो की वन्दना की थी उनकी वह रचना 'अर्गलपुर जिन वन्दना' के नाम से जैन सन्देश शोधाङ्क ५ मे प्रकाशित हो चुकी है जिसका शीर्षक है—'जैन साहित्य मे आगरा'। कवि की सब रचनाएं ६० से ऊपर हैं जिनमे कुछ का परिचय अनेकान्त पत्र मे मुद्रित हो चुका है।

उस समय सरकार मे काम करने वाले जैन रात्रि मे प्रवचन मे सम्मिलित होते थे। १७वी शताब्दी के विद्वान कवियो ने उस समय आगरा की समृद्धि के साथ अनेक एतिहासिक तथ्यो का उल्लेख किया है। आर्गलपुर जिन-वन्दना मे ४८ मन्दिर निर्माताओ के नाम और पूजक पाण्डे आदि का भी उल्लेख किया गया है। साथ मे किस मुहल्ले मे कौन सा मन्दिर या चैत्यालय है, इसका स्पष्ट कथन किया है। ४८ मन्दिर मे श्वेताम्बर मन्दिर और चैत्यालय भी सम्मिलित है। मुहल्लो के नामो मे कुछ मुहल्ले अब नही रहे उनके नाम इस प्रकार हैं —

शहजादे की मडी नूरगज, सुलतानपुर, शाहगज, कल्याणपुर, इतवारणा का कटरा, नाई की मडी, फूटा दरवाजा साहिलसाहू का मन्दिर, असमपुरा, नौतव देहरा, भट्टारक सहस्त्रकीर्ति का मन्दिर, खवास खाँ की मण्डी (खवासपुरा) सगटी अमैराज का मन्दिर, नूरी दरवाजा केशोशाह का मन्दिर, मेघासाहू, जिनालय, दिहुणा साहू का मन्दिर, नगर के मध्य मे खामा साहू का मेहरा मुनिरल कीर्ति का मन्दिर, हजरत की मडी, दलपतराय का मन्दिर, वसई मदार दरवाजा नूपर घानार का देवालय, दीनाशाह का मन्दिर, विजयसेन का मन्दिर, कालीदास खण्डेलवाल का मन्दिर, अमीपाल का मन्दिर, टोडरसाहू का मन्दिर, सातूनारायनी का मन्दिर, पद्मावती पुरवाल का मन्दिर, धर्मदास जैसवाल का मन्दिर, भीका की मडी, खिडकी और मुलतानी टोला।

इनके अतिरिक्त कवि ने शुभकीर्ति और जगतभूषण भट्टारको का नामोल्लेख भी किया है।

भट्टारक जगतभूषण १७वी शताब्दी के सस्कृत और हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान थे और आगरा मे साहू नारायणी के मन्दिर मे रहते थे। उनकी हिन्दी और संस्कृत की रचनायें उपलब्ध है। कृपण जगावन चरित्र, समवसरण, खोज भेपनक्रिया १६६५ मे रची थी। वर्तमान मे आगरा मे दिगम्बर मन्दिर और चैत्यालयों की सख्या ३६ बतलायी जाती है। उनमे २४ मन्दिर ५ चैत्यालय और एक नशिया जी हैं। इस सूचि मे ३० मन्दिर-चैत्यालयो का उल्लेख किया गया है। शेषके नामादि प्राप्त नही हुए और न शोध-सस्थान का परिचय ही प्राप्त हुआ।

भगवतीदास द्वारा उल्लिखित इस सब विवेचन से आगरा की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। यहाँ यह विचारणीय है कि उत्तर प्रदेश के दि० जैन तीर्थ पुस्तक के पृष्ठ ६० पर प० बलभद्र जी ने लिखा है कि सुलतानपुरा मुहल्ले मे चिन्तामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान थी। पृष्ठ ६२ मे लिखा है कि विश्वास किया जाता है कि वह प्रतिमा ताजगज के मन्दिर मे विराजमान है। प्रतिमा पालिशदार और मूलनायक है। उसकी अवगाहना सवा दो फुट व पद्मासन है। वह सम्वत् १६६७ मे प्रतिष्ठित हुई है जबकि भगवतीदास ने अर्गलपुर जिन वन्दना मे १६५१ मे उसका उल्लेख किया है। अत इसका सामजस्य कैसे किया जा सकता है। उक्त सम्वत् दोनो की एकता मे बाधक हैं, विद्वजन् इस पर विचार करें।

अयोध्या—

अयोध्या एक प्राचीन ऐतिहासिक नगरी है जो वर्तमान मे उत्तर प्रदेश राज्य के अवध नामक इलाके मे फैजाबाद जिले के अन्तर्गत सरयू नदी के किनारे पर अवास्थित है जिसकी गणना भारत की प्राचीनतम महानगरियो मे की जाती है। जैन सस्कृति के अनुसार अयोध्या सध्य ससार की सबसे पहली नगरी है। श्रमण संस्कृति के प्रवर्तक आद्य तीर्थंकर आदि ब्रह्म ऋषभदेव की और अन्य चार तीर्थंकरों की जन्मभूमि होने के कारण उसकी महत्ता स्पष्ट है। इतना ही नही किन्तु अन्य अनेक महापुरुषो की जनक रही है। इस कारण जैन सस्कृति मे भी उसकी महत्ता है ही किन्तु भारतीय संस्कृति मे भी उसकी महत्ता आंकने योग्य है।

● जैन, हिन्दु और बौद्धो मे ही नही किन्तु मुसलमानों के यहाँ भी इसे तीर्थरूप मे माना जाता है और सभी

धर्मों की अनुश्रुतियो का उनके साहित्य मे उल्लेख मिलता है। यहाँ पर उन धर्मों के धर्मायतन भी बहुसख्या मे पाये जाते है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि यह नगरी बाद मे विविध धार्मिक सन्तो के समय-समय पर होते रहने से उनका अभ्युदय भी होता रहा है। इक्ष्वाकु या सूर्यवशियो के समय जैनियों और हिन्दुओ का प्रभुत्व रहा।

प्राचीन काल में इसे बहुत समय तक राजधानी बनने का भी गौरव प्राप्त रहा है। नाभिराज के प्रपुत्र और ऋषभदेव के पुत्र भरत सम्राट जिनके नाम से इस का नाम भारतवर्ष पडा, अयोध्या के शासक थे। इक्ष्वाकु वंशियो और सूर्यवंशी राजाओ ने यहाँ दीर्घकालिक राज्य किया है। उसके बाद अन्य अनेक वश के राजाओ ने शासन किया है। उस समय अयोध्या की समृद्धि अकथनीय थी। अयोध्या का जितना महत्व जैनियो को प्राप्त है, उतना ही महत्व सनातन धर्मियो और बौद्धो आदि को प्राप्त है।

अयोध्या मे जैनियो के पाँच तीर्थकरो और दो चक्रवर्तियो के जन्म लेने का उल्लेख जैन साहित्य मे पाया जाता है। वहाँ उनके अलग-अलग पाँच मन्दिर भी बने थे। यद्यपि इस समय जैनियो के वहाँ प्राचीन मन्दिर नही हैं और जो हैं वे १७वी, १८वी शताब्दी से अधिक प्राचीन नही जान पडते। प्राचीन मन्दिर काल दोष या साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के कारण विनष्ट कर दिये गये है जैसा कि आगे के इतिवृत से ज्ञात होगा।

जैन साहित्य मे इस नगरी का अयोध्या, अउज्झाउणी, अवधा, सुकोशला, कोशलपुरी, साकेत, विनीता, इक्ष्वाकु-भूमि और रामपुरी आदि अनेक नामो से उल्लेख किया गया है। आदि पुराण मे जिन सेन ने लिखा है कि अयोध्या की रचना देवो की थी और उसे प्राकार तथा परिखा आदि से अलकृत बनाई थी। कोई भी शत्रु उससे युद्ध नही कर सकते थे। (अरिभि योद्धु न सख्या आ० पु०)। वह प्रशंसनीय सुन्दर मकानो और ध्वजाओ से अलंकृत होने के कारण साकेत कहलाती थी मानो वे पताकाऐं भी अपनी भुजाओ से सकेत कर रही है। कौशल देश मे होने के कारण सुकोशला विनयवान शिक्षित एव सभ्य लोगों से व्याप्त होने के कारण विनीता कहलाती थी। इक्ष्वाकु राजाओं की जन्मभूमि और राजधानी होने के कारण 'इक्ष्वाकुभूमि' रामचन्द्र के जन्म कारण रामपुरी अवध प्रान्त मे होने के कारण 'अवधा' कहलाती थी। पउमचरिउ मे अयोध्या को बारह योजन लम्बी और नौ योजन विस्तीर्ण बतलाया गया है। हरिषेण कथा कोष में अयोध्या व साकेत नामो का अनेक स्थानो पर उल्लेख किया गया है। भगवती आराधना और तिलोय पण्णत्ती आदि जैन ग्रन्थो मे उसका उल्लेख है। यशस्तिलक चम्पू में सोमदेव ने अयोध्या को कौशलदेश मे बतलाया है तथा मगध देश मे प्रसिद्ध अयोध्या के राजा सगर चक्रवर्ती का उल्लेख किया है।

वैदिक साहित्य मे अयोध्या या कौशल देश का उल्लेख नही है। शतपथ ब्राह्मण मे एक स्थान पर कौशल का नाम आया है। प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनीय व्याख्याता के एक सूत्र मे कौशल का उल्लेख अवश्य हुआ है। पतजलि ने अपने महाभाष्य मे अरुणाद भुवन साकेतम्' किया है जिसमे एक महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख किया है और बतलाया है कि यवनो द्वारा साकेत पर आक्रमण किया गया था। यद्यपि पतजलि ने उक्त घटना का कोई परिचय नही दिया किन्तु यूनानी लेखको के वर्णन से स्पष्ट है कि उस राजा का नाम मिनन्दर था उसके सिक्को पर भी उसका नाम प्राकृत भाषा मे अकित है। उसकी दृष्टि पाटलिपुत्र (पटना) पर अधिकार करने की थी। अत उसने मथुरा पर अधिकार कर लिया क्योकि साकेत को जीतने के लिये मथुरा पर अधिकार करना आवश्यक था। उसने साकेत पर घेरा डाला। वाल्मीकि रामायण, रघुवश और भवभूति के रामचरित मे अयोध्या नगर का उल्लेख है। बौद्धो का अयोध्या मे कोई खास सम्बन्ध नही रहा, उनका सम्बन्ध तो विशाखा (श्रावस्ती) से था, हाँ बुद्ध ने अयोध्या मे कई चातुर्मास किये है।

सन् ११९४ ई० में मुहम्मद गौरी का भाई मखदूम शाह जूरन गौरी सेना लेकर अयोध्या पर चढ आया। उसने वहाँ के सबसे प्राचीन आदिनाथ मन्दिर को नष्ट किया था और स्वय भी उसी स्थान पर युद्ध मे मारा गया था, उसी स्थान पर दफनाया गया। इसी कारण यह स्थान शाहजूरन का टीका कहलाता है। जिन मन्दिर वहाँ थोड़े समय बाद पुन बन गया किन्तु बहुत समय तक उस मन्दिर का चढावा शाहजूरन के वशज ही लेते रहे

जो अब तक अयोध्या के बकसरिया टोले में रहते थे। इस घटना के बाद ५० वर्ष मे अयोध्या पर मुसलमानो का पूरा अधिकार हो गया।

बटेश्वर—

जब शौरीपुर यमुना नदी के तट से अधिक कटने लगा और बीहड हो गया तब भट्टारक जी ने बटेश्वर ने विशाल मन्दिर और एक धर्मशाला बनवायी। यह मन्दिर स० १८३८ मे तीन मंजिल का बनवाया गया था, इसकी दो मजिले जमीन के नीचे है। इस मन्दिर मे महोबा से लाई गई भगवान अजितनाथ की ५ फुट ऊँची मूर्ति (स० १२२४ वैशाख वदी ७ सोमवार की) से परिमाल राज्य मे आल्हा ऊदल के पिता द्वारा प्रतिष्ठित एव विराजमान है जो सातिशय है। मूर्ति प्रशान्त और मनोज्ञ है। यहाँ अनेक पुरातत्वावशेष भू से उपलब्ध हुए है जिनसे क्षेत्र की महत्ता पर अच्छा प्रकाश पडता है।

चन्द्रपुरी—

चन्द्रपुरी क्षेत्र वाराणसी गोरखपुर रोड पर २० किमी० दूर है। जो रेल से २८ किमी० है। यह आठवे तीर्थंकर चन्द्रप्रभु का जन्म स्थान है उनके यहाँ गर्भ, जन्म, तप और केवल ज्ञान ये चार कल्याणक हुए है अतः यह एक प्राचीन तीर्थस्थल है। यहाँ के प्राचीन दि० जैन मन्दिर पर श्वेताम्बरो ने अधिकार कर लिया। तब ला० प्रभुदास ने इस मन्दिर का निर्माण और प्रतिष्ठा कराई।

चन्द्रवाड़—

आगरा जिले मे फिरोजाबाद से चार मील दक्षिण मे यमुना नदी के बाएं किनारे पर चन्द्रवाड नाम का अतिशय क्षेत्र अवस्थित है। यह एक ऐतिहासिक नगर है जिसे वि० स० १०५२ (सण् ७७० ई०) के लगभग बसाया था। राजा चन्द्रपाल पल्लीवन इसका शासक था। इसका मत्री रार्मसिह हारुल था, दोनो ही जैन धर्म के सचालक थे। राजा ने स० १०५३ के लगभग १ फुट की अवगाहना वाली चन्द्रप्रभु की स्फटिक की एक मूर्ति प्रतिष्ठित की थी। मत्री रार्मसिह हारुल ने स० १०५६ व १०५२ मे मूर्तियो को प्रतिष्ठित किया था। उसके बाद वहाँ चौहान वंशी राजाओं का राज्य हो गया। यद्यपि ये राजा जैन धर्मानुयायी नही थे किन्तु जैन धर्म सहिष्णु और उदार थे। उनके मत्री एव सेनापति जैन श्रावक होते थे। चन्द्रवाड के अतिरिक्त रायवद्धिय हतिकान्त, कुरावली, मैनपुरी, भोगाव और दन्तपल्ली आदि स्थानो पर भी उनका शासन था। चौहानो का राज्य विक्रम की १३वी शती से लेकर १६वी शती तक रहा है। १३वी, १४वी, १५वी और १६वी शताब्दी के अपभ्रश और सस्कृत ग्रन्थो मे चौहान वश के राजाओ का उल्लेख है। इनके राज्य काल मे जैन धर्म को पनपने और प्रफुल्लित होने का अवसर मिला है। उस समय नगर मे अनेक जिन मन्दिर थे। विक्रम की १३वी (स० १२३०) शताब्दी मे चन्द्रवाड के निवासी माथुरवशी साहुनारायण और उनकी धर्मपत्नि रुपिणी देवी ने जो देवशास्त्र गुरुभक्त थी, श्रुत-पचमी के फल को प्रकट करने वाले भविष्य कुमार के जीवन परिचय को व्यक्त करने वाली भविष्य कथा का कवि श्रीधर से निर्माण कराया था।

स० १३१३ मे कवि लक्ष्मण ने अणु कम रसवपई व नाम के ग्रन्थ की रचना चन्द्रवाड के चौहान वशी राजाओ के राज्य काल मे मत्री कृष्णादित्य की प्रेरणा से की थी। प्रशस्ति मे चन्द्रवाड के चौहान वशी राजाओ और मत्रियों का परिचय दिया है। उससे चन्द्रवाड़ और रामवद्धिय का अच्छा परिचय मिल जाता है। उस समय राजा आहवमला का राज्य था। वह बडा वीर योद्धा था, उसने मुसलमानो से युद्ध मे विजय प्राप्त की थी।

सन् १४५५ मे म० प्रभाचन्द्र के शिष्य कवि धनपाल ने 'बाहुबलि चरिउ' नामक चरित ग्रन्थ की रचना की थी। उसमे राजा सभरीराय और उनके पुत्र सारग नरेन्द्र के राज्य का उल्लेख किया है। स० १४५४ मे वैशाख बदी १२ सोमवार के दिन चन्द्रपाट दुर्ग मे राजा अभयचन्द्र के पुत्र जयचन्द के राज्य काल मे प्रतिष्ठित धातु की एक चौबीसी मूर्ति सेठ के कूचा मन्दिर मे मौजूद है।

स० १४६८ मे चन्द्रपाट नगर मे राजा रामचन्द्र के राज्यकाल मे अमरकीर्ति केवट कमास देश की प्रति लिखी गयी थी।

* स० १५११ मे पं० धर्मधर ने दत्त पल्ली मे सस्कृत भाषा मे नागकुमार चरित्र की और श्रीपाल चरित की

रचना की थी। वह चनुवाड का एक शाखानगर था और वहाँ चौहान वंशीय राजा भोजराज का पुत्र माधवचन्द्र राज्य कर रहा था।

सं० १५०६ से पूर्व यहाँ कवि रइधू ने पुण्यासन कथा की रचना प्रतापरुद्र के राज्य काल मे की थी जो राजा रामचन्द्र का ज्येष्ठ पुत्र था। साहू नेमिदास ने वहाँ जिन मन्दिर बनवाया था और विद्रुम मणि तथा पाषाण आदि की अनेक मूर्तियो का निर्माण कराया।[1] जिन्हे मन्दिर मे प्रतिष्ठित कराया था। सन् १५०६ मे प्रतिष्ठित किये जाने वाली मूर्ति का लेख उपलब्ध है जिसे चनुवाड मे रइधू द्वारा प्रतिष्ठित कराया गया था। प्रतापरुद्र बडा प्रतापी राजा था। उसने अनेक युद्धो मे विजय पाई थी। इटावा और मैनपुरी आदि का प्रदेश उसकी जागीर मे था। इन सब उल्लेखो से चन्द्रवाड की महत्ता का स्पष्ट बोध होता है। प्रतापरुद्र ने साहू नेमिदास का सम्मान भी किया था। आज चनुवाड खण्डहरो मे परिणत है, वहाँ एक मन्दिर है। उसमे १०५३ और १०५६ की दो मूर्तियाँ विद्यमान है। टीलो मे अनेक जैन कीर्तियाँ उपलब्ध हो रही है यदि उनकी खुदाई की जाये तो प्रचुर सामग्री उपलब्ध हो सकती है। चन्द्रवाड की अनेक मूर्तियाँ विभिन्न स्थानो से मिलती है। यद्यपि मुसलमानो से चन्द्रवाड को बहुत हानि उठानी पडी। जमना नदी से भी उसे नुकसान उठाना पडा है।

फिरोजाबाद को फिरोजशाह ने बसाया था ऐसा कहा जाता है। यदि यह अनुमान ठीक है तो यह १४वी, १५वी शताब्दी मे बसा। उसके बाद जैनियो की आबादी हुई और जैन मन्दिरादि का निर्माण हुआ। फिरोजाबाद मे जैनियो की अच्छी आबादी है। मन्दिर, धर्मशाला और शिक्षा सस्थाएँ तथा ग्लास वर्क्स आदि है जिनसे हजारो मजदूरो का भरण-पाषाण होता है। फिरोजाबाद की डायरेक्टरी भी निकली है, किन्तु उसमे फिरोजाबाद का कोई ऐतिहासिक परिचय नही दिया, ऐसा लोगो से ज्ञात हुआ है।

गौंडा—

गौंडा जकशन मे स्टेशन के पास एक जैन मन्दिर है। कुछ जैनी भी रहते है। यहाँ गुड और चीनी का व्यापार होता है।

इलाहाबाद (प्रयाग)—

इलाहाबाद नगर का प्राचीन भाग जो त्रिवेणी सगम के निकट है, प्रयाग नाम से प्रसिद्ध है। यह स्थान भारतवर्ष के प्रधान तीर्थों मे से एक है। जैन साहित्य मे भी इसे तीर्थ क्षेत्र माना जाता है। इसका पुराना नाम पुरिमतालपुर और प्रयाग है। यहाँ भगवान ऋषभदेव के वृषभसेन का राज्य था जो बाद मे राज्य का परित्याग कर श्रमण बना और ऋषभदेव का प्रधान गणधर हुआ। यहाँ के सिद्धार्थ वन मे आदिनाथ ने दीक्षा ली थी, उसके उपलक्ष्य मे प्रजा ने उनकी पूजा की थी। इस कारण यह स्थान प्रयाग नाम से लोक मे प्रसिद्ध हुआ।

प्रयाग मे सगम के निकट वट वृक्ष के नीचे ऋषभदेव को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था जिसके कारण यह वृक्ष लोक मे अक्षय वट नाम से ख्यात हुआ। इसी प्रयाग की पावन भूमि पर आदि तीर्थंकर का सर्वप्रथम धर्मचक्र प्रवर्तन हुआ था। इससे श्रमण की महत्ता का सहज ही आभास मिल जाता है। इलाहाबाद और इलाहाबाद जिले मे जो पमोसा, कौशाम्बी आदि क्षेत्र या स्थान है उनका विवरण आगे दिया गया है।

इलाहाबाद मे जैनियो की अच्छी बस्ती है। चार मन्दिर और पाँच चैत्यालय है। छात्रावास, औषधालय और विद्यालय आदि है। यहाँ के पुरातत्व सग्रहालय मे जैनियो की महत्त्वपूर्ण सामग्री का सकलन है जो दर्शनीय है।

जालौन—

जालौन शहर यमुना नदी के किनारे बसा हुआ है यह स्टेशन के पास है। यहाँ कालपदेव ने तपस्या की थी, इस

---

१. बहु-विह-धाउ फलित विद्रुमइ कारावेप्पिणु अगणिय पडिमउ,
पतिट्ठाविवि सुहु पाविज्जउ, सिप्पि ज्येसर गोत्त समज्जिउ।
जिं वह लना सिवर चेईतरु पुणुविमाविम ललिकइ पत बहु,
नेमिदासणा में संघाहिउ जं जिय संघसार दिण्णा हिउ॥

कारण इसका नाम कालपी पड़ गया। बादशाह अकबर के समय यहाँ सिक्का बनाने का कारखाना था। कालपी के पास ही झाँसी की रानी ने स्वतन्त्रता संग्राम मे वीरगति प्राप्त की थी, वहाँ उसकी समाधि भी बनी हुई है। यहाँ जैनियों के चार-पाँच घर हैं।

झाँसी—

झाँसी उत्तर प्रदेश का एक जिला है जो बुन्देलखण्ड और मध्य प्रदेश से सम्बन्धित है। यह नगर कब और किसने बसाया और इसका नाम झाँसी कैसे पडा इस सम्बन्ध मे कोई इतिवृत ज्ञात नही हुआ पर सन् १८३५ से पूर्व इस पर पेशवा का प्रभाव था और गगाधर राव इस पर शासन करते थे। सन् १८३५ मे अंग्रेज सरकार कम्पनी ने इस पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया था, रानी लक्ष्मीबाई युद्ध मे दिवगत हुई थी।

झाँसी जिले मे जैनियो की अनेक वृत्तियाँ विभिन्न स्थानो पर रही है सौ सवा सौ स्थानो और ग्रामो मे शिखरबद्ध जैन मन्दिर पाये जाते है, उनमे कितने ही मन्दिर वि० की १३वी शताब्दी और उसके बाद प्रतिष्ठित मिलते है। झाँसी मे छह जैन मन्दिर है। देवगढ, पचराई जैसे क्षेत्र भी उक्त जिले मे ही हैं। ललितपुर और उसके आस-पास का क्षेत्र भी जैन मन्दिरो से भरा हुआ है। चन्देलवशी राजाओ के राज्य काल मे भी यह जिला जैन मन्दिरो से अलकृत रहा है। झाँसी और उसके आस-पास के ग्रामो, कस्बो और तीर्थ क्षेत्रो के मन्दिरो की सूची नीचे दी जा रही है, पाठक उससे अनुमान लगा सकते है :—

क्षेत्र पर नये मन्दिर और धर्मशाला है। यह सिद्ध क्षेत्र है, इस सम्बन्ध मे अभी प्रमाणो की खोज आवश्यक है। कोई ऐसा प्रमाण खोजना चाहिये जिससे क्षेत्र को सिद्ध क्षेत्र कहा जा सके। प्राचीन प्रमाणो के अभाव मे वह सिद्ध क्षेत्र नही माना जा सकता।

काशी—

काशी देश मे वाराणसी नाम का प्राचीन नगर है जो वरुणा और असी नदियो के मध्य बसा है। यह जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र है। यहाँ सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ और २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म स्थल है। यहाँ इन दोनों तीर्थंकरो के गर्भ, जन्म, तप और केवल ज्ञान ये चार-चार कल्याणक हुए हैं। सुपार्श्वनाथ का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी के दिन विशाखा नक्षत्र मे राजा सुप्रतिष्ठ और पृथ्वी देवी माता के उदर से हुआ था। पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी के राजा विश्वसेन और वामा देवी क यहाँ पौष कृष्णा एकादशी के दिन हुआ था जो उग्रवशी और काश्यप गोत्री थे।[1] पार्श्व कुमार बाल-ब्रह्मचारी थे और देह-भोगो से उदासीन रहते थे। एक समय वे वन-विहार को गये। वहाँ कुछ साधु अग्नि जलाकर तपश्चरण कर रहे थे। पार्श्वकुमार उस महीपाल तापस को नमस्कार किये बिना उसके पास खडे हो गये। तापस ने इस व्यवहार को अपमानजनक माना। उसने अभी लकडी जलाने के लिये एक लक्कड उठाया और कुल्हाडी से फाडने के लिये तैयार हो ही रहा था कि अवधिज्ञानी पार्श्वनाथ ने रोका 'इसे मत फाडो, इसमें साँप है।' मना करने पर भी तापस ने उसे फाड डाला। इससे लकड़ी मे स्थित सर्प-सर्पिणी दोनो के टुकडे हो गये। पार्श्वकुमार ने दयार्द्र होकर सर्पयुगल को णमोकार मत्र सुनाया इससे वे धरणेन्द्र और पद्मावती हुए। कुछ समय के पश्चात् पार्श्वनाथ को वैराग्य हो गया और दीक्षाधारण कर तपश्चरण करना शुरु किया। कुछ समय पश्चात् २० वर्ष की आयु मे पार्श्वनाथ ने कठोर तपश्चर्या द्वारा घाति कर्मों का नाश कर केवल ज्ञान प्राप्त किया और जनता का विहार उपदेश द्वारा कल्याण किया।

कौशाम्बी—

ईस्वी पूर्व ७वी शताब्दी मे प्रसिद्ध १६ जनपदो मे वतन देश भी एक था जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी। गंगा की बाढ के कारण जब हस्तिनापुर का विनाश हो गया तब चन्द्रवशी राजा नेमचन्द्र ने कौशाम्बी को बसाया था। वत्सदेश की राजधानी कौशाम्बी एक प्राचीन नगरी

---

१ कुछ आचार्यों और विद्वानो ने ग्रन्थों में पार्श्वनाथ के पिता का नाम ह्यसेन अश्वसेन लिखा है। इतिहास मे अश्वसेन नाम का कोई राजा नहीं हुआ, बौद्ध जातकों में राजा का नाम विश्वसेन (विस्ससेन) बतलाया है। उत्तर-पुराण में भी राजा का नाम विश्वसेन सूचित किया है।

थी।' कौशाम्बी के इक्ष्वांकुवशी राजा सरण और रानी सुसीमा के पुत्र थे। उनके गर्भ जन्म कल्याणक इसी नगर मे सम्पन्न हुए। इस कारण इस नगरी की महत्ता बनी है।

अन्तिम तीर्थंकर महावीर का कौशाम्बी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। उस समय कुरुवशी राजा सहस्त्रानीक के पुत्र शतानीक राज्य शासन चला रहा था। उसकी पटरानी मृगावती थी जो वैशाली के अधिपति राजा चेटक की पुत्री और भगवान महावीर की मौसी थी जो महावीर की परम भक्त थी। राजा शतानीक महावीर का बडा आदर करता था। इन्ही का पुत्र वत्सराज उदयन था जो वीर, पराक्रमी, विद्या-विशारद और वीणा वादन मे दक्ष था। उज्जैन के राजा चण्डप्रद्योत (महासेन) की पुत्री वासवदत्ता रोमाचक प्रेमी थी जो महावीर की उपासिका थी। भगवान महावीर द्वादश वर्षीय तप काल के अन्त मे विहार करते हुए कौशाम्बी के वन मे आये। चार मास के उपवास के उपरान्त पारणा करने के लिये कौशाम्बी नगर मे पधारे। उन्होने अटपटा आभिग्रह किया था जिसके कारण वे ५ मास २४ दिन तक आहार के लिये नगर मे आते किन्तु अभिग्रह के पूर्ण न होने से वापिस लौट जाते। अन्त मे अज्ञात कुलशील क्रीतदासी चन्दना के हाथ से जो उस समय कई दिन की भूखी-प्यासी, हथबेडी-बेडी मे बधी, मलिन बदना, जीर्ण-शीर्ण वस्त्र वाली तथा अपने स्वामी की देहली पर हाथ मे सूप के अधपके उडद के बाकले लिये विषाद और दीनता की साक्षात् मूर्ति बनी खडी थी, उसे देख भगवान का अभिग्रह पूरा हुआ, उसने महावीर को भक्तिपूर्वक आहार दिया, आहार ग्रहण कर उन्होने अपने सुदीर्घ उपवास का का पारणा किया। निर्दोष आहार होने के कारण पंचाश्चर्य की वृष्टि हुई। उस समय समग्र प्रजा एव स्वय राजा तथा अन्य अधिकारीगण उमड पडे। जब रानी मृगावती ने सुना तो वह भी अपने पुत्र के साथ वहाँ आई। उसे देखकर जय-जयकार के नारों से आकाश गूंज उठा, चन्दना के उद्यम की यह अभूतपूर्व घटना और महावीर ने कष्ट कर दास-प्रथा का उन्मूलन किया। यह सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात कौशाम्बी मे हुआ इससे कौशाम्बी का गौरव और महत्ता प्रकट हुए। वास्तव मे मृगावती की छोटी बहिन ही चन्दना थी जिसे वह अपने महल मे ले गयी। उसके बन्धुजन भी उसे मिल गये परन्तु उन सबको देखकर भी ससार के क्षेत्र से उसका मन वैराग्य की ओर अग्रसर हुआ और उसने महावीर के समक्ष दीक्षा ग्रहण कर ली।

कौशाम्बी नरेश शतानीक की मृत्यु के बाद अवन्ति नरेश चण्ड प्रद्योत (महासेन) ने कौशाम्बी पर आक्रमण कर दिया। उस समय भगवान महावीर नगर के बाहर समवसरण मे विराजमान थे। उनके प्रभाव से दोनों राज्यो मे समभाव स्थापित हुआ। उक्त सकट काल मे रानी मृगावती ने बडे धैर्य, बुद्धिमता और वीरता के साथ अपने राज्य-पुत्र और सतीत्व की रक्षा की। प्रद्योत की विषय लोलुप दृष्टि सफल न हो सकी। अपने पुत्र उदयन का जीवन और राज्य की स्थिति निष्कटक कर मत्री युगधर के हाथो मे राज्य-कार्य सौप मृगावती ने दीक्षा ले ली। आर्या चन्दना के सघ मे सम्मिलित होकर आत्म-साधना मे जीवन व्यतीत किया।

महावीर के निर्वाण के पश्चात् भी कौशाम्बी जैन सस्कृति का केन्द्र बनी रही। वहाँ अनेक साधुओ का विहार और धर्मोपदेश होता रहा। कौशाम्बी के खण्डहरो मे अनेक प्राचीन अवशेष प्राप्त हुए है। लाल बलुआ पत्थर का अयाग पर जो ईशा की दूसरी शती मे राजा भद्र सघ के शासन मे निर्मित हुआ है, अनेक पुरतात्विक अवशेष मिले हैं, इससे कौशाम्बी की महत्ता स्पष्ट है। वर्तमान मे कौशाम्बी मे जैनियो का कोई घर नही है। केवल ला० प्रभुदास द्वारा बनवाया हुआ एक दि० जैन मन्दिर और एक जैन धर्मशाला है। मन्दिर मे दो वेदियाँ हैं। एक पद्मप्रभु की प्रतिमा और चरण है और एक शिला-फलक मे खडगासन प्रतिमा अकित है। पभोसा और कौशाम्बी दोनो एक ही है।

मऊरानीपुर—

झाँसी जिले मे एक सम्पन्न नगर है। इसमे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रादि अनेक जातियो के लोग निवास करते है। यहाँ जैनियो की सख्या भी अच्छी है। १३ उपासना गृह है, दि० जैन मन्दिर है मन्दिर सभी शिखर बद्ध है उनमे चौथे नम्बर के मन्दिर मे स० ११६८ की प्रतिष्ठित सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा है और आठवे नम्बर के मन्दिर मे स० १२१४ की प्रतिष्ठित आठवें तीर्थंकर की मूर्ति विराजमान है। शेष मन्दिरो की मूर्तियाँ स० १५४८

और उसके बाद की है। यहाँ शान्तिनाथ वीतराग विज्ञान पाठशाला, उमास्वामी दि० जैन सरस्वती भवन, श्री दि० जैन नवयुवक मडल मऊरानीपुर है।

पभोसा—

इलाहाबाद से पभोसा जाने के लिये अनेक मार्ग है। यहाँ से कौशाम्बी होकर पभोसा जाने के लिये कच्चा मार्ग है। इलाहाबाद से सराय अकित होकर नया पक्का रोड बन रहा है। इलाहाबाद से पश्चिम शरीरा, गिराज होते हुए भी छोटी गाडियो के लिये रास्ता है। यह यमुना नदी के तट पर अवस्थित है। यह भगवान पद्मप्रभ की दीक्षा स्थल है। इसी कारण इसे कल्याण तीर्थ कहा जाता है।

यहाँ दि० जैन मन्दिर और धर्मशाला बनी हुई है। इस मन्दिर मे भूगर्भ से प्राप्त प्राचीन मूर्तियाँ विराजमान है। ये मूर्तियाँ किसानो को हल जोतते हुए प्राप्त हुई। एक शिला फलक मे ऋषभदेव की प्रतिमा है। फलक की ऊँचाई ४ फुट है। प्रतिमा फलासन है। इसके दोनो ओर दो-दो खडगासन प्रतिमा है। पभोसा एक प्राचीन स्थान है। यहाँ शुगकाल के अनेक लेख प्राप्त हुए हैं। शुगवंश के बाद यहाँ मित्रवंशी राजाओ ने राज्य किया। यहाँ प्राचीन मन्दिर और मूर्तियाँ है। पभोसा के आसपास का क्षेत्र भी जैन-धर्म से प्रभावित रहा है। पभोसा क्षेत्र की व्यवस्था इलाहाबाद की समाज करती है।

दारानगर मे एक जैन मन्दिर था जो गगा की बाढ मे बह गया था, जिसके भग्नावशेष बचे है। इसके साथ ही यह भी कि अब वहाँ एक मन्दिर बन गया है।

पवाणी (पावागिरि) तालबेट—

पवाक्षेत्र उत्तर प्रदेश के झाँसी से ४१ कि० मी० और ललितपुर से ४८ कि० मी० है। मध्य रेलवे के बसई अथवा तालबेट स्टेशन पर उतरना चाहिये। यहाँ से पवा १३-१४ कि० मी० की दूरी पर अवस्थित है। यह क्षेत्र सिद्धों की पहाडी पर स्थित है। केडसरा तक सीमेंट की पक्की सडक है। यहाँ से क्षेत्र तक ३ किमी० कच्चा रोड है, मोटर या जीप जा सकती है। इस कच्चे मार्ग मे दो नाले पडते है। क्षेत्र के पश्चिम मे बेलवती (बेतवा) नदी बहती है। दोनो पहाडियो मे से एक सिद्धो की पहाडी है जिस पर दो मढियाँ बनी हैं दोनों एक सी दिखायी देती हैं परन्तु उनमे एक पुरानी और दूसरी अपेक्षाकृत नई जान पडती है। दोनों के मध्य थोडा सा १५-२० का अन्तर है। इन मढियों पर से चारों ओर का दृश्य बडा ही मनोहर दिखायी देता है। इनसे माता-टीला बाँध और उससे रोका हुआ अगाध जल-समूह भी दिखाई देता है जो चित्ताकर्षक है। उत्तर की ओर जो नदी बहती है उसे नाला कहा जाता है, उसके विभिन्न नाम है। नाले को बाँध के पास बेलाना नेकीना नाम से ख्यात है। थोडी दूर आगे चलने पर इसे बेलना कहते है। सिद्धो की पहाडी की परिक्रमा देने वाली चेलना नदी मिलती है वहाँ एक शिला रखी हुई है जिसे मेघासन देवी की शिला कहते हैं।

नायक गढी से सिद्धो की पहाडी प्रारम्भ होती है। वहाँ हादोल का चबूतरा बना हुआ है और कुछ खडित मूर्तियाँ पडी हैं। इसी चबूतरे से नायक गढी का परकोटा शुरू होता है। यहाँ गढी के निशान, परकोटा, बावडी, सीढियाँ और अनेक कमरो के भग्नावशेष उपलब्ध होते है। वस्तुत यह कोई गढी नही किन्तु किसी पुरातन जैन मन्दिर के खडहर है। यदि उत्खनन किया गया तो इतिहास की महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध हो सकती है।

यहाँ भोपरे मे छ: मूर्तियाँ हैं जो मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और आदिनाथ तीर्थंकर की है। ये मूर्तियाँ स० १२९९ और स० १३४५ की प्रतिष्ठित है। सं० १२९९ मे यही पर उनका प्रतिष्ठा कार्य सम्पन्न हुआ था। इससे ये मूर्तियाँ विक्रम की १३वी शताब्दी के अन्तिम समय की प्रतिष्ठित है।

रतनपुरी—

रतनपुरी जिला फैजाबाद मे अयोध्या से बाराबकी वाली सडक पर २४ किमी० दूर हैं। सडक से लगभग २ किमी० कच्चा मार्ग है। सोहावल स्टेशन से भी २ किमी० है।

सहारनपुर—

सहारनपुर उत्तर-प्रदेश का एक महत्वपूर्ण नगर है। इस नगर के आस-पास हिन्दुओ का प्रख्यात तीर्थ हरिद्वार, शाकुम्भरी देवी है। मुसलमानों का प्रसिद्ध जियारतगाह पुराना किला तथा दारुल अलूम नाम की लोकविख्यात

यूनिवर्सिटी देवबन्द में है जिसमे अरब, ईरान और अफगानिस्तान आदि के भी अनेक विद्यार्थी अध्ययन करते है। जैन धर्म का तो यह गढ ही है। औद्योगिक दृष्टि से गन्ना मिल, सिगरेट फैक्टरी, कपडा मिल, मैदा मिल, गत्ता मिल, टायर फैक्टरी, चावल मिल, पेपर मिल, कोल्ड स्टोर आदि अनेक बड़े-बड़े कारखाने हैं जहाँ लाखो व्यक्ति काम करते हैं। लकडी के भी अनेक कारखाने है जिनमे कलापूर्ण सामान तैयार होता है। अनेक प्रकार के फल आम, गन्ना (पोण्डा), बालमखीरे और लोकाट आदि पैदा होते है। कम्पनी बाग मे बादाम, सेब, अगूर आदि के पेड है।

सन १८५७ की लिखी हुई प्रद्युमचरित की लिपि प्रशस्ति मे सहारनपुर दुर्ग का उल्लेख है। कहा जाता है कि इसे शाह रनवीर सिह जैन ने बसाया था जो दि० जैन धर्म का सचालक और मुगल बादशाह अकबर का जागीरदार था।[1]

अबुलफजल ने आईने अकबरी मे भी इसे स्वीकार किया है कि शाह रनवीर अकबर की टकसाल के अधिकारी थे। उन्होने ही सहारनपुर मे टकसाल की स्थापना की थी। उसके बाद सहारनपुर बराबर अपनी प्रगति करता रहा। आज वह एक सम्पन्न शहर के रूप मे देखन मे आता है। यहाँ कालिज, हाई स्कूल, हस्पताल आदि जनोपयोगी सस्थाओ का निर्माण हुआ है। जैनियो द्वारा समय-समय पर अपने धार्मिक-कार्य सम्पन्न होते रहे ह। सन् १८३१ मे सहारनपुर मे दि० जैन परिषद का अधिवेशन हुआ था। सन् १८५६ मे पच कल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। सन् १८७१ मे दि० जैन परिपद का अधिवेशन सेठ भागचन्द जी सोनी अजमेर की अध्यक्षता मे हुआ। पूज्य गणेशप्रसाद जी वर्णी, कानजी स्वामी और मुनि विद्यानन्द आदि साधु-सन्तो का सहारनपुर मे आगमन हुआ। धर्मोपदेश आदि का जनता को लाभ मिला। वर्तमान मे भी दि० जैन का गौरव है, उनके अनेक मन्दिर और सस्थायें हैं जिनसे उनकी महत्ता का सहज ही आभास हो जाता है।

सासनी—

सासनी मे प० दौलतराम का जन्म वि० स० १८५५ मे हुआ। आपके पिता लाला टोडरमल पल्लिवाल (गगीरीवाल गोत्र) थे। बाल्यावस्था से ही आपकी रुचि विद्याध्ययन की ओर थी। आप छीट छापने का कार्य करते थे। जिस समय आप अपना कार्य करते थे चौकी पर त्रिलोकसार-गोम्मटसार आदि शास्त्र ग्रन्थ सामने रख लेते थे। प्रतिदिन ५०–५० आर्या और गाथायें कण्ठस्थ कर लेते थे। इस प्रकार आपका शास्त्रीय ज्ञान बहुत गुरु-गम्भीर था। यही कारण है कि आपकी कृति 'छहढाला' का जैन समाज मे शास्त्रानुरूप आदर किया जाता है। आपके पद जैन समाज मे बहुत प्रचलित है। आपके अनेक पद सग्रह प्रकाशित हुए है। आपका साहित्य जहाँ जैन-दर्शन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है वही ब्रजभाषा काव्य की दृष्टि से उसको एक अनोखापन प्राप्त है। दौलतराम जी की एक विशिष्ट शैली ने ब्रजकाव्य को समृद्ध बनाया है। आपके साहित्य के प्रामाणिक सपादन और प्रकाशन की महत्ती आवश्यकता है।

मार्ग शीर्ष कृष्णा अमावस्या सम्वत् २०२३ वि० को दिल्ली मे आपका स्वर्गवास हो गया।

शाहजहाँपुर—

शाहजहाँपुर मुरादाबाद लखनऊ लाइन पर रेलवे स्टेशन है। यहाँ राज्य की तरफ से एक बडी आर्डिनेंस फैक्टरी है जिसमे सेना और पुलिस की हजारो वर्दियाँ मशीन द्वारा तैयार होती है। फैक्टरी मे कई हजार आदमी काम करते है। यहा जैनियो का एक घर है। शाहजहाँपुर मे एक प्राचीन मन्दिर नदी के पार मुहल्ला सराय काइया मे स्थित है जिसे लखनऊ वालो ने बनवाया था किन्तु वह वर्षो से बन्द पड़ा था, उसका किसी को पता नही था। मन्दिर के पास लाला प्यारे लाल खण्डेलवाल रहते थे जो जैन धर्म से सर्वथा अनभिज्ञ थे। एक रात्रि मे उन्हे स्वप्न हुआ कि तुम्हारे पास जैन मन्दिर बन्द पडा है तुम उसकी रक्षा करो, तुम्हारे सभी सकट दूर हो जायेंगे। अत

1 **Who founded the town of Saharanpur for which he was given a jagir by Molviji after Hasan Delhi province—A list of Mohamnadan ? Hindu Monuments Vol I 1916-P-124**

स्वप्नानुसार सुबह उठते ही मन्दिर खोला, भगवान के दर्शन किये और मन्दिर की सफाई की। जैन धर्म का उन्हें बोध न होने पर भी उनमे उसके प्रति बडी श्रद्धा थी। फलस्वरूप उनके सब सकट दूर हो गये। वे भक्तिभाव से प्रतिदिन जिन पूजन करते है। सन् १९५१ मे मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ, इसके लिये जनता का आर्थिक सहयोग मिला। दिल्ली निवासी लाला कुन्दनलाल जी मैदा वालो ने उस पर स्वर्णकलश चढाया।

शौरीपुर (बटेश्वर)—

शौरीपुर को राजा शूरसेन ने बसाया था इसलिये इसका नाम शौरीपुर प्रसिद्ध है। यह २२वें तीर्थंकर नेमिनाथ का जन्मस्थान है जिसकी पहचान वाह तहसील के यमुना तट स्थित कस्बा बटेश्वर ५ किमी० दूर यमुना के खारो से की जाती है। यह तीर्थ आगरा से ७० किमी० दूर दक्षिण-पूर्व दिशा मे स्थित है। पक्की सडक है, जिस पर बसे चलती है। वाह से ८ किमी० और शिकोहाबाद से २५ किमी० है, बटेश्वर से शौरीपुर का मार्ग कच्चा है, ताम आदि जा सकते है।

शौरीपुर मे कई प्राचीन जैन मन्दिर और अनेक कलाकृतियाँ खडित-अखडित रूप मे मिलती है। इस तीर्थ का मुख्य मन्दिर वि० स० १६६७ मे जगत-भूषण के शिष्य विश्वभूषण भट्टारक द्वारा निर्मित हुआ है।[1]

श्रीनगर—

श्रीनगर अलकनन्दा नदी के तट पर बसा हुआ है। सन् १८९२ की गौना बाढ मे बह गया था, उसमे दि० जैन मन्दिर भी था। इससे सिद्ध होता है कि एक समृद्ध जैन समुदाय प्राचीन समय मे वहाँ बस चुका था। यह दि० जैन मन्दिर अलकनन्दा नदी के तट पर बना हुआ है। हिमालय का यह सम्पूर्ण प्रदेश आदि तीर्थंकर ऋषभदेव का विहार स्थल रहा है। ऋषभदेव ने यहाँ तपस्या की थी और केवल ज्ञान के पश्चात् उनका समवसरण इसी पर्वत पर आया था और कर्मक्षय कर कैलाश (अष्टापद) से निरजन पद को प्राप्त हुए थे। उनकी स्मृति मे यहाँ कई स्थानो पर विशाल मन्दिर बनवाये गये थे जो अब दृष्टिगोचर नही होते, काल के प्रहारो से क्षत-विक्षत हो गये।

अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने नया श्रीनगर बसाया था। श्रीनगर का जैन-समुदाय नये श्रीनगर मे आ बसा और इसके सबसे अच्छे स्थान मे जिसे आजकल बाजार कहते है जैनो ने भव्य मकान और दुकानें बनवायी थी। गगा के समीप जैन मुहल्ले के पीछे एक भव्य मन्दिर बनवाया था और वेदी मे ऋषभदेव की भव्य-प्रतिमा विराजमान थी।

मन्दिर जीर्ण-शीर्ण हो गया था। मुनि श्री विद्यानन्द ने श्रीनगर मे चातुर्मास करके मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया है। यह स्थान रमणीक और तपस्वियो की आत्म-साधना के योग्य है। यहाँ यात्रियो के ठहरने के लिये मन्दिर के लिये मन्दिर के बाहर नवावर्त नाम का अतिथि भवन है।

सिंहपुरी—

वाराणसी जिले मे सिंहपुरी वाराणसी से ६ किमी० दूर उत्तर मे अवस्थित है। यहाँ जाने के लिये मोटर हर समय मिलती है। यहाँ दि० जैन मन्दिर और धर्मशाला है। पोस्ट आफिस सारनाथ है। यहाँ ११वें तीर्थंकर श्रेयासनाथ के चार कल्याणक हुए है। यह जैनियो का प्रागैतिहासिक काल से जैन तीर्थ रहा है।

---

१. श्री मूलसंघे बलात्कारगणो सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दा चार्यान्वये
श्री जगतभूषण श्री भ० विश्वभूषण देवाः स्वरी परमे (शौरीपुर)
क्षेत्रे जिन मन्दिर प्रतिष्ठा सं० १७२४ वैशाख वदी १३ त्रयोदशां कारापित।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) आगरा	आगरा	श्री दि० जैन चैत्यालय चौराहा छीपी टोला	आगरा दि० जैन परिषद आकाश स्पोर्टिंग क्लब छीपी टोला
		श्री दि० जैन चैत्यालय जयपुर हाउस	बिहारी लाल दि० जैन धर्मशाला गुदडी मसूर खां
		श्री दि० जैन चैत्यालय सेठ बशीधर सुमेर चन्द बरोलिया बिल्डिंग	दि० जैन बालिका विद्यालय पीर कल्याणी, मोती लाल नेहरु रोड
		श्री दि० जैन चैत्यालय श्री पाटनी जी कोठी न ४६ सदर बाजार	जैन धर्मार्थ चिकित्सालय छीपी टोला जैन कुमार सभा मोती कटारा
		श्री दि० जैन चैत्यालय श्री सेठ मथुरादास, पदमचन्द फ्रीगंज	जैन मानव सस्था छीपी टोला जैन साहित्य शोध सस्थान हरी पर्वत
		श्री दि० जैन चैत्यालय श्री ताराचन्द खारिया विजयनगर कालोनी	जैन युवा मडल बेलनगज कलावती बाई दि० जैन पाठशाला बेलनगज
		श्री दि० जैन चैत्यालय सुल्तानगज	कस्तूरी देवी जैन कन्या पाठशाला धूलियागज
		श्री दि० जैन चैत्यालय ताजगज	कस्तूरी देवी जैन शिक्षा निकेतन कचहरी घाट
		श्री दि० जैन बाला मन्दिर बेलनगज	महावीर बुक बैंक बेलनगज
		श्री दि० जैन मन्दिर आर्य समाज भवन के पास मोतीकटरा	महावीर मिलन छीपी टोला महावीर वाचनालय बेलनगज
		श्री दि० जैन मन्दिर चौबे जी का फाटक किनारी बाजार	मयूर क्लब छीपीटोला
		श्री दि० जैन मन्दिर चौराहा बेलनगज	एम० डी० जैन हा० सै० स्कूल मोती कटरा
		श्री दि० जैन मन्दिर चौराहा नाई की मडी	एन० डी० जैन जू० हा० स्कूल राजा मडी

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	आगरा	श्री दि० जैन मन्दिर छीपीटोला	पी० डी० जैन विद्यालय छीपीटोला
		श्री दि० जैन मन्दिर चुन्नीबाई, मोती कटरा	सेठ मथुरादास पदमचन्द जैन धर्मशाला, कचहरी घाट
		श्री दि० जैन मन्दिर धन्नालाल गोधा, मोतीकटरा	श्री दि० जैन धर्मशाला आगरा फोर्ट समीप स्टेशन
		श्री दि० जैन मन्दिर धूलियागज	श्री दि० जैन धर्मशाला धूलियागज
		श्री दि० जैन मन्दिर गली छीपीटोला	श्री दि० जैन धर्मशाला कचौडा बाजार, बेलनगज
		श्री दि० जैन मन्दिर घटिया छिली ईंट	श्री दि० जैन धर्मशाला नाई की मण्डी
		श्री दि० जैन मन्दिर गुदडी मसूर खा	श्री दि० जैन धर्मशाला पीर कल्याणी
		श्री दि० जैन मन्दिर जैन गली, नाई की मण्डी	श्री दि० जैन धर्मशाला राजामंडी स्टेशन
		श्री दि० जैन मन्दिर जती कटरा, मोती कटरा	श्री दि० जैन धर्मशाला तारगली, मोती कटरा
		श्री दि० जैन मन्दिर कचौडा बाजार, बेलनगज	श्री दि० जैन हा० सै० स्कूल धूलियागज
		श्री दि० जैन मन्दिर कलकत्ते वालो का, मोती कटरा	श्री दि० जैन पाठशाला नमक मण्डी
		श्री दि० जैन मन्दिर कटरा इतवारी खा नाई की मण्डी	श्री महावीर हो० औषधालय धूलियागंज
		श्री दि० जैन मन्दिर माल का बाजार	श्री एम० डी० जैन इण्टर कालिज हरी पर्वत
		श्री दि० जैन मन्दिर मोतीकटरा चौराहा	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन औषधालय जैन गली छीपीटोला
		श्री दि० जैन मन्दिर मोतीलाल नेहरु रोड	वीतराग विज्ञान पाठशाला पत्तल गली

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	आगरा	श्री दि० जैन मन्दिर नमकमडी	
		श्री दि० जैन मन्दिर नवलगज	
		श्री दि० जैन मन्दिर III नार्थ ईदगाह कालोनी	
		श्री दि० जैन मन्दिर नुनिहाई	
		श्री दि० जैन मन्दिर पत्तलगली	
		श्री दि० जैन मन्दिर पुरानी बस्ती ताजगज	
		श्री दि० जैन मन्दिर राजा मण्डी	
		श्री दि० जैन मन्दिर रोशन मौहल्ला	
		श्री दि० जैन मन्दिर शाहगज	
		श्री दि० जैन मन्दिर सिकन्दरा	
		श्री दि० जैन मन्दिर टकी छीपीटोला	
		श्री दि० जैन मन्दिर वर्धमाननगर ईदगाह	
		श्री दि० जैन नसिया जी वीर कल्याणी मोतीलाल नेहरु रोड	
		श्री शान्तिनाथ जिनालय हरी पर्वत	
	अछनेरा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	अहारण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ऐत्मादपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	अ० भा० जैन युवा फेडरेशन
		श्री दि० जैन मन्दिर	अमरवाणी प्रसारण सस्थान जैनगज
			भगवत भवन प्रकाशन सस्था जैन पार्क ऐत्मादपुर
			पन्नालाल भगत जी जैन स्मारक भवन
			श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला मेन बाजार
			श्री दि० जैन स्वाध्याय गोष्ठी जैनगज
			श्री जैन विद्यालय जू० हा० स्कूल

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			श्री जैन युवक परिषद जैनगज
			श्री महावीर वाचनालय
			श्री वीतराग विज्ञान रात्रि कालीन पाठशाला
	आलमपुर	श्री दि० जैन जिनालय	
	आँवलखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अवालतनगर	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	चन्दौरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चावली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छिरोली	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	चिरहुली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चुलावली	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	चुल्हावली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दतावली	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	देवखेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दिनडली	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	फिरोजाबाद	श्री दि० जैन चैत्यालय चौकी गेट	आचार्य विमल सागर पाठशाला नई बस्ती
		श्री दि० जैन चैत्यानय देवनगर	आचार्य विमल सागर पुस्कालय नई बस्ती
		श्री दि० जैन चैत्यालय देवनगर	छदामीलाल जैन महाविद्यालय छात्रावास, आगरा गेट
		श्री दि० जैन चैत्यालय जैननगर	जैन ग्लास मिडिल स्कूल हिरनगाँव
		श्री दि० जैन चैत्यालय कटरा	जैन ग्लास औषधालय हिरनगाँव
		श्री दि० जैन चैत्यालय नई बस्ती	जैन ग्लास प्राइमरी स्कूल हिरनगाँव
		श्री दि० जैन चैत्यालय (प० सुमतिचन्द जी का) मुहल्ला गज	मु० बंशीधर दि० जैन धर्मशाला मु० लोहियान गली
		श्री दि० जैन चैत्यालय (सेठ श्रीधरलाल)	पी० डी० जैन विद्यालय लोहियान गली
		श्री दि० जैन मन्दिर अटक्वला	सेठ अमृतलाल औषधालय मु० चन्द्रप्रभु

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	फिरोजाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर बड़ा मुहल्ला	श्री आदिनाथ माटेसरी स्कूल छोटी छपेटी
		श्री दि० जैन मन्दिर बड़ा मुहल्ला	श्री आदिनाथ पाठशाला अटावला मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर बड़ी छपेटी	श्री छदामीलाल जैन कालिज
		श्री दि० जैन मन्दिर बेरखेप्खल	श्री चन्द्र आयुर्वेदिक औषधालय कोटला रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर चन्दाबाड़ी	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन धर्मशाला मु० चन्द्रप्रभु
		श्री दि० जैन मन्दिर चौकी गेट	
		श्री दि० जैन मन्दिर छोटी छपेटी	
		श्री दि० जैन मन्दिर द्वारकापुरी कटरा	
		श्री दि० जैन मन्दिर हनुमानगंज	
		श्री दि० जैन मन्दिर जैन नगर	
		श्री दि० जैन मन्दिर कटरा	श्री दि० जैन बाहुबलि पुस्तकालय
		श्री दि० जैन मन्दिर कटरा	श्री दि० जैन धर्मशाला कोटला
		श्री दि० जैन मन्दिर नई बस्ती	श्री दि० जैन धर्मशाला राजा का ताल
		श्री दि० जैन मन्दिर नसिया जी	श्री दि० जैन गर्ल्स इण्टर कालिज मु० चन्द्रप्रभु
		श्री दि० जैन मन्दिर राजा का ताल	श्री दि० जैन मित्र मंडल पुस्तकालय चौकी गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर रीवा वाला	श्री दि० जैन पाठशाला चौकी गेट
			श्री दि० जैन पुस्तकालय छोटी छपेटी
			श्री जदद्दूमल प्यारेलाल जैन अग्रवाल धर्मशाला मु० डाकियान

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	फिरोजाबाद		श्री कानजी पुस्तकालय जैन नगर
			श्री मोतीलाल जैन धर्मार्थ औषधालय छपेटी कला
			श्री मूलचन्द पुरुषोत्तमदास जैन धर्मशाला, आगरा गेट
			श्री पन्नालाल जैन औषधालय भौडेला
			श्री पी० डी० जैन इण्टर कालिज कोटला रोड
			श्री प्यारेलाल रामबाबू (राजा) जैन धर्मशाला, कोटला रोड
			श्री त्यागीव्रती निवास मु० चन्द्रप्रभु
			श्री वर्णी भवन पुस्तकालय जैन नगर
			श्रीमती शरबती देवी दि० जैन धर्मशाला जैन नगर
			स्वाध्यायकक्ष पुस्तकालय, चन्द्रप्रभु मन्दिर
	गढी असरा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	गढी हुर्रा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोहिला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोछा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	जाजऊ	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	जालमपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जगला सौढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जारखी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जारौली	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	जाटई	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	जाटऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जटौवा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	जठई	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	जोखरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जोंधरी	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	कचौरा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	कल्याणगढी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कामथा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	खाडी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	खैरागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	वीतराग विज्ञान पाठशाला
	खजूरकोबूज	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	खाडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खेरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोटला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कोटकी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुरगमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुतकपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लतीपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	महाराजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मरसैना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मौमदी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहम्मदाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नगला सिकन्दर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नगला स्वरूप	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नाहरपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	नन्दगाव	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	नारिखी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	नीव किरोरी	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	नेपई	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	पचोखरा	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	पचवाना	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	पमारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पचमान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पानी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पौनसे	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिनहट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पोसा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सैमरा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सखावतपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरायजैराम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरायनूरमहल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेखपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टेहू	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
			वशीधर जैन औषधालय
	ठिमासी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टूंडला	श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर	आचार्य विमल सागर पाठशाला चौराहा
		श्री दि० जैन मन्दिर चौराहा	बालिका जूनियर हाई स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर जैन भवन	जैन युवक सघ
			निराला क्लब (बाल हास्य)
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन महावीर विद्यालय
			श्री जिनेन्द्र कला केन्द्र
	टूंडली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उलाऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उसाइनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वाह	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरहन	श्री दि० जैन चैत्यालय	
	वसई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वासरिसाल	श्री दि० जैन मन्दिर	
(आ) अलीगढ	अलीगढ	श्री दि० जैन चैत्यालय वानवटी गज	अगूरी देवी जैन धर्मशाला
			महावीर गज अणुव्रत समिति आगरा रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर खिरनी गेट	जैन बाल मडल खिरनी गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर खिरनी गेट	जैन कुमार मिलन खिरनी गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर मेरिस रोड	जैन महिला सघ खिरनी गेट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	अलीगढ	श्री दि० जैन मन्दिर पालकी खाना	जैन मिलन खिरनी गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर पालकी खाना	कुन्दन लाल जैन बाल मन्दिर खिरनी गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर पालकी खाना	कुन्दल लाल जैन पाठशाला खिरनी गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर पालकी खाना	लक्ष्मीचन्द्र जैन पाण्डया ट्रस्ट
			सज्जन कुमार जैन बाल विद्यालय कमलापुरी, आगरा रोड
			श्री बाबूलाल जैन बाल मन्दिर कृष्णापुरी
			श्री बाबूलाल जैन उ० मा० विद्यालय कृष्णापुरी
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला कलाई
			श्री जैन मस्कृत पाठशाला पालकी खाना
			श्री जैन शिक्षा सोसाइटी
			श्री कमल कुमार जैन प्रसूतिगृह कमलापुरी आगरा रोड
			श्री लक्ष्मी सिटी माटेसरी स्कूल, खिरनी गेट
			श्री महावीर प्रसूतिगृह पालकी खाना
			श्री पर्यूषण व्याख्यान माला समिति, खिरनी गेट
			श्री पार्श्वनाथ दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर धर्मशाला, खिरनी गेट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	अलीगढ		श्री शान्तिसागर जैन धमार्थ औषधालय खिरनी गेट
			श्री शिखरचन्द जैन सहायता फण्ड खिरनी गेट
			श्री उदयसिंह जैन गर्ल्स इण्टर कालिज उदयसिंह जैन रोड
	अतरौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिसाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हरकुआ गज	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	हाथरस	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		नया बास	श्री सरस्वती जैन इण्टर कालिज
	काजमाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कलाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कन्वरी गज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कौडियागंज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खैर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सासनी	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन महिला मण्डल
			कवि दौलतराम अध्ययन कक्ष
			पं० दौलतराम जैन धर्म पाठशाला
			श्री करोडीमल जैन इण्टर कालिज
			श्री महावीर वाचनालय कमला बाजार
	सिकन्दरा राऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टिप्पल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विजयगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
(इ) इलाहाबाद	अकिल सराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इलाहाबाद	श्री दि० जैन चैत्यालय चन्द कुमार जैन चाहचन्द	जैन धर्मप्रभावना समिति चाहचन्द
		श्री दि० जैन चैत्यालय चुन्नीलाल चाहचन्द	जैन महिला मिलन चाहचन्द

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	इलाहाबाद	श्री दि० जैन चैत्यालय नेमचन्द जैन	जैन मिलन चाहचन्द
		श्री दि० जैन चैत्यालय सुमेरचन्द जैन कन्डैलगंज	जैन नवयुवक संघ चाहचन्द
		श्री दि० जैन चैत्यालय सुमेरचन्द जैन खोवा मण्डी	जैन पुस्तकालय एवं वाचनालय
		श्री दि० जैन मन्दिर चाहचन्द	जैन विद्यालय जीरो रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर चाहचन्द	श्री दि० जैन धर्मशाला जीरो रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर चाहचन्द	श्री जैन होम्यो-चिकित्सालय
			जैन धर्मशाला
			श्री सुमेरचन्द जैन (दि०) औषधालय चाहचन्द जीरो रोड
			सुमेरचन्द दि० जैन छात्रावास कर्नल गंज प्रयाग विश्वविद्यालय
	दारानगर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कौशाम्बी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	कोठास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पभोसा पो० गेराज	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	पाली पो० पश्चिमी सरीरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पवारा गोथालपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सराय अकिल	श्री दि० जैन मन्दिर मु० वेरुई	
(ई) एटा	अलीगंज	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	अखिल जैन विश्व मिशन भवन
	एटा	श्री दि० जैन नशिया जी शिकोहाबाद रोड	दि० जैन पद्मावती पुरवाल पंचायत करुणादीप पाक्षिक
		श्री दि० जैन पद्मावती पुरवालय पंचायती बड़ा मन्दिर	पशुवध निरोधक समिति १६ श्रावक मुहल्ला एटा
		श्री दि० जैन पद्मावती पुरवालय पुरानी बस्ती	श्री दि० जैन कन्या माध्यमिक विद्यालय
		श्री दि० जैन शान्तिनाथ चैत्यालय (वैरुगंज)	श्री दि० जैन पद्मावती पुरवाल धर्मशाला
		श्री महावीर दि० जैन चैत्यालय (वैरुगंज)	श्री वर्णी जैन इण्टर कालिज शिकोहाबाद रोड

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	एटा	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन चैत्यालय (ठण्डी सडक)	
		श्री पार्श्वनाथ श्री शान्तिनाथ दि० जैन चैत्यालय जी० टी० रोड	
		श्री ऋषभनाथ दि० जैन चैत्यालय (सुभाष रोड)	
	अवागढ	श्री दि० जैन पचायती बडा मन्दिर	श्री धर्मवती कन्या पाठशाला
		श्री दि० जैन पचायती पार्श्वनाथ मन्दिर अटारी	श्री दि० जैन पचायती धर्मशाला
			श्री दि० जैन पार्श्वनाथ परिषद
			श्री दि० जैन पुष्पदत्त सेवा मण्डल
			श्री महाकीर्ति दि० जैन बाल मण्डल
	भोजपुर	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
	चमकरी	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	चनकरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धनिगा	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
	फूफौतु	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	गेहतू	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर	
	हिम्मतनगर	श्री दि० जैन महावीर प्राचीन मन्दिर	
	हिरौटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इमालिया	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	जलेरार	श्री दि० जैन चन्द्रप्रभु चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चन्द्रप्रभु मन्दिर	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
	जरानीकलाँ	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
	जिररामी	श्री दि० जैन शान्तिनाथ मन्दिर	
	कारागज	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर विलराम गेट	बी० ए० वी० इण्टर कालिज सोरो गेट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	कारागंज	श्री दि० जैन मन्दिर नदरई गेट	दि० जैन धर्मार्थ औषधालय नदरई गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर विलराम गेट	नारायणलाल जैन धर्मशाला नदरई गेट
			श्री नेमिचन्द्र जैन लोइया धर्मशाला सोरो गेट
	खरौआ	श्री दि० जैन आदीश्वर मन्दिर	
	महेतु	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मलालत	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भिजाऊँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोरनहरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहरामा	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	निधोती कला	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	पौण्डरी	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	पवा	श्री दि० जैन शान्तिनाथ मन्दिर	
	पितुआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राजमल (अतिशय क्षेत्र)	श्री दि० जैन बड़ा मन्दिर	
	राजपुर	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	रामगढ़	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
	रिजावली	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	रुस्तमगढ़	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	सकीटकरण	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सकरौली	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	सरनौ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरानी	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	सरापनीय	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	तिरवातर	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	उमरगढ	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	बछेपुरा	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	बजहेरा	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
	बलेसह	श्री दि० जैन पदमप्रभु मन्दिर	
	बरही	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
एटा	बारारामसपुर	श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर	
	बरावयसपुर	श्री दि० जैन मन्दिर (पो० नगलपंती)	
	वसुधरा	श्री दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर	
	बावसा	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	वेरनी	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	बोरीकलां	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	
	यरा	श्री दि० जैन महावीर स्वामी मन्दिर	
(उ) बांदा	बांदा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन कन्या पाठशाला
(ऊ) बाराबकी	बहरामघाट (अपर नाम गणेशपुर)	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन पाठशाला
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	बाराबकी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
			श्री दि० जैन पुस्तकालय
	बिलहरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दरियाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री नन्दनलाल दि० जैन चैत्यालय	
		श्री सन्तलाल दि० जैन चैत्यालय	
	फतेहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हथौछा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जरखा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पैतेपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शहादतगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सुमेरगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टिकैतनगर	श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला
		कैलाश चन्द जैन सर्राफ	
		श्री चौबीसी चैत्यालय	श्री दि० जैन पाठशाला
		उपेन्द्र कुमार जैन	श्री दि० जैन पुस्तकालय

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
बाराबकी	टिकैतनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री पार्श्वनाथ माध्यमिक विद्यालय
		श्री सप्तऋषि चैत्यालय	
		सुभाष चन्द्र जैन	
	तिलोकपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
(ए) बिजनौर	अफजलगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिजनौर (रुहेलखड सभाग)	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन बोर्डिंग हाउस
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री वर्धमान डिग्री कालिज
			वीर पाठशाला
	धामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर मु० बटमान	धर्म प्रचारिणी सभा
		श्री दि० जैन मन्दिर मु० गूजरानियान	मुनि विद्यानन्द जैन पाठशाला गर्ल्स स्कूल
	किरतपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	हिन्दू इण्टर कालिज
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर जैन वाचनालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	नगीना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नहटौर	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन विद्या मन्दिर इन्टर कालिज
			नन्ही बाई दि० जैन ट्रस्ट
			श्री दि० जैन धर्मशाला
	नजीबाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	अतिथि भवन गेस्ट हाउस
		श्री दि० जैन मन्दिर	देवेन्द्र कुमार जैन ट्रस्ट
			होम्योपैथिक औषधालय
			जैन औषधालय
			राजमनि आयु० औषधालय
			सन्मति सार्वजनिक पुस्तकालय
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री मूर्ति देवी कन्या पाठशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
	नजीबाबाद		श्री साहू जैन डिग्री कालिज श्री सरस्वती कालिज
	शिवहारा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन पाठशाला
(ग) देहरादून	चकरौता	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देहरादून	श्री दि० जैन मन्दिर झण्डा बाजार	दीपक विद्यालय
		श्री दि० जैन मन्दिर मरनीमल हाउस	पक्षी चिकित्सालय श्री दि० जैन धर्मशाला श्री महावीर दि० जैन कन्या पाठशाला इण्टर कालिज तिलक रोड श्री मनोहरलाल जैन धर्मार्थ होम्यो० चिकित्सालय सेवला कलाँ श्री मनोहरलाल जैन धर्मार्थ होम्यो० चिकित्सालय ८७-तिलकमार्ग श्री वर्णी जैन विद्यालय, जैन धर्मशाला मार्ग
	मसूरी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन महावीर भवन लण्ढौर
	राजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन महावीर भवन
	ऋषिकेश	श्री दि० जैन चैत्यालय दीपचन्द भवन	
	विकासनगर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री बुद्धमल जैन बालिका विद्यालय श्री होशियार सिंह जैन गर्ल्स इण्टर कालिज श्री होशियार सिंह जैन औषधालय श्री होशियार सिंह जैन उ० मा० कन्या विद्यालय
(ओ) फैजाबाद	अयोध्या	श्री दि० जैन मन्दिर मु० रायगज	श्री दि० जैन धर्मशाला मन्दिर जी के निकट

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
फैजाबाद	अयोध्या	श्री दि० जैन प्राचीन शिखरबद्ध मन्दिर मु० कटरा	
	हनुमानगढ़ी	अभिनन्दन नाथ की टोक कटरा स्कूल के पास	
		आदिनाथ की टोक, बन्सारिया टोला मु० पुराना थाना	
		अजितनाथ की टोक मु० बेगमपुरा	
		अनन्तनाथ की टोक मु० कटरा	
		मुनि की टोक	
	रतनपुरी	श्री धर्मनाथ दि० जैन मन्दिर निकट सरयू नदी	श्री धर्मनाथ दि० जैन धर्मशाला
		श्री धर्मनाथ दि० जैन मन्दिर निकट सरयू नदी	
(औ) गढ़वाल	श्रीनगर	श्री ऋषभदेव दि० जैन मन्दिर	नन्द्यावर्त (अतिथि भवन)
(अं) गोंडा	गोंडा	श्री दि० जैन मन्दिर गोंडा जंकशन	
(अ.) गोरखपुर	दरोली (सिवान)	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री श्यामलाल जैन हाईस्कूल
	गोरखपुर	श्री दि० जैन (निजी) मन्दिर नन्दभवन मु० गोरखपुर	अभयनन्द जैन हा० सै० स्कूल असुरन
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर चरगावाँ	श्री बेला अनन्त जैन धर्मार्थ ट्रस्ट
		श्री दि० जैन विशाल दो मंजिला मन्दिर (धर्मशाला के साथ)	श्री मुरारी जू० हा० स्कूल श्री मुरारी लाल इण्टर कालिज सहजनवा श्रीमती गुलाली शिशु मन्दिर श्रीमती नन्दी देवी जू० हा० स्कूल
(क) हमीरपुर	कबरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ख) हरदोई	माधोगंज मंडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ग) जालौन	जालौन	श्री दि० जैन मन्दिर कालपी	
		श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर कालपी	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(घ) झाँसी	अम्मरगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अनोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अतर्रा (बांदा)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बबीना	श्री दि० जैन मन्दिर	अकलक दि० जैन पाठशाला
	मडराधौटा (पो० टका)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भदौरा पो० गुडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भैलोनी सूबा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भावनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भीकमपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुढवार	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चडरऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चमरौवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चदावती	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छापछौल पो० सोजना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिगलौआ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिरगाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चुनगी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देलवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवरान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धवा पो० मडावरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धुरैपा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	डोगरा खुर्द	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गडथाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गगवाई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गेवरा पो० खुर्द	श्री दि० जैन मन्दिर	
	घनघोल	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	घुराट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गिदवाहा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गिरार	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	
	गुढा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुन्छेरा पो० गेवरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गुरसराय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	इकबालपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
झांसी	जखलौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जखौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जेरौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झाँसी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री जैन प्राथमिक पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री जैन शिशु मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर कल्याणपुरी	
		श्री दि० जैन मन्दिर सदर बाजार	
	जिजपावन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ककराडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कैलवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कन्धारी बडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कडरारा कला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कारीटोरन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कटेरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केलगुवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	केवलसारो पो० गुढा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खैरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खैराडाग	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खजेराम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खजुरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिरानी बुर्ज	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिरानी खुर्द	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खिरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	किरालवारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुम्हेडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुराभाड (मडावरा)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लटवारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लागौन कस्बा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	लुहरी पो० मडावरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मदनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	मदनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडावरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मगरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मैनवारा (सोजना)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मानपुरा पो० खुर्द	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मऊ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मऊरानीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री पदुमास्वामी सरस्वती सदन
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ विज्ञान पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	मरौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मसोरा खुर्द	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मातलैन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मौठ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मेगवा (सोजना)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मिरचवारा (खजूरिया)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मोना (गोना)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहारी बडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुहारी छोटी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नैकोरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ननौरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नाराहट (पटना)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नौहर कला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पहा	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	पाली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	पारौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पारोल पो० नाराहट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पथराई पो० सोजना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिपरई	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला
	पुरावकडारी पो० ककडारी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	राधपचमपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रजपुरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रमगढा पो० मडावरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रानीपुर	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	श्री दि० जैन मस्कृत विद्यालय
	रायपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	साढूमल	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन सस्कृत विद्यालय
	सैदपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरसेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सतवास	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेरवास (खुर्द)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सेरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिलमन (ललितपुर)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोजना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सोरई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टहरौली	श्री दि० जैन मन्दिर मु० पराराई	
	तालवेहट		समन्तभद्र दि० जैन पाठशाला
	ठकुरपुरा पो० बवीना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उड़ेसरा	श्री दि० जैन मन्दिर	स्वर्णभद्र आदर्श विद्यालय
	उगरिया	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उत्तमथाना	श्री दि० जैन हाथी	
	वछैरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वचनौद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वछरावनी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वालावेट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वम्होरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वामौर कला	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	वट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वारचौन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरौदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरौदा स्वामी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	वरुआ सागर	श्री दि० जैन शिखरबद्ध मन्दिर	समन्तभद्र जैन पाठशाला
	वसराना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विरथा (पाली)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	विठरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ड) कानपुर	कानपुर	श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय फूलमहल, बिरहाना रोड	दि० जैन पवित्र औषधालय सब्जी मंडी
		श्री चन्द्रप्रभु चैत्यालय नवाबगंज	ला० गुलजारी मल दि० जैन धर्मशाला सब्जी मंडी
		श्री दि० जैन चैत्यालय ११३/८ स्वरूपनगर	श्री दि० जैन भवन सब्जी मंडी
		श्री दि० जैन महावीर चैत्यालय पाण्डुनगर	श्री दि० जैन खण्डेलवाल सभा द्वारा लक्ष्मीनारायण मेघराज नया गंज
		श्री दि० जैन मन्दिर जनरलगंज	श्री दि० जैन महिला समिति २४/४० जैन बिहार
		श्री दि० जैन मन्दिर मनिराम बगिया	श्री दि० जैन नवयुवक संघ
		श्री दि० जैन मन्दिर पचकूचा	श्री दि० जैन (पद्मावती पुरवाल) समाज ११२/३४८ स्वरूपनगर
		श्री दि० जैन मन्दिर १०८/३२ ए सीसामऊ	श्री दि० जैन पचायती बड़ा मन्दिर
		श्री महावीर जैन मन्दिर चकेरी लाल बगला	श्री दि० जैन पवित्र औषधालय सरसैया घाट (शाखा)
		श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय किराचीखाना	श्री दि० जैन स्वाध्याय मंडल पचकूचा
			श्री० दि० जैन वीरदल लोहाई

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	कानपुर	श्री सुपार्श्वनाथ चैत्यालय लोहाई	श्री दि० जैन विद्यालय बादशाही नाका
			श्री दि० जैन युवामंच लोहाई
			श्री वर्णी दि० जैन पुस्तकालय
(च) ललितपुर	बालाबेहट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर (सहस्त्रकूट चैत्यालय)	
	देवगढ़	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री साहू जैन पुस्तकालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री साहू जैन संग्रहालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओ के नाम
	देवगढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन सहस्त्राकूट चैत्यालय	
	धौर्रा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिनाथ दि० जैन पाठशाला
	गिरार अतिशय क्षेत्र	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ललितपुर	श्री दि० जैन चैत्यालय (सिद्धीसागर)	जैन मिलन
		स्टेशन रोड	हाईस्कूल बडा मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर	पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला अटा मन्दिर
		श्री दि० जैन मन्दिर	प्रवचन हाल क्षेत्रपाल
		श्री दि० जैन मन्दिर	शान्तिसागर दि० जैन जू० कन्या पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	सन्मति परिषद
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री भगवान महावीर नेत्र चिकित्सालय श्री वीर सेवा सघ

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	ललितपुर		वर्णी जैन इण्टर कालिज
			वीर व्यायामशाला
	मदनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	मडावरा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री बुन्देलखण्ड स्यादवाद परिषद
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर,	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	महरौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	नवागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	पवा (पावागिरि जी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर मौटारा	
		श्री दि० जैन मन्दिर पवाग्राम	
	माढ़ूमल	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन सस्कृत महाविद्यालय
	सैरोन	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
(छ) लखनऊ	लखनऊ	श्री दि० जैन मन्दिर छापाबाजार	दि० जैन मान्टेसरी विद्यालय चौक
		श्री दि० जैन मन्दिर चारबाग	दि० जैन पाठशाला यहियागज
		श्री दि० जैन मन्दिर चौक	दि० जैन विद्यालय चौक
		श्री दि० जैन मन्दिर डालीगज	कान्त बाल केन्द्र प्राथमिक पाठशाला (चारबाग)
		श्री दि० जैन मन्दिर गणेशगज	
		श्री दि० जैन मन्दिर हजरतगज	महावीर जैन बाल शिक्षाशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर अमीनाबाद	श्री दि० जैन धर्मार्थ चिकित्सालय
		श्री दि० जैन मन्दिर सदर	श्री दि० जैन धर्मशाला चारबाग
		श्री दि० जैन मन्दिर यहियागज	श्री दि जैन धर्मशाला चौक चूडी वाली गली
		श्री दि० जैन मन्दिर महोना	श्री दि० जैन धर्मशाला डालीगज
		श्री दि० जैन मन्दिर सहादतगज	श्री दि० जैन धर्मशाला सआदतगज
			श्री दि० जैन धर्मशाला टाटपट्टी

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	लखनऊ		श्री दि० जैन पुस्तकालय चारबाग
			श्री दि० जैन पुस्तकालय चौक
			श्री दि० जैन पुस्तकालय यहियागज
			श्री दि० जैन औषधालय
(ज) मेरठ	आदर्श नगला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अधनर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अथर (सरधना)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अल्लम (बागपत)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अमीनगर सराय	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री शान्तिनाथ धर्मार्थ औषधालय
	अछाड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	असारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बड़ागाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बड़ौत	श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर अतिथि भवन	
		श्री दि० जैन मन्दिर आनन्दगज मडी	आचार्य नेमिसागर औषधालय
			दि० जैन शान्तिसागर धर्मार्थ औषधालय
			दि० जैन युवा परिषद
			युवा जैन मिलन
			प्राचीन जैन शास्त्र भडार
			श्री दि० जैन अजितनाथ धर्मशाला
			श्री दि० जैन अतिथि भवन
			श्री दि० जैन क्लब
			श्री दि० जैन डिग्री कालिज
			श्री दि० जैन गर्ल्स इण्टर कालिज
			श्री दि० जैन कन्या जू० हा० स्कूल

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	बड़ौत		श्री दि० जैन इण्टर कालिज
			श्री दि० जैन महावीर पाठशाला
			श्री दि० जैन महावीर वाचनालय एवं पुस्तकालय
			श्री दि० जैन मॉण्टेसरी स्कूल
			श्री दि० जैन पक्षी हस्पताल
			श्री दि० जैन पोलीटेक्नीकल कालिज
			श्री दि० जैन सरस्वती महिला हस्पताल
			श्री दि० जैन सार्वजनिक पुस्तकालय
			श्री दि० जैन शिक्षा सदन
	बड़ोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बागपत	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
			श्री दि० जैन जू० हा० स्कूल
	बहसूमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बामनोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बरनावा	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
	बावली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भगवानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भोजपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिजरौल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिनोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बोढा (सरधना)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	छपरौली	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन त्यागी भवन
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री शान्तिसागर जू० गर्ल्स स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	छुर (सरधना)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दौराला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	धनोरा (सिलवरनगर)	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	दोघट	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढी तम्बेला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गोटका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हर्रा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हस्तिनापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन धर्मार्थ औषधालय
		श्री दि० जैन मन्दिर	मुमुक्षु आश्रम
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर सुमेरु शोध सस्थान	श्री दि० जैन प्रान्तीय गुरुकुल
			श्री दि० जैन सरस्वती भडार
		श्री दि० जैन मन्दिर त्रिलोक शोध सस्थान श्री नन्दीश्वर द्वीप जिनालय	श्री दि० जैन त्रिलोक शोध सस्थान
		श्री दि० जैन जल मन्दिर	श्री हरिश्चन्द्र आश्रम
	ज्वालागढ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	झुडपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जोहडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	करनावल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खेडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खेकडा	श्री दि० जैन मन्दिर	बाल युवक मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन अतिथि भवन
			जैन धर्मार्थ औषधालय
			जैन मिलन
			जैन नवयुवक मण्डल
			जैन प्राइमरी स्कूल
			जैन सत्ती धर्मशाला
			महावीर जैन भवन
			पार्श्वनाथ युवक मडल
			शान्तिनाथ कन्या जू० हा० स्कूल
			शान्तिनाथ मण्डल
			श्री दि० जैन इण्टर कालिज

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सेकडा		श्री जिन वीर कीर्तन मण्डल
			श्री उग्रसेन जैन धर्मार्थ औषधालय
	खट्टा प्रह्लादपुर (बागपत)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	किरठल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुरडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कुताना	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री नेमिसागर धर्मार्थ औषधालय
			श्री सरस्वती भवन
	लुहारा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महलका	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मलकपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मवाना	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन मिलन
			श्री पार्श्वनाथ मित्र मण्डल
			यूनिक क्लब
	मेरठ	श्री दि० जैन चैत्यालय आनन्दपुरी	अध्यात्मिक विद्यालय रानी मिल
		श्री दि० जैन चैत्यालय ईश्वरपुरी	
		श्री दि० जैन चैत्यालय किशन फ्लोर मिल रेलवे रोड	भारतवर्षीय दि० जैन आत्मविज्ञान परीक्षा-बोर्ड चौक सदर बाजार
		श्री दि० जैन चैत्यालय शान्तिनगर रेलवे रोड	धर्मदास जैन ट्रस्ट धर्मशाला घण्टाघर
		श्री दि० जैन चैत्यालय वेस्टर्न कचहरी रोड टकी मुहल्ला	जैन बोर्डिंग हाउस रेलवे रोड
		श्री दि० जैन चैत्यालय वेस्टर्न रोड सदर	दि० जैन त्यागी भवन दुर्गाबाडी मेरठ सदर
		श्री दि० जैन मन्दिर महावीर जयन्ती भवन शारदा रोड	बालिका संगम दुर्गाबाडी
			जैन छात्रवृत्ति कोष मानसरोवर

ज़िले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			जैन चिकित्सा विशेषज्ञ परामर्श केन्द्र दुर्गाबाडी
		श्री दि० जैन मन्दिर रानी मिल देहली रोड	जैन धर्मार्थ हो० औषधालय ठठेरवाडा
		श्री दि० जैन मन्दिर स्वराज्य पथ मेरठ सदर	जैन धर्मशिक्षा सदन देहली गेट
		श्री दि० जैन मन्दिर श्री गेंदालाल जैन मुख्तयार शारदा रोड	जैन धर्म शिक्षा सदन तीरगरान जैन मिलन
		श्री दि० जैन मन्दिर तीरगरान स्ट्रीट	जैन सभा जैन समाज सहायता कोष
		श्री दि० जैन मन्दिर तीर्थङ्कर महावीर मार्ग	जैन त्यागी भवन तीरगरान
		श्री दि० जैन मन्दिर तोपखाना	महिला गोष्ठी पार्श्वनाथ दि० जैन पचायती मन्दिर मेरठ सदर मुन्नी बाई दि० जैन हो० औषधालय दुर्गाबाडी मुरारी लाल छेदालाल धर्मार्थ औषधालय टकी मुहल्ला सहजानन्द शास्त्रमाला रजीनपुरी सदर श्री बसन्ती देवी जैन गर्ल्स जू० हा० स्कूल श्री धर्म शिक्षा सदन (सन्ध्या कालीन) दुर्गाबाड़ी श्री दि० जैन धर्मशाला दोनकी मुहल्ला श्री दि० जैन धर्मशाला (पचायती) रेलवे रोड श्री दि० जैन धर्मशाला टकी मुहल्ला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
			श्री दि० जैन गर्ल्स इण्टर कालिज ढोलकी मुहल्ला
			श्री० दि० जैन जू० हा० स्कूल दुर्गाबाड़ी
			श्री दि० जैन वर्धमान पुस्तकालय दुर्गाबाड़ी
			श्री दि० जैन युवक सभा सदर
			श्री जैन संस्कृति संरक्षण एवं प्रचार समिति दुर्गाबाड़ी
			श्री जैन सरस्वती भण्डार (श्री दि० जैन मन्दिर तीरगरान)
			श्री जैन युवक प्रचारिणी सभा (श्री दि० जैन मन्दिर तीरगरान)
			श्री महावीर नृत्य मण्डल दुर्गाबाड़ी
			श्री नमि जैन औषधालय रेलवे रोड
			श्री नमि जैन औषधालय ठठेरवाड़ा
			श्री प्र० का० कमेटी जैन बिरादरी तीरगरान
			श्री वीर पुस्तकालय देहली गेट
			श्री वीर पुस्तकालय तीरगरान
			श्री विद्यानन्द जैन जू० हा० स्कूल
			वीर छात्रवृत्ति फं०, रिसथगज कबाड़ी गंज
			वीर निर्वाण भारती 69 तीरगरान
	मुलेड़ा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुरसान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	निरपुड़ा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पाचली	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	राडधना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रमाला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रन्छाड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सबमा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सलावा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सनोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरधना	श्री दि० जैन मन्दिर	आचार्य नमिसागर इण्टर कालिज बिनोली रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर चौकडा	भारत जैन महामण्डल शाखा
		श्री दि० जैन मन्दिर चौकडा	युवा जैन मिलन
		श्री दि० जैन मन्दिर चौकडा	दि० जैन अतिथि भवन दि० जैन बाल सघ
		श्री दि० जैन मन्दिर खारा कुआ	दि० जैन धर्मशाला बाजार लश्कर गज
		श्री दि० जैन मन्दिर मु० तारनी	
		श्री दि० जैन वीर चैत्यालय बाजार लश्कर गज	दि० जैन मुनि नमिसागर औषधालय
		श्री गुरु मन्दिर	दि० जैन पचायती धर्मशाला
			जैन दी ग्रेट नवयुवक सघ
			जैन गर्ल्स हाई स्कूल
			जैन गर्ल्स प्राइमरी पाठशाला
			जैन मिलन
			जैन नवयुवक सघ
			जैन शान्ति सदन (ग्रन्थ सग्रह)
			श्री जैन कन्या पाठशाला
			श्री वीर बाल सदन लश्कर गंज

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सरुरपुर कलाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन कन्या पाठशाला
	सीसाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सूप	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टटीरी (अग्रवाल मडी)	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टीकरी	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन कन्या पाठशाला
	तेहडा	श्री दि० जैन मन्दिर	
(झ) मिर्जापुर	कछवा	श्री दि० जैन मन्दिर झझवा	
	मिर्जापुर	श्री दि० जैन मन्दिर अकमगज	श्री दि० जैन पाठशाला
(ञ) मुजफ्फरनगर	एलम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अम्बेटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अनाजमडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बडौदा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बावला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भैंसी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भैंसवाल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	भुवगरियापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुढाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चरथावल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	दौडागढी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढी अब्दुल्ला खाँ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढी खाय	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गढी पुख्ता	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गंगेरु	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गंगो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	हुरड	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जलालाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जलालपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जानसठ	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जसोई	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जौला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	जौसलाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	झिझाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कवाल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कच्ची गढी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कैराना	श्री दि० जैन मन्दिर बड़ा	
		श्री दि० जैन मन्दिर छोटा	
	ककरौली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कान्धला	श्री दि० जैन मन्दिर बड़ा	अनन्तमती कन्या पाठशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर छोटा	श्री दि० जैन धर्मशाला
	केरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	खतौली	श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर मु० [illegible] श्रीराम	दि० जैन अतिथि भवन द्वारा बाबा जी भागीरथ जी स्थापित
		श्री चन्द्रप्रभु दि० जैन मन्दिर मु० शराफान	हा० सै० स्कूल मु० शराफान
		श्री दि० जैन मन्दिर मु० गगवाटी	कन्या इण्टर कालिज मु० कानूनगोयान
		श्री दि० जैन मन्दिर मु० कानूनगोयान	कुन्दकुन्द जैन डिग्री कालिज (रेलवे रोड)
		श्री दि० जैन मन्दिर मु० [illegible]श्रीराम	कुन्दकुन्द जैन इण्टर कालिज
		श्री दि० जैन मन्दिर मामचन्द जैना वाला मु० मिट्ठूलाल	शान्तिसागर जैन धर्मार्थ औषधालय
		श्री दि० जैन मन्दिर नसिया जी जी० टी० रोड	श्री चन्द्रप्रभु जैन अतिथि भवन
		श्री महावीर दि० जैन मन्दिर कोतवाल मु० कानूनगोयान	श्री दि० जैन धर्मशाला (मन्दिर मामचन्द)
		श्री पार्श्वनाथ दि० जैन नया मन्दिर मु० कानूनगोयान	वर्णी दि० जैन धर्मशाला मु० शराफान
	कुशलमी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बुटेगरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	गसूरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मीरापुर	श्री दि० जैन चैत्यालय	श्री दि० जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	मुजफ्फरनगर	श्री दि० जैन मन्दिर अबुपुरा	जैन गर्ल्स डिग्री कालिज प्रेमपुरी
		श्री दि० जैन मन्दिर बहलनाग्राम	जैन कन्या पाठशाला इण्टर कालिज अबुपुरा
		श्री दि० जैन मन्दिर ला० प्रियलाल जी	जैन इण्टर कालिज अबुपुरा
		श्री दि० जैन पचायती मन्दिर नई मण्डी	जैन माण्टेसरी बालघर कुंडलपुरा
		श्री दि० जैन मन्दिर (पचायती) पारसनाथ	जैन औषधालय प्रेमपुरी
		श्री दि० जैन पंचायती मन्दिर प्रेमपुरी	वर्णी प्रवचन प्रकाशिनी सस्था प्रेमपुरी
	ओलावा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पडासोली	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुरबाल्यिान	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुरकाजी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पुरमपीसा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रोहानाकला	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सरायरसूलपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सठेडी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सीकरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	शाहपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री महावीर जैन होम्यो, धर्मार्थ औषधालय (जैन धर्मशाला)
	शामली	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	
	शीरो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	तिराग	श्री दि० जैन मन्दिर	जानकीदास जैन पब्लिक लाइब्रेरी जानकीदास शादी फण्ड नेमचन्द अतरसैन जैन धर्मशाला पचायती दि० जैन धर्मशाला

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	तिस्सा	श्री दि० जैन प्राचीन शिखर बद्ध मन्दिर	
	तीतरम	श्री दि० जैन मन्दिर	
	उमरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बघरा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बिहारी गाँव	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ट) नैनीताल	हलद्वानी	श्री दि० जैन मन्दिर (रेलवे बाजार का चौराहा)	वर्धमान जैन मण्डल
	जसपुर	श्री पारसनार्थ दि० जैन मन्दिर	
	काशीपुर	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	अहिंसा प्रचार समिति
(ठ) प्रतापगढ	कटरा मेदिनीगंज	श्री दि० जैन प्राचीन मन्दिर	सरस्वती भवन
(ड) रायबरेली	जायस	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रायबरेली		भगवान महावीर पुस्तकालय एव वाचनालय सुपर मार्केट
	बछरावा	श्री दि० जैन चैत्यालय	
(ढ) सहारनपुर	अम्बैहटा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	बेहट टाउन	श्री दि० जैन मन्दिर	
	चिलकाना	श्री दि० जैन मन्दिर	
	देवबन्द	श्री दि० जैन मन्दिर बाहरा	जैन मिलन
		श्री दि० जैन मन्दिर कानुगोयान	श्री दि० जैन बालकला मण्डल
		श्री दि० जैन मन्दिर नेचलगढ	श्री दि० जैन धर्मशाला मु० चाहपारस
		श्री दि० जैन मन्दिर सरावाबाडा	
			श्री दि० जैन कन्या हा० सै० स्कूल
			श्री दि० जैन कन्या पाठशाला
			श्री दि० जैन नवयुवक सभा
			श्री दि० जैन वीर कला मण्डल
			श्री जैन हा० सै० स्कूल

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	गढ़ी तीतरो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	अबरेड़ा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	ज्वालापुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	कनखल	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मल्हीपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	मंगलौर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नकुड़	श्री दि० जैन मन्दिर	
	नानौता	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामपुर मनिहारान	ला० सरनीमल दि० जैन मन्दिर मु० महाजन	जैन मिलन
		श्री दि० जैन पचायती शिखरबद्ध विशाल मन्दिर	चमनलाल दि० जैन कन्या विद्यालय
		श्री दि० जैन पार्श्वनाथ प्राचीन मन्दिर	दि० जैन जागृति पुस्तकालय एवं वाचनालय
			जैन अतिथि भवन
			जैन धर्मार्थ हो० औषधालय
			जैन बाग
			जैन जागृति मण्डल
			जैन उ० मा० विद्यालय
			प्राइमरी जैन कन्या पाठशाला
			उदासीन आश्रम
	रुड़की	श्री दि० जैन मन्दिर	जैन कन्या पाठशाला
	सहारनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन कन्या हा० सै० स्कूल छत्ता बारुमल
		श्री दि० जैन मन्दिर बड़तल्ला	
		श्री दि० जैन मन्दिर बड़तल्ला	दि० जैन प्राइमरी स्कूल सर्राफा बाजार
		श्री दि० जैन मन्दिर छत्ता बारुमल	दि० जैन सरस्वती भवन यादगार काबङ
		श्री दि० जैन मन्दिर छत्ता हुलासराय	जैन बालबोधिनी सभा

ज़िले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
	सहारनपुर	श्री दि० जैन मन्दिर चौधरियान	जे० वी० जैन डिग्री कालिज प्रद्युम्न नगर
		श्री दि० जैन मन्दिर गुलालबाग	जे० वी० जैन इण्टर कालिज कलसिया रोड
		श्री दि० जैन मन्दिर हलवाई हट्टा	
		श्री दि० जैन मन्दिर जैन बाग	पुतली देवी धर्मशाला खालापार
		श्री दि० जैन मन्दिर सगियान	श्री गगाराम जैन उदासीनाश्रम मु० शोरमियान स्ट्रीट
		श्री दि० जैन मन्दिर शोरमियान	
			श्री जैन धर्मार्थ पक्षी चिकित्सालय चिलकाना रोड
			श्री जैन हो० धर्माथ चिकित्सालय छत्ता ला० जम्बू प्रसाद
			श्री जैन खैराती ऐलोपैथी हस्पताल
			श्री त्रिलोकचन्द जैन धर्मशाला वीरनगर
			वीतराग विज्ञान पाठशाला
	सरसावा	श्री दि० जैन मन्दिर	दि० जैन कन्या हा० सै० स्कूल
		श्री दि० जैन मन्दिर	
	तीतरो	श्री दि० जैन मन्दिर	
	टिकरोल	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ण) सीतापुर	लहरपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	महमूदाबाद	श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन धर्मशाला श्री दि० जैन पाठशाला श्री दि० जैन पुस्तकालय
	पैंतपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	पिसवा	श्री दि० जैन मन्दिर	
	रामपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
	सिधोली	श्री दि० जैन चैत्यालय	
		श्री दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओ के नाम
(त) शाहजहाँपुर	शाहजहाँपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(थ) सुलतानपुर	सुलतानपुर	श्री दि० जैन मन्दिर	
(द) वाराणसी	चन्द्रपुरी	श्री दि० जैन मन्दिर	
	काशी	श्री दि० जैन हीरा प्रतिमा चैत्यालय	अकलक सरस्वती भवन (स्यादवाद महाविद्यालय)
		श्री दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन विशाल धर्मशाला मदागिन
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर	स्यादवाद महाविद्यालय भदेनी
		श्री दि० जैन मन्दिर	
		श्री दि० जैन मन्दिर (स्यादवाद विद्यालय के ऊपर)	
		श्री दि० जैन नरिया चैत्यालय	
		श्री दि० जैन राजा दरवाजा चैत्यालय	
		श्री दि० जैन सुजना चैत्यालय	
	सिंहपुरी	श्री दि० जैन मन्दिर सारनाथ	श्री दि० जैन विशाल धर्मशाला श्री गणेशवर्णी शोध संस्थान श्री जैन साहित्य प्रसारण केन्द्र

— ○ —

बिहार के हजारी बाग और राची जिले मे तथा मानभूम सिंहभूम जिलो मे कतरासगढ पाकवीर, बडा बाजार, सिंहभूम के वेणुसागर कुडू-तमाड, हुरुडी, देवलदिह, नवादीह आदि मे सराक जाति के लोग निवास करते हैं। सराक का अर्थ श्रावक होता है। सराक पक्के शाकाहारी है। मद्य, माँस, मधु का जीवन मे उपयोग नहीं करते, पार्श्वनाथ के भक्त हैं, उनकी पूजा करते हैं। खण्डगिरि-उदयगिरि की यात्रा को जाते है। हिंसा से घृणा करते हैं। ये बडे शान्त नागरिक है। उस जाति के वृद्ध-जनो के अनुसार मूलत ये लोग सरयू नदी के तट पर अयोध्या और गाजीपुर के निकटवर्ती प्रदेशो मे रहने वाले अग्रवाल है। इनके १७ गौत्र है। १२वी शताब्दी के वामनघाटी ताम्र शासन मे ज्ञात होता है कि मयूरभज के भंज-वशीय राजाओ ने श्रावको को बहुत ग्राम दिये थे। श्रावको ने जगलों मे घूम-घूम कर तावे की खाने ढूंढी और अपनी शक्ति से उनका विकास किया किन्तु शैव-सम्प्रदाय के लोगो ने मोहवश चोल और पाण्ड्य नरेशो ने धर्म द्वेष के कारण जैन-मन्दिरो का विनाश किया। लोगो को अपने धर्म का परिवर्तन करने को विवश होना पडा जो न कर सके उन्हे भागना पडा अथवा सर्वस्व खोकर भी जीवन से हाथ धोना पडा। सराको के स्थानो मे कितनी ही पुरातन मूर्तियो और मन्दिरो के अवशेष उपलब्ध हुए है। अनेक धराशायी मन्दिरो के खण्डहर भी मिलते है जिनसे स्पष्ट ज्ञात होता है कि वे जैन-धर्म के सचालक थे। सराको मे जाति-भेद भी पाया जाता है। उनके धार्मिक ज्ञान को बढाने के लिये स्कूल और पाठशालाये भी खोली गयी, मन्दिर भी बनवाये गये है क्योकि शिक्षा-प्रचार ही उनके उत्थान एव विकास का कारण है। इतना काल व्यतीत हो जाने पर भी उनकी श्रद्धा अडोल है। पूर्व मे इनकी सम्पन्नता का स्पष्ट बोध होता है। वे अपने धर्म को आज भी नही भूले है और न उनके आचार-व्यवहार मे कोई परिवर्तन हुआ है।

पश्चिमी बंगाल

बगाल, बिहार और उडीसा के विभिन्न स्थानो पर पुरातन सामग्री उपलब्ध है। जैन मन्दिर, गुफायें, ताम्र-शासन, शिलालेख आदि जैन प्रतीक पाये जाते है। जैन-प्रतिमाओ मे स्वस्तिक, नन्द्यावर्त, धर्मचन्द्र चैत्यवृक्ष और मीन युगल आदि है।

पुरलिया (पश्चिमी) बगाल जिले मे जैन मूर्तियाँ निकल रही है। पुरलिया के अनाई जामवाद को उसमे ५ मील कच्चे रास्ते पर है और कार से ११३ मील पर चमत्कारिक सुन्दर दो स्थान है, जहाँ मे जैन मन्दिर और जैन मूर्तियाँ प्राप्त हो रही है वहा पर विमल प्रसाद जी जैन खरखरी वालो ने विशाल शिखरबद्ध मन्दिर का निर्माण कराया है। वहाँ पर भी चमत्कारिक सुन्दर पार्श्वनाथ-मूर्ति प्राप्त हुई है जो विशाल प्राचीन और मनोज्ञ है। सभवत उसे दो हजार वर्ष के लगभग प्राचीन बताया जाता है और भी अनेकानेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। यहाँ पार्श्वनाथ जैन गौशाला, पार्श्वनाथ जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ जैन अतिथि भवन और पार्श्वनाथ शिवानन्द जैन हा० हा० स्कूल और पार्श्वनाथ जलकूप का भी निर्माण किया गया है। पोलिमा मे चतुर्मुखी जिन प्रतिमा निकली है। सराक जैन समिति का निर्माण हो गया है और उसमे सुधार का कार्य प्रारम्भ हो गया है।

पटना के लोहानीपुर मुहल्ले से प्राप्त मौर्य कालीन मूर्तिखण्ड कलकत्ता और भुवनेश्वर के सग्रहालय मे कला और पुरातत्व की सामग्री मूल्यवान है। उसमे भगवान पार्श्वनाथ की ४ फुट उन्नत प्रतिमा भी शामिल है।

राजशही जिले मे पहाडपुर का ताम्रशासन गुप्त स० १५६ (सन् ४७८) ई० का है जो वहाँ के एक जैन विहार का है जिसके ध्वसावशेष चारो ओर बिखरे पडे है। इस ताम्रशासन मे पचस्तूपान्वय के निर्ग्रन्थ आचार्य गुहनन्दी

के जैन विहार का उल्लेख है। उससे जान पडता है कि एक ब्राह्मण दम्पत्ति ने पुण्डवर्धन के विभिन्न ग्रामो मे भूमि खरीद कर गोहाली ग्राम के जैन-विहार की अर्हत् पूजा के लिये प्रदान किया था। इन सब उल्लेखो से बिहार, बगाल और उडीसा के जैन पुरातत्व की महत्ता का सहज ही आभास मिल जाता है। यह स्थान पौण्ड्वर्धन नगर से उत्तर-पश्चिम की ओर २९ मील बानगढ (प्राचीन कोटिवर्ष) से दक्षिण पूर्व की ओर ३० मील था। पौण्डू वर्धन और कोटिवर्ष दोनो ही प्राचीन काल से जैन धर्म के केन्द्र थे। श्रुतकेवली, भद्रबाहु और आचार्य अर्हदबली दोनो ही आचार्य पौण्ड्वर्धन के निवासी थे। इमसे इस विहार की महत्ता का स्पष्ट बोध होता है।

पुरलिया से ३६ मील बडा बाजार के उत्तर-पूर्व मे २० मील और पोचा के पूर्व मे एक मील पर एक छोटा सा गाव है जिसे पाकवीर कहा जाता है। यहाँ बहुत से प्राचीन मन्दिर और कला सामग्री चारो ओर बिखरी पडी है मुख्यत वह जैनो से सम्बन्धित है उसे सचित कर एक वृक्ष के नीचे सजोकर रख दी है। यहाँ एक छप्पर किसी प्राचीन जैन मन्दिर के अवशेषो पर बना है उस मन्दिर की नीव अब तक मौजूद है। वहाँ सब का मन आकर्षित करने वाली आदिनाथ की ९ फुट ऊँची प्रतिमा मौजूद है। यहाँ दो मन्दिर पत्थर और ईंटो के हैं। ईंटो के मन्दिर टूटे पडे है परन्तु मन्दिर पत्थर का है।

जैन समाज का ध्यान सराक जाति के उत्थान की ओर गया है और समाज के गण्यमान उद्योगपति इस कार्य के प्रति उत्साह दिखला रहे है। सराक जाति के कुछ नवयुवको मे अपनी जाति के उत्थान का भी भाव उदित हुआ है। आशा है यदि ये प्रयत्न इसी तरह चालू रहे तो सराक बन्धुओ के उत्थान मे विलम्ब न होगा।

कलकत्ता—

कलकत्ता भारत का सबसे बडा शहर है। इसकी गणना ससार के विशालतम शहरो मे की जाती है। जहाँ आज यह शहर बसा हुआ है वह अब से ३०० वर्ष पूर्व भयानक जंगल था। जहाँ अनेक प्रकार के जीव-जन्तु, जहरीले साँप, रायल जगल टाइगर और भयानक डाकू रहते थे। पहले यहाँ जगलो की दलदल जमीन मे थोडी-थोडी दूर पर कुछ गाँव बसे थे। सम्राट अकबर के शासन-काल मे यह सप्त ग्राम जिले के अन्तर्गत था। सप्तग्राम आधुनिक हुगली ही उस समय व्यापार का केन्द्र था। पुर्तगाली स्पेनी, डच, फ्रांसीसी और अग्रेज व्यापारी यहाँ अपना माल बेचते थे व खरीदते थे किन्तु यह शहर समुद्र से दूर था और सरस्वती नदी सूख जाती थी अत बडी नाव और जहाजो के पहुँचने मे कठिनाई होती थी। अत इस बात की आवश्यकता प्रतीत होती थी कि कोई ऐसा व्यापारिक केन्द्र बने जो समुद्र के समीप हो। विदेशी व्यापारियो के साथ व्यापार करने वाले प्रधानत बैशाखी और सेठ थे। वे सप्तग्राम से हटकर सूतानटी और गोविन्दपुर मे बस गये थे। सूतानटी इन सब मे प्रमुख तथा सम्पन्न था। यहाँ प्राय सूत और कपडे का व्यापार होता था। सूतानटी आजकल कलकत्ते का बडा बाजार और बाग बाजार है। गोविन्दपुर आज का डलहौजी स्कवायर, हेस्टिंग्स और फोर्ट विलियम है। कालिका का क्षेत्र आज का कालीघाट, भवानीपुर है। इन तीनो बडे ग्रामो को मिलाकर जाव चारनाक नाम के अग्रेज ने आधुनिक कलकत्ता शहर की नीव डाली। उसे यह स्वप्न मे भी कल्पना न थी कि जगलो और दलदल से घिरा क्षेत्र आधुनिक बडे शहरो मे गिना जायेगा। तीन शताब्दियो मे यह सुविधा सम्पन्न नगर बना इसका बहुत जल्दी विकास हुआ।

इसके बाद का इतिहास अग्रेजो की कूटनीति की कालिख से ओत-प्रोत है अर्थात् १७५७ का इतिहास उनकी कूटनीति का परिणाम है। मारकाट, लूट-खसोट राज्य परिवर्तन और अधिकार समाप्ति उसके ही प्रकार है।

शहर का नाम कलकत्ता कैसे पडा, यह विचारणीय है किन्तु हिन्दुओ के ५१ शक्ति-पीठो मे कालिका का क्षेत्र भी है। उसी के कारण कालिका खेत या काली खेत का अपभ्रश कलकत्ता हो गया। यहाँ अन्य लोगो की तरह जैन-व्यापारी भी आ बसे।

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य संस्थाओं के नाम
(अ) कलकत्ता	कलकत्ता	दि० जैन चैत्यालय	अहिंसा प्रचार समिति
		दि० जैन चैत्यालय ६ अलीपुर प्लेस	दि० जैन हा० सै० विद्यालय पो० ३४/३५ काटन स्ट्रीट
		दि० जैन चैत्यालय ५१ बड़तल्ला स्ट्रीट	साहू जैन विद्यालय बजबज
		दि० जैन चैत्यालय ढाका पट्टी नं० २१ हस पोखरी या फर्स्टलेन	श्री दि० जैन [illegible] मन्दिर ट्रस्ट
			श्री दि० जैन दातव्य औषधालय १० ए, चित्तपुर रोड
		दि० जैन चैत्यालय जैन कुंज हाई रोड खिदिरपुर	श्री दि० जैन दातव्य औषधालय वैशाख स्ट्रीट
		दि० जैन बड़ा मन्दिर १ वैशाख लेन	श्री दि० जैन भ[illegible] (धर्मशाला) १० ए, चित्तपुर रोड
		दि० जैन नया मन्दिर	श्री दि० जैन बालिका विद्यालय २२१, महर्षि देवेन्द्र कुमार रोड
		पुरानी बाड़ी का मन्दिर ब्रजदुलाल स्ट्रीट	श्री दि० जैन महा[illegible] पुस्तकालय १० ए, चित्तपुर रोड
		पा० दि० जैन उपवन मन्दिर २७ बेल गछिया रोड	श्री दि० जैन विद्यालय पो० ३४/३५ काटन स्ट्रीट
		श्री दि० जैन मन्दिर बजबज	श्री जैन शिक्षा निकेतन २५ बी० मोहन लाल स्ट्रीट
(आ) हावड़ा	बाली	दि० जैन मन्दिर १ जाड़िया रोड	
	उत्तरपाड़ा	दि० जैन मन्दिर, ८२ जी० टी० रोड	
(इ) हुगली	चिन्मुरा	श्री दि० जैन मन्दिर, जगीपाड़ा लेन	
(ई) कूच विहार	दीनहटा	दि० जैन मन्दिर	
	कूचविहार	दि० जैन मन्दिर	
	माथाभगा	दि० जैन मन्दिर	

जिले का नाम	स्थान का नाम	मन्दिर का नाम व स्थान	अन्य सस्थाओं के नाम
(उ) मुर्शिदाबाद	अंझबाद	दि० जैन मन्दिर	
	मङंगाबाद	दि० जैन मन्दिर	
	धुहीमान	दि० जैन मन्दिर	
	जलपुर	दि० जैन मन्दिर	
	जियागंज पो० अलीगज	दि० जैन मन्दिर	
	कासिम बाजार	दि० जैन मन्दिर	
	खगडा (अ० शहर)	दि० जैन मन्दिर	
	मिर्जापुर पो० मनकर	दि० जैन मन्दिर	
	औरगाबाद	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर	श्री दि० जैन भवन (धर्मशाला) श्री दि० जैन लायब्रेरी श्री दि० जैन पाठशाला श्री जैन युवक सघ
	सन्मतिनगर	दि० जैन मन्दिर	
(ऊ) वर्दवान	रानीगज	श्री दि० जैन मन्दिर	
(ए) वीरभूमि	नघहरी	दि० जैन मन्दिर	
	परकोट	दि० जैन मन्दिर	

— ○ —

श्री दि० जैन नया मन्दिर, धर्मपुरा

यह मन्दिर धर्मपुरा के मध्य मे स्थित है। सन् १८०० मे राजा हरसुखराय जी ने इस मन्दिर की नीव रखी, जो ७ वर्ष मे ५ लाख रु० की लागत से बनकर तैयार हुआ। कुछ लेखको की ऐसी धारणा है कि यह मन्दिर ८ लाख रु० की लागत का है। यह लागत उस समय की है जब राज चार आने (२५ नये पैसे) और मजदूर दो आने प्रति दिन लेते थे।

इस मन्दिर की प्रतिष्ठा मिती वैशाख शुक्ल ३ सम्बत १८६४ (सन् १८०७) मे हुई थी।

मन्दिर की मूलनायक वेदी जयपुर के स्वच्छ बहुमूल्य मकराने के संगमरमर की बनी हुई है और उसमे पच्चीकारी का काम, बेलबूटे का कटाव किन्ही अशा मे ताजमहल से भी बारीक एव अनुपम है।

जिस कमल पर श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान है उस कमल की लागत उस समय की दस हजार रु० तथा वेदी की लागत सवा लाख रु० बताई जाती है। कमल के नीचे चारो ओर सिंहो के जोड़े बने हुए हैं। उनकी कारीगरी अपूर्व और आश्चर्यजनक है। यह प्रतिमा सम्वत १६६४ की है।

मूलनायक प्रतिमा खण्डित हो गई थी जो कि समुद्र मे प्रवाहित करा दी गई थी।

वेदी के चारो ओर दीवारो पर दर्शनीय बहु मूल्य चित्रकारी बडी खोज के साथ शास्त्रोक्त विधि से कराई गई है व संस्कृत का भक्तामर स्तोत्र मय मत्रो के स्वर्ण से अकित किया गया है।

पहले मन्दिरजी मे एक ही वेदी थी। बहुत वर्ष बाद दो वेदिया और बनी। इन वेदियो मे नीलम, मरकत तथा स्फटिक आदि की बहुमूल्य मूर्तियाँ सवत ११११२ की है।

क्योकि यह मन्दिर दिल्ली मे निर्मित प्रथम शिखर बन्द मन्दिर मे इसका निर्माण राजा हरसुख रायजी ने विशेष शाही आज्ञा से कराया था। इस कारण यह नया मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है।

मन्दिर के बाहर के दालान मे दैनिक शास्त्र-सभा होती है। ऊपर के भाग मे सुनहरे अक्षरो मे कल्याण-मन्दिर स्त्रोत्र लिखा हुआ है।

यहा पर विशाल सरस्वती भण्डार है जिसमे हस्त-लिखित १८०० के लगभग शास्त्र हैं। तथा छपे हुए सस्कृत व भाषा के ग्रथो का अच्छा सग्रह है। यहाँ पर

दिल्ली

स्त्रियो की भी शास्त्र सभा होती है। एक जनाना जीना इधर से नीचे की ओर जाता है। तथा जीने के पास ही एक नई बडी विशाल वेदी बनी हुई है जिसकी प्रतिष्ठा १२ मई १९६७ को हुई थी। तथा उसी कमरे मे सन् १९६० मे सहस्त्रकूट चैत्यालय की स्थापना हो चुकी है।

श्री दि० जैन नया मन्दिरजी से सम्बन्धित अन्य सस्थाये—

(१) स्वाध्याय शाला

(२) अराईश तथा वेदी फण्ड

(३) जैन पाठशाला व स्कूल (स्थापित सम्वत् १९४३)

(४) जैन बाल सदन

(५) जैन कन्या पाठशाला व स्कूल

(६) जैन बर्तन फड (जैन प्रेम समाश्रित)

(७) जैन मित्र मडल (स्थापित सन् १९१५)

(८) श्री वर्धमान पब्लिक लायब्रेरी (सन् १९२७)

(९) धर्मशाला (बीबी द्रौपदी देवी स्थापित सन् १९३७)

(१०) सस्ती ग्रथमाला

(११) अखिल भारतवर्षीय केन्द्रीय श्री जैन महा समिति

राजा हरसुखराय

यह वह सज्जन थे जिन्होने लाखो रुपया दान दिया परन्तु सर्वदा भय खाते रहे कि कही इनकी आत्म विज्ञापन की गध न आ जाये। लगभग ६०–७० जैन मन्दिर भारत-वर्ष मे बनवाये परन्तु किसी मन्दिर पर उनका नाम नही लिखा है।

कहते है जब यह मन्दिरजी बन कर तैयार हो गया, केवल शिखर ही बनना बाकी था तो सारी पचायत इक्ट्ठी की और सबसे चन्दा करके शिखर बनवाया तथा मन्दिरजी पचायत को सौप दिया। धन्य है इनको।

अब भी श्री त्रिलोकचन्द जी ने जो कि इसी कुटुम्ब के सुपुत्र है। भारत नगर मे एक बडा सुन्दर मन्दिरजी का निर्माण करा कर प्रतिष्ठा कराई है जो कि देखते ही बनता है।

दिल्ली क्षेत्र के श्री दि० जैन मन्दिरो की सूची व विवरण

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
		धर्मपुरा	
१	श्री दि० जैन नया मन्दिर जी धर्मपुरा दिल्ली-६	सन् १८०७	निर्माता राजा हरसुख राय। विशाल समव-शरण की वेदी पर पच्चीकारी का काम तथा विशाल सरस्वती भण्डार।
२	श्री दि० जैन मन्दिर सतघरा		लगभग ७० वर्ष पूर्व चैत्यालय के रूप मे था, सन् १९३९ मे शिखर बद हुआ। यहा प्रतिदिन महिलाओ की शास्त्र सभा होती है।
३	श्री दि० जैन चैत्यालय सतघरा		यह चैत्यालय श्री मुशी रिशकलाल के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है तथा गली मे प्रवेश होते ही बाये हाथ पर पहले मकान मे है।
४	श्री दि० जैन चैत्यालय		यह चैत्यालय मीरीमल के नाम से प्रसिद्ध है तथा अब कन्या पाठशाला के ऊपर वाले हाल मे स्थित है।
५	श्री १००८ चन्द्रप्रभु दि० जैन चैत्यालय २२३४ धर्मपुरा	सन् १८५७ ई०	यह चै० ला० भौदूमल जी जैन सर्राफ द्वारा निर्माण कराया गया। इसका प्रबन्ध अब डिप्टीमल जैन कागजी कर रहे है।
६	श्री दि० जैन पचायती मन्दिर मस्जिद खजूर	सन् १७४३ दुबारा प्रतिष्ठा पचायत ने ३० जनवरी १९२३ मे कराई।	यह मन्दिर श्री आयामल जी (जो कि मुहम्मद शाह द्वितीय की सेना के पदाधिकारी थे) ने बनवाया। बाद मे इसे पचायती घोषित कर दिया गया। यहाँ भट्टारको की भी गद्दी रही है। यहाँ हस्तलिखित प्राचीन ग्रथो का अच्छा सग्रह है तथा एक विशाल बाहुबलि जी की मूर्ति स्थापित है।

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
७.	श्री दि० जैन मेहर मन्दिर जी मस्जिद खजूर के बाहर	प्रतिष्ठा २३ जनवरी सन् १८७६ ई०	इसका निर्माण ला० मेहरचन्दजी ने कराया यहाँ नदीश्वर द्वीप के ५२ चैत्यालयो की अपूर्व रचना है। अभी हाल मे एक महावीर स्वामी की विशाल मूर्ति स्थापित की गई है।
८.	श्री पद्मावती पुरवाल दि० जैन मन्दिर, मस्जिद खजूर श्री मेहर मन्दिर जी के सामने।	सन् १६३१	इसका निर्माण पद्मावती पुरवाल दि० जैन पचायत ने कराया।
६	श्री दि० जैन चैत्यालय गली अनार, धर्मपुरा		यह चैत्यालय बीबी तोखन के नाम से प्रसिद्ध है तथा गली अनार मे गली कुए वाली मे स्थित है।
		दरीबाकलां क्षेत्र	
१०	श्री दि० जैन चैत्यालय कूचा सुखानद दरीबा कला	मुगलकालीन	इसका निर्माण ला० गुलाबराय जी ने कराया था।
११	श्री दि० जैन बडा मन्दिर कूचा सेठ	सन् १८४० (सम्वत् १८६७)	सेठ इन्द्र राज द्वारा निर्माण कराया। शास्त्र भडार मे प्राचीन ८०० के लगभग ग्रथ है। तथा साथ मे नेमि औषधालय तथा उदासीन आश्रम है।
१२	श्री दि० जैन छोटा मन्दिर कूचा सेठ, दिल्ली ६	सन् १८३४ (सम्वत् १८६१)	इसके बनवाने मे श्रावक इन्द्रराज जी का विशेष हाथ रहा। यहाँ पर एक प्राचीन पाषाण की मूर्ति सन् १४६२ की है।
		चांदनी चौक	
१३	श्री दि० जैन लाल मन्दिर जी चांदनी चौक	(सन् १६५६)	यह एक विशाल मन्दिर है। इसमे विशाल सरस्वती भवन, उदासीन आश्रम, विशाल सभागार, पक्षियो का चिकित्सालय, जैन साहित्य सदन, व मानस्तम्भ आदि स्थित है। यह मन्दिर उर्दू मन्दिर या लश्करी मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। क्योकि इसका निर्माण शाही सेना के जैन पदाधिकारियो के लिए हुआ था।
		वैद्यवाड़ा मालीवाड़ा	
१४.	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर वैद्यवाडा	सन् १७४१	श्री खडेलवाल दि० जैन पचायत द्वारा इसका निर्माण हुआ। यहाँ पर प्राचीन प्रतिमा ११७५

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
			सन् की है। शास्त्र भण्डार मे हस्त लिखित ग्रन्थ भी दर्शनीय है।
१५	श्री शान्तिनाथ दि० जैन चैत्यालय वैद्यवाड़ा	१७४१	यह चैत्यालय ऊपर वाले मन्दिर जी के साथ मे ही है।
१६	श्री दि० जैन मन्दिर (गोधाजी) वैद्यवाड़ा		ला० कपूरचन्द जी जौहरी ने निर्माण कराया है यहाँ भ० महावीर स्वामी जी की स्फटिक की मनोज्ञ प्रतिमा है।
	गोधा क्लिनिक दिल्ली		स्थापित लाला सन्त लाल जी गोधा के पौत्रो द्वारा इस क्लीनिक का जीर्णोद्धार समय-समय पर कराया गया और आज यह पूर्ण रूप मे क्लीनिक है।
		बाजार सीताराम	
१७	श्री दि० जैन मन्दिर मौहल्ला इमली, कूँचा पाती राम ६०८ गली इन्द्रबाली	सम्वत् १९३० माघ सुदी ५	बहु सख्या वैष्णव सम्प्रदाय के बीच स्थित यह मन्दिर जैन मन्दिर की प्रस्तावना कर रहा है।
		दरियागंज	
१८	श्री दि० जैन चैत्यालय, जैन बाल आश्रम, दरियागज		यह चैत्यालय परदाबाग के निकट दरियागज रोड पर स्थित है।
१९	श्री हुकमचन्द दि० जैन चैत्यालय ७/३३, दरियागज	सन् १९३८	इसको लाला हुकमचन्द गोहाना निवासी तथा उनके परिवार ने स्थापित किया।
२०	श्री अहिंसा मन्दिर जिनालय न० १ अन्सारी रोड दरियागज	वैशाख शुक्ल १० सन् १९६७	श्री राजकिशन प्रेमचन्द जैन द्वारा निर्माण कराया गया। श्री मन्दिरजी मे मूलनायक प्रतिमा श्री महावीर स्वामी जी की (६ फुट ऊची) कमल पर विराजमान है।
२१	श्री दि० जैन महावीर चैत्यालय	१८ मई सन् १९६९	श्री दि० जैन महिला आश्रम दरियागज मे स्थापित है।
२२	श्री दि० जैन मन्दिर दिल्ली गेट	मुगलकाल का प्राचीन बना है	दो चौक का डबल मन्दिर है। मूलनायक प्रतिमा सम्वत् १५३ की बनी है। भवन मे अलकृत चित्रकारी है।
		मोरीगेट, सब्जीमंडी	
२३.	श्री दि० जैन मन्दिर मोरीगेट	मुगलकालीन पुराना मन्दिर	मन्दिरजी मे मूल नायक प्रतिमा सन् १४९१ की है।

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
२४	भगवान पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, गली कुम्हारो की सब्जी मण्डी	१०० वर्ष पूर्व	यहाँ भट्टारको की गद्दी रही है। अब नवीन करण हो गया। यह मन्दिर रोशनारा रोड बर्फखाने के पास स्थित है।
२५	श्री दि० जैन मन्दिर, आर्यपुरा, सब्जी मण्डी	प्राचीन मन्दिर है	मन्दिरजी मे वाचनालय तथा ऊपर की मजिल मे एक ओर मुनियो तथा त्यागियो के ठहरने की व्यवस्था है।
२६	श्री दि० जैन मन्दिर शक्ति नगर, सब्जी मण्डी	प्रतिष्ठा जनवरी १९७४ मे हुई	यह मन्दिर शक्ति नगर के चौराहे के पास जी० टी० रोड पर स्थित है।
		मॉडल टाउन	
२७	श्री दि० जैन चैत्यालय जैन ट्रस्ट मैदान डी ब्लाक	सन् १९५७	जैन समाज मॉडल टाउन द्वारा निर्माण किया। साथ मे जैन पुस्तकालय तथा होम्योपैथिक चिकित्सालय है।
		भारत नगर	
२८	श्री १००८ आदिनाथ दि० जैन मन्दिर बाग वाली कोठी ३९७ भारत नगर	२९-४-१९७१	इस मन्दिर का निर्माण स्व० श्री हुकम चन्द जी की स्मृति मे १२-९-१९७० को आरम्भ हुआ तथा वंशज राजा हरसुखराय सुगनचन्द जी के द्वारा हुआ।
		शांति नगर	
२९	श्री दि० जैन मन्दिर शाति नगर (जखीरे के पास)	(सन् १९७१)	उस मन्दिर का निर्माण शाति नगर की जैन पचायत द्वारा किया गया। शहर मे ८ किलो-मीटर दूर है।
		सदर बाजार	
३०	श्री दि० जैन पचायती मन्दिर (बडा मन्दिर) गली जैन मन्दिर पहाडी धीरज	(सम्वत् १८५३) (सन् १९१०)	फागुन सुदी २ शुक्रवार को शुभ निर्माण हुआ। यहाँ शास्त्रो का अच्छा भण्डार है। भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति सन् १९५३ की है।
३१	श्री महावीर दि० जैन मन्दिर गली नत्थन सिह पहाडी धीरज	(सन् १९३८)	यह काच के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है।
३२	श्री दि० जैन चैत्यालय (ला० मनोहर लाल जौहरी) गली जैन मन्दिर पहाडी धीरज	(सन् १९३५)	यहाँ चैत्यालय मे ग्रन्थो का सुन्दर सग्रह है विशेष कर मन्त्र शास्त्र का।

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
३३	श्री दि० जैन चैत्यालय डिप्टी गज (महावीर नगर)	सन् १९४०	निर्माता सेठ लालचन्द जी जैन। नीचे की ओर औषधालय तथा त्यागियो के ठहरने की व्यवस्था भी है।
		दक्षिण दिल्ली	
३४	श्री दि० जैन आदिनाथ मन्दिर कुतब मीनार के पास, महरौली	सन् ११३२	तोमर वशीय राजा अनग पाल तृतीय के मन्त्री अग्रवाल वशी साहनहल ने बनवाया था परन्तु सन् ११९३ मे कुतुबुद्दीन ऐबक ने तुडवा दिया। अब केवल खडहर बाकी है।
३५	श्री दि० जैन मन्दिर जी चिराग दिल्ली	फरवरी सन् १९५२	यह मन्दिर दिल्ली से लगभग १० किलोमीटर दूर चिराग दिल्ली मे स्थित है।
३६	श्री दि० जैन चैत्यालय भोगल जगपुरा, दिल्ली	८० वर्ष पूर्व	यह चैत्यालय टैम्पिल रोड व सम्मन बाजार के मोड पर स्थित है। मूलनायक प्रतिमा शाति-नाथ भगवान की है।
३७	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर एन–१० ग्रीन पार्क एक्सटैंशन	२८ नवम्बर १९६८	दक्षिण दिल्ली मे एक सुन्दर एव दर्शनीय मन्दिर है। साथ मे पुस्तकालय भी है।
३८	श्री स्वर्ण भद्रकूट चैत्यालय राज राजेश्वर भवन एफ ३ ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-१६	१५ जून १९६५	इस चैत्यालय की स्थापना प० सुकमाल चन्दजी द्वारा अपने नव निर्मित गृह मे एक कक्ष मे की गई तथा पुस्तकालय साथ मे है।
३९	श्री दि० जैन चैत्यालय ए–११८ नेताजीनगर मे डी टी सी बस डिपो के पास		
४०	श्री दि० जैन मन्दिर सरोजिनी नगर नई दिल्ली	सन् १९६३	यह मन्दिर ए ब्लॉक के पास बाई ब्लॉक मे जैन भवन मे स्थित है।
४१	श्री दि० जैन चैत्यालय लोदी कालोनी विनय नगर नई दिल्ली		यहाँ भगवान महावीर स्वामी की धातु प्रतिमा विराजमान है।
४२	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर जयसिंहपुरा नई दिल्ली	मुगलकालीन	यह खडेलवाल मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। कनाट सर्कस के अति समीप मद्रास होटल के पीछे जैन मन्दिर रोड पर है।
४३	श्री दि० जैन अग्रवाल	सन् १८०७	यह मन्दिर ऊपर वाले मन्दिर के पास ही है।

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
	मन्दिर, जयसिंहपुरा नई दिल्ली		राजा हरसुखराय के सुपुत्र राजा सुगनचन्द जी ने निर्माण कराया था।
४४	जैन निशि मन्दिर नई दिल्ली	मुगलकालीन है	इसके चारो ओर प्राचीन परकोटा है। चारों कोनो पर चार गुम्बज है। गोल मार्केट के समीप है। नगर के जैनो की सांस्कृतिक गति-विधियो का केन्द्र है।
४५	श्री दि० जैन मन्दिर मन्टोला मोहल्ला पहाडगज नई दिल्ली-५५	लगभग ५० वर्ष पूर्व	जैन मन्दिर द्वारा (विशेष सहयोगी स्व० ला० नारायणदासजी जैन पहाडगज) निर्माण हुआ। भगवान शातिनाथजी की मूल नायक अति दार्शनिक प्रतिमा है।
		करोल बाग	
४६	श्री दि० जैन मन्दिर माडल बस्ती दिल्ली	सन् १९६१	यह मन्दिर फिल्मिस्तान सिनेमा के पीछे स्थित है।
४७	श्री दि० जैन मन्दिर छप्परवाला कुआ करौलबाग नई दिल्ली		सन् १९४७ से दिगम्बर जैन पचायत करौल बाग पजीकृत द्वारा व्यवस्था सुचारुरूप से चल रही है।
४८	श्री दि० जैन मन्दिर ५सी/२६ न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली	सन् १९५६	रोहतक रोड पचायत द्वारा निर्माण हुआ। लिबर्टी सिनेमा से लगभग ५० गज दूरी पर गली मे स्थित है।
४९	श्री दि० जैन मन्दिर, देवनगर करौल बाग, नई दिल्ली	सन् १९५९	यह मन्दिर देशबधु गुप्ता रोड पर बस स्टैंड के पास प्रहलाद मार्केट के ठीक सामने सत नगर मे स्थित है।
		पालम	
५०	श्री शातिनाथ दि० जैन मन्दिर पालम ग्राम नई दिल्ली	१९० वर्ष पूर्व	जैन समाज पालम ने निर्माण कराया मूलनायक प्रतिमा वीर स० १५४८ की है दिल्ली शहर से १४ किलोमीटर है।
५१	श्री दि० जैन मन्दिर सदर बाजार (छावनी) दिल्ली कैन्ट	सन् १९६९	यह भी प्राचीन मन्दिर है तथा इसके लिये स्थान सुरक्षा मन्त्रालय से लिया गया था।
		नजफगढ़	
५२	श्री अग्रवाल दि० जैन	लगभग २५०	यह मन्दिर दिल्ली से लगभग २८ किलोमीटर

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता
	मन्दिर नजफगढ	वर्ष पूर्व	दूर पर है। मन्दिरजी के चारो ओर ५० बीघे जमीन की बगीची है। साथ मे धर्मशाला, पाठशाला तथा नर्सरी स्कूल है।
		जमना पार	
५३	श्री दि० जैन मन्दिर कैलाश नगर गली नं० २,३ जैन मोहल्ला दिल्ली-३१	वीर स० २४८५ सन् १९५८	श्री दि० जैन समाज कैलाश नगर द्वारा निर्माण हुआ, ऐसी मान्यता है कि मन्दिर स्थापना काल से जो भी साधर्मी भाई यहां बसे है सबकी दिन प्रतिदिन उन्नति हो रही है।
५४	श्री दि० जैन मन्दिर गाधी नगर दिल्ली-३१	सन् १९५८	मन्दिरजी मे मूल नायक प्रतिमा यमुना नदी मे एक ब्राह्मण महानुभाव को प्राप्त हुई थी जो कि लाल पाषाण की श्री वासुपूज्य स्वामी की है।
५५	श्री पार्श्वनाथ दि० जैन नया मन्दिर, शास्त्रीनगर, गीता कालोनी के पास, पटपड गज रोड, दिल्ली	जून १९६५	मूल नायक चमत्कारी प्रतिमा भ० पार्श्वनाथ की है। साथ मे जैन पाठशाला भी है।
५६	श्री दि० जैन मन्दिर पटपड गज	लगभग सन् १७६०	ला० सुगनचन्द जी सुपुत्र श्री ला० गुलाब सिंह जी ने निर्माण कराया। मूलनायक प्रतिमा भ० पार्श्वनाथ की ४०० वर्ष पुरानी है।
५७	श्री दि० जैन मन्दिरजी ब्रह्मपुरी, शाहदरा के निकट	सन् १९६८	स्थापना सम्वत् २०२५ (सन् १९६८) मे समाज द्वारा की गई तथा शाहदरा के निकट भी है।
५८	श्री दि० जैन चैत्यालय जैन नगर (उसमानपुर) शाहदरा	सन् १९६८	इसकी स्थापना दि० जैन पचायत की ओर से सम्वत् २०२५ मे हुई थी।
५९	श्री पार्श्वनाथ मन्दिर शाहदरा जी० टी० रोड	फरवरी १९६९	श्री पार्श्वनाथ तथा चन्द्रप्रभु की मूर्तियाँ अति मनोहर तथा अतिशयकारी है। पचायत द्वारा प्रतिष्ठा कराई गई।
६०	श्री दि० जैन मन्दिर कबूल नगर (शाहदरा के निकट)		पचायत द्वारा प्रतिष्ठा कराई गई हुई है।

क्रम संख्या	नाम मन्दिर तथा पता	निर्माण काल	विशेष विवरण तथा निर्माता	
६१.	श्री दि० जैन मन्दिरजी गली मन्दिर वाली शाहदरा	प्राचीन काल का मन्दिर है	इसका निर्माण राजा हरसुखराय ने कराया था साथ मे जैन पाठशाला भी है।	
६२	श्री दि० जैन मन्दिरजी ई५/३७ कृष्णा नगर, मेन रोड	वीर स० २४६७ भादव सुदी ३	इसका निर्माण यहाँ की पचायत द्वारा हुआ।	
६३	श्री दि० जैन मन्दिरजी गौतमपुरी	सन् १९७२	,,	,,
६४.	श्री दि० जैन मन्दिर जवाहर मार्ग, वेस्ट लक्ष्मी नगर	१५ अगस्त १९६७	,,	,,
६५	श्री दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर ए० ब्लॉक शक्करपुर	सन् १९७३	,,	,,
६६	श्री दि० जैन मन्दिर शिवपुरी (निकट शाहदरा)		,, ,,	,, ,,

—. ○ .—

दिल्ली में
जैन धर्मशालायें एवं विश्राम गृह

१ उदासीन आश्रम, श्री दि० जैन लाल मन्दिर, चादनी चौक
२ जैन धर्मशाला, कटरा मशरू दरीबा कला
३ लच्छू मल जैन धर्मशाला, कूँचा बुलाकी बेगम, एस्प्लेनेड रोड
४ दि० जैन धर्मशाला कूँचा बुलाकी बेगम, एस्प्लेनेड रोड
५ जैन धर्मशाला कूँचा सेठ दरीबा कला
६ दिगम्बर जैन धर्मशाला, नया मन्दिर, धर्मपुरा
७ पद्मावती पुरवाल दि० जैन धर्मशाला, मस्जिद खजूर, धर्मपुरा
८ दि० जैन धर्मशाला, पचायती मन्दिर मस्जिद खजूर, धर्मपुरा
९ जैन धर्मशाला चीराखाना
१० श्री सुन्दरलाल पारसदास दि० जैन धर्मशाला, बेदवाडा
११ जैन धर्मशाला गली भोजपुरा मालीवाडा
१२ जैन धर्मशाला ला० गोकलचन्द नाहर नौघरा, किनारी बाजार
१३ ला० मक्खनलाल जैन धर्मशाला, ११ दरियागज
१४ दि० जैन पचायती धर्मशाला पहाडी धीरज
१५ ला० मूलचन्द मुरारीलाल जैन, धर्मशाला सदर बाजार
१६ श्री दि० जैन धर्मशाला मोरी गेट
१७ जैन भवन, न्यू कालोनी, माडल टाउन, नई दिल्ली
१८ दि० जैन धर्मशालाये नजफगढ
१९ होटल शाकाहार, १ अन्सारी रोड, दरिया गज फोन न० २७३५३७
२० जैन गैस्ट हाउस, ४ एम भगतसिह मार्केट नई दिल्ली फोन न० ४५३४३

JAINS AND JAIN SHRINES OF TAMIL NADU

Distribution : In ancient days although the Jains lived throughout Tamil Nadu, presently they are seen living in the districts of Chengal-pattu, Madras, North Arcot, South Arcot and Thanjavur. All of them belong to Digambar Sect

Apart from these districts there are one or two families settled in other districts on business or on official work. Most of the population lives in villages There are about 100 villages and in about 60 of them ancient Jain temples are seen. On the whole there are about 50,000 Tamil Digambar Jains living in different districts of Tamil Nadu.

Profession :

Their profession is mainly agriculture. Only recently they have started diversifying their activities. Many have entered the business field (wholesale merchants, Agents Real Estate, Printing Industry). Comparatively a small population migrated to towns and are in Government and private services. They are moderately educated.

Most of the educated are employed as teachers in elementary and high schools and professors in colleges Ladies are also employed fairly in large numbers. As far as professional degrees like Medicine, Engineering etc., is concerned only a few have qualified in these fields No one is under Indian Administrative Service and only one is an I P S.

Social habits :

Socially Jains of Tamil Nadu resemble in their cultural activities with their counterparts of other states. Their temple architecture and language is purely indigenous. In addition to religious ceremonies, they celebrate the regional festivals too. By nature most of them are conservative.

Religious Sect :

All Tamil Jains are Digambar. They have their religious head, the head of a Mutt, at Melsithamoor in South Arcot District His title is Swasthi Sri Sri Lakshmisena Battaraka Battacharya Varya Swamigal. His headquarter is called Jina Kanchi, which is one of the 4 ancient Digambar Jain Mutts. His Holiness solemnises every Jain irrespective of sex, into religious order on an auspicious occasion called 'upanayana' when men wear the Sacred thread. After this His Holiness gives a sermon on the basic principles of Jainism to be observed daily by them

Ladies mostly observe a large number of Vratas Common among them are Poornima, Chathurthasi, Ashtami, Dhaslakshmiam Every year they observe a Vrata called Anantha Vrata Nonbu for 3 days. Thirthakara Nombu is one of the Vratas, very familiar with womenfolk. In this Vrata they take food or any eatable only after hearing someone telling one of the Thirthankara's name five times. If at that time no one is available then she herself repeats the name and then takes her food.

Vathyars are employed to perform the religious ceremonies in temples. They are traditionally trained group of families among Tamil Digambar Jains well versed in religious rites, Sastras and Tamil language Till recently they were responsible for early education of children in villages. They taught the children in the temples after their temple puja routines.

Festivals :

Pujas are performed daily in morning and

evening. The common temple festivals are *Atchya-thruthia, Saraswathi Puja, Dasara* and *Deepavali.* In selected villages annual Brahmostava is conducted. Annual Car festival is held at Melsithamoor. Annual float festival is celebrated at Karanthai a village near Kanchipuram, Chengalpattu District

In addition to the above, during Pongal, Ugathi, Tamil New Years day, special pujas are performed in all Jain temples

DIRECTORY CHENGALPATTU DISTRICT

Arungkulam :

It is one of the ancient Jain centres in Tamil Nadu There are no Jain families except a Pujari Tamil Kavya "Choolamani" was composed here by Thola Mozhi Devar, dedicated to Sri Dharma Thirthankar This Kavya is supposed to belong to 9th century so the Temple may be about 1000 years old

This temple has a unique architecture. On the birth day of the presiding deity-Lord Dharma Thirthankar—the rays of the rising sun fall at his feet and slowly rises to His face

Presiding Deity : Lord Dharma Thirthankar

Festival : Once in a year during the first fortnight of March

Location and Approach : It is on the Madras-Tiruttani road and about 88 km from Madras. The nearest town is Tiruvellore Buses plying between Madras-Tiruttani halt near this village.

Aarpakkam :

It is a small ancient village There are no Jains living except a Pujari The Jains of North Arcot District celebrate the ear boring ceremony of their children in this temple Udiche Devar, a native of this village has written, a poetic work "*Thiru Kalampakam*". The Temple is very ancient and in nearby Magarel there are Jain monuments.

Presiding Deity : Aathi Pattarakar (Lord Rishaba Devar)

Festival : Maha Sivarathri—(Nirvana Day of Lord Rishaba Devar)

Location and Approach : It is about 25 km from Kanchipuram on the Kanchipuram-Uthiramerur road Buses plying between these two points halt near this village.

Jina Kanchi (Thiruparuthi Kundram) :

This small village on the outskirt of the town of Kanchipuram was one of the ancient Digambara Vidyapetis The temple is unique in having three different architectural styles i e , Chola Pallava and Vijayanagara. This temple is about 1,500 years old. It was renovated at different periods There are paintings that are supposed to belong to 18th century A D depicting life of Thirthankaras

There are foot-prints of two celebrated Munis. Sri Mallisena Vamana and Sri Puspasena under a small tree

Presiding Deity : Lord Varthamana-Trilokkianathar (Leader of the Three Worlds).

Location and Approach : Private conveyance from Kanchipuram It is only about 4 km from the town

Mamallapuram :

This small village was a famous harbour several centuries ago under the Pallava Kings It is now well known for its sculptural excellence There were many Jain sculptures and images in Mamallapuram

Now only one of the several sculptural wealth executed by the Jains remain It is the bas-relief popularly called by the laity as the Arjuna's Penance or Bhagiratha's Panance However, as per Lord Ajithanathar Puranam, it is the beautiful depiction of the story of Emperor Sakara which is executed expertly on the face of the rock, the eastern face of which is vertical, 96 feet in length and 43 feet in height

NORTH ARCOT

Agarakorakottai : 604406

A small village with 12 Jain families The Jain temple, which is recently improved is about 60 years old

Presiding Deity Shri Paraswanathar

Festival : Pongal

Location and Approach 20 km South of Vandawasi on Vandawasi-Tindivanam road. Buses plying between Vandawasi-Desur run through this village

Birudur :

An ancient village with 100 Jain families The Jain temple is about 700 years old It is in existence from the time of Arcot Nawabs There is a separate temple for Devi

Presiding Deity Sri Adi Bagwan (Lord Rishaba Devar)

Festival

1 Atchayathruthi
2 Pongal
3 Sarasvathy Puja

Location and Approach : It is 2 km east of Vandawasi town Buses plying between Vandawasi-Acharapakkam halt at this village

Elangadu : 604415

A small village with an ancient Jain temple There are 25 Jain families living here. There are two metal idols, one of Lord Neminathar and the other of Dharmadevi, supposed to have been shifted from a Jain temple at Mylapore in Madras fearing sea erosion. In the bottom of idol of Lord Neminathar it is inscribed that it belonged to Mylapore

Presiding Deity : Shri Risbaba Thirthankar

Festival : Atchayathruthi, Pongal.

Location and Approach : It is about 10 km south-west of Vandawasi on the Vandawasi-Thellar road Vandawasi to Tindivanam buses stop 1 km away from the village on the main road

Gudaloor : 604406

The Jain temple of this village is about 300 years old There are 29 Jain families living This village is supposed to be a place where Pallavas and Cholas met each other

Presiding Deity : Shri Kunthu Thirthankar

Festival · Pongal

Location and Approach It is about 25 km South of Vandawasi on the Vandawasi-Tindivanam road

Kappalur : 606751

There are 15 Jain families living in this village. The Jain temple is of recent origin It was consecrated in 1968

Presiding Deity : Shri Kunthunatha Swamy.

Festival : Mahavir Jayanthi

Location and Approach It is about 10 km South of Polur Buses plying between Tiruvannamalai and Polur halt near this village

Kattumalayanoor : 608804

A village with 29 Jain families. No temple. It is 16 km east of Tiruvannamalai.

Kil-nelli : 604410

A village with a single Jain family. This village was a flourising Jain centre during 700 A.D At present there is no temple. But the presiding deity of the dilapidated temple is placed on a platform.

Presiding Deity : Shri Varthamana.

Location : 12 km north-east of Cheyyar town Bus—Kanchipuram to Cheyyar.

Kil-pennathur : 604601

This is a small village about 20 km east of Tiruvannamalai. There are 5 families living here. There is no Jain temple.

Kil-Sathamangalam : 604408

There are 60 Jain families in this village. The temple is very ancient one It is believed to be 1400 years old. Near the village there is a hillock with inscription belonging to the Pallava ruler Nandivarman. The Maanasthamba of the temple is 33 feet high and is made out of single stone

Presiding Deity Sri Chandranatha Swamy.

Festival : Atchyathruthi, Pongal.

Location and Approach : It is 5 km west of Vandawasi Buses plying between Vandawasi and Polur halt near this village

Kil-Villivalam : 604408

There are 25 Jain families in this village The temple is 150 years old

Presiding Deity : Shri Vaithamana Mahavir

Festival : Occasionally

Location and Approach : It is 15 km south-east of Vandawasi No bus to this village

Kozhappaloor . 632313

A village with 60 Jain families The temple here is about 300 years old

Presiding Deity · Shri Rishabadevar

Festivals : Atchyathruthi, Pongal

Location and Approach : It is about 22 km south of Arni Buses are available from Arni to this village

Mandakolathur

An ancient Jain village But no temple Now only 5 families are living It is believed that about 60 families lived here It is on the Polur-Vandawasi bus route at a distance of 10 km

Manjapattu : 604501

There are 26 Jain families living in this village. The Temple is about 200 years old. There is a hillock "Seeyamangalam" near this village with sculpture and inscriptions.

Presiding Deity : Shri Malli Thirthankar

Festival : Pongal

Location and Approach : It is 25 km south of Vandawasi Madras to Vadakapattu bus halts near this village. It is near Desur (3 km)

Mudaloor : 604406

A village with 46 Jain families The Temple is very ancient It was the only temple for the 5 nearby villages Later temples were built in other villages This village has the singular distinction of being the birth place of 3 Madathi padthis of Shri Kolhapur Jain Mutt in Maharashtra

Presiding Deity : Shri Athiswarar (Lord Rishaba devar)

Festival . Acthayathruthi, Pongal

Location and Approach : It is 5 km South of Vandawasi

Mullipattu 632316

A small village with 9 Jain families There is a temple about 300 years old

Presiding Deity : Shri Bhagwan Mahavir

Festivals :

1 Shivarathri (Mukthi Day of Lord Rishabdavar)
2 Deepavali (Mukthi Day of Lord Mahavir)

Location and Approach : It is 3 km west of Arni Buses plying between Arni- Tiruvannamalai run via this village

Nallavanpalayam : 606603

A village with 65 Jain families The temple is about 53 years old

Presiding Deity . Shri Rishabadevar

Festival : Nil

Location and Approach : It is 5 km south of Tiruvannamalai

Nallur : 604406

There are 50 Jain families living here. The

temple is about 75 years old. In this temple there is a separate "Panchkalyana Temple" made of marble idols. Navagraha temple with copper idols is another addition to the main temple

Presiding Deity . Shri Adinathar (Shri Rishabadevar)

Festival : Atchayathruthi, Mahavir Jayanthi, Pongal.

Location and Aproach : It is about 16 km south-east of Vandawasi. Buses ply between Vandawasi-Nallur.

Naval : 604409

An old village with 27 Jain families The Jain temple is about 75 years old. This village is famous for the learned Sastris for the last 50 years.

Presiding Deity : Shri Vasupujya Swami.

Festivals : 1. Atchayathruthi, 2 Sarasvathi Puja, 3. Pongal.

Location and Approach : It is 7 km south-west of Cheyyar.

Nelliaugulam : 604405

The Jain temple of this village is about 150 years old This temple is unique in having the idols of all the 24 Thirthankaras.

Presiding Deity Shri Neminathar,

Festival · Atchyathruthi.

Location and Approach : It is about 25 km South of Vandawasi. Buses ply from Vandawasi to this village

Nethapakkam :

A Jain village with a Jain temple but without Jains. The Jains of this village migrated to nearby S V. Nagaram, and other places. Presently the temple is in one acre area Supposed to be the only temple for nearby 4 villages-Mottur, Kal-poondi, S V. Nagaram, Molugampoondi.

Presiding Deity : Lord Neminath.

Festival . Mukkudai.

Location and Approach : It is about 8 km east of Arni. Buses plying between Arcot and Cheyyar stop at nearby S V. Nagaram. From there it is just 1 km

Othalavadi : 606902

There are 65 Jain families in this ancient Jain village. There are inscriptions in the temple. The temple is about 1000 years old. There is an inscription (1271 A.D.) 709 years old that tells about the endowment granted to this temple.

Presiding Deity . Aniyatha Azhagar-Shri Rishaba Thirthankar.

Festival : Pongal, Atchayathruthi, Deepavali

Location and Approach : It is about 22 km from Arni. Buses plying between Arni and and Devikapuram balt near this village.

Peranamullur : 604503

Thirty seven Jain families are living in this village The temple is about 65 years old. There is a sepa'ate Navagraha temple.

Presiding Deity : Shri Adinathar (Shri Rishabadevar)

Festival : Yugadi Dasara

Location and Approach It is 35 km west of Vandawasi Buses ply from Vandawasi and Arni.

Ponnur : 604414

This is a large village with 70 Jain families The temple is constructed over a small hillock It is referred as *Kanagagiri* (Hillock of Gold) It is about 700 years old The inscriptions in this village indicate that Chola chieftains and Pallavas granted endowments to this temple. Another inscription reveals that the idols of Lord Paraswanath and Jwalamalini are to be taken to nearby Nilagiri (Ponnurmalai) and Pujas performed. This village is connected with Shri Kundkund Acharya.

Presiding Deity : Kanagagirinathar, Kanagamalai Alwar (Shri Rishbadevar).

Festival : Pongal, Deepavali, Jinavani Day, Yugadi

Location and Approach : It is about 12 km south-west of Vandawasi. Buses ply from Vandawasi, Kanchipuram, Arni and Chetpet to this village.

Sitharugaavoor :

There are 12 Jain families and a small ancient Jain temple. presently Jains are living in the nearby Jungampoondi. Near this village there is a monument with inscriptions. These inscriptions in the nearby village—Vedal inform about the "*Jain Women University*", established and managed by women themselves.

Presiding Deity Shri Adi Bagwan the first Thirthankar

Festival : Nil

Location and Approach It is 3 km south of Desur at 19th km south-west of Vandawasi. It can be reached by buses plying between Vandawasi and Vedal or Cheyvar to Vedal.

Solai Arugavoor : 604502

There are 35 Jain families living here. The temple is about 100 years old The brass bell is unique and produces musical sound

Presiding Deity : Shri Adi Bhattaiakar (Shri Rishabadevar).

Festival Pongal.

Location and Approach : It is about 30 km south-west of Vandawasi. Desur (6 km) is the nearest town. Buses plying between Chetpet halt at Yenthal.

Somasipadi : 606602

An ancient village with 94 Jain families. This village is supposed to have sprung after the persecution of Jains by chieftain of Gingee. The temple is 100 years old. Near this village there is rock with inscriptions and sculpture of Sri Mahavir.

Presiding Deity . Sri Santhinatha Swami. This is the only temple in Tamil Nadu dedicated to Sri Santhi Thirthankar.

Festival : 1. Mukkudai, 2. Pongal.

Location and Approach : It is 8 km east of Triuvannamalai on the main road. Many buses ply on this road.

Thatchur : 632316

The Jain temple of this village is about 800 years old. There are 60 Jain families living in this village The temple architecture is unique. Every year on the last 3 days of February and the first of March the rays of the rising Sun flash on the feet of the presiding deity, Lord Atheeswara Swami.

Presiding Deity : Shri Rishabadevar.

Festival : Atchayathruthi, Pongal.

Location and Approach : It is 10 km south of Arni Buses plying between Arni and Devikapuram stop at this village.

Thensenthamangalam . 604404

Nineteen Jain families are living in this village. The Temple is an ancient one. Pallava chieftains and Nawabs sanctioned grants to this temple.

Presiding Deity : Shri Paraswathirthankar

Festival : 1. Mahavir Jayanthi, 2 Pongal

Location and Approach : It is 5 km west of Vandawasi on Vandawasi Arni road.

Thirumalai :

It was an ancient Jain centre of having the temples both structural and cave type The different parts of this temple complex were built during the Chola period, So the main temple is known by the name of the Chola queen Kundavai as Kundavai Jinalayam. The whole complex came into existence about

2000 years ago. There are inscriptions dateable to 9th century A D. and before.

The temple complex is located at the foot of the hills. There are two temples at the foot of the hills, i e. Vardhamana temple. The second temple is at a higher elevation than the first one By the side of this temple are the rock-cut panels and a way leading to the caves with their ceiling painted.

On the western side behind these temples lie steps leading to the top of the hill. It is here that we can see the tallest rock-out image of Loard Neminatha This image is 16 feet high. It is a small village with 2 or 3 Jain family only

Presiding Deity : 1 Lord Vardhamana, 2 Lord Neminatha locally known by the name Sigamaninathar.

Festival : Annually on the 3rd day of Pongal festival, the annointing ceremony of the 16 feet image takes place.

Location and Approach Thirumalai is about 40 km from Arni on the Arni-Polur road Buses plying between Arni-Polur stop near this village The temple complex is under the Archaeological Survey of India A caretaker is looking after this complex and daily pujas performed in the middle temple

Tirupanamoor : 604410

It is an ancient village and the Jain temple is 500 years old. There is 52 Jain families living This village is connected with the great Acharya Sri Akalanka There is a mandap with his foot-prints on the bank of the local tank Annual float festival is celebrated here Tirupanamoor is a janmasthan of two popular Nirvana Munis, Sri Dharmasagar and Sudharmasagar

Presiding Deity : Shri 1008 Puspandanthar
Festival : Pongal, Yugadi

Location and Approach : It is 19 km from Kanchipuram and 20 km from Cheyyar. Buses plying between Kanchipuram-Cheyyar via Vempakkam halt near this village

Veliyanallur : 604407

In this village with an ancient Jain temple 30 Jain families are living today

Presiding Deity ; Shri Varthamana Mahavir.
Festival · Pongal
Location and Approoch : It is 5 km east of Cheyyar town

Vangaram : 604408

This is a small village with 30 Jain families. It is in the proximity of Ponnur Hills The Jain temple of this village is about 100 years old

Presiding Deity Sri Adthiswara Swami
Festival : Deepavali, Pongal
Location and Approach : It is about 8 km south-west of Vandawasi on the Vandawasi-Polur road All buses plying on this road stop at Vangaram Junction road

Vellai : 604401

This village with 11 Jain families has about 150 years old Jain temple
Presiding Deity : Shri Rishaba Thirthankar
Festival · Avani Avittam
Location and Approach : It is 6 km south-west of Cheyyar Buses are available from Cheyyar

Venkundram · 604408

A village whose historicity extends back into Chola period (A D 1150) Now 37 Jain families are living This village was one of the administrative centres of Jain community or Sanga There are inscriptions in nearby hills

Presiding Deity : Shri Parswathirthankar.
Festival : Pongal, Sarasvathi Puja
Location and Approach : It is 1 km north-west

of Vandawasi and can be reached by cycle rickshaw A Choultry is attached to the temple.

SOUTH ARCOT

Agaloor . 604203

There are 40 Jain families living in this village. The Jain temple is 75 years old. There are inscriptions in the temple.

Presiding Deity : Shri Adiswara Swami

Festival : Pongal, Yugathi

Location and Approach : It is 12 km north-east of Gingee Buses plying between Gingee and Vandawasi via Nattaimangalam stop at this village

Alagramum : 604302

An ancient Jain centre with about 50 families The temple is said to be 150 years old It is one of the few Jain villages where annual Brahma Ursheva is conducted. It is said that the festival (for 10 days) is conducted without interruption for the last 84 years A choultry is attached to the temple

Presiding Deity : Shri 1008 Adithirthankar

Festival : 1 Brahma Ursheva (July), 2 Atchayathruthi (April), 3 Pongal (January), 4 Navarathri (October).

Location and Approach : It is about 20 km south-west of Tindivanam The nearest Railway station is Mailam on Madras—Villupuram line

Bus Nolambur to Alagramum from Tindivanam

Eyyil :

A small village near Gingee with about 50 Digambara Jain families Fairly ancient Jain Temple dedicated *to Lord Chandra Prabha.*

Festival · Nitya puja, Winter Puja (Mukkudai).

Location and Approach : Buses plying between Tiruvannamalai—Gingee

Kallakolathur : 604304

There are 25 Jain families The temple is very ancient and was renovated in 1942 Near this village on the north side there is a small rock with foot-prints of one Nirvana Prama Jina Deva.

Presiding Deity Shri Adiswara Bagwan.

Festival · Atchayarathruthi.

Location and Approach It is about 22 km south of Tindivanam Nearest Railway station is Mailam on Madras-Villupuram line. Buses ply from Tindivanam

Kallapuliyur :

It is 16 km from Gingee There are 70 Digambara Jain families living This is a noted Janmasthan of Nirgantha Munis

Presiding Deity : The Digambar Jain Mandir dedicated to Lord Paraswanath The deity is in the standing posture.

Festival Atchayathruthi, Dasara

Location and Approach 16 km south of Gingee.

Kattusithamoor : 604152

A small village with 17 Jain families No Jain temple It is 35 km west of Gingee

Kil-Edayalam : 604302

A small village with 8 Jain families and the Jain temple is ancient one Near the village on the lake bund foot-prints of Sri Vamana Muni are seen Annual pujas performed by the local Jains and Jains of nearby villages gather in large number.

Presiding Deity Sri Rishabanathar

Festival : Ugadi-on this day pujas are performed of the foot-prints

Location and Approach · It is on the Madras-Villupuram road and 12 km South of Tindivanam.

Melsithamoor :

This is religious headquarter of Tamil Jains The religious head Swasthi Sri Lakshmisena Bhattacharya Varya Swamigal lives here. Ancient palm-leaf scripts of important Prakrit and Sanskrit works are available here. This headquarter is supposed to be a secondary settlement

There are two temples here The ancient one with inscription is built on the rocks The latter is a temple complex with the biggest Karpagriha The temple and the temple complex is about 600 years old

Presiding Deity Lord Parswanathar—Simhapurinathar

Festival : Annual Brahamursava for 10 days during the month of April This is the only place where car festival is celebrated

Location and Approach : It is about 10 km from Gingee and about 20 km from Tindivanam. Buses plying between these places halt near this village

Mozhiyanoor : 604306

There are 11 Jain families in this village The Jinalaya is about 150 years old There is an inscription in this temple

Presiding Deity Shri Parswathirthankar

Festival : Pongal.

Location and Approach It is 25 km south of Tindivanam This village is on the Madras to Villupuram rail route Nedimozhiyanoor is the railway station

Peramundur :

It is one of the ancient villages in South Arcot District There are 50 Jain families living. There are two Jain temples in this village and one of them is small and ancient The inscriptions found in the temple are of 11 century A D The other temple which is about 200 years old is bigger The Jain families are living near this temple.

This village is supposed to have been the birth place of many learned scholars in the past The author of Sri Purana Tamil version of Mahapuranam is said to have been the native of this village

Presiding Deity : 1 Sri Chandra Praba. 2. Sri Rishabadevar

Festival : Atchayathruthi

Location and Approach It is about 20 km from Tindivanam. Nearest Railway station is Mailam on Madras-Villupuram line There is a regular bus service between Tindivanam and Rettanai, a nearby village

Perumpugai . 604202

There are 30 Jain families and a temple. The temple is about 200 years old

Presiding Deity : Shri Malli Thirthankar.

Festival Atchayathruthi, Pongal.

Location and Approach : It is on Gingee Tindivanam road and 6 km from Gingee Buses plying between these two towns halt at Oornithangal wherefrom this village is 2 km.

Uppu Vellore :

A village with 40 Jain living families. An ancient village with a Jain temple. It was one of the early settlements of Jains Shri Jinasenacharya, a celebrated Muni responsible for the revival of Jina Dharma in this part, is said to have died here

Presiding Deity : Shri Rishabadevar

Festival Atchyathruthi

Location and Approach . 23 km east of Tindivanam Buses ply between Tindivanam Uppuvellore

Thirunarungkondai :

This kshetra is one of the ancient centres of Janism Here flourished a Jain Sangha called Veera Sangha under the leadership of

Sri Gunabadra Muni. Now there are only three Jain families.

Thirunaiungkondai :

The name of the hill is also the name of the place. The temple is about 2000 years old.

It is a cave temple on a hill about 600' high On the top of the hill stands the cave temple of great antiquity

There are inscriptions that tell about the grants and Munis of this place

Presiding Deity Lord Paraswanath—Appandainathar—It is a bas-relief found on one of the big boulders that form the natural cave

Festival : Annual Brahma Utsava for 10 days during the month of May

Location and Approach : The village is about 250 km from Madras on the Madras-Tiruchchirapalli road On this road at Ulundurpet another road leads to Tiruvennainallur At a distance of about 20 km there is a village Pillayar Kuppam Thirunamkondev is 5 km from this village Buses are available both from Ulundurpet and Pillaiyar Kuppam

Valathy : 604208

An ancient Jain village surrounded by hills on western and southern sides There are 30 Jain families living at present The Jain temple of the village is said to be about 400 years old. There is a small cave on the out skirt of the village "Nalgnana Kundru" (Samyakgnah Hillock) where there is a bas-relief of Lord Paraswanath This place is supposed to have been the abode of some saints in the past Presently annual pujas are performed

Presiding Deity : Shri Adinath Thirthankar

Festival : 1 Pongal, 2. Atchayathiruthi (April), 3 Yatchan Navarathri (October)

Location and Approach : The village is 13 km north of Gingee Buses plying between Gingee–Chetpet via Valathi

Note —There are 2 more villages near Valathi i.e. Melmalayanoor and Thazhanoor Both these villages are also ancient The people of Thazhanoor were said to be responsible for the secondary settlement of Jains in South Arcot

Veedur .

This village has 51 Jain families The Digambar Jain temple of this village is about 1200 years old This village is noted for many philosophers who wrote a large number of books on Jain philosophy

Presiding Deity . Lord Rishabadevar

Festivals · Atchayathruthi, Pongal, Dasara

Location and Approach It is 24 km south of Tindivanam

Veeranamoor 604203

There is a separate Jain street with 41 families An ancient village with a Jain temple about 500 years old Three religious heads of Tamil Nadu Jains at Melsithamoor hailed from this village and from the same family

Presiding Deity : Shri Rishaba Thirthankar.

Festival 1 Atchayathruthi, 2 Mukkudai, 3 Navarathri.

Location and Approach : It is 20 km north-east of Gingee Buses plying between Tindivanam (24 km)—Veernamoor and Vandawasi (25 km)—Veernamoor

Vellimedupettai : 604207

In this village 30 Jain families are living, The Jain temple is about 200 years old At Anandamangalam near this village (6 km) is a hillock with Jain sculpture

Presiding Deity : Sri Anantha Thirthankar.

Festival Pongal, Amman festival

Location and Approach : It is 10 km north of Tindivanam This village is on the Tindivanam-Vandawasi road.

मूडबिद्री

मूडबिद्री यह क्षेत्र 'जैन काशी' के नाम से प्रसिद्ध है। यह स्थान मगलूर (Mangalore) से उत्तर की ओर कार्कल तालूक (दक्षिण कन्नड जिले) मे अवस्थित है। मूडबिद्री जैनो के अगर धार्मिक दृष्टि से पवित्र है तो अन्य लोगो को ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। इसका दूसरा नाम सस्कृत मे 'वशपुर' अथवा 'वेणुपुर' भी है। यहाँ का प्राचीन मन्दिर 'गुरुबसदि' (गुरुमन्दिर) या 'सिद्धान्तबसदि' एक समय उन्नत स्थिति मे था। एक समय इस गाव का व इस मन्दिर का अधिकाश भाग जैनों के अभाव से व अन्य बाधाओ से अरण्यमय होकर पेडो और बासो (वशवृक्ष) से व्याप्त हो गया था। इन्ही बासो के कारण इसका नाम 'बिदिरे' या 'वेणुपुर' पडा। (कन्नड भाषा मे बास को 'बिदिरु' कहते है। इस 'बिदिरु' शब्द से ही 'बिदिरे' बना है। 'बिद्रे' या 'बिद्री' इसका अपभ्रश है) चूँकि यह स्थान मूल्कि, मगलूर आदि समीपस्थ बन्दरगाह—व्यापार स्थलो से 'मूडु' (पूर्व) दिशा मे स्थित है, अतः 'मूडुबिदिरे'—'मूडुबिद्री' नाम से पुकारा जाने लगा। जो आज तक प्रसिद्ध व मान्य बन गया है। इसके अलावा अनेक जैन व्रतिक (साधु, गुरु, श्रमण) यहाँ रहने के कारण, इसे 'व्रतपुर' भी शिला-शासन मे कहा गया है।

यद्यपि मूडबिद्री 'तुलुनाडु' (यहाँ तुलु बोली, बोली जाती है, अत इस प्रदेश को 'तुलुनाडु' कहते है, नाडु = प्रदेश) यह दक्षिण कन्नड जिले का एक छोटा-सा नगर है तथापि चारो ओर से प्राकृतिक दृश्यो से यह अतीव सुन्दर है। यहाँ बेशुमार फलभरित हरे-भरे खेत है, बाग-बगीचे है। यत्र-तत्र तालाब हैं। यहाँ पर नारियल, सुपारी, काजू, पान, कालीमिर्च आदि विशेष रूप से पैदा होते है। यहाँ की राज महल, जैनमन्दिर शिल्पकला की दृष्टि से विशेषाकर्षक हैं। इस क्षेत्र की जलवायु समशीतोष्ण है इसी कारण यहाँ पर सरकार ने भी टी० बी० (क्षयरोगी) का हास्पिटल खोला है।

ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी मे श्रुतकेवली भद्रबाहु के उत्तर भारत से श्रवणबेलगोला पदार्पण से पूर्व ही मूडबिद्री व यहाँ के चारो ओर के प्रदेशो मे जैनो का अस्तित्व था। यद्यपि क्रि० श० ७वी शती से पूर्व का ऐतिहासिक आधार प्राप्त नही होता, फिर भी दक्षिण कन्नड जिले के बहुभाग मे प्राप्त जैनत्व के अवशेषो से यह बात सिद्ध होती है।

इतिहास का प्रमाण है कि ई० पूर्व चौथी-शताब्दी मे श्रुतकेवली श्री भद्रबाहुजी ने मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त एव १२००० शिष्यो के साथ दक्षिण मे आकर श्रवणबेलगोला मे निवास किया। उनके इन शिष्यो मे कुछ ने तमिल, तेलुगु कर्नाटक एव तौलव देशो मे जाकर धर्म का प्रचार और यत्र-तत्र निवास किया। तब से मूडबिद्री मे भी जैन लोगो ने आकर वाणिज्य-व्यवसाय करते हुए अनेक जैन मन्दिर बनवाये, ये द्वीपातर मे व्यापार करते हुए विपुल धनार्जन कर प्रसिद्ध थे।

परन्तु कालकोप से धन-जन-सम्पन्न इस मूडबिद्री मे भी जैनो का अभाव हो जाने से यहाँ के जिन मन्दिरो के चारो ओर पेडो और वशवृक्षो से घिरे हुए थे। लगभग ७वी शताब्दी मे श्रवणबेलगोला मे इधर आये हुए एक मुनि-महाराज ने एक जगह (जहाँ अब सिद्धान्त मन्दिर है) अन्योन्य स्नेह से खेलते हुए एक बाघ और गाय को देखा। इस अपूर्व दृश्य को देखकर मुनिजी ने यह निश्चय किया कि इस स्थान मे कुछ न कुछ अतिशय अवश्य है। जब घिरे हुए पेडो को कटवाया तब श्री भगवान पार्श्वनाथ प्रभु की विशालकाय, अतीव सुन्दर व मनोज्ञ मूर्ति दृष्टिगोचर हुई। पाषाणमयी यह मूर्ति हजारों वर्ष प्राचीन है। उस मूर्ति की प्रतिष्ठा करायी गयी।

मूडबिद्री की प्रसिद्धि यहाँ 'गुरुबसदि' या 'सिद्धात मन्दिर' मे सुरक्षित व शोभायमान जैन जगत् का मूलागम व परमागम धवलादि ग्रथ व अनर्घ्य नवरत्न प्रतिमाओ से है। (अब धवलादि ग्रंथो का दर्शन श्री दि० जैन मठ मे ही व्यवस्थित रूप से पू० भट्टारक जी कराते हैं) धवलादि ग्रथ कन्नड लिपि मे लिखे जाकर करीब १००० वर्ष

हो गये है। जब उत्तर भारत में शास्त्र ग्रथ कागज पर लिखे जाते थे, उस समय दक्षिण मे द्रविड लिपि के ग्रन्थ ताडपत्र मे सूई से कुरेदकर ऊपर से स्याही भरे जाने की प्रथा थी। लेकिन आश्चर्य यह है कि ये तीनो ग्रंथ सुई से न लिखे जाकर लेखनी द्वारा लाख की स्याही से लिखे गये है। यह नयी खोज उक्त लिपिकारो की अपनी ही है। बाद के किसी भी लिपिकार ने इस प्रथा को अपनाया नही है। इस जिले मे प्राप्त सहस्रश ताडपत्रीय ग्रंथों मे ये तीन मात्र ग्रथ स्याही से लिखे गये है व प्राचीन है।

इसी 'गुरुबसदि' मे वज्र, मरकत, माणिक्य नील, वैडूर्य आदि बहुमूल्य रत्नो से निर्मित अद्वितीय व अनुपम जिन प्रतिमाएँ है। मूडबिद्री के प्राचीन श्रावक जहाजो के द्वारा द्वीपान्तर जाकर वाणिज्य करने मे प्रसिद्ध थे। वे अरेबिया, अफ्रीका, आदि पश्चिम देशो मे और मलाया, जावा, इण्डोनेशिया, चीन आदि सुदूर पूर्व देशो मे जाकर व्यापार करते थे। अतएव जिराफ, चैनीस ड्रागन आदि प्राणियो से परिचित इन लोगो ने 'त्रिभुवन-तिलकचूडामणि मन्दिर' की आधार शिला मे इन विचित्र प्राणियो की आकृतियाँ विभिन्न ढंगो मे, आकर्षक भंगिमाओ मे खुदवाई है। त्रिभुवनतिलक चूडामणि मन्दिर' के 'भैरादेवी मण्डप के निचले भाग के पत्थर मे जिराफ मृग और चीनी ड्रैगन का चित्र चित्रित हैं। यह जिराफ मृग अफ्रीका मे पाया जाता है। और ड्रैगन तो चीन देश मे पाया जाता है। यह वहाँ का पुराण प्रसिद्ध प्राणी है। यह मकर (मगर) आकृति का जलचर है। विदेश के इस प्राणी का यहाँ पर चित्रित होने से सहज ही अनुमान लगा सकते है कि उस समय के जैन श्रावक व्यापारार्थ इन देशो मे भी गये होगे व व्यापारिक सम्पर्क बढ जाने से वहाँ के रहने वाले प्राणी यहाँ पर चित्रित हुए होगे।

मूडबिद्री के मन्दिर क्या है? शिलालेखो, शिल्पकला व शिलापद्यो का आगर ही है। एक अज्ञात कवि ने शिलालेख मे तत्कालीन 'वशपुर' (मूडबिद्री) का निम्न प्रकार से वर्णन किया है—

'सुन्दर बाग-बगीचे, विकसित पुष्पो की सुगन्ध से व्याप्त हवा से, चारो ओर से सुशोभित बाह्य प्रदेशो मे घिरा हुआ, उत्तम जिनमन्दिरो से पवित्र एव रम्य आवास गृहो से सुशोभित यह मूडबिद्री देवागनाओ के समान पुण्य स्त्रियों के विराजने के समान सुन्दर है।'

मूडबिद्री के एक और शासन मे तत्कालीन 'वेणुपुर' का जीता जागता चित्रण निम्न रूप में है—'तुलदेश मे वेणपुर नाम का एक विशिष्ट नगर सुशोभित है। यहाँ पर जैन धर्मानुयायी सुपात्र दानादि उत्साह से करने वाले भव्य जीव विराजमान है। साधु-सन्तो मे वे श्रद्धापूर्वक शुद्धमन से जैन शास्त्र का श्रवण करते है। इस प्रकार यह वेणुपुर सुशील सत्पुरुषो से शोभित है।'

मूडबिद्री के अठारह भव्य जिनमन्दिर

मूडबिद्री मे कुल मिलाकर अठारह भव्य जिनमन्दिर है। इसमे 'श्री पार्श्वनाथ बसदि' अति प्राचीन है। 'पार्श्वनाथ बसदि' को 'गुरुबसदि' तथा चन्द्रनाथ बसदि को 'त्रिभुवन तिलक चूडामणि बसदि' भी कहते है। इन मन्दिरो के अलावा अन्य मन्दिरो मे भी शिल्पकला की उच्चकोटि की गरिमा खुलकर सामने आई है। 'बसदि' यह सस्कृत 'वसति' शब्द का तद्भव है।

मूडबिद्री के अन्य दर्शनीय स्थल

१. समाधिस्थान (निषिधियाँ):

यहाँ स्वर्गीय मठाधिपतियो की १८ समाधियो के अतिरिक्त अबुसेट्टी एव आदुसेट्टी नामक दो श्रीमान् श्रावको की समाधियाँ बेटकेरी बसदि से १ फर्लांग पर विद्यमान है। परन्तु यह जानना कठिन है कि ये समाधियाँ किन-किन की है? और कब निर्माण हुई है। केवल दो एक समाधियो मे शिलालेख विद्यमान है।

२. कोडंकल्लु (न्याय बसदि):

मूडबिद्री से करीब १ मील पर 'कोडकल्यु' नामक स्थान मे 'न्यायबसदि' नामक एक मन्दिर एव एक समाधिस्थान विद्यमान है। कहा जाता है कि इस मडप मे लोगो के न्याय-अन्याय का विचार और निर्णय होता था। इसी कारण मे मडप का नाम 'न्यायबसदि' नाम पडा है जो सार्थक ही है। इसके पास ही श्री चन्द्रकीर्ति मुनि (ई० सन् १६३७) का एक समाधिस्थान और सति

सहगमन करने का एक स्थान 'महासतिकट्टे' (मास्तिकट्टे) भी है।

३. चौटर राजमहल :

दक्षिण कन्नड जिले के जैन राजाओं मे चौटर वशीय राजा बड़े प्रसिद्ध थे। इनकी राजधानी पहले "उल्लाल" में थी। हुलेयबीड के राजा विष्णुवर्धन के अधीन रहने वाले राजागण स्वतन्त्र होने के बाद चौटर वंशीय राजाओं ने अपनी राजधानी को मूडबिद्री और इसके निकटवर्ती 'पुत्तिगे' मे स्थापित किया। इन राजाओं ने लगभग ७०० वर्ष तक (११६० से १८६७ ई० सन् तक) स्वतन्त्र रूप से शासन किया। इनके वशज आज भी मूड-बिद्री (चौटर पैलेस) मे रहते है जिनको सरकार से मालिखाना (Political Pension) मिलता है। यह राजघर यद्यपि जीर्णशीर्ण है फिर भी इसे देखकर इसकी महत्ता का अनुभव कर सकते है। राजसभा के विशाल स्तभो पर खुदे हुए चित्र दर्शनीय है। इनमे चित्रकला की दृष्टि से 'नवनारीकुंजर' और 'पंचनारीतुरग' की रचना और शिल्पकला अत्यत मनोज्ञ है।

४. श्रीमती रमारानी जैन शोध संस्थान :

इस भवन का निर्माण स्वनामधन्य, श्रावक शिरोमणि, स्व० साहू श्री शातिप्रसाद जी ने लाखो रुपये व्यय करके किया है। इस सस्थान या भवन मे परम पुनीत अमूल्य ताडपत्रो पर लिखे सहस्रश जैन पुराण, दर्शन, धर्म, सिद्धान्त, न्याय, ज्योतिष, आचार परक 'जिनवाणी माँ' का संग्रह है। इन ताडपत्रीय जैन शास्त्रो के अध्ययनार्थ व अवलोकनार्थ देश-विदेश के विद्वान् यहाँ पधार कर, इन अनमोल ग्रन्थ रत्नो के दर्शन कर पुनीत हो जाते हैं। अनेक ताडप्रतियो का समुद्धार, पुनर्लेखन, सशोधन सग्रह, प्रकाशन आदि कार्य प पू भट्टारक जी के नेतृत्व मे सम्पन्न हो रहा है। देश-विदेश के जैन-जैनेतर विद्वानो के लिए तो यह सग्रहालय मानो ज्ञान का अजस्र स्रोत है और है माँ सरस्वती का वरद और पुनीत अक्षुण्ण भण्डार।

५. मूडबिद्री की अन्य संस्थाएं और सामाजिक स्थिति :

अब तक ऐतिहासिक मूडबिद्री का अवलोकन हुआ। अब आधुनिक मूडबिद्री का अवलोकन करेंगे।

मूडबिद्री मे तीन हाई-स्कूल है—१ जैन हाई स्कूल, २ बाबू राजेन्द्र प्रसाद हाई स्कूल, ३ कान्वेन्ट गर्ल्स हाई स्कूल। जैन हाई स्कूल रजत जयति मनाकर अब जैन जूनियर कॉलिज के रूप मे परिवर्तित हो गया है।

सन् १९६५ मे 'समाज मन्दिर सभा' नामक साँस्कृतिक सस्था द्वारा यहाँ पर 'महावीर आर्ट्स' साइन्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज' खोला गया है।

सन् १९७१ मे दक्षिण कन्नड जिला जैन समाज के सत्प्रयत्न मे 'श्री धवला कॉलेज' मूडबिद्री मे प्रारम्भ हुआ है।

'भरतेश वैभव' रत्नाकर शतक' आदि श्रेष्ठ कृतियो के रचयिता महाकवि रत्नाकर वर्णी की जन्म भूमि भी यही मूडबिद्री है। इसी कवि के नाम से मूडबिद्री का एक भाग 'रत्नाकर वर्णी 'नगर के रूप मे नामकरण पाकर सुशोभित है।

मूडबिद्री की जनसख्या लगभग १०–१२ हजार है। लोगो की आर्थिक स्थिति सामान्य है। जैन भाइयो के लगभग ६० घर हैं। जैनो की आर्थिक स्थिति (२–४ घर को छोडकर) सामान्य है। प्राय. सब लोगो का जीवनाधार कृषि पर ही निर्भर है। नारियल, सुपारी, धान, काजू आदि ही यहाँ की प्रमुख कृषि या उपज है। परन्तु इस समय 'भू सुधारणा कानून' पास होकर लागू होने से सब खेतिहर जैनो के ऊपर और जैन मन्दिरो के ऊपर भीषण सकट आया है।

— ○ —

श्रवणबेलगोला

शिल्प कला में उत्कृष्ट

बाहुबली की प्रतिमा का निर्माण कार्य आरम्भ से अन्त तक दसवीं शताब्दी के उत्तरकालीन प्रसिद्ध जनरल चामुण्डा राय की आज्ञा से किया गया। उनके गुरु आचार्य नेमिचन्द्र ने उन्हे 'गोमेत' (जिसे सुन्दर वाणी का सौभाग्य प्राप्त हो) की उपाधि से विभूषित किया था। इसलिए बाहुबली की प्रतिमा को गोम्मटेश्वर या गोमेत के भगवान के नाम से जाना जाने लगा।

अपने समय के महान मूर्तिकार अरिष्टनेमी ने भगवान बाहुबली की मूर्ति का निर्माण बड़े पत्थर की एक शिला को काटकर किया। यह उत्कृष्ट ध्यानावस्थिमूर्ति नख मे शिख तक कला की निपुणता का सुन्दर नमूना है। एक ऊँचे स्थान पर परम ध्यानावस्था मे खड़े भगवान बाहुबली भारत के शान्ति और सद्‌भावना के अमूल्य सन्देश की किरणो का प्रकाश चारो ओर फैला रहे है साथ ही उनके अगो से लिपटी जगली लताए भी चित्रित है।

प्रसिद्ध यात्री लेखक फरगुसन के शब्दो मे "इससे श्रेष्ठ या अधिक प्रभावशाली मूर्ति कही नही है।" शिल्पकला मे अनन्य तथा दक्षता पूर्वक बनाई गई बाहुबली की यह प्रतिमा मिस्र के आबू सिम्बल देवालयों और कम्पूचिया के आगकोर वाट के समान या शायद उनसे कही अधिक श्रेष्ठ है।

प्राचीन तीर्थस्थल

प्राचीन तीर्थ स्थान श्रवणबेलगोला बगलौर मे १६० कि० मी० दूर पश्चिम की ओर है जहाँ नजदीकी जिला शहर-हसन से पहुँचा जा सकता है। चन्द्रागिरी (५८ मीटर ऊँची) विंध्यागिरी (१४३ मी०) की दो पहाड़ियो के बीच बने इस स्थल की दार्शनिक सुन्दरता नीचे बहती झील से और बढ़ जाती है जिसके नाम से यह स्थान बना है। श्रावण 'श्रमण' शब्द का अभिरूप है जिसका अर्थ है जैन सन्यासी। बेलगोला को कन्नड भाषा मे एक दीप्तिमान या चमकीली छोटी झील कहते हैं।

चन्द्रागिरी पहाड़ी मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त से संबधित है जो उत्तर मे अपनी मगध की गद्दी त्याग कर अपने गुरु भद्रबाहु के साथ तीसरी शताब्दी पूर्व ईसा मे धर्म की खोज मे यहाँ आये थे। भद्रबाहु स्वामी महावीर के निजी शिष्य के उत्तराधिकारी थे। दक्षिण मे यह भद्रबाहु का ही प्रभाव था कि उनके जैन अनुयायियो की सख्या १२,००० तक हो गई और इसके साथ ही पूरे क्षेत्र मे जैन धर्म की जड़े (जो पहले ही फैल चुकी थी) और गहरी हो गई। चन्द्रगुप्त ने सन्यास लेकर अपने गुरु की परम्परा को निभाते हुए, इस पृथ्वी पर अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक कठोर तप किया।

बाहुबली की कथा

भगवान बाहुबली ने अपने त्याग से जो महान सासारिक विजय प्राप्त की उसके कारण उन्हे विशेष रूप से पूजा जाता है। उनका नाम वर्तमान चक्र के पहले तीर्थंकर आदिनाथ के राजकुमार पुत्र के रूप मे हुआ। अपना राज्य छोड़ते हुए आदिनाथ ने अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत को (जिसके नाम से भारत का नामकरण हुआ) और अन्य लोगो को उसकी बागडोर सौंपी।

जब भरत विश्व विजय के लिये निकले तो बाहुबली के अतिरिक्त सब भाइयों ने उनका अधिपत्य स्वीकार किया। बाहुबली ने यह निश्चय किया कि वह अपने पिता द्वारा सौंपा गया राज्य किसी को भी नहीं देगे। भाइयो के बीच विवाद बढ जाने पर चतुर मन्त्रियो द्वारा यह फैसला किया गया कि उन दोनों के बीच द्वन्द्व युद्ध करवा कर युद्ध से होने वाली मार-काट और विनाश लीला से बचा जा सकता है।

ताकत और कौशल की उस लड़ाई मे बलिष्ठ बाहुबली की विजय हुई लेकिन वह सासारिक वस्तुओ की निरर्थकता को समझ चुके थे इसलिए इस जीवन से मुक्ति या निर्वाण प्राप्ति के लिए वे राजपाट त्यागकर घोर तपस्या करने के लिए निकल पड़े।

मन्दिरों से जड़ित पहाड़ियाँ

विन्ध्यागिरी और चन्द्रागिरी पहाडियाँ एव श्रावण-बेलगोला का विशिष्ट सौदर्य युक्त क्षेत्र मन्दिरो और पूजा स्थलो से भरा हुआ है जो प्राचीन और मध्य कालीन भारत की वास्तुकला के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

गोम्मटेश्वर की प्रतिमा तक पहुँचने के लिए श्रद्धालु भक्तजनो को ऊँची-नीची पत्थरो से काटकर बनाई गई ६०० सीढियाँ चढ कर जाना पडता है। चोटी तक पहुँचते-पहुँचते दर्शको को एक विशाल चट्टान के बीच बने मार्ग से गुजरना पडता है। मार्ग मे ८ मध्यकालीन मन्दिर भी बने है। कुछ मन्दिरो मे काले चमकते हुए पत्थरो की मूर्तियाँ तथा सफेद सगमरमर से बना मन्दिर का आन्तरिक स्थल विशाल मूर्ति की शोभा बढाते है।

छोटी पहाडी चन्द्रागिरी १४ मन्दिरो मे जडित है जिनमे अशोक महान् द्वारा अपने दादा की याद मे बनवाया गया चन्द्रगुप्त का प्राचीनतम मन्दिर भी है। इसके भीतरी भाग की दीवारो पर भगवान भद्रबाहु और सम्राट चन्द्रगुप्त के जीवन चित्र अकित है। जिनमे २५०० वर्ष पुरानी सभ्यता का पता लगता है। पास ही एक गुफा मे पत्थर की एक शिला पर भगवान भद्रबाहु के पैरो के चिन्ह अकित है। चन्द्रागिरी के अन्य मन्दिर (जिनमे चामुण्डा राय द्वारा निर्मित सबसे बडा मन्दिर भी है) ७वी से १२वीं शताब्दी के दौरान बने हुए है।

श्रवणबेलगोला शहर मे भी सात वैभवशाली मन्दिर है जिनमे सबसे बडा मन्दिर होयशला वास्तुकला का सुन्दर नमूना है। अन्य मन्दिर, जिनका निर्माण १०वी से १५वी शताब्दी के बीच हुआ है उनकी उत्कृष्ट शैली मे बनी अलकृत मूर्तियो मे होयशला और चालुक्य वश की अभिरूचि की झलक मिलती है।

श्रवणबेलगोला उत्कृष्ट कोटि के छोटे-बडे ३२ मन्दिरो से घिरा तीर्थ स्थल है जहाँ हर वर्ष श्रद्धालुजनो और पर्यटको का ताता लगा रहता है।

अभिलेख एवं शिलालेख

आध्यात्मिक उद्यम के इस स्थान पर बडी सख्या मे ऐतिहासिक अभिलेख एव शिलालेख मिलते है—छोटी-छोटी पहाडियो और इस बस्ती मे इनकी कुल सख्या ५३७ है। केवल चन्द्रागिरी मे ही २७१ अभिलेख है, जो छठी से दसवी शताब्दी के बीच के समय के है। अपनी कला और प्राचीन सभ्यता के लिए प्रसिद्ध श्रवणबेलगोला वास्तव मे पुरातत्वविदो और इतिहासज्ञो के आकर्षण का केन्द्र है।

— ○ —

शुद्धिपत्र

पृष्ठ संख्या व कालम	पंक्ति	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
२—२	२८	देदगुडी	देवगुडी
३—२	२७	कुन्दुनाथ	कुन्थनाथ
५—१	(ऊ)	विशाखापत्ततभ	विशाखापत्तनम्
६—४	१०	विधालय	विद्यालय
६—४	११	औषद्यालय	औषधालय
६—४	१२	ऋषमदेव	ऋषभदेव
७—२	३	दिब्रूगढ	डिब्रूगढ
८—२	१२—१४	वासुपूज्य स्वामी का निर्वाण क्षेत्र वस्तुत चम्पापुर (भागलपुर) है।	
८—२	१५	४—८	४८
८—२	२७	वस्सुपूज्य	वासुपूज्य
८—२	२७	जनकल्याणक	जन्मकल्याणक
१०—२	३६	नेमि	नमि
१२—१	६	तत्वार्थधिनम	तत्वार्थाधिगम
१३—२	१०	अट्ठालिकाओ	अट्टालिकाओ
१७—४	७	कोठ	कोठी
१७—४	१६	गणेशवर्ती	गणेशवर्णी
२२—४	१३	बाल	बाला
२४—१	१०	बहात्तर	बहत्तर
४१—१	३२	त्यागी	त्यागियो
४२—२	२५	खनियाद्याना	खनियाधाना
४२—२	३२	ददाभूरी	देदाभूरी
४३—१	८	परमार	परवार
४३—२	१६	मेरी	भेरी
४३—२	१७	मया	मया
४६—२	६	वाणसिवनी	वारासिवनी
५३—२	१५	बकाराहा	बकस्वाहा
५७—४	८	सिंथई	सिंघई

५६—४	६,७,८,११	गणेशवर्ती	गणेशवर्णी
६१—२	४	अमरवाग	अमरवारा
६१—२	७	हुरई	हुर्रई
६१—२	८	जुम्रारेदेव	जुन्नारदेव
६१—२	१५	परासिरा	परासिया
६१—४	१२	छिन्दवाग	छिन्दवाडा
६६—२	१८	वासालारखेडा	बासा तारखेडा
८६—२	८	सिद्धवरकूर	सिद्धवरकूट
६६—४	४	शस्त्र	शास्त्र
६६—४	६	मैल्या	मलैया
१०१—३	२४	मैयाराम	भैयालाल
१०१—३	३०	वर्षी	वर्णी
१२३—४	१८	गणेशवर्ती	गणेशवर्णी
१२५—२	६	६०८	१०८
१७२—२	३	पडमपरिउ	पद्मचरिउ
१७२—२	६	विलोप पण्यन्ती	त्रिलोयपण्णत्ति
१७२—२	१६—१६	पतजलि	पातजलि
१७२—२	३०	मुहम्मक	मुहम्मद
१७७—१	१६	फलासन	पद्मासन
१८३—३	१६	चैत्यानय	चैत्यालय
१८३—४	८	पुस्कालय	पुस्तकालय
१६०—३	२२—२४	पुरवालय	पोरवाल
२०१—४	१४	पुरवान	पुरवाल
२१६—४	५	मवागिन	मैदागिन